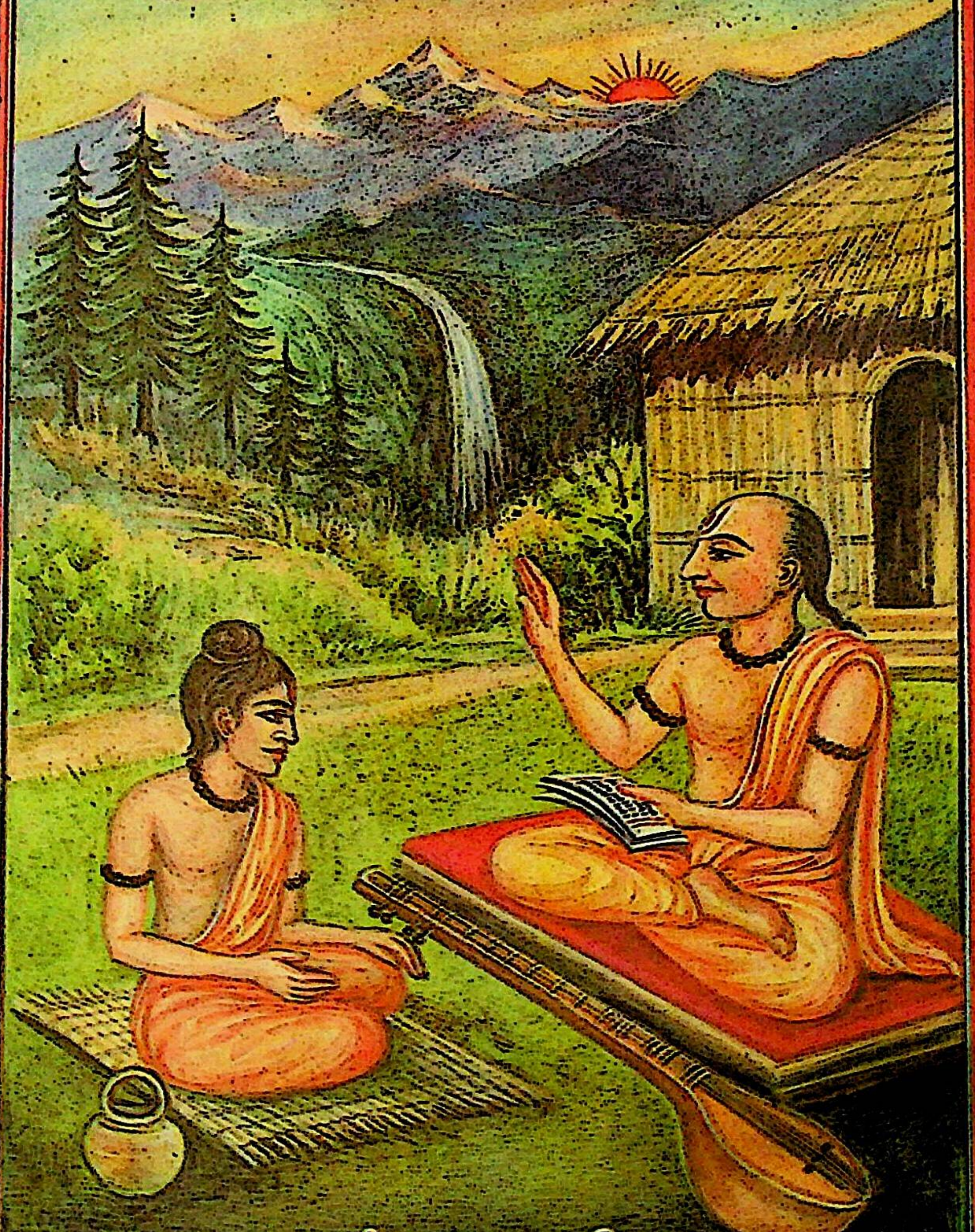
नारद संहिता



आचार्य रामजन्म मिश्र

॥ श्रीः ॥

काशी संस्कृत ग्रन्थमाला

४०

नारदमहामुनिप्रणीता

नारदसंहिता

सान्वय 'विमला'-हिन्दीटीकासहिता

व्याख्याकार

आचार्य रामजन्म मिश्र

ज्योतिषशास्त्राचार्य (गणित-फलित) एम. ए.

रीडर, ज्योतिष विभाग, प्राच्यविद्याधर्म विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्भा संस्कृत संस्थान

भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक

पो० आ० चौखम्भा, पो० बा० नं० १३९

जड़ाव भवन, के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी (भारत)

प्रकाशक : चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी
संस्करण : द्वितीय, (हिन्दी टीका सहित) वि० सं० २०४०
मूल्य : रु० ६०-००

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्भा विश्वभारती
पोस्ट बाक्स नं० ८४
चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)
वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन : ६५४४४

9-4

THE

KASHI SANSKRIT SERIES

40

*****

NARADASAMHITĀ

OF

MAHĀMUNI NĀRADA

With Vimalā Hindi Commentary

Commentator

Pt. RĀMAJANMA MIŚRA, Jyotiṣaśāstracārya, M. A.

Reader, Deptt. of Jyotiṣa,

Faculty of Oriental Learning and Theology

Banaras Hindu University, Varanasi

CHAUKHAMBHA SANSKRIT SANSTHAN

Publishers and Distributors of Oriental Cultural Literature

P. O. Chaukhambha, Post Box No. 139

Jadau Bhawan, K. 37/116, Gopal Mandir Lane

VARANASI (INDIA)

Phone : 65889

Second Edition with Hindi Commertary : 1984

Price : Rs. 60–00

Also can be had of

CHAUKHAMBHA VISVABHARATI

Post Box No. 84

Chowk (Opposite Chitra Cinema)

VARANASI-221001

Phone : 65444

ग्रन्थकर्तुः परिचयः

विश्ववन्द्यान् महाप्राज्ञान् ज्योतिर्विद्याविशारदान् ।
आचार्यान् भास्कराद्याँस्तान् भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १ ॥
विद्यावतां बलवतां पुरुषार्थभृतां सताम् ।
आगारमुत्तरप्रान्ते भाति बलियामण्डलम् ॥ २ ॥
सिकर्यार्कपुरोत्तंसो वंशो गौतमगोत्रभृत् ।
'विगही' नामके ग्रामे गुणग्रामेऽत्र राजते ॥ ३ ॥
ग्रामेऽस्मिन् विश्रुतो विद्वान् नानाशास्त्रविचक्षणः ।
श्रीमान् गोकुलमिश्रोऽभूत् सर्वपूज्यो द्विजाग्रणीः ॥ ४ ॥
तस्याभवत् सुतो विज्ञः शिवगोविन्दसंज्ञकः ।
शिव-गोविन्दयोर्यस्मिन् सम्यगभ्युदिता गुणाः ॥ ५ ॥
स चोग्रतपसा प्रापत् पुत्रानभ्यर्चितान् जनैः ।
नन्दनश्रीकरान् पञ्च देवद्रुमवरानिव ॥ ६ ॥
क्रमेण श्रीदीनबन्धुं श्रीदेवशरणं ततः ।
प्राज्ञं श्रीगिरिजादत्तं मध्यं मणिमिव स्रजः ॥ ७ ॥
श्रीमत्कुबेरदत्ताख्यं चतुर्थं सम्मतं सताम् ।
पञ्चमं रुद्रदत्तेन नाम्ना ख्यातं महात्मसु ॥ ८ ॥
तत्र श्रीगिरिजादत्तमिश्रस्य पितुरन्तिकात् ।
मातरि श्रीनगेश्वर्यां रामजन्माभवत् सुतः ॥ ९ ॥
पूज्यश्रीमालवीयस्य विश्वविद्यालयेऽतुले ।
प्राज्ञपूजितपादेभ्य आचार्येभ्योऽधिकाशिकम् ॥ १० ॥
विन्ध्येश्वरीप्रसादेभ्यो रामव्यासेभ्य एव च ।
केदारदत्तजोशीभ्यो गुरुभ्योऽधिगतागमः ॥ ११ ॥
प्राध्यापकपदं प्राप्य प्राच्यविद्यालये स्थितः ।
छात्रानध्यापयन् प्रेम्णा तोषयँश्च सुधीश्वरान् ॥ १२ ॥
समालोचनमारभ्य विदुषां धुरि प्रस्तुवन् ।
श्रीरामजन्ममिश्रोऽयं तुष्टिमात्मनि विन्दति ॥ १३ ॥
स्नेहामृतं विना येषां ग्रन्थलेखनवर्त्मनि ।
मरुप्राये गतिर्नस्यात्तान्नुमः प्रेरकान् बुधान् ॥ १४ ॥
प्रीयन्ते यदि सुप्रीता गुणदोषविदो विदः ।
तदैव श्रमसाफल्यं गणयिष्याम्यहं हृदा ॥ १५ ॥

विदुषामाश्रयो
रामजन्ममिश्रः

Phone : 65889
Second Edition with Hindi Commertary : 1984
Price : Rs. 60-00

Also can be had of
CHAUKHAMBHA VISVABHARATI
Post Box No. 84
Chowk (Opposite Chitra Cinema)
VARANASI-221001
Phone : 65444

ग्रन्थकर्तुः परिचयः

विश्ववन्द्यान् महाप्राज्ञाञ् ज्योतिर्विद्याविशारदान् ।
आचार्यान् भास्कराद्यांस्तान् भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १ ॥
विद्यावतां बलवतां पुरुषार्थभृतां सताम् ।
आगारमुत्तरप्रान्ते भाति बलियामण्डलम् ॥ २ ॥
सिकर्यार्कपुरोत्तंसो वंशो गौतमगोत्रभृत् ।
'विगही' नामके ग्रामे गुणग्रामेऽत्र राजते ॥ ३ ॥
ग्रामेऽस्मिन् विश्रुतो विद्वान् नानाशास्त्रविचक्षणः ।
श्रीमान् गोकुलमिश्रोऽभूत् सर्वपूज्यो द्विजाग्रणीः ॥ ४ ॥
तस्याभवत् सुतो विज्ञः शिवगोविन्दसंज्ञकः ।
शिव-गोविन्दयोर्यस्मिन् सम्यगभ्युदिता गुणाः ॥ ५ ॥
स चोग्रतपसा प्रापत् पुत्रानभ्यर्चितान् जनैः ।
नन्दनश्रीकरान् पञ्च देवद्रुमवरानिव ॥ ६ ॥
क्रमेण श्रीदीनबन्धुं श्रीदेवशरणं ततः ।
प्राज्ञं श्रीगिरिजादत्तं मध्यं मणिमिव स्रजः ॥ ७ ॥
श्रीमत्कुबेरदत्ताख्यं चतुर्थं सम्मतं सताम् ।
पञ्चमं रुद्रदत्तेन नाम्ना ख्यातं महात्मसु ॥ ८ ॥
तत्र श्रीगिरिजादत्तमिश्रस्य पितुरन्तिकात् ।
मातरि श्रीनगेश्वर्यां रामजन्माभवत् सुतः ॥ ९ ॥
पूज्यश्रीमालवीयस्य विश्वविद्यालयेऽतुले ।
प्राज्ञपूजितपादेभ्य आचार्येभ्योऽधिकाशिकम् ॥ १० ॥
विन्ध्येश्वरीप्रसादेभ्यो रामव्यासेभ्य एव च ।
केदारदत्तजोशीभ्यो गुरुभ्योऽविगतागमः ॥ ११ ॥
प्राध्यापकपदं प्राप्य प्राच्यविद्यालये स्थितः ।
छात्रानध्यापयन् प्रेम्णा तोषयँश्च सुधीश्वरान् ॥ १२ ॥
समालोचनमारभ्य विदुषां धुरि प्रस्तुवन् ।
श्रीरामजन्ममिश्रोऽयं तुष्टिमात्मनि विन्दति ॥ १३ ॥
स्नेहामृतं विना येषां ग्रन्थलेखनवर्त्मनि ।
मरुप्राये गतिर्नस्यात्तान्नुमः प्रेरकान् बुधान् ॥ १४ ॥
प्रीयन्ते यदि सुप्रीता गुणदोषविदो विदः ।
तदैव श्रमसाफल्यं गणयिष्याम्यहं हृदा ॥ १५ ॥

विदुषामाश्रयो
रामजन्ममिश्रः

पूज्य पितृचरण

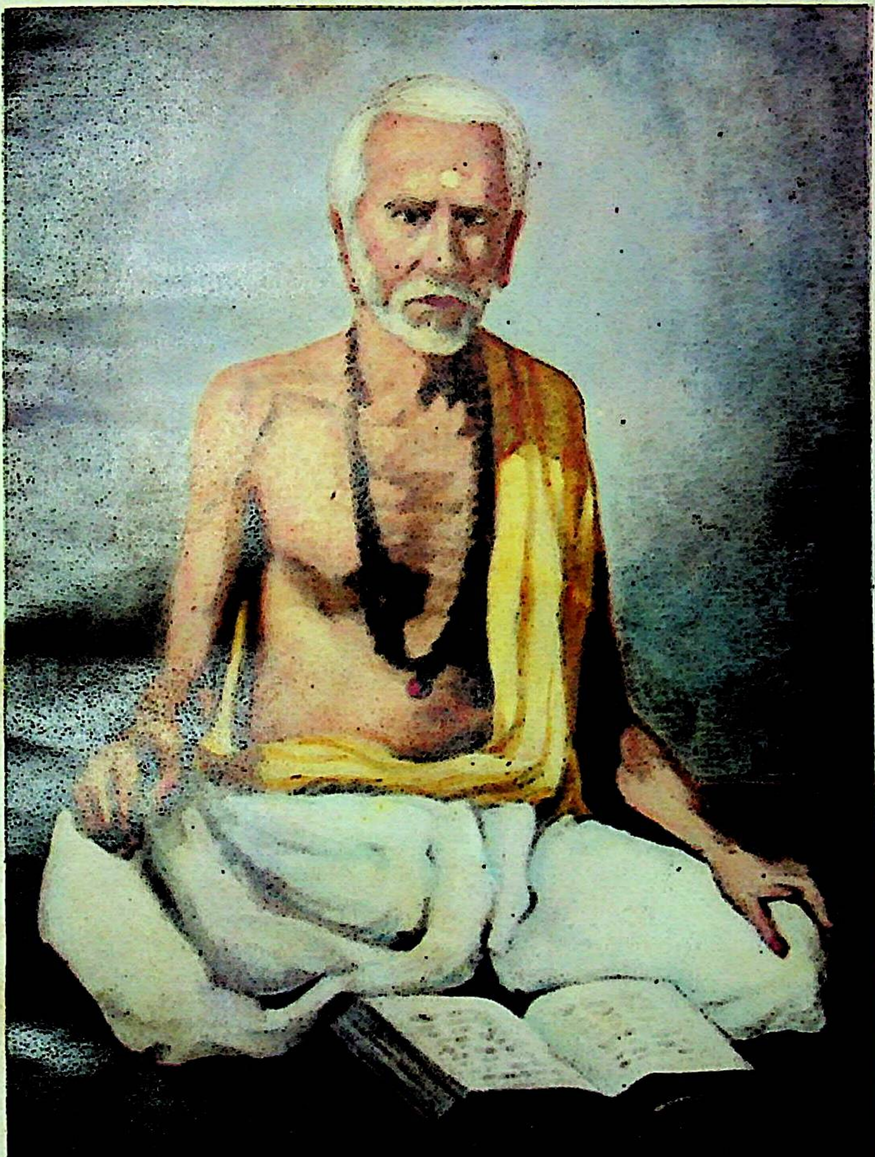
स्व० श्री पं० गिरिजादत्त मिश्र

को सादर

समर्पण

आपका पावन मनोरथ ही मुझे काशी में लाया ।
सुप्त जो थी भावना दे भावना उसको जगाया ।।
हे पिता ! भूतल के मेरे ईश ! मैंने जो किया है ।
वह **समर्पण** आपका ही आपको अब कर दिया है ।।

रामजन्म



प्राक्कथन

ज्योतिषशास्त्र के उपलब्ध संहिता ग्रन्थों में नारदीयसंहिता का अप्रतिम स्थान है। वराहमिहिर ने अपने पूर्ववर्ती संहिताचार्यों में नारद को भी गिनाया है। वराहमिहिर के पूर्ववर्ती संहिताकारों में एक मात्र नारद की ही संहिता ऐसी है जिसमें अधिकांश विषयों का समावेश है। नारदसंहिता के अवलोकन से ही यह विदित हो पाता है कि अति प्राचीन काल से ही ज्योतिष के संहिता-स्कन्ध के अन्तर्गत कितने विषयों का समावेश होता था। परवर्ती काल के संहिता साहित्य के लिए नारदसंहिता को एक उपयोगी ग्रन्थ के रूप में माना जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वराहमिहिर ने भी नारदसंहिता से बृहत्संहिता के कई अध्यायों के लिए विषय सामग्री प्राप्त की थी।

इतनी महत्त्वपूर्ण रचना का अद्यावधि कोई भी पाठ-समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ है। प्रस्तुत संस्करण में यथोपलब्ध पाण्डु-लिपियों के आधार पर समालोचनात्मक दृष्टि से यथासंभव शुद्ध पाठ का निर्धारण करते हुए पाद-टिप्पणियों में पाठ-भेद भी दिया गया है। इस ग्रन्थ की आद्यावधि केवल एक वार इसकी भाषा-टीका छपी है जो प्रायः अशुद्ध है। प्रस्तुत संस्करण में राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरल शुद्ध अनुवाद किया गया है। जहाँ अपेक्षित है वहाँ श्लोक के पश्चात् भावानुसार अन्वय प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थ के अन्त में श्लोकानुक्रमणी भी दी गयी है। इस प्रकार यह प्रयास किया गया है कि नारदसंहिता का यह संस्करण ज्योतिष-जगत के आधुनिक विद्वानों, विद्यार्थियों एवं प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्येताओं सहित सामान्य जनता के लिए भी उपयोगी हो सके।

प्रस्तुत ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को तैयार करने तथा प्रूफ-संशोधन आदि में डॉ० महेशचन्द्र जोशी, एम. ए., आचार्य, पी. एच., डी. पुराण शोध विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा पं० सत्येन्द्र मिश्र ज्योतिष शास्त्राचार्य, शोध-छात्र तथा पं० विपिन विहारी मिश्र ज्योतिषाचार्य, शोध-छात्र, ज्योतिष-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने सहयोग दिया है। अतः मैं इनके सतत अभ्युदय की आकांक्षा करता हूँ। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में वाराणसी के प्रख्यात प्रकाशक चौखम्भा संस्कृत संस्थान के स्वामी श्री मोहनदास जी गुप्त तथा उनके चि० राजेन्द्र कुमार के सहयोग की सराहना के साथ ही हम इस संस्थान के निरन्तर विकास की कामना करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेस के संचालक श्री ब्रजरत्न दास जी एवं अन्य कर्मचारियों ने भी प्रचुर सहयोग दिया है, जिसके लिए ये सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं।

पाण्डुलिपि के संशोधन एवं संपादन में सब प्रकार की सचेष्टताओं के विपरीत भी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हैं जिनके लिए शुद्धिपत्र दे दिया गया है तथापि जो कुछ त्रुटियाँ शेष रह गयी होंगी उनके लिए क्षमा-याचना करते हुए हम यह आशंसा व्यक्त करते हैं कि आगामी संस्करण में यथासंभव सभी त्रुटियों का परिहार कर दिया जायेगा।

रामजन्म मिश्र

विहङ्गम दृष्टि

ज्योतिष और ज्यौतिष इन दोनों ही शब्दों का प्रयोग मिलता है। 'ज्योतिः अधिकृत्य कृतं शास्त्रं ज्योतिषं शास्त्रम्' इस अर्थ में 'अण्' प्रत्यय होकर ज्यौतिष बनेगा। तथा 'ज्योतिः अस्ति अस्मिन्पदार्थे' 'अर्शादिभ्यो अच्' इस सूत्र से ज्योतिषम् बनेगा। "ज्योतिषां सूर्यादि नवग्रहाणां अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्राणां बोधकं शास्त्रम्" अर्थात् सूर्यादि ग्रह एवं अश्विन्यादि नक्षत्रों तथा धूमकेतु का बोध कराने वाले कालावबोधक शास्त्र को ज्योतिषशास्त्र कहते हैं। यह शास्त्र वेद भगवान का श्रेष्ठ नेत्र स्वरूप है।

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी,
श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ।
या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका
पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः॥

(श्रीभास्कराचार्य)

ज्योतिष शास्त्र के महत्त्व के विषय में कुछ आधुनिक वैज्ञानिकों को इसकी वैज्ञानिकता पर भ्रम है और वे ज्योतिष शास्त्र को विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं मानते। इसका कारण मात्र इतना ही है कि प्रथम तो उनकी बुद्धि आङ्ग्ल भाषाविद् होने के नाते कुण्ठित मात्र एक ही दिशा में सोचने की हो गई है साथ ही साथ संस्कृत भाषा की अज्ञानता के कारण भी वे इसे समझ पाने में असमर्थ होते हैं। ज्योतिषशास्त्र विज्ञान[1] सम्मत होने के साथ ही साथ भारतीय धर्म दर्शन से भी जुड़ा हुआ है और इसके विना धर्मकृत्यों का संपादनादि असम्भव हो जाता है।

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्।
विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्त्तं न सिध्यति॥

ज्योतिषशास्त्र के प्रसंशक अनेक वाक्य तथा श्लोक प्रमाण भूत मिलते हैं और इसके द्वारा 'इसके ज्ञान के द्वारा' स्वर्गादि उत्तम लोक की प्राप्ति भी होती है, तथा ज्योतिष विद्या का पढ़ने वाला कभी

---

१. पूर्ण जानकारी के लिए व्याख्याकार द्वारा प्रकाशित होनेवाले "भारतीय ज्योतिष की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि" की प्रतिक्षा करें।

नरक का भागी नहीं बनता और ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन करने वाले व्यक्ति का लोक परलोक दोनों ही सिद्ध होता है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमाङ्गतिम् ॥
(आचार्य गर्ग)

न साम्वत्सरपाठी च नरके परिपच्यते ।
ब्रह्मलोकप्रतिष्ठां च लभते दैवचिन्तकः ॥
(वाराहमिहिर)

ज्योतिषशास्त्र वेदाङ्ग होने के कारण वेद के ही समान इसकी भी प्राचीनता प्रमाणित होती हैं। कुछ विदेशीय विचारकों ने इसे ५००० वर्ष प्राचीन माना है तो कुछ भारतीय विद्या व्यसनियों ने साधिकार प्रमाणपुरस्सर इसकी प्राचीनता का डिंडिम घोष २६००० वर्ष माना है। भारतीय परम्परा और ज्ञान के आधार पर वेद अपौरुषेय तथा अनादि अनन्त है और इस कल्प के आरम्भ से अब तक लगभग २ करोड़ वर्ष व्यतीत हो चुका इसे आधुनिक वैज्ञानिक भी मानते हैं।

ग्रहर्क्षदेवदैत्यादि सृजतोऽस्य चराचरम् ।
कृताद्रिवेदादिव्याब्दाः शतघ्नावेधसो गताः ॥
(सू० सि० १।२४)

अर्थात् ब्रह्मा को अपने इस कल्प के आरम्भ से चराचर सृष्टि की रचना में ४७४०० दिव्य वर्ष का समय देना पड़ा अर्थात् सौर वर्ष में ४७४०० × ३६० = १७०६४००० वर्ष लगा। इससे भी इस ज्योतिष शास्त्र के रचना काल की पुष्टि होती है चाहे वह आरम्भ में बीज रूप हीं क्यों न रहा हो।

इस ज्योतिष शास्त्र के मुख्य १८ आचार्य सूर्य, पितामह, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अङ्गिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु और शौनक हैं।

सूर्यः पितामहोव्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः ।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिराः ॥
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः ।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिः शास्त्रप्रवर्त्तकाः ॥

नारदीय संहिता में भगवान् नारदजी ने भी अष्टादश ऋषि प्रणीत ही ज्योतिष शास्त्र को माना है किन्तु उनके अनुसार ब्रह्माजी आचार्य (बृहस्पति) वशिष्ठ, अत्रि, मनु, पौलस्त्य, लोमश, मरीचि अङ्गिरा वेदव्यास नारद शौनक और भृगु ये १८ आचार्य प्रमुख हैं :—

ब्रह्माचार्यो वशिष्ठोऽत्रिर्मनुः पौलस्त्यलोमशौ ।
मरीचिरंगिराव्यासो नारदो शौनको भृगुः ॥
च्यवनो यवनो ग र्गः कश्यपश्च पराशरः ।
अष्टादशैते गम्भीरा ज्योतिः शास्त्र प्रवर्त्तकाः ॥

(ना० सं० १।२-३)

नारद संहिता के अनुसार सूर्य को सम्भवतः प्रवर्त्तक नहीं अपि च उन्हें मूल अधिष्ठाता के रूप में मान कर ही ब्रह्माचार्यो···इत्यादि कहा गया है ।

ज्योतिष जगत में ज्योतिष के प्रमुख ३ विभाग सुप्रसिद्ध हैं—

१—सिद्धान्त, २—संहिता, ३—होरा ।

ज्योतिः शास्त्रमनेकभेदवितत्तं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम् ।

(वाराहमिहिर)

सिद्धान्तसंहिता होरा रूपं स्कन्धत्रयात्मकम् ।

(नारदसंहिता)

सृष्टि के आरम्भ में जब जीव संसार के नये-नये अनुभवों को लेकर कार्य क्षेत्र में आता है तो कठिनाइयों का समाधान तथा अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति विभिन्न रीतियों से करता है। उन्हीं सम्बन्धों का अनुबन्ध स्वरूप प्रथम संहिताशास्त्र ज्योतिष का आविर्भाव हुआ। इसमें स्वप्न द्वारा शुभाशुभ फलों का ज्ञान, स्वर ज्ञान के द्वारा शुभाशुभ ज्ञान, अङ्गस्फुरण, पल्लीपतन ग्रहचार, शुभ शकुन, उत्पातदर्शन, वृष्टिज्ञान, सामुद्रिक विद्या आदि के द्वारा शुभाशुभ ज्ञानादि का विस्तृत विवेचन मिलता है।

आज संहिता ग्रन्थों में बृहत्संहिता, बार्हस्पत्यसंहिता, गर्गसंहिता, गुरुसंहिता, बृहस्पतिसंहिता, नारदसंहिता, महासंहिता, नारदीयसंहिता वाराहसंहिता, भृगुसंहिता तथा रावणसंहिता वृद्धवसिष्ठसंहिता, लोमश-

संहिता, वृद्धगर्गसंहिता, गौतमसंहिता, आदि के नाम सामने आते हैं किन्तु इनमें सर्व सुलभ तथा लोक प्रचलित नारदसंहिता और बृहत्संहिता ही है। भृगुसंहिता की पुस्तक अपूर्ण रूप में यत्र यत्र उपलब्ध है तथा रावण संहिता की एकमात्र प्रति देवरिया जिले के गुरवलिया ग्राम में पं० वागीश्वरी पाठक जी के पास विद्यमान है।

उपरोक्त सामान्य विवेचनाओं के द्वारा थोड़ा परिचय देकर अब मैं मुख्यरूप से नारदसंहिता के विवेचना में आरहा हूँ। नारदसंहिता तथा नारदीय संहिता उन दोनों ही नामों से दो संहिता ग्रन्थ नहीं अपि च ये दोनों एक ही नारद मुनि प्रणीत हैं। कालभेद या लेखनादि भेद से कुछ श्लोकों में विभिन्नता नाम मात्र की है जिसे यथा स्थान ग्रन्थ में स्पष्ट कर दिया गया है। एक नारद पुराणान्तर्गत भी नारदसंहिता है और उसके श्लोक भी समानार्थक प्रायः हैं उसका प्रकाशन यथा शीघ्र प्रकाश में 'नारदीय ज्योतिष' के नाम से आने की सम्भावना है।

नारदसंहिता के अन्दर कुल ५५ अध्यायों का समावेश है जिसे ग्रन्थारम्भ में ही सूची के रूप में उपस्थित कर दिया गया है। कुछ प्रतियों में अध्याय क्रम न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते हैं किन्तु वर्ण्य विषय समान हैं। 'संज्ञान्युक्तानि···' से आरम्भ कर 'सप्तविंशद्भिरध्यायै-र्नारदीयाख्यसंहिता।' के द्वारा नारदसंहिता के अन्तर्गत कुल ३७ अध्याय ही कहा गया है। जिसमें गृहप्रवेशाध्याय और सद्मलक्षणाध्याय को पृथक् कहा है। मिश्र प्रकरण में जिन विषयों का समावेश किया गया है उन्हें अन्य प्रतियों के आधार पर तथा वर्तमान आधार प्रति के अनुसार ही ५५ अध्यायों में कर दिया गया है। यहां प्रत्येक अध्याय के अन्दर आये मुख्य विषयों पर थोड़ा प्रकाश डालना आवश्यक समझ कर तथा यत्र तत्र उन विषयों की तुलना अन्य संहिताओं से करना आवश्यक समझ पाठकों के सामने उपस्थित कर रहा हूँ।

१—प्रथम अध्याय मङ्गलाचरण से आरम्भ होता है और इसमें कुल १६ श्लोक शास्त्रोपनयनाध्याय के नाम से दिए गये हैं। वाराही संहिता (बृहत्संहिता) में भी ११ श्लोकों में उपनयनाध्याय से ही प्रथम अध्याय का बोध कराया गया है। वाराहमिहिर ने "आब्रह्मादि-विनिःसृतमालोक्य ग्रन्थ विस्तरं क्रमशः' के द्वारा अपने ग्रन्थ को पुरातन संहिता ग्रन्थों का संग्रह माना है किन्तु नारदसंहिता में न कह कर···'तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणारचितं पुरा' कहते हुए आगे कहते हैं 'तं विलोक्याथ तत्सूनुर्नारदो मुनिसत्तमः। उक्त्वास्कन्धद्वयं

पूर्वं संहितास्कन्धमुत्तमम्' इससे यह भी स्पष्ट होता है कि नारद मुनि द्वारा प्रणीत सिद्धान्त तथा होरा ग्रन्थ भी था जो सम्प्रति दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है।

२—द्वितीय अध्याय में सूर्य चार २७ श्लोकों में दिया गया है। प्रथम श्लोक 'चैत्राद्येष्वपि मासेषु···' के द्वारा चैत्रादि महीनों में मेषादि राशियों की संक्रान्ति यथा क्रम से होती है और चैत्र शुक्ल प्रतिपद को जो वार होता है वही ग्रह वर्ष का राजा होता है कहा गया है। वाराह मिहिर ने उत्तरायण दक्षिणायन 'आश्लेषार्द्धाद्दक्षिणमुत्तरमयनं रवेर्धनिष्ठाद्यम्' कहा है। नारदसंहिता के इस अध्याय में राजा, मन्त्री, सेनापति रसेशधान्येश आदि को बतलाया गया है जो कल्पलता से मिलता है। सूर्य के अन्दर छिद्र या दण्डादि के दर्शन का फल भी इसमें सुन्दर दिया गया है।

चन्द्रचाराध्याय में चन्द्रमा के नतोन्नत शृङ्ग के द्वारा होने वाले शुभाशुभ फलों का वर्णन १० श्लोकों में किया गया है।

भौमचाराध्याय में ११ श्लोकों में मङ्गल के चार का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु का चार भी क्रमशः १५, ३१, ९, ६, १३ और २० श्लोकों में दिया गया है जो थोड़े में प्रभावकारी है। उपरोक्त सूर्यादि ग्रहों का चार वर्णन द्वितीय अध्याय में किया गया है।

३—तीसरे अध्याय में प्रभवादि वार्हस्पत्य संवत्सरों का फल दिया गया है। तथा वाराही संहिता में केतु चार के बाद अगस्त्य चार तथा सप्तर्षि चार दिया गया है जो नारदसंहिता में नहीं है। तीसरे अध्याय में कुल श्लोकों की संख्या ८५ है।

४—चौथा तिथि लक्षणाध्याय से ३८ श्लोकों में तिथियों की संज्ञा, उनका शुभ अशुभ विवेचन तथा कार्य विशेष से तिथियों का वर्गीकरण किया गया है।

५—पांचवें अध्याय के अन्दर २० श्लोकों में वार का लक्षण उनका शुभाशुभ तथा वार परक कार्यों का वर्गीकरण आदि किया गया है।

६—छठवां अध्याय नक्षत्र फलाध्याय है इसमें ६९ श्लोकों के द्वारा २८ नक्षत्रों के स्वामी, तथा नक्षत्रों की मृदु ध्रुव क्षिप्रादि संज्ञा तथा कार्य विशेष से नक्षत्रों का वर्गीकरण दिया गया है। यह मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त ग्रन्थों में मिलता है।

७—योग प्रकरणाध्याय ८ श्लोकों में योगों के स्वामी उनका शुभाशुभत्व तथा इसमें खार्जूरिक यन्त्र के द्वारा २८ नक्षत्रों का शुभाशुभ फल भी कहा गया है।

आठवें अध्याय में ४ श्लोकों के द्वारा करणों के अधिपति चर स्थिरकरणों के नाम तथा भद्राकरण का शुभाशुभ फल बतलाया गया है। ६ वाँ मुहूर्त्ताध्याय है इसमें दिन और रात्रि के मुहूर्तों का अलग-अलग वर्णन तथा उनका नाम और फल बतलाया है। दशवें अध्याय में क्रकच संवर्त्तक योग का वर्णन दग्ध योग तथा आनन्दादिक २८ योगों का नाम दिया गया है।

संक्रान्ति प्रकरण ११ वाँ है जिसमें २६ श्लोकों में संक्रान्तियों के नाम उनका फल तथा समय के आधार पर उनके वाहन तथा शुभाशुभ फलादि का वर्णन किया गया है।

बारहवाँ गोचराध्याय १३ श्लोकों में तथा १३ वाँ ध्याय ८ श्लोकों में कहा गया है। तेरहवें अध्याय में तारा का 'जन्म सम्पद्विपद्...' वर्णन, फल आदि कहा गया है। और १४ वें अध्याय में मेष आदि १२ राशियों में होने वाले कार्य लग्न के अनुसार तथा शुभ अशुभ लग्नों का फल तथा शुभ अशुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट लग्नफल विचार किया गया है। इसमें कुल श्लोक संख्या २४ है। पन्द्रहवें अध्याय में ३४ श्लोकों के द्वारा नक्षत्रभेद एवं कालभेद से प्रथमार्त्तव का फल कहा गया है। सोलहवें अध्याय में आधानमुहूर्त्त तथा १७ वें में पुंसवन संस्कार का विषय संक्षेप में दिया गया है। अठारहवें अध्याय के अन्दर ६ श्लोकों में सीमन्त संस्कार का शुभाशुभ विचार दिया गया है। तथा १६ वाँ अध्याय मात्र १ श्लोक का है जिसका सम्बन्ध जातकर्म संस्कार से है। २० वें अध्याय में नामकरण का मुहूर्त्त तथा उसका फलादि लिखा गया है। इसमें ४ श्लोक मात्र हैं। २१ वाँ अध्याय नवान्नप्राशन या अन्नप्राशन तथा २२ वाँ अध्याय चौलकर्म संस्कार का है। अन्नप्राशन में ६ तथा चौल में ८ श्लोकों में विवरण दिया गया है। २३ वाँ अध्याय ४ श्लोकों का है तथा इसमें मङ्गल अंकुरार्पण का विषय वर्णित है। २४ वाँ अध्याय उपनयन संस्कार से सम्बन्धित है। इसमें कुल ३५ श्लोकों में उपनयन का समय, गुरुशुद्धि, तारा शुद्धि, मुहूर्त्त विचार, नक्षत्र लग्न वार मुहूर्त्त आदि का तथा लग्नगत ग्रहों के शुभाशुभ फल का विवेचन सुन्दर ढंग से किया गया है। उपनयन संस्कार ब्राह्मणों के लिए ही नहीं अपि च द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य)

मात्र के लिए एक अत्यावश्यक उत्तम संस्कार है अतः इसका विचार सुन्दर एवं सरल ढंग से आचार्य ने किया है। २५ वाँ अध्याय छुरिका बन्धन का है जो क्षत्रियों के लिए प्रधान संस्कार है। ११ श्लोकों में मुहूर्त आदि का विषय दिया गया है। २६ वाँ अध्याय समावर्तन संस्कार का है तथा इसमें ४ श्लोक हैं। २७ वाँ अध्याय विवाह प्रश्न लग्नाध्याय के नाम से १३ श्लोकों में दिया गया है। इसके अन्दर प्रश्न लग्न या जन्म लग्न से कन्या के लिए विवाह की दिशा समयादि का ज्ञान तथा शुभाशुभ फलों का वर्णन किया गया है। २८ वाँ अध्याय कन्या वरणाध्याय ८ श्लोकों में दिया गया है। इस अध्याय में लड़की देखने (कन्यावरण) का मुहूर्त का विचार किया गया है। २९ वाँ अध्याय विवाह का है। इसमें विवाह का नक्षत्र गुरु शुक्र चन्द्र शुद्धि लग्न मुहूर्त्त नक्षत्रादि का ज्ञान मास का नक्षत्र लग्न विधिनिषेध आदि कुल १६२ श्लोकों में विस्तारपूर्वक बतलाया गया है। नक्षत्रानुसार कन्या की पत्री से सास ससुर जेठ तथा देवर के शुभाशुभ का विचार। अभिजित लग्न की महत्ता, शंकु का निर्माण आदि का विवेचन किया गया है। ३० वाँ अध्याय १९ श्लोकों का है इसमें देवप्रतिष्ठा का विषय मुहूर्त्त आदि दिया गया है।

३१ वाँ वास्तु विधानाध्याय के नाम से ६२ श्लोकों में वर्णित है। इसके द्वारा भूमि शोधन से लेकर निर्माण, शिलान्यास, पिण्डानयन, वृक्षारोपण वाटिका निर्माणादि का कार्य दिया है। भूमिशोधन के सम्बन्ध में 'निर्माणेपत्तनग्राम गृहादीनां समासतः। क्षेत्रमादौ परीक्षेत गन्धवर्णरसप्लवैः' इसके अनुसार गन्ध वर्ण रस और प्लव इन चार विधियों से भूमि शोधन के लिए लिखा है।

गृहनिर्माण का कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण होने के साथ ही साथ कठिनाइयों से परिपूर्ण भी है। इसीलिए दत्तात्रेय ने सर्प को गुरु मान कर गृहनिर्माण से सन्यास ले लिया किन्तु गृहनिर्माण का कार्य अति पुनीत होता है। आचार्य वाराहमिहिर ने अपनी बृहद्संहिता में "...'अध्यध्वनिश्रमविनोदमुपागतानां धत्ते श्रियं किमुत शाश्वतमन्दिरेषु' २।५२.८६ ठीक ही कहा है कि मार्ग में सुख का साधन होने पर आनन्ददायक होता है तो साधन सम्पन्न उत्तम गृह में क्यों नहीं सुख प्राप्त होगा। गृहनिर्माणार्थ पहले भूमि की परीक्षा करके उचित उत्तम तथा अपने अनुकूल पिण्ड (क्षेत्रफल) का आनयन करना चाहिए। तदनन्तर शिलान्यास पूर्वक उत्तम मुहूर्त्त में गृह का निर्माण कर वास्तु

शान्ति पूर्वक गृह में प्रवेश करना चाहिए। भूमि शोधन की भारतीय विधि से हम इतना ही जानना चाहते हैं कि भूमि पर गृह निर्माण से गृह की आयु उत्तम तो होगी। अतः भूमि की दृढ़ता का ज्ञान प्राप्त करते हैं जिसे आज के वैज्ञानिक वोरिङ्ग द्वारा जानते हैं। दूसरी बात उस भूमि पर वास करने वाला व्यक्ति सुखी तो रहेगा और उसके आयुष्यादि की हानि तो नहीं होगी। इन्हीं बातों का ज्ञान भूमि शोधन की सभी विधियों से हम करते हैं और सामञ्जस्य भी आधुनिक विधि से होता है। वास्तु प्रकरण में वास्तु के उपयोगी काष्ठादि का विचार, इष्टिकानिर्माण, आरामादि निर्माण तथा उपवन आदि लगाने की समस्त विधियों का यथा स्थान उत्तम समावेश मिलता है।

३२ वें अध्याय में जिसका नाम वास्तुलक्षणाध्याय रक्खा है २० श्लोकों में वास्तु का शुभाशुभ लक्षण तथा उसकी शान्ति का विचार किया गया है। किस दिशा में किस देवता की पूजा वास्तु पूजन काल में करना चाहिए यह बड़े ही उत्तम प्रकार से चक्र के द्वारा समझाया गया है। ३३ वाँ अध्याय का विषय यात्रा है इसे ६२ श्लोकों में विस्तार पूर्वक बतलाया गया है। 'अथ यात्रा यथा नृणामभीष्ट फल सिद्धये। स्यात्तथा ··।' अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य की यात्रा पूर्ण फलदायिनी हो उसे बतला रहे हैं। इससे यात्रा का महत्त्व ज्ञात होता है। शुभ काल में यात्रा करने से कार्य की सफलता होती है तथा अशुभ तिथि नक्षत्रादिकों की यात्रा कष्टद होती है।

पष्ठ्यष्टमी द्वादशी च रिक्तामापूर्णिमासु च।
यात्राशुक्लप्रतिपदि निधनायाधनाय च ॥ ३ ॥

इसके द्वारा ज्ञात होता है कि षष्ठी, अष्टमी द्वादशी चौथ चतुर्दशी नवमी अमावस्या पूर्णिमा तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा में यात्रा करने से मृत्यु या धन की हानि होती है। इसी प्रकार यात्रा में दिक्शूल का विचार, नक्षत्र का विचार कार्य विशेष से अलग २ नक्षत्र तथा दिशा के अनुसार अलग अलग नक्षत्रों का वर्गीकरण किया गया है। कुछ नक्षत्र ऐसे भी हैं जिनके सम्बन्ध में मतभेद हैं। जैसे कृत्तिका को नारद संहिता में पूर्वदिग्द्वार नक्षत्र में गणना की गई है किन्तु वशिष्ठ संहिता में कृत्तिका नक्षत्र यात्रा में वर्जित माना है। इसी प्रकार पुनर्वसु नक्षत्र को वशिष्ठ संहिता ने उत्तम माना है और नारद संहिता ने उसका निषेध किया है। नारद जी ने ललाट योग का वर्णन यात्रा के लिए

विशेष किया है। यह लग्न के आधार पर देखा जाता है। दिशाओं के स्वामी 'दिगीशा सूर्यशुक्रारराह्वार्कीन्दुज्ञ सूरयः।' कहा है जिसे वाराही संहिता में 'प्रागाद्यारविशुक्र लोहिततमः सौरिन्दुवित्सूरयः' कहा है। अतः यदि लग्न में सूर्य हो तो पूर्व दिशा की यात्रा में ललाट योग होगा इसलिए यात्रा नहीं करना चाहिए उस लग्न को त्याग कर यात्रा करे क्यों कि 'दिगीश्वरेललाटस्थे यातुर्न पुनरागमः॥' ललाट योग की यात्रा कष्टदायिनी होती है। इस प्रकार यात्रा में शुक्र का विचार विशेष कर माङ्गलिक यात्रा में वधू प्रवेशादि में तथा प्रथम यात्रा में करना आवश्यक होता है। शुक्र यदि सम्मुख या दाहिने हो तो यात्रा नहीं करना चाहिए 'मूढे शुक्रे कार्यहानिः प्रति शुक्रे पराजय' इसी प्रकार मुहूर्त्तचिन्तामणि में भी "दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणो यदिस्याद्गच्छे-युर्नहि शिशु गर्भिणी नवोढा। बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा चेद्वन्ध्या भवति हि गर्भिणीत्वगर्भा' इसका समर्थन किया है। नारदसंहिता में वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज और गौतम इन पाँच गोत्र वालों को शुक्र के सम्मुख दक्षिण का दोष नहीं लगता बतलाया गया है। तथा शुक्रान्ध में भी यात्रा करना बतलाया गया है। रेवती, अश्विनी भरणी कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्रों में शुक्र अन्धा रहता है अतः इन नक्षत्रों की यात्रा में भी शुक्र के सन्मुख या दक्षिण होने का दोष नहीं लगता है। तथा ब्राह्मण के शाप में, राजा के क्रोधित होने पर एक ग्राम में, विवाह की यात्रा-दुर्भिक्ष या राजभंग की स्थिति में भी शुक्र का दोष नहीं होता है।' इसी प्रकार यात्रा में वाहन विचार शकुन विचार लग्न विचार आदि प्रमुख विषयों का समावेश है। आचार्य गर्ग के द्वारा गर्ग संहिता के वाक्यों का समर्थन करते हुए नारदसंहिता में भी यात्रा काल में मन की स्वस्थता का महत्त्व दिया हुआ है। यदि मन शुद्ध है तो किसी कार्य के पूर्व स्वयं आभाष होता है कि यह कार्य होगा या नहीं। मन यदि किसी कार्य में नहीं सहमत हो तो उसे बलपूर्वक नहीं करना चाहिए जैसा की नारद संहिता का वाक्य है—

निमित्त शकुनादिभ्यः प्रधानेनोदयः स्मृतः।
तस्मात्प्रसवनायुः स्यात्फलहेतुर्मनोदयः॥

---

१. शुक्रास्ते लुप्तवर्षे वा वाल्ये वृद्धेऽथ वा भृगुः।
(ज्योतिष चन्द्रिका २५३ एवं मु. चि. ८।३)
नवोढा गमनं शस्तं यावत्पूर्णो न वत्सरः॥

किस दिशा में किस सवारी से कौन-सी वस्तु खाकर यात्रा करने से कार्य सिद्ध होगा। इसका भी वर्णन किया गया है। ३५ वें अध्याय के अन्दर १६ श्लोकों में वर्षा ज्ञान का विषय वर्णित है इसे सद्योवृष्टि लक्षणाध्याय के नाम से कहा है।

वर्षा ज्ञान के सम्बन्ध में नारद पुराण का वचन भी नारदसंहिता से मिलता है तथा वाराही संहिता आदि में भी विस्तृत विवेचन किया गया है यदि इसका पृथक् संग्रह हो जाय तो एक ग्रन्थ अलग से बन सकता है। वर्तमान युग में इस पर अनुसन्धान करना अत्यावश्यक हो गया है। इससे देश का बहुत बड़ा कल्याण हो सकता है। नारद संहिता में चन्द्रमा और शुक्र की स्थिति के अनुसार 'अल्पवृष्टिः पापदृष्टे प्रावृट्काले चिराद्भवेत्। चन्द्रवद्भार्गवे सर्वमेवं विधगुणान्विते' तथा नारद पुराण में 'अल्पवृष्टिः पापदृष्टे प्रावृट्कालेऽचिराद्भवेत्। चन्द्रश्चेद्भार्गवे सर्वमेवंविधगुणान्विते' यह दोनों वाक्य सामञ्जस्य रखते हैं किन्तु नारद पुराण में १८ श्लोकों में भी कुछ अधिक बातों का समन्वय किया हुआ है जिसका प्रकाशन शीघ्र ही किया जायेगा।

६ श्लोकों के द्वारा ३६ वाँ अध्याय कूर्म विभागाध्याय के नाम से कहा गया है। ३७ वाँ उत्पाताध्याय के नाम से १८ श्लोकों में कहा गया है इसमें उत्पात लक्षण तथा उसकी शान्ति आदि का वर्णन है। यथाः—'देवता यत्र नृत्यन्ति पतन्ति प्रस्खलन्ति च। मुहूरुदन्ति गायन्ति प्रस्विद्यन्ति हसन्ति च" ॥ १ ॥ तथा इस प्रकार के उपद्रवों के होने पर "गणेशक्षेत्रपालार्कदुर्गाक्षोण्यङ्गदेवताः। तासां प्रीत्यै जपः कार्यः शेषं पूर्ववदाचरेत्" ॥ १७ ॥ उचित प्रकार से श्रद्धापूर्वक शान्त्युपचार करना चाहिए।

३८ वें अध्याय में ११ श्लोकों के द्वारा काकमैथुन दर्शन का फल तथा उसकी शान्ति का विस्तृत निरूपण किया गया है।

संसार में तीन प्रकार के उत्पात कहे गये हैं 'उत्पातास्त्रिविधालोकेदिवि भौमान्तरिक्षजाः' इन उत्पातों का कारण बताते हुए गर्गाचार्य ने कहा है 'अतिलोभादसत्याद्वा नास्तिक्याद्वाप्यधर्मतः। नरापचारान्नियतमुपसर्गः प्रवर्तते'। आकाश में होने वाले उत्पातों को भौम कहा गया है। ये उत्पात प्रकृति प्रदत्त होते हैं और इनके द्वारा शुभ अशुभ का ज्ञान तथा अशुभ ज्ञान में उसकी शान्ति का उपचार बतलाया गया है। आचार्य वाराह मिहिर ने वृहत्संहिता में इन त्रिविध उत्पातों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है—

दिव्यं ग्रहर्क्षवैकृतमुल्कानिर्घातपवनपरिवेषाः ।
गन्धर्वपुरपुरन्दरचापादि यदान्तरिक्षं तत् ॥ ४ ॥
भौमं चरस्थिरभवं तच्छान्तिभिराहतं शममुपैति ।
नाभसमुपैति मृदुतां शाम्यति नो दिव्यमित्येके ॥ ५ ॥

(वा० सं० अध्याय ४५)

काक मैथुन (कौवे का जोड़ा) देखने का दोष बहुत है इसका प्रत्यक्ष अनुभव स्वयं हमने अपने जीवन में दो बार किया है तथा दोनों बार आराधना के आधार पर कष्ट से छुटकारा प्राप्त किया है। उपचार दोनों ही बार अलग अलग किया है। प्रथम बार काक मैथुन दर्शन से चिन्ताग्रस्त देखकर मेरे गुरु जी श्री पं० विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डेय जी ने स्वयं मुझे मुदित पाठ करने का आदेश दिया और वाल्मीकीय रामायण सुन्दर काण्ड के मुदित पाठ से मैं कष्ट मुक्त हो गया। यह घटना सन् १९४६ की है। इसके बाद पुनः यह स्थिति सन् १९७२ में उपस्थित हुई तब मैंने स्वयं पीताम्बरा (बगलामुखी) की आराधना से भयंकर उपस्थित कष्ट से छुटकारा पाया।

काक मैथुनादि का दोष अन्य संहिता ग्रन्थों में भी मिलता है यहाँ ग्रन्थान्तर से कुछ श्लोक उद्धृत कर रहा हूँ।

काकस्य मैथुनं पश्येत् काकः शिरसि चेद्विशेत् ।
शिरस्युरसिवा कुर्यात्पक्षाघातं नखैस्तथा ॥ १ ॥
विदारणं च कुरुते शयानं च स्पृशेद् यदि ।
तदावदेत्तु मरणं महारिष्टमथापि वा ॥ २ ॥
मध्यरात्रौ यदाकाको भाषते हेतुना विना ।
तद्गृहारिष्टमाचष्टे ग्रामारिष्टमथापि वा ॥ ३ ॥
आरोहयेद् गृहं यस्य कपोतो वा गृहं विशेत् ।
स्थानहानिर्भवेत्तस्य तदाऽनर्थकरं भवेत् ॥ ४ ॥
प्रवेशद्वारतोगच्छेत् मासमेकं विवर्जयेत् ।
द्वारान्तरे यदागच्छेत्षण्मासं तत्परित्यजेत् ॥ ५ ॥
शान्ति तत्र प्रकुर्वीत विधानेन घृतादिना ।

सप्तधान्यं तथा दद्यादभ्यङ्गञ्चैव कारयेत् ॥ ६ ॥
माषपिष्टेन काकस्य कृत्वा तु प्रतिमां नरः ।
गन्धपुष्पादिनाऽभ्यर्च्यमाष-भक्ताज्यमर्पयेत् ॥ ७ ॥
स्थापयेन्मृण्मयेपात्रे दक्षिणां चापि दापयेत् ।
दीपं सप्तमुखं कृत्वा बलिमध्ये प्रदीपयेत् ॥ ८ ॥
बलिं चतुस्पथे दद्याद्दक्षिणस्यां विचक्षणः ।
ततः स्नानं प्रकुर्वीत पञ्चगव्येन संयुतम् ॥ ९ ॥
मुखं विलोकयेदाज्ये शंकरः शंकरः जपेत् ।
अनेन तु विधानेन सर्वदोषो विनश्यति ॥ १० ॥

३९ वें अध्याय के अन्दर १३ श्लोकों में पल्लीपतन (छिपकली) तथा सरट (गिरगिट) के शरीर पर चढ़ने का दोष और उसकी शान्ति का विवेचन किया गया है। ४० वाँ अध्याय ११ श्लोकों में है। इसमें कपोत पिङ्गलादि पक्षियों के अचानक घर में प्रवेश कर लेने पर उसकी शान्ति आदि का विधान दिया गया है। यह बृहत्संहिता के उत्पाताध्याय से मिलता है।

४१ वें अध्याय में ६ श्लोकों में शिथिली -जनन के नाम से लिखा अपूर्व विषय है जो अन्यत्र नहीं मिलता। शिथिली जनन का तात्पर्य घर में रखे हुए किसी पदार्थ का अकारण ही गिरना है। इसे भी नारद संहिता में अपशकुन मानकर शान्ति का विधान लिखा है।

आगे चलकर ४२ वें अध्याय में ५ श्लोकों में निमित्त शान्ति नामक अध्याय का उल्लेख भी अपूर्व है किन्तु आज के युग के अनुसार यह व्यवहार बहिर्भूत जान पड़ता है। सम्भवतः इसी कारण इसका विवेचन बृहद् संहिता में नहीं मिलता है। ४३ वाँ अध्याय २७ श्लोकों में पूर्ण होता है। इसका नाम उल्कालक्षणाध्याय है। इसमें उल्का का विभिन्न स्वरूप तथा उसके दर्शन एवं पात का फल और उसकी शान्ति का विधान दिया गया है। उल्का से तात्पर्य तारा टूटना या बिजली का गिरना दोनों से इसका भाव लिया गया है। 'उल्का विद्युद-शन्याख्याः' यह उर्ध्वगामी भी होता है और अधोगामी भी होता है। लोक में यह भी ख्यात है कि किसी तेजस्वी पुरुष के जन्म के समय में अधोगामी तथा मृत्युकाल में उर्ध्वगामी उल्काओं का दर्शन होता है

अर्थात् इस चराचर जगत के जीवों का आवागमन का यह प्रत्यक्ष तेजस दर्शन है।

४४ वाँ अध्याय १८ श्लोकों में परिवेष लक्षणाध्याय के नाम से लिखा गया है। परिवेष के सम्बन्ध में लिखते हैं कि सूर्य या चन्द्रमा की किरणें उर्ध्वगामी होकर सूर्य या चन्द्रमण्डल को चारों ओर से घेर लेती हैं और इनके विभिन्न वर्ण विभिन्न प्रकार की सूचना देते हैं और उनके शुभाशुभ के आधार पर उनकी शान्ति का उपचार भी दिया गया है।

किरणा वायुनिहता उच्छ्रिता मण्डलीकृताः ।
नानावर्णाकृतयस्ते परिवेषाः शशीनयोः ॥

परिवेष का परिचय देते हुए वाराहमिहिर ने लिखा है :—

सम्मूर्छिता रवीन्द्वोः किरणाः पवनेन मण्डलीभूताः ।
नानावर्णाकृतयस्तन्वभ्रे व्योम्नि परिवेषाः ॥ १ ॥

वर्णों के आधार पर इनके विभिन्न नाम तथा गुणों का भी वर्णन वृहद्संहिता में मिलता है।

ते रक्तनील पाण्डुरकापोताभ्राभशवलहरितशुक्लाः ।
इन्द्रयमवरुणनिर्ऋतिश्वसनेशपितामहाम्बुकृताः ॥ २ ॥

आचार्य कश्यप ने अपने काश्यप संहिता में ऋतुओं के आधार पर इनका नामकरण तथा गुण कहा है। यथा—

शिशिरे चापवर्णश्च वसन्ते शिखिसन्निभः ।
ग्रीष्मे रजतसङ्काशः प्रावृट्तैलसमप्रभः ॥
गोक्षीरसदृशः शस्तः परिवेषः शरत्स्मृतः ।
हेमन्ते जलसंकाशः स्वकाले शुभदः स्मृतः ॥ इति ।

फल बतलाते हुए गर्गाचार्य ने—

'दिवासूर्ये परीवेषो रात्रौ चन्द्रे यदा भवेत् ।
एकस्मिश्चेदहोरात्रे तदा नश्यति पार्थिवः ॥ इति ।

नारद संहिता में तिथियों के आधार पर तथा परिवेष में आये हुए नक्षत्रों तथा ग्रहों के आधार पर भी फलादेश किया गया है। यथा—
'पञ्चम्यादिषु तिसृषु ह्यशुभोनृपतेस्तथा'।

४५ वें अध्याय में कुल ८ श्लोकों में इन्द्रचाप लक्षणाध्याय के नाम से इन्द्रचाप (इन्द्र धनुष) का शुभाशुभ फलादेश लिखा हुआ है। इन्द्रचाप सूर्य के तीक्ष्ण किरणों से बादल में प्रति सूर्य दीख जाता है वह स्निग्ध वर्ण तथा बराबर दीखे तो शुभ होता है शुभ्र दर्शन हो तो उसका फल उत्तम तथा सुभिक्ष कारक होता है।

४६ वाँ अध्याय गन्धर्व नगर दर्शनाध्याय नाम से ४ श्लोकों में लिखा गया है। इस प्रकार का दृश्य रात्रि में या सन्ध्या काल में सफेद, लाल, पीला, काला दिखाई पड़ता है। इस वर्ष ईशानकोण में लगभग एक महीने तक यह दृश्य देखने को मिला (सन् १६८२ में) यह इन्द्र धनुष अग्नि की ज्वाला धूम आदि के सदृश दिखाई देता है या कोट तोरण ध्वज के आकार में भी दिखाई देता है। इसका फल भी राजा प्रजा को सुख या दुःख देने वाला होता है। ४७ वाँ अध्याय प्रति सूर्य लक्षणाध्याय है जो ४ श्लोकों में तथा निर्घात लक्षणाध्याय ६ श्लोकों में दिया गया है।

४६ वाँ अध्याय दिग्दाह लक्षणाध्याय का है जो ४ श्लोकों में लिखा गया है। ५० वाँ अध्याय रजो लक्षणाध्याय का है। इसमें कुल ७ श्लोकों में शुभाशुभ फलादेश किया गया है।

५१ वाँ अध्याय भूकम्पाध्याय का १० श्लोकों में वर्णित है। आज का विज्ञान भूकम्प में ज्वालामुखी को कारण मानता है किन्तु प्राचीन मान्यताओं के आधार कुछ और ही हैं। नारद संहिता में पृथ्वी के भार से खिन्न हुए शेषनाग के ऊँचे श्वास लेने के कारण भूकंप होता है जो संसार के लिए अशुभ फलदायक होता है। यथा—'भूभारखिन्न-नागेन्द्र दीर्घनिःश्वाससम्भवः। भूकम्पः सोऽपि जगतामशुभाय भवे-त्तदा॥ १॥' इसका फल प्रहर के आधार पर ब्राह्मणादि वर्णों के लिए तथा सन्धि काल में राजवर्ग के लिए बतलाया गया है। नक्षत्रों के आधार पर भी इसका फलादेश किया गया है तथा इसमें अभिजित की गणना भी की गई है। उपरोक्त घटनाओं का फल घटना के पाँच महीने के अन्दर होता है।

५२ वाँ अध्याय नक्षत्र जात फल या नक्षत्र गणाध्याय के नाम से २७ श्लोकों में कहा गया है। जैसे—'सुरूपः सुभगो रूक्षो मति-मान्भूषणप्रियः। अङ्गनावल्लभः शूरो यो जातश्चाश्विभेनरः।" अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक सुन्दर, ऐश्वर्यशाली, बुद्धि-

मान्, रुक्ष शरीर वाला, आभूषण का तथा स्त्रियों का प्रिय और शूरवीर होता है। इसी प्रकार शेष नक्षत्रों का फल भी लिखा हुआ है।

५३ वाँ अध्याय एक प्रकार से मिश्र प्रकरण या मलमासाद्यनेक लक्षणाध्याय के नाम से है जो ४० श्लोकों में लिखा गया है। प्रथम श्लोक के द्वारा संसर्प तथा अंहस्पति बतलाया है जिसे क्षयमास और अधिक मास कहते हैं। यथा:—'असंक्रान्ति द्विसंक्रान्तिः संसर्पांहस्पती-समौ' इत्यादि। आगे सूर्यादि ग्रहों की भूमि जैसे:—समुद्र के आसन्न की भूमि सूर्य चन्द्रमा की कही गई है। इस अध्याय में सौर संक्रान्ति के आधार पर शिवरात्रि (महाशिवरात्रि) व्रत कहा गया है अर्थात् माघकृष्ण १४ अर्ध रात्रि कालीन हो तो शिवरात्रि व्रत मानकर व्रत करने से अश्वमेध यज्ञ का फल व्रत करने वाले को प्राप्त होता है। उपरोक्त शिवरात्रि किसी किसी आचार्य के अनुसार चान्द्रमास के अनुसार लिखा गया है तथा सौर मास के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि होती है किन्तु श्लोक के द्वारा चान्द्र सौर मास का वर्गीकरण नहीं किया गया है यह एक मात्र कल्पना ही कहा जा सकता है। इससे यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि कभी शिवरात्रि माघ कृष्ण १४ को होती रही होगी जो सम्प्रति फाल्गुन कृष्ण में मनाई जाती है। आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी में कार्तिकेय पूजन, श्रावण शुक्ल पञ्चमी में नाग पूजन, भाद्र शुक्ल चतुर्थी को गणेश जी का पूजन, माघ शुक्ल सप्तमी को भगवान सूर्य देव का पूजन करना उत्तम बतलाया गया है। तिथि शून्य लग्न तथा, मास शून्य तिथियों के साथ ही साथ गण्डान्त दोष तथा उसकी शान्ति का उपचार भी बतलाया गया है।

इसके बाद ५४ वें अध्याय को मिश्रकाध्याय के रूप में २३ श्लोकों में तथा ५५ वें अध्याय को २१ श्लोकों में श्राद्ध लक्षणाध्याय के नाम से लिखा है।

नारदसंहिता अनुष्टुप् छन्द में लिखी गई है इसमें कहीं कहीं अन्य छन्द भी वर्तमान हैं जो नगण्य हैं। अध्याय क्रम से श्लोकों की संख्या नीचे लिखे अनुसार है।

क्र. सं.	अध्याय	श्लो. संख्या पूर्ण–अपूर्ण		विशेष
१	१	१६		
२	२	२६	१	सूर्यचार

क्र. सं.	अध्याय	श्लो. संख्या पूर्ण	अपूर्ण	विशेष
३	२	१०		चन्द्रचार
४	२	११		कुजचार
५	२	१५	१	बुधचार
६	२	३१	१	गुरुचार
७	२	६		शुक्रचार
८	२	६		शनिचार
९	२	१३		राहुचार
१०	२	१९		केतुचार
११	३	८५		
१२	४	३७		
१३	५	२०		
१४	६	६९		इसमें ४ एक पद के तथा २ श्लोक ३ पद के हैं।
१५	७	८		
१६	८	४	१	
१७	९	७		
१८	१०	२१		
१९	११	२६		
२०	१२	१३	१	
२१	१३	८		
२२	१४	२४		
२३	१५	३४	१	
२४	१६	५		
२५	१७	१		
२६	१८	६		
२७	१९	१		
२८	२०	४		
२९	२१	५	१	
३०	२२	८	१	
३१	२३	४	१	
३२	२४	३५	१	

क्र. सं.	अध्याय	श्लो. संख्या पूर्ण	अपूर्ण	विशेष
३३	२५	११	१	
३४	२६	३	१	
३५	२७	१३	१	
३६	२८	८		
३७	२६	१६२		इसमें २ एक पद २ तीन पद १ चार पद का है।
३८	३०	१६		
३६	३१	६२	१	
४०	३२	२०		
४१	३३	६२		इसमें २ एक पद के ३ तीन पद के हैं।
४२	३४	७	१	
४३	३५	१६		
४४	३६	६		
४५	३७	१७	१	
४६	३८	११		
४७	३६	१२	१	
४८	४०	१०	१	
४६	४१	६		
५०	४२	५		
५१	४३	२६	१	
५२	४४	१७	१	
५३	४५	८		
५४	४६	८		
५५	४७	४		
५६	४८	५	१	
५७	४६	५		
५८	५०	६	१	
५६	५१	६	१	
६०	५२	२७		
६१	५३	४०		इसमें १ एक पद १ तीन पद का है।

क्र. सं.	अध्याय	श्लो. संख्या पूर्ण-अपूर्ण	विशेष
६२	५४	२३	इसमें २ एक पद १ तीन पद का
६३	५५	२१	इसमें १ एक पद का तथा १ अतिरिक्त श्लोक टीका पूर्तिका है।

प्रयुक्त छन्द—पहले कहा जा चुका है कि इसमें बहुधा अनुष्टुप् छन्द का ही समावेश है। कहीं कहीं कुछ सामान्य अन्य छन्द भी आगये हैं अतः इसे अनुष्टुप् छन्द प्रधान ही कहा जायेगा।

समय—समय के विषय में कुछ भी कहना कठिन है। पूर्व के इतिहासकारों ने भी या तो इसका नाम ही नहीं दिया है और कहीं नाम दिया है तो समयादि की विवेचना से दूर ही रहे हैं। नारद संहिता की गणना आर्ष ग्रन्थों में है और इसके कर्त्ता महर्षि नारद जी ज्योतिष शास्त्र प्रवर्त्तकों में मुख्य रूप से आते हैं। नारद संहिता नारदपुराण से अतिप्राचीन रचना है यह निश्चय ज्ञान होता है। तथा यह रचना वाराहमिहिर से पूर्व का है।

भाषा—इसकी भाषा सरल होने पर भी कहीं कहीं अप्रचलित शब्दों का व्यवहार इसको कठिन बना दिया है अतः आज के सामान्य जन में कठिनाई का ध्यान रख कर ही भाषाबद्ध इसका अर्थ किया गया है। प्रार्थना (मङ्गल) श्लोक में घट घट व्यापक प्रभु या कहिए की प्रकृति की वन्दना की गई है।

अणोरणुतरः साक्षादीश्वरो महतो महान्।
आत्मागुहायां निहितो जन्तोर्जयन्यतीन्द्रियः॥

ग्रन्थ के अन्दर लिखित छन्दों में लालित्य या सरसता नाम की कोई वस्तु नहीं है। सरलता अवश्य है। नारदीय संहिता नारद संहिता के अतिरिक्त नारद पुराण भी नारद जी का मिलता है उसके अन्दर भी ज्योतिष के लगभग १ हजार श्लोक हैं। वे सभी श्लोक नारद संहिता से प्रायः मिलते जुलते हैं। कहीं कहीं तो ज्यों का त्यों समान श्लोक मिलता है और कहीं कहीं भाव सादृश्य है। नारदपुराण के इस ज्योतिष भाग का प्रकाशन कार्य भी आरम्भ है जो यथा शीघ्र जनता जनार्दन की सेवा में लाया जायेगा।

रामजन्म मिश्र

विषयानुक्रमणिका

—ooo—

॥ श्रीभास्करो विजयते ॥

नारदसंहिता

'विमला' हिन्दीटीकासहिता

प्रथमाध्यायः

टीकाकर्त्तुर्मङ्गलाचरणम्—

ऐन्द्रयामुखाब्धिकुरसान्द्रतमोनियम्य,
स्पर्शेन रञ्जितमिवाननमाशु कुर्वन् ।
छायासखः कमलिनीहृदयाधिदेवो,
भास्वान् विभासयतु मङ्गलमुज्ज्वलं नः ॥ १ ॥

प्राची दिशारूपी नायिका के मुखमण्डल पर बिखरे घने अन्धकार रूप केशों को नियन्त्रित करके, एवं अपने स्पर्श के द्वारा उसके मुखमण्डल को अनुरञ्जित करते हुए, छाया (सूर्य पत्नी तथा कान्ति) के मित्र कमलिनी के हृदयवल्लभ भगवानभास्कर हमलोगों के उज्ज्वल मङ्गल को उद्भासित करें ॥ ११ ॥

ग्रन्थकारकृतं मङ्गलाचरणम्—

अणोरणुतरः साक्षादीश्वरो महतो महान् ।
आत्मागुहायां निहितो जंतोर्जयत्यतीन्द्रियः ॥ १ ॥

अन्वयः—ईश्वरः अणोः अणुतरः महतः साक्षात् महान् अस्ति । जन्तोः गुहायाम् निहितः अतिन्द्रियः आत्माजयति इत्यन्वयः ।

विमला—सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथा महान से भी महान साक्षात् ईश्वर जो समस्त प्राणियों की अन्तरात्मा में प्रविष्ट और अतीन्द्रिय होकर आत्मरूप से विराजमान हो रहा है, वह सर्वोत्तम होने से विजयिनी (नमस्करणीय) है ॥ १ ॥

ज्योतिश्शास्त्रप्रणेतार[1]:—

ब्रह्माचार्यो वशिष्ठोऽत्रिर्मनुः पौलस्त्यरोमशौ[2]।
मरीचिरङ्गिराव्यासोनारदः शौनको भृगुः ॥ २ ॥
च्यवनो यवनो गर्गः कश्यपश्च पराशरः।
अष्टादशैते गंभीरा ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः ॥ ३ ॥

अन्वयः—ब्रह्मा, आचार्यः (सूर्यः), वशिष्ठः, अत्रिः, मनुः, पौलस्त्यः, रोमशः, मरीचिः, अत्रिः, अंगिरा, व्यासः, नारदः, शौनकः, भृगुः, च्यवनः, यवनः, गर्गः, कश्यपः, पराशरः, एते अष्टादश गम्भीराः ज्योतिःशास्त्र प्रवर्त्तकाः सन्ति।

विमला—१ ब्रह्मा, २ आचार्य (सूर्य), ३ वशिष्ठ, ४ अत्रि, ५ मनु, ६ पौलस्त्य, ७ रोमश, ८ मरीचि, ९ अंगिरा, १० व्यास, ११ नारद, १२ शौनक, १३ भृगु, १४ चयवन, १५ यवन, १६ गर्ग, १७ कश्यप, और १८ पराशर ये १८ प्रमुख ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्त्तक आचार्य हैं ॥ २–३ ॥

सिद्धान्तःसंहिता होरा रूपं स्कन्धत्रयात्मकं।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमनुत्तमम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—सिद्धान्तः, संहिता, होरारूपं, स्कन्धत्रयात्मकं ज्योतिः-शास्त्रम् वेदस्य अनुत्तमं निर्मलं चक्षुरितिकथ्यते (आचार्यैरिति शेषः)।

विमला—सिद्धान्त, संहिता और होरारूप स्कन्धत्रयात्मक उत्तम ज्योतिषशास्त्र वेद का निर्मल नेत्र है। ऐसा आचार्यों ने कहा है ॥ ४ ॥

अस्य शास्त्रस्य सम्बन्धो वेदाङ्गमिति[3] कथ्यते।
अभिधेयं च जगतः शुभाशुभनिरूपणम् ॥ ५ ॥

---

१. सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिरा ॥
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः ॥ महर्षिकश्यपः ॥

२. लोमशौ इति पाठान्तरम्।

३. छन्दःपादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥ पा॰ शि॰ ४१-४२
छन्द, कल्प, ज्योतिष, निरुक्त, शिक्षा और व्याकरण ये ६ वेदाङ्ग कहे गये हैं।

अन्वयः—अस्य (ज्योतिः शास्त्रस्य) सम्बन्धः वेदाङ्गमितिकथ्यते, जगतः शुभाशुभ निरूपणं अभिधेयं (नाम) अस्ति ।

विमला—इस शास्त्र का सम्बन्ध वेद से होने के कारण वेदाङ्ग नाम से इसे कहते हैं । संसार के शुभ अशुभ फलों का निरूपण करना इसका कार्य है ॥ ५ ॥

यज्ञाध्ययनसंक्रान्तिग्रहषोडशं[1]कर्मणाम् ।
प्रयोजनं च विज्ञेयं तत्तत्कालविनिर्णयात् ॥ ६ ॥

अन्वयः—यज्ञ, अध्ययन, संक्रान्ति, ग्रह, षोडश कर्मणां तत्तत्काल विनिर्णयात् अस्य प्रयोजनम् विज्ञेयम् ।

विमला—यज्ञ, अध्ययन, संक्रान्तिकाल, ग्रहस्थिति तथा षोडश संस्कारों के कार्यकाल का निर्णय करना इसका प्रयोजन जानना चाहिए ॥

विनैतदखिलं श्रौत[2]स्मार्त्त[3]कर्म न सिद्ध्यति ।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा ॥ ७ ॥

अन्वयः—एतद् (ज्योतिःशास्त्रं) विना श्रौत स्मार्त्त कर्म न सिद्ध्यति । तस्मात् हेतोः जगत् हिताय इदं पुरा ब्रह्मणा रचितम् ।

विमला—इसके विना सम्पूर्ण श्रौत तथा स्मार्त्त कर्म सिद्ध नहीं होते अतएव जगत के कल्याणार्थ ब्रह्मा ने इस ज्योतिषशास्त्र की प्रथम रचना की ॥ ७ ॥

तं विलोक्याथ तत्सूनुर्नारदो मुनिसत्तमः ।
उक्त्वा स्कन्धद्वयं पूर्वं संहितास्कन्धमुत्तमम् ॥ ८ ॥

---

१. गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिधे-
नामाख्यं सह निष्क्रमेण च पुनः…….इत्यादि ॥ संस्कारभास्कर ॥

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, व्रतबन्ध, वेदारम्भ के चार, समावर्तन, विवाह और दाहसंस्कार ये १६ संस्कार प्रचलित हैं । संस्कारदीपक के अन्दर ४८ संस्कारों का उल्लेख भी मिलता है । (सं० दी० पृ० २)

२. श्रौतसूत्रों के द्वारा विहित कर्म श्रौतकर्म कहे जाते हैं । जैसे—दर्श, पौर्णमास, चातुर्मास (वैश्वदेव, वरुण, प्रघास, शाकमेघ, शुनासीरीय) ।

३. स्मृति विहित गृह्यसूत्रादि के द्वारा होने वाले यावत्कर्म हैं उन्हें स्मार्त कर्म कहते हैं । जैसे—उपनयनादि १६ संस्कार ।

वक्ष्ये शुभाशुभफलज्ञप्तये देहधारिणाम् ।
होरा स्कन्धस्य शास्त्रस्य व्यवहारप्रसिद्धये ॥ ९ ॥

अन्वयः—तम् (ब्रह्मणानिर्मितम् : ज्योतिःशास्त्रम्) विलोक्य, तत्सूनुः (ब्रह्मणः सुतः) मुनिसत्तमः नारदः पूर्वं स्कन्धद्वयम् उक्त्वा उत्तमं संहितास्कन्धम्-उक्तम् । देहधारिणाम्, शुभाशुभफलज्ञप्तये होरा स्कन्धस्य व्यवहारप्रसिद्धये (च) वक्ष्ये ।

विमला—मुनिश्रेष्ठ. ब्रह्मपुत्र नारद जी ने उसका (पितामह सिद्धान्त, ब्रह्महोरादि ब्रह्मा के द्वारा उपदिष्ट ज्योतिष का) अवलोकन कर दो स्कन्धों (सिद्धान्त, होरा) की रचना के बाद उत्तम संहिता स्कन्ध को कहते हैं, जो मनुष्य जीवन के शुभ अशुभ फलों को जानने के लिए होरा स्कन्ध को व्यावहारिक सहयोग प्रदान करता है ॥ ८–९ ॥

संज्ञान्युक्तानि सर्वाणि सम्यक् ज्ञात्वा पृथक् पृथक् ।
शास्त्रोपनयनाध्यायो ग्रहचारोब्दलक्षणम् ॥१०॥
तिथिर्वारं च नक्षत्रं योगं तिथ्यर्द्धसंज्ञकम् ।
मुहूर्त्तोपग्रहोऽर्कस्य संक्रान्तिर्गोचरस्तथा ॥११॥
चन्द्रतारावला ध्यायः सर्वलग्नार्त्तवाह्वयः ।
आधानपुंससीमन्तो जातनामान्नभुक्तयः ॥१२॥
चौलाङ्कुरार्पणे मौंजीछुरिकाबंधने क्रमात् ।
समावर्तनवैवाहप्रतिष्ठाः सद्मलक्षणम् ॥१३॥
यात्राप्रवेशनं सद्यो वृष्टिकूर्म विलक्षणम् ।
उत्पातलक्षणं शान्तिर्मिश्रकं श्राद्धलक्षणम् ॥१४॥
सप्तत्रिंशद्भिरध्यायैर्नारदीयाख्यसंहिता ।
य इमां पठते भक्त्या स दैवज्ञो हि दैववित् ॥१५॥

अन्वयः—सम्यक् ज्ञात्वा सर्वाणि संज्ञानि पृथक् पृथक् उक्तानि । शास्त्रोपनयनाध्यायादिः स्पष्टम् ।

विमला—अलग अलग अच्छी तरह ज्ञान: प्राप्त कर सभी संज्ञायें कही गई हैं। यथा :—शास्त्रोपनयनाध्याय, ग्रहचाराध्याय, अब्दलक्षणाध्याय, तिथिलक्षणाध्याय, वारलक्षणाध्याय, नक्षत्र, योग, तिथ्यर्द्ध (करण)

प्रकरणाध्याय, मुहूर्तविचाराध्याय, उपग्रह, अर्कसंक्रान्ति, गोचरप्रकरण, चन्द्रताराध्याय, लग्नबलाध्याय, आर्त्तव, आधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चौल, मङ्गलाङ्कुरार्पण, मौंजी (उपनयन), छुरिकाबन्धन, समावर्त्तन, विवाह, प्रतिष्ठा, सद्मलक्षण, यात्रा विचार, गृहप्रवेशाध्याय, सद्यः वृष्टिविचार, कूर्मविभाग, उत्पातलक्षण, शान्ति मिश्रकाध्याय और श्राद्धलक्षणाध्याय इन ३७ अध्यायों की नारदीय-संहिता है। जो इसका भक्तिपूर्वक अध्ययन करता है वही दैवज्ञ दैवज्ञ होता है॥ १०-१५॥

त्रिस्कन्धज्ञो दर्शनीयः श्रौतस्मार्तक्रियापरः।
निर्दाम्भिकः सत्यवादी दैवज्ञो दैववित् स्थिरः॥ १६॥

इति श्रीनारदसंहितायां शास्त्रोपनयनाध्यायः प्रथमः॥ १॥

अन्वयः—श्रौतस्मार्तक्रियापरः त्रिस्कन्धज्ञः दर्शनीयः। निर्दाम्भिकः सत्यवादी दैवज्ञः स्थिरदैवविद् भवति।

विमला—श्रौत तथा स्मार्त क्रिया में कुशल त्रिस्कन्धज्ञ (सिद्धान्त, संहिता और होरा तीनों स्कन्धों का ज्ञाता) ज्योतिषी दर्शनीय होता है। एवं अहंकार से रहित सत्यवादी दैवज्ञ स्थिर दैवज्ञ होता है॥ १६॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में शास्त्रोपनयन
नामक प्रथमाध्याय समाप्त॥ १॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

(रविचारः)

चैत्राद्येष्वपि मासेषु मेषाद्याः संक्रमाः क्रमात् ।
चैत्रादितिथिवारेशस्तस्याब्दस्य त्वधीश्वरः ॥ १ ॥

अन्वयः—चैत्राद्येषु मासेषु क्रमात् मेषाद्याः संक्रमा अपि भवन्ति । चैत्रादि तिथिवारेशः तस्य अब्दस्य तु अधीश्वरः (भवति) ।

विमला—चैत्रादि मासों में क्रमशः मेषादि राशियों की संक्रान्ति होती है। तथा चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपद के दिन जो वार पड़ता है उस वार का अधिपति ग्रह उस वर्ष का अधीश्वर (राजा) होता है ॥ १ ॥

मेषसंक्रान्तिवारेशो भवेत्सोपि च भूपतिः[1] ।
कर्कटस्य तु वारेशो सस्येशस्तत्फलं ततः ॥ २ ॥

अन्वयः—यः मेषसंक्रान्ति वारेशः भवेत् च सोऽपि भूपतिः स्यात् । कर्कटस्य तु वारेशः सस्येशः ततः तत्फलम् ।

विमला—मेष संक्रान्ति का वारेश भी भूपति होता है। तथा कर्क संक्रान्ति का वारेश सस्येश (पूर्वधान्येश) होता है ॥ २ ॥

तुलासंक्रान्तिवारेशो रसानामधिपः स्मृतः ।
मकराधिपतिः साक्षाद्रसस्याधिपतिः क्रमात् ॥ ३ ॥

अन्वयः—तुलासंक्रान्ति वारेशः रसानाम् अधिपः स्मृतः । मकराधिपतिः साक्षात् क्रमात् रसस्य अधिपतिः (भवेत्) ।

विमला—तुला संक्रान्ति का वारेश रसाधिपति या रसेश कहलाता है तथा मकर-संक्रान्ति का वारेश भी रसाधिपति या निरसेश कहलाता है ॥ ३ ॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा दिवाकरः ।
तस्मिन्नब्दे नृपक्रोधः स्वल्पसस्यार्घवृष्टिकृत् ॥ ४ ॥

---

१. 'भूपतिः' मन्त्री के लिए प्रयुक्त है। किसी किसी आचार्य ने इसका अर्थ सेनापति भी किया है।

अन्वयः—अब्देश्वरः भूपश्च सस्येशः वा दिवाकरः। तस्मिन् अब्दे नृपक्रोधः, स्वल्पसस्य अर्धवृष्टिकृत् भवति।

विमला—वर्षपति, राजा (मन्त्री) या सस्येश यदि सूर्य हो तो उस वर्ष में राजा क्रोधयुक्त होवे, अन्न कम उपजे तथा वृष्टि कम हो ॥४॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा निशाकरः।
तस्मिन्नब्दे करोति क्ष्मां पूर्णां शालिफलेक्षुभिः ॥ ५ ॥

अन्वयः—(यस्मिन्नब्दे) अब्देश्वरः भूपो वा, सस्येशो वा निशाकरः तस्मिन्नब्दे क्ष्मां शालिफलेक्षुभिः पूर्णां करोति।

विमला—जिस वर्ष वर्षपति राजा (मन्त्री) या सस्येश चन्द्रमा होता है उस वर्ष पृथ्वी को धान, फल तथा ईख से परिपूर्ण करता है ॥ ५ ॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा महीसुतः।
तस्मिन्नब्दे चौरवह्निर्वृष्टिक्षुद्भयकृत्सदा ॥ ६ ॥

अन्वयः—अब्देश्वरश्च, भूपो वा, सस्येशः वा महीसुतः तस्मिन् अब्दे सदा चौर वह्नि वृष्टि क्षुत् भयकृत् भवति।

विमला—अब्दपति (राजा) मन्त्री या सस्येश यदि मङ्गल हो तो उस वर्ष चोरों से भय, अग्निभय, वृष्टिभय तथा भूख से पीड़ा होती है अर्थात् भूखमरी होती है ॥ ६ ॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा शशांकजः।
अतिवायुं स्वल्पवृष्टिं करोति नृपविग्रहम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—अब्देश्वरः भूपो वा सस्येशो वा शशांकजः तदा अतिवायुं स्वल्पवृष्टिं नृप विग्रहं च करोति।

विमला—अब्दपति, राजा या सस्येश यदि बुध हो तो उस वर्ष वायु प्रकोप, स्वल्प वृष्टि तथा राजाओं में युद्ध होता है ॥ ७ ॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा सुरार्चितः।
करोत्यनुत्तमां धात्रीं यज्ञधान्यार्थवृष्टिभिः ॥ ८ ॥

अन्वय :—अब्देश्वरः च भूपः वा सस्येशः वा सुरार्चितः, तदा यज्ञ-धान्य अर्थवृष्टिभिः अनुत्तमां धात्रीं करोति।

विमला—अब्दपति, राजा या सस्येश यदि गुरु हो तो उस वर्ष यज्ञ, धान्य तथा वृष्टि से पृथ्वी परिपूर्ण होती है ॥ ८ ॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा भृगोः सुतः ।
करोति सर्वां संपूर्णां धात्रीं शालिफलेक्षुभिः ॥ ९ ॥

अन्वयः—अब्देश्वरः च भूपः वा सस्येशः वा भृगोः सुतः तदा शालि फल इक्षुभिः सम्पूर्णां सर्वां धात्रीं करोति ।

विमला—अब्दपति, राजा या सस्येश यदि शुक्र होता है तो भूमि धान फल तथा ईख आदि से परिपूर्ण होती है ॥ ९ ॥

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वार्कनन्दनः ।
आँतंकश्चौरवह्न्यंबुधान्यभूपभयप्रदः ॥ १० ॥

अन्वयः—अब्देश्वरश्च, भूपः वा सस्येशः वा (यदि) अर्कनन्दनः तदा आतंकः चौर वह्नि अम्बु धान्य भूप भय प्रदः (भवति) ।

विमला—अब्दपति, राजा सस्येश यदि शनि हो तो, मृत्यु या आतंक, चौर, अग्नि, जल, धान्य हानि तथा राजभय होता है ॥ १० ॥

ज्ञात्वा बलाबलं सम्यग्वदेत्फलनिरूपणम् ।
दंडाकारेकबंधे[2] वा ध्वांक्षाकारेऽथ कीलके ॥ ११ ॥
दृष्टेऽर्कमण्डले व्याधिर्भीतिश्चौरार्थनाशनम् ।

अन्वयः—बलाबलं सम्यक् ज्ञात्वा फलनिरूपणम्, वदेत्, अर्कमण्डले दण्डाकारे, कबन्धे वा ध्वांक्षाकारे अथ कीलके दृष्टे व्याधिः भीतिः चौरार्थनाशनम् (भवति) ।

विमला—(इस प्रकार) ग्रहों का बलाबल ज्ञातकर अच्छी तरह फलादेश करना चाहिए। अब सूर्य चार फल कहते हैं। सूर्य मण्डल में दण्ड की आकृति, कबन्ध (बिना सिर का शरीर), ध्वांक्ष (काक) की आकृति अथवा कील दृष्टिगोचर होने पर व्याधि, भय एवं चोर भय तथा धन का नाश होता है ॥ ११ ॥

छत्रध्वजपताकाद्यैराकारैस्तिमिरैर्घनैः ॥ १२ ॥
रविमण्डलगैर्धूमैः स्फुलिङ्गैर्जननाशनम् ।

अन्वयः—छत्र ध्वज पताकाद्यैः आकारैः घनैः तिमिरैः रविमण्डलगैः धूमैः स्फुलिङ्गैः जननाशनम (भवति) ।

---

१. अंतकः इति मूलपाठः ।

नोट—राजा और भूप शब्द से सर्वत्र मन्त्री या सेनापति समझना चाहिए ।

२. अर्कवेधे इति पाठ भेदः ।

विमला—छत्र ध्वज पताका तिमिरघन (काले बादल) धूम तथा स्फुलिङ्ग (चिनगारी) यदि सूर्यमण्डल में दृष्टिगोचर हो तो जनता का विनाश होता है ॥ १२ ॥

सितरक्तैः पीतकृष्णैस्तैर्मिश्रैर्विप्रपूर्वकान् ॥ १३ ॥
हन्ति द्वित्रिचतुर्भिर्वा राज्ञोऽन्यत्र जनक्षयः।
ऊर्ध्वैर्भानुकरैस्ताम्रैर्नाशं याति च भूपतिः ॥ १४ ॥

अन्वयः—सितरक्तैः पीतकृष्णैस्तैर्मिश्रैः विप्रपूर्वकान् हन्ति। द्वित्रि-चतुर्भिर्वाः राज्ञः अन्यत्र जनक्षयः। ऊर्ध्वैः भानुकरैः ताम्रे स भूपतिः नाशं याति।

विमला—श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण एवं मिश्रित रङ्ग यदि सूर्य का दृष्टिगोचर हो तो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा अन्त्यजों को कष्ट होता है। दो तीन या चार वर्ण यदि एक साथ दृष्टिगोचर हो तो राजा का अन्यथा प्रजा का नाश होता है। यदि सूर्य की उर्ध्वगामी किरणें ताम्र वर्ण की दिखाई दें तो राजा का नाश होता है ॥ १३-१४ ॥

पीतैर्नृपसुतः श्वेतैः पुरोधाश्चित्रितैर्जनाः।
धूम्रैर्नृपः पिशङ्गैश्च जलदोधो मुखैस्तथा ॥ १५ ॥

अन्वयः—पीतैः नृपसुतः, श्वेतैः पुरोधाः, चित्रितैः जनाः, धूम्रैः नृपः, पिशङ्गैः जलदः तथा अधोमुखैः (भानुकरैः अपि फलम् वाच्यम्)।

विमला—यदि सूर्य की उर्ध्वगामी किरणें पीतवर्ण की हों तो राजपुत्र, श्वेत होने पर पुरोहित, चित्रित होने पर जनता, धूम्रवर्ण होने पर राजा तथा पिङ्गल (पीत कृष्ण) होने पर मेघों की क्षति होती है। इसी प्रकार सूर्य किरणों के अधोमुख वर्ण का फल भी समझना चाहिए ॥१५॥

उदयास्तमये काले स्वास्थ्यं तैः पाण्डुसन्निभैः।
भास्करस्ताम्र संकाशः शिशिरे कपिलोऽपि वा ॥ १६ ॥
कुंकुमाभो वसन्तर्तौ कपिलो वापि शस्यते।

अन्वयः—उदयास्तमये काले, पाण्डुसन्निभैः तैः स्वास्थ्यं (नश्यति)। शिशिरे ताम्र संकाशः कपिलो अपि वा, वसन्ततौं कुंकुमाभः, कपिलो वापि शस्यते।

---

1. 'अन्य जन संक्षयः' इति पाठ भेदः।

विमला—उदय और अस्तकाल में सूर्य किरणें यदि पाण्डुरङ्ग की होवें तो वे स्वास्थ्य का नाशक होती हैं। शिशिर में ताम्रवर्ण या कपिल (भूरा) वर्ण, वसन्त में कुंकुमवर्ण या कपिल वर्ण शुभ होता है ॥ १६ ॥

अपाण्डुरः स्वर्णवर्णो ग्रीष्मे चित्रो जलागमे ॥ १७ ॥
पद्मोदराभः शरदि हेमन्ते लोहितच्छविः ।
हेमन्ते प्रावृषि ग्रीष्मे रोगाणां वृष्टिभीतिकृत् ॥ १८ ॥

अन्वयः—ग्रीष्मे अपाण्डुरः स्वर्णवर्णो, जलागमे चित्रः शरदि पद्मोदराभः, हेमन्ते लोहितच्छविः हेमन्ते प्रावृषि रोगाणां वृष्टिभीतिकृत्।

विमला—ग्रीष्म में श्वेत या स्वर्णवर्ण, वर्षाऋतु में चित्रित, शरद ऋतु में पद्म के पराग के सदृश वर्ण, हेमन्त में लोहितवर्ण ये रोग तथा अवृष्टि का भय करता है ॥ १७-१८ ॥

पीताभकृष्णवर्णोऽपि लोहितस्तु यथाक्रमात् ।
इन्द्रचापार्द्धमूर्तिश्चेत् भानुर्भूपविरोधकृत् ॥ १९ ॥

अन्वयः—पीताभः कृष्णवर्णो अपि लोहितः तु यथा क्रमात् । इन्द्रचापार्द्धमूर्तिः चेत् भानुः भूपविरोधकृत् (भवति) ।

विमला—यदि आकाश मण्डल में सूर्य की आकृति अर्द्ध धनुषाकार तथा उसका रङ्ग पीला, काला और लाल हो तो राजाओं में विरोध उत्पन्न करने वाला होता है ॥ १६ ॥

मयूरपत्रसंकाशो द्वादशाब्दं न वर्षति ।
शशरक्तनिभे भानौ संग्रामो ह्यचिराद् भवेत् ॥ २० ॥

अन्वयः—(यदा रविः) मयूरपत्रसंकाशो (तदा) द्वादशाब्दं न वर्षति । (एवम्) भानौ शशरक्तनिभे (सति) ही अचिरात् संग्रामो भवेत् ।

विमला—यदि सूर्य का बिम्ब मोर के पङ्ख के समान दिखाई दे तो बारह वर्ष तक वृष्टि नहीं होती। तथा यदि सूर्य बिम्ब शशक (खरगोस) के रक्त के सदृश हो तो शीघ्र ही युद्ध होता है ॥ २० ॥

चन्द्रस्य सदृशो यत्र चान्यं राजानमादिशेत् ।
अर्के श्यामे कीटभयं भस्माभे शस्त्रतो भयम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—यत्र चन्द्रस्य सदृशो (दृश्यते) अन्यं राजानं च आदिशेत्। अर्के श्यामे कीटभयम्, भस्माभे शस्त्रतो भयम् (आदिशेत्)।

विमला—चन्द्रमा के समान रविबिम्ब के दिखलाई देने पर राज-परिवर्तन होता है। तथा श्याम वर्ण सूर्य के दृष्टिगोचर होने पर कीट भय एवं भस्म के सदृश वर्ण का यदि सूर्य दृष्टिगोचर हो तो शस्त्रभय होता है ॥ २१ ॥

छिद्रेऽर्कमण्डले दृष्टे तदा राजविनाशकृत्।
घटाकृतिः क्षुद्भयकृत् पुरहा तोरणाकृतिः ॥ २२ ॥
छत्राकृतिर्देशहन्ता खण्डभानुर्नृपान्तकृत्।
उदयास्तमये भानोर्विद्युदुल्काशनिर्यदि ॥ २३ ॥
तदा नृपवधो ज्ञेयस्त्वथवा राजविग्रहः।

अन्वयः—अर्कमण्डले छिद्रे दृष्टे तदा राजविनाशकृत्, घटाकृतिः क्षुद्भयकृत्, तोरणाकृतिः पुरहा (भवति)। छत्राकृतिः देशहन्ता, खण्ड-भानुः नृपान्तकृत् (भवति)। यदि भानोः उदयास्तमये (काले) विद्युत्, उल्का, अशनिः तदा नृपवधो ज्ञेयः अथवा राजविग्रहश्च (भवति)।

विमला—सूर्यमण्डल में छिद्र दृष्टिगोचर होवे तो राजा का नाश, घड़े की आकृति के समान होने से क्षुधा का भय, तोरण की आकृति होने से पुर (ग्राम) का नाश। छाते की आकृति से देश का नाश, तथा खण्डित सूर्यबिम्ब दर्शन से राजा का नाश होता है। सूर्य के उदय और अस्त के समय यदि बिजली चमके, उल्कापात दृष्टि-गोचर हो या बिजली गिरे तो राजा का बध हो, अथवा राजविग्रह होवे ॥ २२–२३½ ॥

पक्षं पक्षार्द्धमर्केन्दू परिविष्टावहर्निशम् ॥ २४ ॥
राजानमन्यं कुरुतो लोहितावुदयास्तगौ।
उदयास्तमये भानुराच्छिन्नः शस्त्रसन्निभैः ॥ २५ ॥
घनैर्युद्धं खरोष्ट्राद्यैः पापरूपैर्भयप्रदः।

अन्वयः—अर्केन्दू पक्षं पक्षार्द्धं अहर्निशम् परिविष्टौ, उदयास्तगौ लोहितौ (वा) अन्यं राजानं कुरुतः। भानुः उदयास्तमये काले शस्त्र-सन्निभैः घनैः आच्छिन्नः। खरोष्ट्राद्यैः पापरूपैः घनैः (आच्छिन्नस्तदा) भयप्रदः युद्धम् (भवति)।

विमला—यदि सूर्य और चन्द्रमा एक पक्ष या आधे पक्ष तक निरन्तर परिवेश में रहें, अथवा उदय और अस्त के समय रक्तवर्ण के हों तो राजा का परिवर्तन होता है। सूर्य उदय और अस्त काल में शस्त्र के सदृश आकार वाले बादलों से कटा दृष्टिगोचर हो अथवा आकाश में सूर्य, गदहा और ऊँट जैसा पाप स्वरूप मेघों से आच्छादित दृष्टिगोचर हो तो भयानक युद्ध होता है ॥ २४–२५½ ॥

ऋतुकालानुरूपोऽर्कः सौम्यमूर्तिः शुभावहः ॥ २६ ॥

रविचारमिदं सम्यक् ज्ञातव्यं तत्त्ववेदिभिः ।

इति श्रीनारदसंहितायां द्वितीयाध्याये रविचारः ।

अन्वयः—ऋतुकालानुरूपः सौम्यमूर्ति अर्कः शुभावहः इदं रविचारं सम्यग् तत्त्ववेदिभिः ज्ञातव्यम् ।

विमला—ऋतुकाल (यज्ञकाल) के अनुरूप सूर्य तथा सौम्यमूर्ति सूर्य शुभ फलदायक होता है। तत्त्व के जानने वालों को इस रविचार का पूरा ज्ञान होना चाहिए ॥ २६½ ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में रविचार समाप्त ।

(चन्द्रचारः)

याम्यशृङ्गोन्नतश्चन्द्रोऽशुभदो मीनमेषयोः ।

सौम्यशृङ्गोन्नतः श्रेष्ठोनृयुग्मकरयोस्तथा ॥ १ ॥

अन्वयः—मीनमेषयोः याम्यशृङ्गोन्नतः चन्द्रः अशुभदः तथा नृयुग् मकरयोः सौम्यशृङ्गोन्नतः चन्द्रः श्रेष्ठः (वाच्यः) ।

विमला—मीन और मेषराशिगत चन्द्रमा का याम्यशृङ्ग उन्नत होना अशुभ फलदायक तथा मिथुन और मकर राशिगत चन्द्रमा का सौम्य (उत्तर) शृङ्ग श्रेष्ठफलसूचक होता है ॥ १ ॥

समोऽक्षघटयोः कर्कसिंहयोः शरसन्निभः ।

चापकीटभयोः स्थूलः शूलवत्तौलिकन्ययोः ॥ २ ॥

१. 'ऋतुकाल' इति पाठभेदः (ऋतुकाल के अनुरूप या यज्ञकालानुरूप दोनों ही अर्थों में सामञ्जस्य है ।)

विपरीतोदितश्चन्द्रोदुर्भिक्षकलहप्रदः ।
यथोक्तोऽभ्युदितश्चेन्दुः प्रतिमासं सुभिक्षकृत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—समोऽक्षघटयोः कर्कसिंहयोः शरसन्निभः चापकीटभयोः स्थूलः तौलिकन्ययोः शूलवत्, प्रतिमासं यथोक्तो अभ्युदितः च इन्दुः सुभिशकृत् (भवति) तथा च विपरीतः (उदितः) चन्द्रः दुर्भिक्ष-कलहप्रदः (भवति) ।

विमला—वृष और कुम्भ के चन्द्रमा के दोनों कोने समान, कर्क और सिंह राशियों में वाण की आकृति का, वृश्चिक और धनु राशियों में स्थूल, तुला और कन्या राशियों में शूल के सदृश होता है। यथोक्त प्रकार से उदितचन्द्रमा सुभिक्षकारक तथा इससे विपरीत उदय होने पर चन्द्रमा दुर्भिक्ष और कलह प्रद होता है ॥ २–३ ॥

आषाढाद्वयमूलेन्द्रधिष्ण्यानां याम्यगः शशिः ।
अग्निप्रदस्तोयचरवनसर्पविनाशकृत् ॥ ४ ॥

अन्वयः—आषाढ़ाद्वयमूलेन्द्रधिष्ण्यानां याम्यगः शशिः अग्निप्रदः तोयचर वन सर्पविनाशकृत (भवति) ।

विमला—आषाढ़ाद्वय (पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा) मूल, ज्येष्ठा, इन नक्षत्रों में यदि चन्द्रमा का याम्यशृङ्ग उन्नत हो तो अग्निप्रद तथा जलचर, वन एवं सर्पों का विनाश करने वाला होता है ॥ ४ ॥

विशाखामैत्रयोर्याम्यपार्श्वगः पापकृत्सदा ।
मध्यगः पितृदैवत्ये द्विदैवत्ये शुभोत्तरे ॥ ५ ॥

अन्वयः—सदा विशाखामैत्रयोर्याम्यपार्श्वगः पापकृत् । पितृदैवत्ये मध्यगः तथा द्विदैवत्ये उत्तरे शुभः ।

विमला—सदा विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों में याम्यशृङ्ग (उन्नत होने पर) पापकारक होता है। तथा मघा में मध्यम और विशाखा में उत्तर शृङ्ग शुभ होता है ॥ ५ ॥

सम्प्राप्य पौष्णभात् रौद्रात्षट् ऋणाणि शशी शुभः ।
मध्यगो द्वादशर्क्षाणि अतीत्य नव वासवात् ॥ ६ ॥

अन्वयः—पौष्णभात् रौद्रात्षट् ऋणाणि सम्प्राप्य, (तदनन्तरं) द्वादश-र्क्षाणि मध्यगः (तथा) वासवात् नवनक्षत्राणि अतीत्य शशीशुभः भवति ।

विमला—रेवती से ६ नक्षत्र को प्राप्तकर चन्द्रमा शुभ होता है। तथा आर्द्रा से १२ नक्षत्रों में मध्यम और ज्येष्ठा से ९ नक्षत्रों को पारकर चन्द्रमा पुनः शुभफल दायक होता है ॥ ६ ॥

यमेन्द्राहिभतोयेशा मरुतश्चार्द्धतारकाः ।
ध्रुवादिति द्विदैवा स्युरध्यर्द्धाश्च पराः समाः ॥ ७ ॥

अन्वयः—यम, इन्द्र, अहिभ, तोयेशा मरुतश्च (एते) अर्द्धतारकाः। (३ उत्तरा-रोहिणी) ध्रुवा, अदिति, द्विदैव (एते) अध्यर्द्धाश्च। पराः समाः (स्युः)।

विमला—भरणी, ज्येष्ठा, आश्लेषा, पूर्वाषाढ़ा, तथा स्वाती ये अर्द्ध-तारक या अर्द्धसंज्ञक नक्षत्र हैं तथा ध्रुव अर्थात् तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा इन नक्षत्रों की संज्ञा भी अर्धतारक है। शेष नक्षत्र सम होते हैं ॥ ७ ॥

याम्यशृङ्गोन्नतः श्रेष्ठः सौम्यशृङ्गोन्नतः शुभः ।
शुक्ले पिपीलिकाकारे हानिर्वृद्धिर्यथाक्रमात् ॥ ८ ॥

अन्वयः—याम्यशृङ्गोन्नतः नेष्टः सौम्यशृङ्गोन्नतः शुभः। शुक्ले (चन्द्र-बिम्बे) पिपीलिकाकारे, यथा क्रमात् हानिः वृद्धिश्च (भवति)।

विमला—चन्द्रमा का दक्षिणशृङ्ग उन्नत होना अशुभ और उत्तरशृङ्ग उन्नत होना शुभ होता है। चन्द्रमा की आकृति में यदि चींटी का सा चिह्न दृष्टिगोचर हो तो क्रमशः कृष्णपक्ष में हानि और शुक्लपक्ष में वृद्धि होती है ॥ ८ ॥

सुभिक्षकृद्विशालेन्दुरविशालोऽर्घनाशनः ।
अधोमुखे शस्त्रभयं कलहो दण्डसंनिभे ॥ ९ ॥

अन्वयः—विशालेन्दुः शुभिक्षकृत्, अविशालः अर्घनाशनः। अधो-मुखे (चन्द्रे) शस्त्रभयम्, तथा दण्डसन्निभे कलहः।

विमला—यदि चन्द्रमा का विशाल स्वरूप दृष्टिगोचर हो तो सुभिक्ष होता है तथा छोटा रूप दृष्टिगोचर हो तो दुर्भिक्ष होता है। चन्द्रमा के अधोमुख दृष्टिगोचर होने पर शस्त्रभय तथा दण्डाकार दृष्टिगोचर होने पर कलह उत्पन्न होता है ॥ ९ ॥

कुजाद्यैर्निहते शृङ्गे मण्डले वा यथाक्रमात् ।
क्षेमार्घवृष्टिनृपतिजनानां नाशकृच्छशी ॥ १० ॥

इति श्रीनारदसंहितायां द्वितीयाध्याये चन्द्रचारः।

'नेष्टः' इति साधुपाठः।

अन्वयः—शशिशृङ्गे मण्डले वा कुजाद्यैः (ग्रहैः) निहते, यथाक्रमात् क्षेम, अर्घ, वृष्टिः, नृपतिः, जनानां नाशकृत् (भवति)।

विमला—यदि चन्द्रशृङ्ग या चन्द्रमण्डल मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि से आहत हो तो क्रमशः क्षेम, अर्घ, वृष्टि, नृप वर्ग का तथा जन नाश करनेवाला होता है।

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में चन्द्रचार समाप्त।

(भौमचारः)

सप्ताष्टनवमर्क्षेषु स्वोदयाद्वक्रिते कुजे।
तद्वक्रमुष्णं तस्मिन्स्यात् प्रजापीडाग्निसंभवः ॥ १ ॥

अन्वयः—कुजे स्वोदयात् सप्त, अष्ट, नवम, ऋक्षेषु वक्रिते तद्वक्रम् उष्णम् (उष्णसंज्ञकम्) तस्मिन् अग्निसंभवः प्रजापीडा च (भवति)।

विमला—अपने उदय नक्षत्र से सातवें आठवें तथा नवें नक्षत्र में यदि मङ्गल वक्री हो तो उसे उष्णसंज्ञक वक्र कहते हैं। इसमें अग्नि भय होता है तथा प्रजा पीड़ित होती है।

दशमैकादशे ऋक्षे द्वादशे वा प्रतीपगे।
वक्रमल्पसुखं तस्मिन् तस्य वृष्टिविनाशनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—दशमैकादशे द्वादशे वा ऋक्षे प्रतीपगे वक्रं (तदा) तस्मिन् (योगे) अल्पसुखं वृष्टिविनाशनं च भवेत्।

विमला—यदि दशम एकादश या द्वादश नक्षत्र में मंगल वक्री हो तो इसमें अल्प सुख हो तथा अवर्षण होवे ॥ २ ॥

कुजे त्रयोदशे ऋक्षे वक्रिते वा चतुर्दशे।
व्यालाख्यवक्रं तत्तस्मिन् सस्यवृद्धिरहेर्भयम् ॥ ३ ॥

अन्वय:—कुजे त्रयोदशे चतुर्दशे वा ऋक्षे वक्रिते तत् व्यालाख्य वक्रं तस्मिन् सस्य वृद्धिः अहेर्भयम् च भवेत्।

विमला—यदि उदय नक्षत्र से तेरहवें या चौदहवें नक्षत्र में मंगल वक्री होवे तो इसे व्याल नामक वक्र कहते हैं। इसमें धान्य की वृद्धि होती है तथा सर्पभय होता है।

पञ्चदशे षोडशर्क्षे तद्वक्रं रुधिराननं।
सुभिक्षकृद्भयं रोगान्करोति यदि भूमिजः ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यदि भूमिजः) पञ्चदशे षोडशर्क्षे (वा वक्रं करोति) तद् वक्रं रुधिराननं (नाम) तत्र सुभिक्षकृत् भयम्, रोगान् च करोति।

विमला—यदि १५वें या १६वें नक्षत्र पर मङ्गल ग्रह वक्री हो तो इसे रुधिरानन वक्र कहते हैं। इसमें सुभिक्ष होता है तथा भय एवं रोग होता है।

अष्टादशे सप्तदशे तदासिमुसलं स्मृतम्।
दस्युभिर्धनहान्यादि तस्मिन्भौमे प्रतीपगे॥ ५॥

अन्वयः—अष्टादशे सप्तदशे भौमे प्रतीपगे तदा असिमुसलं स्मृतम्; तस्मिन् दस्युभिः धनहान्यादि (भवेत्)।

विमला—१८वें १७वें नक्षत्र में मङ्गल वक्री हो तो इसे असिमुसल नामक वक्र कहते हैं। इसमें चोरों से तथा डाकुओं से धन की हानि होती है॥ ५॥

फाल्गुन्योरुदितो भौमो वैश्वदेवे प्रतीपगः।
अस्तगश्चतुरास्यर्क्षे लोकत्रयविनाशकृत्॥ ६॥

अन्वयः—फाल्गुन्योरुदितो भौमः वैश्वदेवे प्रतीपगः चतुरास्येर्क्षे अस्तगश्च (तदा) लोकत्रयविनाशकृत (भवेत्)।

विमला—यदि मङ्गल पूर्वाफाल्गुनी या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उदय होकर उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में वक्री हो और पुनः रोहिणी में अस्त हो जाय तो तीनों लोकों का नाश करनेवाला होता है॥ ६॥

उदितः श्रवणे पुष्ये वक्रतो नृपहानिदः।
यद्दिग्भ्योऽभ्युदितो भौमस्तद्दिग्भूपभयप्रदः॥ ७॥

अन्वयः—श्रवणे उदितः, पुष्ये वक्रतो नृपहानिदः। भौमः यद्दिग्भ्योऽभ्युदितो तद् दिग्भूपभयप्रदः।

विमला—यदि मङ्गल श्रवण नक्षत्र में उदित हो और पुण्यनक्षत्र में वक्री हो तो राजाओं को हानिप्रद होता है। तथा जिस दिशा में उदय होता है उस देश के राजा के लिए भय उत्पन्न करता है॥ ७॥

मखा[1] मध्यगतो भौमस्तत्रैवं च प्रतीपगः।
अवृष्टिशस्त्रभयदः पाण्डुदेशाधिपांतकृत्॥ ८॥

अन्वयः—(मखा) मघामध्यगतः भौमः यदि तत्रैव च प्रतीपगः तदा अवृष्टिशस्त्रभयदः पाण्डुदेशाधिपान्तकृत्।

---

१. मघा इति साधुपाठः।

विमला—यदि मङ्गल मघा नक्षत्र के मध्य में उदय होकर मघा नक्षत्र में ही वक्री हो जाय तो अवृष्टि हो, शस्त्रभय हो तथा पाण्डु देश के राजा का मरण होता है ॥ ८ ॥

पितृद्विदैवधातॄणां भिद्यन्ते योगतारकाः ।
दुर्भिक्षं मरणं रोगं करोति यदि भूमिजः ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदि भूमिजः पितृद्विदैव धातृणां योगतारकाः भिद्यन्ते तदा दुर्भिक्षं मरणं रोगं च करोति ।

विमला—यदि मङ्गल मघा विशाखा और रोहिणी से योगतारा विद्ध हो तो दुर्भिक्ष, मरण तथा रोग होता है ॥ ९ ॥

त्रिषूत्तरासु रोहिण्यां नैऋते श्रवणेन्दुभे ।
अष्टं[1]ष्टिदश्चरन् भौमो रोहिणी दक्षिणे स्थितः ॥ १० ॥

अन्वयः—त्रिषूत्तरासु, रोहिण्यां, नैऋते, श्रवणे इन्दुभे चरन् भौमो रोहिणी दक्षिणे स्थितः अष्टष्टिदः (भवेत्) ।

विमला—तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा) रोहिणी मूल श्रवण मृगशिर्ष (मृगशिरा) में चलते हुए यदि मङ्गल रोहिणी के दक्षिण भाग में हो तो अनावृष्टि होती है ॥ १० ॥

भूमिजः सर्वधिष्ण्यानामुदग्गामी शुभप्रदः ।
याम्यगोनिष्टफलदो भेदे भेदकरो नृणाम् ॥ ११ ॥

इति श्रीनारदीयसंहितायां द्वितीयाध्याये भौमचारः ।

अन्वयः—सर्वधिष्ण्यानाम् उदग्गामी भूमिजः शुभप्रदः याम्यगः अनिष्टफलदो, भेदे नृणां भेदकरो (भवेत्) ।

विमला—मङ्गल यदि किसी भी नक्षत्र के उत्तर भाग से गमन करे तो शुभदायक होता है। दक्षिण भाग से गमन करे तो अनिष्ट कारक होता है। तथा भेद होने पर राजाओं में भेद उत्पन्न करता है ॥ ११ ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में भौमचार समाप्त ।

---

१. 'अवृष्टिदः' इति साधुपाठः

(अथ बुधचारः)

विनोत्पातेन शशिजः कदाचिन्नोदयं व्रजेत् ।
अनावृष्ट्यग्निभयकृदनर्थं नृपविग्रहम् ॥ १ ॥

अन्वय :—शशिजः विनोत्पातेन कदाचिद् उदयं न व्रजेत् । अनावृष्टि, अग्निभयकृत् अनर्थं नृपविग्रहम् (च करोति) ।

विमला—बिना उपद्रव के बुध कभी उदय नहीं होता । इसके उदय होने पर अनावृष्टि, अग्निभय, अनर्थ तथा राजाओं में विग्रह (युद्ध) होता है ।

वसु श्रवण विश्वेंदु धातृभेषु चरन् बुधः ।
भिनत्ति यदि तत्तारामवृष्टि व्याधिभीतिकृत् ॥ २ ॥

अन्वयः—बुधः, वसु, श्रवण, विश्व, इन्दु, धातृ भेषु चरन् यदि तत्तारां भिनत्ति तदा अवृष्टि व्याधि भीतिकृत् ।

विमला—वसु (धनिष्ठा) श्रवण, विश्वे (उत्तराषाढ़ा), इन्दु (मृगशिर्ष), धातृ (रोहिणी) इन नक्षत्रों में गमन करता हुआ यदि इन्हें वेध भी करे तो अनावृष्टि, व्याधि और भयकारक होता है ॥ २ ॥

आर्द्रादि पितृभान्तेषु दृश्यते यदि चन्द्रजः ।
तदा दुर्भिक्षकलहो रोगाणां वृद्धिभीतिकृत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—चन्द्रजः यदि आर्द्रादि पितृभान्तेषु दृश्यते तदा दुर्भिक्षकलहो रोगाणां वृद्धिभीतिकृत भवेत् ।

विमला—आर्द्रा से लेकर मघा पर्यन्त ६ नक्षत्रों में यदि बुध दिखाई दे तो वह दुर्भिक्ष कलह तथा रोग की वृद्धि करने वाला एवं भयदायक होता है ॥ ३ ॥

हस्तादि रसतारासु विचरन् इन्दुनन्दनः ।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं कुरुते पशुनाशनम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—इन्दुनन्दनः हस्तादि रसतारासु विचरन् क्षेमं सुभिक्षं आरोग्यं (विदधाति तथा) पशुनाशनं (च) कुरुते ।

विमला—हस्त से ज्येष्ठा तक ६ नक्षत्रों में भ्रमण करते हुए बुध, क्षेम सुभिक्ष, आरोग्य प्रदान करता है, किन्तु पशुओं का नाश करता है ॥ ४ ॥

अहिर्बुध्न्यार्यमाग्नेययमभेषु चरन् यदि ।
धातुक्षयं च जन्तूनां करोति शशिनन्दनः ॥ ५ ॥

अन्वयः—शशिनन्दनः अहिर्बुध्न्य, अर्यमा, आग्नेय-यमभेषु चरन् यदि जन्तूनां धातुक्षयं च करोति ।

विमला—अहिर्बुध्न्य (उत्तरा भाद्र पद), अर्यमा (उत्तरा फाल्गुनी), आग्नेय (कृत्तिका), यम (भरणी) नक्षत्र में यदि बुध का गमन हो, तो जन्तुओं का धातु क्षय करता है। अर्थात् दुर्भिक्ष होता है ॥ ५ ॥

दास्रवारुणनैऋत्यरेवतीषु चरन् बुधः ।
भिषक्तुरगवाणिज्यवृत्तीनां नाशदस्तदा ॥ ६ ॥

अन्वयः—बुधः दास्रवारुणनैऋत्यरेवतीषु (यदा) चरन् (भवेत्) । तदा भिषक् तुरग वाणिज्यवृत्तीनां नाशदः स्यात् ।

विमला—दास्र (अश्विनी), वारुण (शतभिषा), नैऋत्य (मूल) और रेवती में यदि बुध गमन करे तो वह वैद्यवृत्ति वालों, तुरग वृत्ति-वालों तथा वाणिज्य वृत्तिवालों का नाश करता है ॥ ६ ॥

पूर्वात्रये चरन् सौम्यो योगतारां भिनत्ति चेत् ।
क्षुच्छस्त्रामय चौरेभ्यो भयदः प्राणिनस्तदा ॥ ७ ॥

अन्वयः—सौम्यो पूर्वात्रये चरन् चेत् योगतारां भिनत्ति तदा प्राणिनः क्षुत्, शस्त्र, आमय चौरेभ्यः भयदः भवेत् ।

विमला—बुध पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रों में भ्रमण करते हुए यदि इनका भेद करे तो भूख-शस्त्र-रोग और चोरों से प्राणि वर्ग को भय देता है ॥ ७ ॥

याम्याग्निधातृवायव्यधिष्ण्येषु प्राकृता गतिः ।
ईशेंदुसार्पपित्र्येषु ज्ञेया मिश्राह्वया गतिः ॥ ८ ॥

अन्वयः—(बुधस्य) याम्य, अग्नि, धातृ, वायव्य, धिष्ण्येषु प्राकृता गतिः । (तथा) ईश, इन्दु, सार्प, पित्र्येषु मिश्राह्वया गतिः ज्ञेया ।

विमला—बुध की भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, स्वातीनक्षत्रों में प्राकृता गति तथा आर्द्रा, मृगशिरा, आश्लेषा और मघा नक्षत्रों में मिश्रा गति होती है ॥ ८ ॥

संक्षिप्तादितिभाग्यार्यमेज्यधिष्णेषु या गतिः ।
गतिस्तीक्ष्णाजचरणेऽहिर्बुध्न्येन्द्राश्विभेषु च[1] ॥ ९ ॥

अन्वयः—अदिति, भाग्य, अर्यमा, इज्यधिष्णेषु या गतिः (सा) संक्षिप्ता (नाम) अजचरण, अहिर्बुध्न्य, इन्द्र, अश्विभेषु च गतिः तीक्ष्णा स्यात् ।

विमला—पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य इन नक्षत्रों में संक्षिप्ता तथा पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा ज्येष्ठा और अश्विनी में बुध की गति को तीक्ष्णा गति कहते हैं ।

योगान्तिकाम्बु[2] विश्वाख्यमूलगस्येन्दुजस्य च ।
घोरागतिर्हरित्वाष्ट्रवसुवारुणभेषु च ॥ १० ॥

अन्वयः—अम्बु, विश्वाख्य, मूलगस्येन्दुजस्य च योगान्तिका तथा हरित्वाष्ट्रवसुवारुणभेषु च घोरा गतिः भवेत् ।

विमला—उत्तराषाढ़ा, पूर्वाषाढ़ा, मूल में बुध के होने पर योगान्तिका तथा श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा और शतभिषा में घोरा गति कहलाती है ॥१०॥

इन्द्राग्निमित्रमार्त्तण्डभेषु पापाह्वया गतिः ।
प्राकृताद्यासु गतिषुह्युदितोस्तमितोपि वा ॥ ११ ॥
एतावन्ति दिनान्येव दृश्यस्तावन्न दृश्यगः ।
चत्वारिंशत् क्रमात्त्रिंशद्द्वाविंशद्विंशतिर्नव ॥ १२ ॥
पञ्चदशैर्द्वादशभिर्दिवसैः शशिनन्दनः ।
प्राकृतायां गतौ सस्यक्षेमारोग्यसुवृष्टिकृत् ॥ १३ ॥

अन्वयः—इन्द्राग्नि-मित्र-मार्त्तण्डभेषु पापाह्वया गतिः । उदितोस्तमितोऽपि वा प्राकृताद्यासु गतिषु क्रमात् चत्वारिंशत्, त्रिंशत्, द्वाविंशति-विंशति, नव, पञ्चदश, एकादशभिर्दिवसैः एतावन्ति दिनान्येव दृश्यः तावन्न दृश्यगः । शशिनन्दनः प्राकृतायां गतौ सस्य क्षेम-आरोग्यसुवृष्टि-कृत् भवेत् ।

---

१. "गतिस्तीक्ष्णाऽज चरणेऽहिर्बुध्न्येंद्राश्वि पूषसु" इति पाठान्तरम् । उक्तञ्च वाराहीसंहितायाम्—"तीक्ष्णायां भाद्रपदाद्वयं सशाक्राश्वयुक्पौष्णम् ।" (वाराही संहिता अध्याय ७)

२. "योगांतिकांत्य विश्वेन्दुमूलगस्येन्दुजस्य च" इति मूल पाठः ।

विमला—विशाखा, अनुराधा और हस्त इन नक्षत्रों में बुध की गति को पापा गति कहते हैं। प्राकृत आदि सप्तविध गतियों में यदि बुध उदय या अस्त होता है तो क्रमशः ४०, ३०, २२, २०, ६, १५ और ११ दिन तक रहता है, अधिक नहीं। प्राकृत गति प्राप्त होने पर बुध धान्यवृद्धि, आरोग्य और सुवृष्टि कारक होता है॥ ११-१३॥

मिश्रसंक्षिप्तयोर्मध्ये फलदोऽन्यास्वनिष्टयः।
वैशाखे श्रावणे पौषे-आषाढेप्युदितो बुधः॥ १४॥
जनानां पापफलदस्त्वितरेसु शुभप्रदः।
इषोर्जमासयोः शस्त्रदुर्भिक्षाग्निभयप्रदः।
उदितश्चन्द्रजः श्रेष्ठो रजतस्फटिकोपमः॥ १५॥

इति नारदीयसंहितायां द्वितीयाध्याये बुधचारः।

अन्वयः—मिश्रसंक्षिप्रयोमध्ये फलदः अन्यासु अनिष्टदः। बुध, वैशाखे, श्रावणे, पौषे आषाढेषु उदितः सन् जनानां पापफलदः इषोर्जे मासयोः शस्त्र दुर्भिक्षाग्निभयप्रदस्तथा, इतरेषु मासेषु शुभप्रदः भवेत् रजतस्फटिकोपमः उदितश्चन्द्रजः श्रेष्ठो भवेत्।

विमला—मिश्र और संक्षिप्त गतियों में बुध शुभफलदायक होता है तथा अन्य गतियों में अनिष्टकारक होता है। वैशाख, श्रावण, पौष और आषाढ़ में यदि बुध उदित हो तो प्रजावर्ग के लिए अशुभ होता है आश्विन और कार्तिक मास में शस्त्रभय, अग्निभय तथा दुर्भिक्ष होता है और शेष महीनों में शुभ होता है। यदि बुध चाँदी और स्फटिक मणि के समान स्वच्छ उदित हो तो शुभफलदायक होता है॥ १४-१५॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में बुधचार समाप्त।

(अथ गुरुचारः)

द्विभा ऊर्जादिमासाः स्युः पञ्चांत्यैकादशस्त्रिभाः।
यद्धिष्ण्याभ्युदितो जीवस्तन्नक्षत्राह्वत्सरः॥ १॥

अन्वयः—ऊर्जादिमासाः द्विभास्युः तथा पञ्च अन्त्य ऐकादश मासा स्त्रिभास्युः। जीवः यद्धिष्ण्याभ्युदितो तन्नक्षत्राह्वयः वत्सरः भवेत्।

विमला—कार्तिक आदि महीने दो दो नक्षत्रों के होते हैं किन्तु पाँचवाँ (फाल्गुन) अन्त्य (आश्विन) और एकादश (भाद्रपद) मास तीन तीन नक्षत्रों का होता है तथा गुरु जिस नक्षत्र में उदय होता है उसी नक्षत्र के नाम से उस सम्वत्सर का नाम होता है। जैसे कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र में गुरु के होने पर कार्तिक मास तथा उस सम्वत्सर का नाम कार्तिक होगा।

पीडास्यात्कार्तिकेवर्षे रथगोऽग्न्युपजीविनाम् ।
क्षुच्छस्त्राग्निभयंवृद्धिः पुष्पकौसुम्भजीविनाम् ॥ २ ॥

अन्वयः—कार्तिके वर्षे रथगोऽग्न्युपजीविनां पीडा, क्षुत्, शस्त्राग्निभयं तथा पुष्पकौसुम्भजीविनां वृद्धिः स्यात् ।

विमला—कार्तिक नामक वर्ष (कृत्रिका, रोहिणी) में रथ, अग्नि तथा गायों से आजीविका चलाने वालों को पीड़ा होती है। भूख, शस्त्र और अग्नि का भय जनवर्ग को होता है तथा लाल और पीले रङ्ग के फूलों की वृद्धि होती है। अथवा पुष्पों से आजीविका चलाने वाले सुखी रहते हैं ॥ २ ॥

अनावृष्टिः सौम्यवर्षे मृगाखुशलभाण्डजैः[1] ।
सर्वसस्यवधो व्याधिर्वैरं राज्ञां परस्परम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सौम्यवर्षे अनावृष्टिः, मृगाखुशलभाण्डजैः सर्वसस्यवधः, व्याधिः, राज्ञां परस्परं वैरं च सञ्जायते ।

विमला—सौम्य (मार्गशीर्ष) नामक वर्ष (मृगशिरा, आर्द्रा) में वर्षा नहीं होती। मृग, चूहे टीड्डी तथा अण्डज पक्षी आदि जीवों से फसल की हानि, रोग और वैर से जनकष्ट तथा राजाओं में पारस्परिक मनोमालिन्य रहता है ॥ ३ ॥

निवृत्तवैराः क्षितिपाः जगदानन्दकारकाः ।
पुष्टिकर्मरताः सर्वे पौषेब्देऽध्वरतत्पराः ॥ ४ ॥

अन्वयः—पौषेब्दे क्षितिपाः निवृत्तवैराः, जगदानन्दकारकाः, सर्वे पुष्टिकर्मरताः, अध्वरतत्पराश्च भवेयुः ॥

विमला—पौष नामक वर्ष (पुनर्वसु, पुष्य) में राजा वैररहित हो जाते हैं। संसार में आनन्द व्याप्त होता है। सभी प्राणी पौष्टिक कार्य (निर्माण कार्य) में रत तथा यज्ञ कार्य में तत्पर होते हैं ॥ ४ ॥

1. 'मृगाखुशलभाण्डजैः' । इति संशोधित पाठः ।

माघेऽब्दे सततं सर्वे पितृपूजनतत्पराः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं वृष्टिः कर्षकसंमता ॥ ५ ॥

अन्वयः—माघेब्दे सर्वे सततं पितृपूजनतत्पराः सुभिक्षं च्रेमं आरोग्यं कर्षकसंमता वृष्टिः भवेत्।

विमला—माघ नामक वर्ष (अश्लेषा:, मघा) में सभी लोग पितरों की पूजा में संलग्न तथा माता-पिता की आज्ञा में रहते हैं। सुभिक्ष रहता है, सब का कल्याण होता है तथा निरोग रहते हैं एवं कृषकों के मन चाहे जल को मेघ देते हैं ॥ ५ ॥

चौराश्च प्रबलाः स्त्रीणां दौर्भाग्यं स्वजनाः खलाः।
क्वचिद्वृष्टिः क्वचित्सस्यं क्वचिद्वृद्धिश्च फाल्गुने ॥ ६ ॥

अन्वयः—फाल्गुने चौराश्च प्रबला, स्त्रीणां दौर्भाग्यं, स्वजनाः खलाः तथा कचिद् वृष्टिः कचित्सस्यं कचिद्वृद्धिश्च जायते।

विमला—फाल्गुन नामक वर्ष (पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त) में चोरों का प्राबल्य, स्त्रीजाति को कष्ट, स्वजन विरोध, खण्डवृष्टिः तथा कहीं-कहीं फसल उत्तम दृष्टिगोचर होती है ॥ ६ ॥

चैत्रेऽब्दे मध्यमा वृष्टिरुत्तमान्नं सुदुर्लभम्।
सस्यार्घवृष्टयः स्वल्पा राजानः क्षेमकारिणः ॥ ७ ॥

अन्वयः—चैत्रे अब्दे वृष्टिः मध्यमा, उत्तमान्नं सुदुर्लभं, सस्यार्घः वृष्टयः स्वल्पा (एवं) राजानः च्रेमकारिणः भवेयुः।

विमला—चैत्र नामक वर्ष (चित्रा, स्वाती) में सामान्य वृष्टि होती है। उत्तम अन्न प्रायः दुर्लभ हो जाता है। अन्न महँगे होते हैं। वृष्टि स्वल्प होती है तथा राजा लोग जनता के अनुकूल कल्याण करते हैं॥७॥

वैशाखे धर्मनिरता राजानः सप्रजा भृशम्।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानामभयोद्युक्तचेतसः ॥ ८ ॥

अन्वयः—वैशाखे सप्रजा राजानः भृशं धर्मनिरता, सर्वसस्यानां निष्पत्तिः, अभयोद्युक्तचेतसः।

विमला—वैशाख नामक वर्ष (विशाखा-अनुराधा) में प्रजा के सहित राजा धर्मकार्य में निरत होते हैं। सभी प्रकार का अन्न पैदा होता है तथा जनवर्ग निर्भय रहता है ॥ ८ ॥

वृक्षगुल्मलतादीनां क्षेमंसस्यविनाशनम् ।
ज्येष्ठेऽब्दे धर्मतत्वज्ञाः सन्नृपाः पीडिताः परैः ॥ ९ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठे अब्दे वृक्षगुल्मलतादीनां क्षेमं, सस्यविनाशनम्, सन्नृपाः धर्मतत्त्वज्ञाः परैः पीडिताः ।

विमला—ज्येष्ठ नामक वर्ष (ज्येष्ठा, मूल) में वृक्ष गुल्म और लताओं की वृद्धि तथा धान्य का नाश होता है, साथ ही धर्म के विचारक राजा के साथ शत्रुओं से कष्ट पाते हैं ॥ ९ ॥

क्वचिद्वृष्टिः क्वचित्सस्यं न तु सस्यं क्वचित्क्वचित् ।
आषाढेऽब्दे क्षितीशाः स्युरन्योन्यं जयकाँक्षिणः ॥ १० ॥

अन्वयः—आषाढे अब्दे क्वचिद्वृष्टिः, क्वचित्सस्यं न तु सस्यं क्वचित् क्वचित् क्षितीशा अन्योन्यं जयकांक्षिणः स्युः ।

विमला—आषाढ़, नामक वर्ष (पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ) में अवर्षण के कारण कहीं धान होगा और कहीं नहीं होगा तथा सभी राजा परस्पर जय की आकांक्षा वाले हो जायँगे ॥ १० ॥

अनेकसस्यसम्पूर्णा सुरार्चनसमाकुला ।
पापपाखण्डहंत्रीभूः श्रावणेऽब्दे विराजते ॥ ११ ॥

अन्वयः—श्रावणेऽब्दे अनेकसस्यसंपूर्णा सुरार्चनसमाकुला, पापपाखण्डहन्त्रीभूः विराजते ।

विमला—श्रावण नामक वर्ष (श्रवण, धनिष्ठा) में अनेक प्रकार के धान्यों से (अन्नों से) परिपूर्ण भूमि पर देवताओं का पूजन होता है। तथा पाप और पाखण्ड का नाश होकर भूमि सुशोभित होती है ॥११॥

पूर्वं तु सस्य संपूर्तिर्नाशं यात्यपरं तु यत् ।
मध्यवृष्टिर्महत्सस्यं नृपाणां समरं महत् ॥ १२ ॥
अब्देभाद्रपदे लोके क्षेमाक्षेमं क्वचित्क्वचित् ।
धनधान्यसमृद्धिश्च सुभिक्षमतिवृष्टयः ॥ १३ ॥

अन्वयः—भाद्रपदे अब्दे पूर्वं तु सस्य संपूर्तिः अपरं तु यत् नाशं याति । मध्यवृष्टिः महत्सस्यं नृपाणां समरं महत् । क्वचित्क्वचित् क्षेमा क्षेमं, धनधान्यसमृद्धिः, सुभिक्षमतिवृष्टयश्च ।

विमला—भाद्रपद नामक वर्ष (शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद) में वर्ष का पूर्वार्द्ध सस्यसम्पन्न तथा उत्तरार्द्ध में धान का नाश होता

है। वृष्टि मध्यम होती है तथा राजाओं में युद्ध होता है और कहीं कहीं क्षेम होता है, कहीं कहीं समृद्धि सुभिक्ष और कहीं कहीं अतिवृष्टि होती है ॥ १२-१३ ॥

सुवृष्टिः सर्वसस्यानि फलितानि भवन्ति च ।
भवन्त्याश्वयुजे वर्षे सन्तुष्टाः सर्वजन्तवः ॥ १४ ॥

अन्वयः—आश्वयुजे वर्षे सर्वजन्तवः सन्तुष्टाः भवन्ति तथा सुवृष्टिः सर्वसस्यानि च फलितानि भवन्ति।

विमला—आश्विन नामक वर्ष (रेवती, अश्विनी, भरणी) में सुवृष्टि होती है तथा सभी धान्य सफली होते हैं एवं सभी जीव प्रसन्न रहते हैं ॥ १४ ॥

सौम्यभागे चरन् भानां क्षेमारोग्यसुभिक्षकृत् ।
विपरीतं गुरोर्याम्ये मध्ये च प्रतिमध्यमम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—गुरुः भानां सौम्यभागे चरन् क्षेमारोग्यसुभिक्षकृत्, याम्ये विपरीतं मध्यभागे च प्रतिमध्यमं भवेत्।

विमला—यदि गुरु नक्षत्रों (अपने योग तारा) के उत्तर भाग से गमन करे तो क्षेम, आरोग्य एवं सुभिक्षकारी होता है। दक्षिण भाग से गमन करे तो विपरीत फल तथा मध्यभाग से गमन करे तो मध्यम फल देता है ॥ १५ ॥

पीताग्निश्यामहरितरक्तवर्णोऽङ्गिराः क्रमात् ।
व्याध्यग्निरणचौरास्त्रभयकृत् प्राणिनां तदा ॥ १६ ॥

अन्वयः—अङ्गिराः, पीतः, अग्निः, श्यामः, हरितः, रक्तवर्णः तदा क्रमात् प्राणिनां व्याधिः, अग्निः, रणः, चौरः, अस्त्रभयकृत् भवेत्।

विमला—गुरु यदि पीतः, अग्निः, श्याम, हरित और रक्तवर्ण का दृष्टिगोचर हो तो क्रमशः प्राणियों को व्याधि, अग्निभय, चौरभय तथा अस्त्रभय रहता है ॥ १६ ॥

अनावृष्टिंधूम्रनिभः करोति सुरपूजितः ।
दिवादृष्टो नृपवधंत्वथवा राजनाशनम् ॥ १७ ॥

अन्वयः—धूम्रनिभः सुरपूजितः अनावृष्टिं, दिवादृष्टः नृपवधः अथवा राजनाशनं करोति।

विमला—गुरु यदि धूम्रवर्ण का दिखाई दे तो अनावृष्टि हो, दिन में दिखाई दे तो राजा का वध हो अथवा राज्य का नाश होता है ॥ १७ ॥

सम्वत्सरशरीरः स्यात् कृत्तिका रोहिणी उभे।
नाभिस्त्वाषाढद्वितयमार्द्राहृद् कुसुमं मघा॥ १८॥

अन्वयः—कृत्तिका रोहिणी उभे सम्वत्सर शरीरः स्यात्। आषाढद्वितयं नाभिः आर्द्राहृद् मघा च कुसुमं (स्यात्)।

विमला—कृत्तिका और रोहिणी ये दो नक्षत्र सम्वत्सर का शरीर है। पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नाभि, आर्द्रा हृदय तथा मघा नक्षत्र पुष्प (रज) होता है॥ १८॥

दुर्भिक्षाऽग्निमहद्भीतिः शरीरे क्रूरतीडिते (पीडिते)।
नाभ्यां तु क्षुद्भयं पुष्पे सम्यक् मूलफलक्षयम्॥ १९॥
हृदये सस्यनिधनं शुभं स्यात् पीडितः शुभैः।

अन्वयः—शरीरे क्रूरपीडिते दुर्भिक्षः अग्निमहद्भीतिः। नाभ्यां तु क्षुद्भयं। पुष्पे सम्यक् मूलफलक्षयम्। हृदये सस्यनिधनं। शुभैः पीड़िते च शुभं स्यात्।

विमला—शरीर पर यदि क्रूर ग्रहों का योग हो तो दुर्भिक्ष, अग्निभय आदि होता है। नाभि पर भूख का भय, पुष्प पर होने से मूल फलादि का नाश, हृदय पर होने से धान्य का नाश होता है। यदि शुभग्रहों का योग या दृष्टि हो तो शुभ फलदायक होता है॥ १६॥

मेषराशिगते जीवेत्वीतिर्मेषविनाशनम्॥ २०॥

अन्वयः—जीवे मेषराशिगते तु ईतिः मेष विनाशनं च भवेत्।

विमला—मेष राशि पर गुरु होवे तो इति भय (अतिवृष्टि, अनावृष्टिः मूषिका शलभाः शुकाः अत्यासन्नश्यराजानः षडैते ईतयस्मृताः) तथा भेड़-बकरियों का नाश होता है।

सस्यवृद्धिः प्रजारोग्यं वृष्टिः कर्षकसंमता।
वृषराशिगते जीवे शिशुस्त्रीपशुनाशनम्॥ २१॥

अन्वयः—जीवे वृषराशि गते (सति) सस्यवृद्धिः, प्रजारोग्यं, कर्षकसंमतावृष्टिः, शिशु-स्त्री-पशुनाशनं च भवेत्।

विमला—वृषराशिगत गुरु में अन्नों की उपज, प्रजा आरोग्य युत, तथा कृषकों के अनुकूल वृष्टि होती है। किन्तु बालक, स्त्री और पशुओं की हानि होती है॥ २१॥

मध्या वृष्टिः सस्यहानिर्नृपाणां समरंमहत् ।
जनानां भीतिरीतिश्च नृपाणां दारुणं रणम् ॥
विप्रपीडा मध्यवृष्टिः सस्यवृद्धिस्तृतीयभे ॥ २२ ॥

अन्वयः—(जीवे) तृतीयभे मध्यावृष्टिः सस्यहानिः, नृपाणां महत् समरं, जनानां भीतिः इतिश्च, नृपाणां दारुणं रणम् , विप्रपीडा, मध्यवृष्टिः सस्यवृद्धिश्च भवेत् ।

विमला—मिथुन राशि के गुरु में मध्यम वृष्टि, धान्यहानि (पूर्वार्ध में), राजाओं में युद्ध, जनता में भय तथा ईति भय होता है एवं (उत्तरार्द्ध में) धान्य की वृद्धि होती है ॥ २२ ॥

प्रभूतपयसो गावः सुजनाः सुखिनः स्त्रियः ।
मदोद्धताः कर्किणीज्ये सस्यवृद्धियुता धरा ॥ २३ ॥

अन्वयः—कर्किणीज्ये-गावः प्रभूतपयसः सुजनाः सुखिनः, स्त्रियः मदोद्धताः धरा सस्यवृद्धियुता (च भवेत्) ।

विमला—कर्क राशि पर गुरु के जाने पर गायें बहुत दूध देने वाली, सज्जनों का सुख, स्त्रियाँ मद-माती तथा धान्य से सम्पन्न पृथ्वी होती है ॥ २३ ॥

सिंहराशिगते जीवे निःस्वा भू[1]सुरसत्तमाः ।
अतिवृष्टिर्व्यालभयं नृपा युद्धे लयं ययुः ॥ २४ ॥

अन्वयः—जीवे सिंहराशिगते भूसुरसत्तमा निःस्वा । अतिवृष्टिः, व्यालभयं, युद्धे नृपा लयं ययुः ।

विमला—सिंह राशि के गुरु में विप्र धनहीन हो जावें तथा अतिवृष्टि, सर्प भय और युद्ध में राजाओं का नाश होता है ॥ २४ ॥

जीवे कन्यागते वृष्टिः हृष्टाः स्वस्थाः क्षितीश्वराः ।
महोत्सुकाः क्षितिसुराः स्वस्थाः स्युर्निखिला जनाः ॥ २५ ॥

अन्वयः—जीवे कन्यागते (सति) वृष्टिः (भवेत्), क्षितीश्वराः स्वस्थाः हृष्टाश्च (भवेयु), क्षितिसुराः महोत्सुकाः निखिला जनाः स्वस्थाः स्युः ।

विमला—कन्या राशि के गुरु में सुन्दर वृष्टि हो, राजा स्वस्थ और प्रसन्न रहें। ब्राह्मण धर्म रत तथा सम्पूर्ण प्रजा स्वस्थ रहती है ॥ २५ ॥

---

१. 'स्युरसज्जनाः' इति मूलः पाठः ।

जीवे तुलागते सर्वं धातुमूलातुलं जगत् ।
तथापि धात्री सम्पूर्णा धनधान्यसुवृष्टिभिः ॥ २६ ॥

अन्वयः—जीवे तुलागते जगत् सर्वं धातुमूलातुलं, सुवृष्टिभिः धात्री धनधान्यसम्पूर्णा (स्युः) ।

विमला—गुरु के तुलाराशि में जाने पर सभी प्रकार का धातु तथा मूल अत्यधिक होता है एवं सुवृष्टि से पृथ्वी धनधान्य परिपूर्ण होती है ॥२६॥

मदोद्धतानां भूपानां युद्धे जनपदक्षयः ।
अतुष्टा वृष्टिरत्युग्रं डामरं कीटगे गुरौ ॥ २७ ॥

अन्वयः—कीटगे गुरौ युद्धे मदोद्धतानां भूपानां जनपदक्षयः । वृष्टिः अतुष्टा, डामरं च अत्युग्रं (भवति) ।

विमला—वृश्चिक राशि में गुरु के जाने पर मदोन्मत्त राजाओं में युद्ध से जनपदों का नाश होता है एवं वृष्टि अत्यल्प या अत्यन्त उग्र एवं भयानक होती है । जिससे व्यग्रता (कोलाहल) रहती है ॥ २७ ॥

जीवे चापगते भीतिरीतिर्भूपभयं महत् ।
अतुष्टावृष्टिरत्युग्रा पीडा निःस्वाः क्षितीश्वराः ॥ २८ ॥

अन्वयः—चापगते जीवे (सति) इति भीतिः, महत् भूपभयं, वृष्टिः अतुष्टा, अत्युग्रापीडा क्षितीश्वराः निःस्वाः (स्युः) ।

विमला—धनुराशि के गुरु में ईति भीति तथा राजभय, अल्पवृष्टि उग्रराज पीड़ा तथा राजा धनरहित हो या राजाओं के धन का नाश हो ॥ २८ ॥

अशत्रवो जना धात्री पूर्णा सस्यार्थवृष्टिभिः ।
वीतरोगभयाः सर्वे मकरस्थे सुरार्चिते ॥ २९ ॥

अन्वयः—सुरार्चिते मकरस्थे (सति) जनाः, अशत्रवः, वृष्टिभिः धात्री सस्यार्थपूर्णा, सर्वे (जनाः) वीतरोगभयाश्च ।

विमला—मकर राशि के गुरु में जनता शत्रु रहित, पृथ्वी धान्य, वृष्टि एवं धन से पूर्ण तथा जनवर्ग रोगभय से मुक्त रहता है ॥ २९ ॥

सुरस्पर्द्धिजना धात्री फलपुष्पार्घवृष्टिभिः ।
सम्पूर्णा कुम्भगे जीवे वीतरोगयुता धरा ॥ ३० ॥

१. 'वीति रोग' इति मूल पाठः ।

अन्वयः—जीवे कुम्भगे (सति) जना सुरस्पर्द्धि, धात्री फलपुष्पार्घ-वृष्टिभिः सम्पूर्णा धरा वीतरोगयुता (भवति) ।

विमला—कुम्भराशि के गुरु में जनता देवताओं से स्पर्धा (होड़) करने वाली । पृथ्वी फल पुष्प समर्धता एवं वृष्टि से परिपूर्ण एवं रोग भय से भूमि रहित होती है ।। ३० ।।

धान्यार्घवृष्टि संपूर्णा क्वचिद्रोगः क्वचिद् भयम् ।
न्यायमार्गरता भूपाः सर्वे मीनस्थिते गुरौ ।। ३१ ।।

इति नारदीय संहितायां द्वितीयाध्याये गुरुचारः ।

अन्वयः—गुरौ मीन स्थिते सर्वे भूपाः न्यायमार्गयुता, धान्यार्घ-वृष्टिसंपूर्णाः (जनाः), क्वचित् रोगः क्वचित् भयम् ।

विमला—मीनराशिगत गुरु में धान्य, समर्घ और वृष्टि से भूमि पूर्ण तथा कहीं कहीं रोग एवं कहीं भय हो और राजा न्याय करनेवाले होते हैं ।। ८ ।।

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में गुरुचार समाप्त ।

(अथ शुक्रचारः)

सौम्यमध्यमयाम्येषु मार्गेषु त्रित्रिवीथयः ।
शुक्रस्यदस्रभाद्यैश्च पर्यायैश्च त्रिभिस्त्रिभिः ।। १ ।।
नागेभैरावताश्चैव वृषभो गोजरद्गवाः ।
मृगाजदहनाख्याः स्युयाम्यान्ता वीथयो नव ।। २ ।।

अन्वय :—शुक्रस्य दस्रभाद्यैश्च त्रिभिः त्रिभिः पर्यायैश्च सौम्यमध्यम-याम्येषु मार्गेषु त्रित्रिवीथयः (भवन्ति) यथा—१–नाग, २–इभ, ३–ऐरावत ४–वृषभः, ५–गो, ६–जरद्गवाः, ७–मृग, ८–अज, ९–दहनाख्या नव वीथयः याम्यान्ता स्युः ।

विमला—उत्तर, मध्य और दक्षिण मार्ग में शुक्र की क्रमशः तीन तीन वीथियाँ (गलियाँ) अश्विन्यादि क्रम से होती है। जिनका नाम क्रमशः १–नागवीथि, २–गजवीथि, ३–ऐरावत, ४–वृषभ, ५–गो, ६–जरद्गव, ७–मृग, ८–अज तथा ९–दहन वीथि याम्यान्त क्रम से होती हैं।। ३ ।।

सौम्यमार्गेषु तिसृषु चरन् वीथिषु भार्गवः ।
धान्यार्घवृष्टिसस्यानां परिपूर्तिं करोति सः ॥ ३ ॥

अन्वयः—सः भार्गवः सौम्यमार्गेषु तिसृषु वीथिषु चरन् धान्यार्घ-वृष्टि, सस्यानां परिपूर्तिः करोति ।

विमला—सौम्य (उत्तर) मार्ग में नाग, गज तथा ऐरावतवीथियों से जब शुक्र गमन करता है तब धान्यार्घ वृष्टि और सस्य वृद्धि करता है ॥ ३ ॥

मध्यमार्गेषु तिसृषु करोत्येषां तु मध्यमः ।
याम्यमार्गेषु तिसृषु तेषामेवाधमं फलम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—तिसृषु मध्यमार्गेषु तु एषां मध्यमः करोति । तिसृषु याम्य-मार्गेषु (सः भार्गवः चरन्) तेषां एव अधमं फलं (करोति) ।

विमला—मध्यमार्ग में (वृषभ-गो-जरद्गव) नामक वीथियों में जब शुक्र गमन करता है । तब मध्यम फलदायक होता है तथा याम्य मृग-अज-दहन नामक विथियों से जब शुक्र गमन करता है तब अधम फलदायक होता है ॥ ५ ॥

पूर्वस्यां दिशि जलदः शुभकृत् पितृपञ्चके ।
स्वातित्रये पश्चिमायां सम्यक् शुक्रस्तथाविधः ॥ ५ ॥
विपरीतेत्वनावृष्टिर्वृष्टिकृद् बुधसंयुतः ।
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्याममावास्यां यदा सितः ॥ ६ ॥
उदयास्तमयं याति तदा जलमयी क्षितिः ।
मिथः सप्तमराशिस्थौ पश्चात् प्राग्वीथिसंस्थितौ ॥ ७ ॥
गुरुशुक्रावनावृष्टिर्दुर्भिक्षमरणप्रदौ ।
कुजज्ञजीवरविजाः शुक्रस्याग्रेसरा यदा ॥ ८ ॥
युद्धातिवायुदुर्भिक्ष जलनाशकरास्तदा ।
कृष्णरक्तस्तनुः शुक्रो पवनानां विनाशकृत् ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम्

इति नारदीयसंहितायां द्वितीयाध्याये शुक्रचारः ।

विमला—मघा से ५ नक्षत्रों में शुक्र के रहने पर पूर्व दिशा के मेघ शुभद होते हैं। स्वाती, विशाखा और अनुराधा में शुक्र पश्चिम में शुभद होता है। इसके विपरीत अनावृष्टि होती है। तथा बुध के साथ हो तो सुवृष्टि होती है। कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी और अमावास्या को यदि शुक्र उदय या अस्त होता है तो सुवृष्टि से भूमि को जलमय करता है। यदि गुरु और शुक्र परस्पर सप्तम राशि में होकर पूर्व और पश्चिम वीथि में हों तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और मरण प्रद होते हैं। कुज, बुध, गुरु, और शनि शुक्र के अग्रसर होते हैं, तो क्रमशः युद्ध, वाताधिक्य, दुर्भिक्ष एवं जलका नाश करने वाले होते हैं। कृष्ण, रक्त वर्ण का शुक्र उपवनों का नाश कारक होता है॥ ५–६॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में शुक्रचार समाप्त।

(अथ शनिचारः)

श्रवणानिलहस्तार्द्रा भरणी भाग्यभेषु च।
चरन् शनैश्चरो नृणां सुभिक्षारोग्यसस्यकृत्॥ १॥

अन्वयः—शनैश्चरो श्रवण-अनिल-हस्त-आर्द्रा-भरणी-भाग्यभेषु च चरन् नृणां सुभिक्ष-आरोग्यसस्यकृत् (भवेत्)।

विमला—श्रवण, स्वाती, हस्त, आर्द्रा, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, नक्षत्रों में यदि शनि गमन करे तो सुभिक्ष, आरोग्य तथा धान्य कारक होता है॥ १॥

जलेशसार्पमाहेन्द्र नक्षत्रेषु सुभिक्षकृत्।[1]
क्षुत् शस्त्रावृष्टिदोर्मूलेऽहिर्बुध्न्यान्त्यभयोर्भयम्॥ २॥

अन्वयः—जलेश-सार्प-माहेन्द्रनक्षत्रेषु (चरन् शनिः) सुभिक्षकृत्। मूले क्षुत्, शस्त्र, अवृष्टिदो, अहिर्बुध्न्यान्तभयोः भयम् (भयकृत् भवेत्)।

विमला—शतभिषा, आश्लेषा और ज्येष्ठा नक्षत्रों में सुभिक्ष करने वाला, मूल नक्षत्र में भूख, शस्त्र भय तथा अवृष्टि कारक एवं उत्तराभाद्र पद और रेवती नक्षत्रों में भयप्रद होता है॥ २॥

मूर्ध्नि चैकं मुखे त्रीणि गुह्ये द्वे नयने द्वयम्।
हृदये पञ्च ऋक्षाणि वामहस्ते चतुष्टयम्॥ ३॥

---

१. "जलौशसार्य माहेन्द्र नक्षत्रेषु सुभिक्षकृत्" इति मूल पाठः।

वामपादे तथा त्रीणि देया त्रीणि च दक्षिणे ।
दक्षहस्ते च चत्वारि जन्मभाद्रविजस्थितः ॥ ४ ॥
रोगो लाभस्तथा हानिर्लाभसौख्यं च बन्धनं ।
आयासं चेष्टयात्रा च अर्थलाभः क्रमात्फलम् ॥ ५ ॥
वक्रकृद्रविजस्येह तद्वक्रफलमीदृशम् ।
करोत्येवं समः साम्यं शीघ्रगो व्युत्क्रमात्फलम् ॥ ६ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां द्वितियाध्याये शनिचारः ।

अन्वयः—अति सुगमम् ।

विमला—पुरुषाकार शनि के शिर पर १, मुख में ३, गुह्य भाग में २, नेत्र में २, हृदय में ५, वायें हाथ में ४, वायें पैर में ३, दाहिने पैर में ३, और दाहिने हाथ में ४ नक्षत्र की स्थापना जन्म नक्षत्र से क्रमशः करना चाहिए। इस प्रकार क्रमशः रोग, अलाभ, हानि, लाभ, सौख्य, बन्धन, दुःख, इष्ट यात्रा तथा अर्थलाभ यह फल समझना चाहिए। यदि शनि वक्री हो तो विपरीत फल देता है और सम में समफल तथा शीघ्रगामी हो तो भी विपरीत फल देता है ॥ ३–६ ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में शनिचार समाप्त ।

(अथ राहुचारः)

अमृतास्वादनाद्राहुः शिरश्छिन्नोपि सोऽमृतः ।
विष्णुना तेन चक्रेण तथापि ग्रहतां गतः ॥ १ ॥

अन्वयः—अमृत-आस्वादनात्, विष्णुना चक्रेण शिरश्छिन्नोऽपि सः राहुः अमृतः । तेन तथापि ग्रहतां गतः ।

विमला—अमृत पान करने के कारण भगवान् विष्णु के द्वारा सुदर्शन चक्र से शिर के कट जाने पर भी राहु अमर हो गया तथा ग्रह की श्रेणी में आ गया ॥ १ ॥

वरेण धातुरर्केन्दू ग्रसते सर्वपर्वणि ।
विक्षेपावनतेर्वश्याद्राहुर्दूरं गतस्तयोः ॥ २ ॥

अन्वयः—धातुः वरेण सर्वपर्वणि अर्केन्दू: ग्रसते। विक्षेपावनतेर्वशात् राहुः तयोः दूरं गतः।

विमला—ब्रह्मा से वरदान प्राप्तकर अमावस्या और पूर्णिमा पर क्रमशः सूर्य और चन्द्र को ग्रसता है। विक्षेप की अवनति के कारण राहु, सूर्य और चन्द्रमा से दूर चला गया ॥ २ ॥

षण्मासवृद्ध्या ग्रहणं शोधयेद्रविचन्द्रयोः ।
पर्वेशाः स्युस्तथा सप्त देवाः कल्पादितः क्रमात् ॥ ३ ॥

अन्वयः—रविचन्द्रयोः ग्रहणं षण्मासवृद्ध्या शोधयेत् तथा कल्पादितः क्रमात् सप्तदेवाः पर्वेशाः स्युः।

विमला—सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण ६ मास के वृद्धि के द्वारा होता है। इन ग्रहण काल के पर्वों का अधिपति कल्पादि के क्रम से सात देवता होते हैं ॥ ३ ॥

ब्रह्मेन्द्विन्द्रधनाधीशवरुणाग्नियमाह्वयाः ।
पशुसस्यद्विजातीनां वृद्धिर्ब्राह्मे च पर्वणि ॥ ४ ॥

अन्वयः—ब्रह्म-इन्दु-इन्द्र-धनाधीश-वरुण-अग्नि-यमाह्वयाः (एते पर्वेशाः स्युः) ब्राह्मे पर्वणि च पशु-सस्य-द्विजातीनां वृद्धिः (भवेत्)।

विमला—ब्रह्मा, इन्दु, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम नामक अधिपति होते हैं। ब्रह्म नामक पर्व में ग्रहण होने से पशु, अन्न और ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यों की वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

तद्वदेव फलं सौम्ये बुधपीडा च पर्वणि ।
विरोधो भूभुजां दुःखमैन्द्रे सस्यविनाशनम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—तद्वत् (ब्रह्म पर्वसदृशं) फलं सौम्ये (ज्ञातव्यम्) पर्वणि बुधपीडा च। इन्द्रे भूभुजां विरोधः, दुःखम्, सस्यविनाशनम् (च भवेत्)।

विमला—ब्रह्म पर्व के सदृश सभी फल चन्द्र पर्व में भी समझना चाहिए। किन्तु इसमें बुद्धिजीवी वर्ग को कष्ट होता है। इन्द्र पर्व में राजाओं में विरोध तथा दुःख एवं धान्यहानि होती है ॥ ५ ॥

अर्थेशानामर्थहानिः कौबेरे धान्यवर्धनम् ।
नृपाणामशिवं क्षेममितरेषां तु वारुणे ॥ ६ ॥

अन्वयः—कौबेरे अर्थेशानामर्थहानिः धान्यवर्धनम्। वारुणे तु नृपाणामशिवं इतरेषां क्षेमम्।

विमला—कुबेर नामक पर्व में ग्रहण होने से धनिक वर्गों के धन की हानि किन्तु अन्न की उपज होती है। तथा वरुण नामक पर्व में ग्रहण होने से राजाओं के लिए अशुभ तथा सामान्य जनता के लिए कल्याणप्रद होता है॥ ६॥

प्रवर्षणं सस्यवृद्धिः क्षेमं हौताशपर्वणि।
अनावृष्टिः सस्यहानिर्दुर्भिक्षं याम्यपर्वणि॥ ७॥

अन्वयः—हौताशपर्वणि सस्यवृद्धिः प्रवर्षणम्। याम्य पर्वणि अनावृष्टिः सस्य हानिः दुर्भिक्षं च (भवेत)।

विमला—हुताशन पर्व में धान्य की वृद्धि, उत्तम वृष्टि तथा प्रजा का कल्याण। यम पर्व में अनावृष्टि, धान्यहानि तथा दुर्भिक्ष (अकाल) से जनवर्ग पीड़ित होता है॥ ७॥

वेलाहीनेसस्यहानिर्नृपाणां दारुणं रणम्।
अतिवेले पुष्पहानिर्भयंसस्य विनाशनम्॥ ८॥
एकस्मिन्नेवमासेतु चन्द्रार्कग्रहणं यदा।
विरोधं धरणीशानामर्थवृष्टिविनाशनम्॥ ९॥
ग्रस्तोदितावस्तमितौ नृपधान्यविनाशदौ।
सर्वग्रस्ताविनेन्दूभौ क्षुद्वाय्वग्नि भयप्रदौ॥ १०॥

अन्वयः—अति सुगमम्।

विमला—वेलाहीन (कालातिक्रमण अर्थात् समय से पहले) ग्रहण में धान्यहानि तथा राजाओं में घोर युद्ध होता है। अतिवेला (स्पष्ट समय के बाद ग्रहण का होना) में पुष्पहानि, भय, तथा अन्न की उपज में कमी होती है। यदि एक ही मास में दो चन्द्र सूर्य ग्रहण दोनों हों तो राजाओं में घोर विरोध, धनहानि तथा अवर्षण होता है। ग्रस्तोदय ग्रहण में राजा का नाश, ग्रस्तास्त में धान्य का नाश तथा सर्वग्रास ग्रहण में क्षुद्भय, वायुभय तथा अग्निभय होता है॥ ८-१०॥

द्विजादींश्च क्रमाद्धंति राहुर्दृष्टो दिगादितः।
दशैव ग्रासभेदाः स्युर्मोक्षभेदास्तथा दश॥ ११॥

न शक्या लक्षितुं देवैः किं पुनः प्राकृतैर्जनैः ।
आनीय खेटान् सिद्धान्तात्तेषां चारं विचिन्तयेत् ॥ १२ ॥
शुभाशुभाप्तेः कालस्य ग्रहचारो हि कारणं ।
तस्मादन्वेषणीयं तत्कालज्ञानाय धीमता ॥ १३ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां द्वितीयाध्याये राहुचारः ।

अन्वयः—अतिसुगमम् ।

विमला—दिशाक्रम से जाता हुआ राहु ब्राह्मणादि वर्णों को कष्टप्रद होता है । ग्रास[1] के १० तथा मोक्ष[2] के दश भेद होते हैं । देवताओं के द्वारा भी ग्रास और मोक्ष के दशविधभेद दृष्टिगोचर नहीं होते फिर सामान्यजनों की बात ही क्या है । अतः सिद्धान्त गणित द्वारा ग्रहों का आनयन कर उनका चारचिन्तन करना चाहिए। समय के शुभाशुभ ज्ञान के लिए ग्रहों का चार ही कारण है अतः बुद्धिमान को चारवश ज्ञान का अन्वेषण करना चाहिए ॥ ११–१३ ॥

इति नारद संहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में राहुचार समाप्त ।

(अथ केतुचारः)

उत्पातरूपा केतूनां उदयास्तमया नृणाम् ।
दिव्यान्तरिक्षा भौमास्तेशुभाशुभफलप्रदाः ॥ १ ॥

अन्वयः—केतूनां उदयास्तमया नृणां उत्पातरूपा । ते दिव्यान्तरिक्षा भौमाः शुभाशुभ फलप्रदाः (स्युः) ।

विमला—केतु का उदय और अस्त होना उत्पात रूप हैं । ये केतु दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम भेद से ३ प्रकार के हैं । ये मनुष्यों को शुभ तथा अशुभ फलदायक होते हैं ॥ १ ॥

---

१. सव्य, अपसव्य, लेह्य, ग्रसन, निरोध, अवमर्द, आरोह, आघ्रात, मध्यतम और तमोन्त्य ये १० ग्रास भेद हैं ।
(वाराहीसंहिता अ. ५ श्लो. ४२)

२. दो प्रकार का हनुभेद, दो प्रकार का कुक्षिभेद, दो प्रकार का वायुभेद तथा संछर्दन, जरण, मध्यविदारण और अन्तविदारण ये १० मोक्ष भेद हैं ।
(वाराहीसंहिता अ. ५ श्लो. ८१)

यज्ञध्वजास्त्रभवनरथवृक्षगजोपमाः ।
स्तंभशूलगदाकारा अंतरिक्षाः प्रकिर्तिताः ॥ २ ॥
नक्षत्रसंस्थिता दिव्याः भौमा ये भूमिसंस्थिताः ।
एकोप्यमित्ररूपः स्याज्जन्तूनामशुभाय वै ॥ ३ ॥

अन्वयः—यज्ञध्वज-अस्त्र-भवन-रथ-वृक्ष-गजोपमाः शूलस्तंभगदाकारा (च) अन्तरिक्षाः (उत्पाताः) प्रकीर्तिताः ॥ (ये) नक्षत्रसंस्थिता (ते) दिव्याः (ये) भूमि संस्थिता (ते) भौमाः (ये) एकोऽपि अभिन्नरूपा जन्तूनां अशुभाय (भवेत्) ।

विमला—जो केतु यज्ञध्वज, अस्त्र, भवन, रथ, वृक्ष, गज, स्तम्भ, शूल और गदा के आकार के हैं उन्हे अन्तरिक्ष केतु कहते हैं। नक्षत्रों में जो स्थित हैं उन्हें दिव्यकेतु और जो भूमि पर स्थित हैं उन्हें भौम केतु कहते हैं। अभिन्नरूप से एक भी केतु जीवों के अमंगल का कारण होता है॥ २-३ ॥

यावन्तो दिवसाः केतुर्दृश्यतेविविधात्मकः ।
तावन्मासैः फलं वाच्यं मासैश्चैव तु वासराः॥ ४ ॥
ये दिव्याःकेतवस्तेऽपि शश्वतीव्रफलप्रदाः ।
अन्तरिक्षा मध्यफला भौमा मन्दफलप्रदाः ॥ ५ ॥

अन्वयः—विविधात्मकः केतुः यावन्तो दिवसाः दृश्यते तावन्मासैः फलं वाच्यम् । मासैः चैवं तु वत्सराः । ये दिव्याः केतवः तेऽपि तीव्रफलप्रदाः । अन्तरिक्षा मध्यफला भौमा च मन्दफलप्रदा (भवेत्) ।

विमला—विविध प्रकार का केतु जितने दिनों तक दिखाई देता है उतने ही महीनों तक फल देता है। तथा जितने महीनों तक दिखाई दे उतने वर्षों तक उसका शुभाशुभ फल होता है जो दिव्यकेतु हैं वे भी कटुफलदायक, अन्तरिक्ष केतु मध्यम और भौमकेतु मन्द फलद होते हैं।

ह्रस्वः स्निग्धः सुप्रसन्नः श्वेतकेतुः सुभिक्षकृत् ।
क्षिप्रागस्त[1]मयं याति दीर्घकेतुः सुवृष्टिकृत् ॥ ६ ॥
अनिष्टदो धूमकेतुः शक्रचापस्य सन्निभः ।
द्वित्रिचतुः शूलरूपः स च राज्यान्तकृत्तदा ॥ ७ ॥

१. 'प्रादस्त' इति मूल पाठः ।

अन्वयः—ह्रस्वः स्निग्धः सुप्रसन्नः श्वेतकेतुः सुभिक्षकृद् (भवेत्)। चेत् दीर्घकेतुः क्षिप्रागस्तमयं याति (तदा सोऽपि) सुवृष्टिकृद् (भवेत्) शक्रचापस्य सन्निभः धूमकेतुः अनिष्टदः। द्वित्रिचतुः शूलरूपः तदा (स केतुः) राज्यान्तकृत् (भवेत्)।

विमला—श्वेतकेतु छोटा चिकना और स्वच्छ होता है तथा सुभिक्ष सूचक होता है। दीर्घकेतु यदि पूर्व दिशा में अस्त हो तो सुवृष्टि कारक होता है। इन्द्रधनुष के समान आकृतिवाला धूमकेतु अनिष्टद और २, ३, ४ शूल के रूप में दिखाई देने वाला केतु राजा का अन्त करने वाला होता है ॥ ६–७ ॥

मणिहार सुवर्णाभा दीप्तिमन्तोऽर्कसूनवः।
केतवोभ्युदिताः पूर्वापरयोर्नृपघातकाः ॥ ८ ॥
बन्धूकबिम्बक्षतजशुकतुण्डाग्निसन्निभाः।
हुताशनप्रदास्तेपि केतवश्चाग्निसूनवः ॥ ९ ॥

अन्वयः—मणि-हार-सुवर्णाभा दीप्तिमन्तः केतवः अर्कसूनवः (कथिता) अभ्युदिता पूर्वापरयोर्नृपघातकाः (भवन्ति)। बन्धूक-बिम्ब-क्षतज-शुकतुण्ड-अग्नि सन्निभा केतवश्च-अग्निसूनवः (प्रोक्ता) तेऽपि हुताशनप्रदाः।

विमला—मणि, हार तथा सोने की कान्ति के समान चमकने वाले केतु सूर्यपुत्र कहलाते हैं यदि ये उदय हों तो पूर्व तथा पश्चिम दिशा के राजाओं का नाश होता है। दुपहरिया का फूल, बिम्बा फल (लाली) रुधिर, तोते का चोंच तथा अग्नि के वर्ण के केतु अग्निभय करते हैं। तथा ये अग्नि के पुत्र कहे जाते हैं ॥ ८–९ ॥

व्याधिप्रदा मृत्युसुता वक्रास्ते कृष्णकेतवः।
भूसुता जलतैलाभा वर्तुलाः क्षुद्भयप्रदाः ॥ १० ॥
क्षेमाः सुभिक्षदाः श्वेताः केतवः सोमसूनवः।
पितामहात्मजः केतुः त्रिवर्णास्त्रिशिखान्विताः ॥ ११ ॥

अन्वयः—वक्राः कृष्णकेतवः मृत्युसुता ते व्याधिप्रदाः। जल-तैलाभा वर्तुला भूसुता क्षुद्भयप्रदाः। सोमसूनवः श्वेताः केतवः क्षेमः सुभिक्षदाः। त्रिवर्णा त्रिशिखान्विताः केतुः पितामहात्मजः।

विमला—वक्र और कृष्णकेतुः व्याधिप्रद होते हैं तथा मृत्युपुत्र कहे जाते हैं। जल तथा तेल की प्रभावाले गोले केतु भूख तथा भयप्रद होते हैं इन्हें भूमिपुत्र कहते हैं। श्वेत केतु (चन्द्रपुत्र) क्षेम तथा सुभिक्ष कारक। पितामह से उत्पन्न होने वाले केतु तीन वर्ण तथा शिखा वाले होते हैं॥ १०–११॥

ब्रह्मदण्डाह्वयः केतुः प्रजानामन्तकृत्सदा।
(ई) ऐशान्यां भार्गवसुताः श्वेतरूपास्त्वनिष्टदाः॥ १२॥
अनिष्टदाः पंगुसुताः द्विशिखाकनकाह्वयाः।
विकचाख्या गुरुसुतानेष्टा याम्यस्थिता अपि॥ १३॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—ब्रह्मदण्ड नामक केतु प्रजा का नाशक। ईशान कोण में शुक्रपुत्र श्वेत केतु अनिष्टद। शनिपुत्र केतु दो शिखावाले स्वर्ण वर्ण के होते हैं जो अनिष्टकारक होते हैं। गुरु के पुत्र केतु विकचनाम से प्रसिद्ध हैं, ये दक्षिण में दिखाई देते हैं और अशुभ फलद होते हैं।

सूक्ष्माः शुक्लाः बुधसुता घोराश्चौरभयप्रदाः।
कुजात्मजाः कुंकुमाख्या रक्ताः शूलास्त्वनिष्टदाः॥ १४॥
अग्निजा विश्वरूपाख्या अग्निवर्णाः शुभप्रदाः।
अरुणाश्यामलाकाराः पापपुत्राश्च पापदाः॥ १५॥

अन्वयः—अतिसुगमम्।

विमला—बुधपुत्र केतु सूक्ष्म आकार के तथा श्वेत होते हैं। ये घोर होते हैं तथा चौर भयकारक होते हैं। मंगलपुत्र केतु कुंकुम नामक रक्त-वर्ण के होते हैं। इनसे शूल तथा अनिष्ट होता है। अग्नि से उत्पन्न केतु विश्वरूप से प्रसिद्ध हैं ये अग्निवर्ण के तथा शुभप्रद होते हैं। पापपुत्र केतु पाप फलदायक होते हैं॥ १४–१५॥

शुक्रजा ऋक्षसदृशाः केतवः शुभदायकाः।
कंकाख्या ब्राह्मजाः श्वेताः कष्टा वंशलतोपमाः॥ १६॥
कबन्धाख्याः कालसुताः भस्मरूपास्त्वनिष्टदाः।
विधिपुत्राह्वयाः शुक्लाः केतवोऽनिष्टदायकाः॥ १७॥

अन्वयः—अतिसुगमम् ।

विमला—शुक्र से उत्पन्न केतु नक्षत्र के समान होते हैं तथा शुभदायक होते हैं। कंक नामक ब्रह्म के सन्तान रूप केतु श्वेत, कष्टप्रद तथा वंश अथवा लता के समान होते हैं। कालपुत्रकेतु कबन्ध नाम से भस्माकृतिवाले अनिष्टदायक होते हैं। जो विधिपुत्र नामक केतु श्वेत वर्ण के होते हैं वे अनिष्टदायक होते हैं ॥ १६–१७ ॥

कृत्तिकासुसमूद्भूतो धूमकेतुः प्रजान्तकृत् ।
प्रासादशैलवृक्षेषु जातो राज्ञां विनाशकृत् ॥ १८ ॥
सुभिक्षकृत् कुमुदाख्यः केतुः कुमुदसन्निभः ।
आवर्त्तकेतुः शुभदः रवेश्चावर्तसन्निभः ॥ १९ ॥
संवर्त्तकेतुः संध्यायां त्रिशिरा नेष्टदाऽरुणः[1] ॥ २० ॥

इति श्रीनारदसंहितायां ग्रहचारान्तर्गतकेतुचारः सम्पूर्णः ।

अन्वयः—अतिसुगमम् ।

विमला—कृत्तिका नक्षत्र से उत्पन्न केतु धूमकेतु कहलाता है तथा प्रजावर्ग का नाश करने वाला होता है। प्रासाद, पर्वत, और वृक्षों पर दृष्टिगोचर होने वाला केतु राजा का नाश करता है। कुमुद पुष्प के समान केतु कुमुद केतु कहलाता है तथा सुभिक्षकारक होता है। आवर्त्त नामक केतु सूर्यावर्त सदृश होता है तथा शुभद है। संवर्त केतु तीन सिरवाला लाल वर्ण का, अनिष्टकारक होता है। यह संध्या समय में दृष्टिगोचर होता है ॥ १८–२० ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में राहुचार समाप्त ।

---

१. 'नेत्रदोऽरुणः' इति मूलपाठः ।

अथ तृतीयोऽध्यायः

ब्राह्मं दैवं मानुषं च पित्र्यं सौरं च सावनं।
चान्द्रमार्क्षं गुरोर्मानमिति मानानि वै नव ॥ १ ॥
एषां तु नवमानानां व्यववहारोऽत्र पञ्चभिः।
तेषां पृथक् पृथक् कार्यं वक्ष्यते व्यवहारतः ॥ २ ॥

अन्वयः—अतिसुगमम्।

विमला—१ ब्राह्म, २ दैव, ३ मानुष, ४ पैत्र्य, ५ सौर, ६ सावन, ७ चान्द्र, ८ नाक्षत्र और ९ बार्हस्पत्य ये ९ प्रकार के वर्षमान होते हैं। इनमें ५ मानों को व्यवहार में देखा जाता है। व्यवहार के अनुसार इनका कार्य पृथक् पृथक् कहते हैं ॥ १-२ ॥

ग्रहणं निखिलं कार्यं गृह्यते सौरमानतः।
विधेर्विधानं स्त्रीगर्भं सावने नैव गृह्यते ॥ ३ ॥
प्रवर्षणं मेघगर्भो नाक्षत्रेण प्रगृह्यते।
यात्रोद्वाहव्रतक्षौरतिथिवर्षादिनिर्णयः ॥ ४ ॥
पर्ववास्तूपवासादि कृत्स्नं चान्द्रेण गृह्यते।
गृह्यते गुरुमानेन प्रभवाद्यब्दलक्षणम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—अतिसरलम्।

विमला—ग्रहण तथा इससे सम्बन्धित कार्य सौरमान से, स्त्रीगर्भाधानादि सावनमान से वर्षा और मेघगर्भ तथा यात्रा विवाह, व्रतबन्धादि तिथि वर्षादि निर्णय नाक्षत्र मान से, पर्वनिर्णय, गृहनिर्माण व्रतोपवासादि निर्णय चान्द्रमान से और षष्टि सम्बत्सरों का लक्षण गुरुमान से जाना जाता है ॥ ३-५ ॥

भचक्रगतिरार्क्षं स्यात्सावनं त्रिंशता दिनैः।
सौरं संक्रमणं प्रोक्तं चान्द्रं प्रतिपदादिकम् ॥ ६ ॥

अन्वय—भचक्रगतिरार्क्षं, त्रिंशता दिनैः सावनं स्यात्, संक्रमणं सौरं, प्रतिपदादिकं चान्द्रं च प्रोक्तम्।

विमला—नक्षत्रोदय से नक्षत्रोदय कालमान को नाक्षत्रमान, तीस दिनों का सावनमास मान, सूर्य की राशिगत संक्रान्ति से सौरमान तथा चैत्र शुक्ल प्रतिपद से अमावाश्या तक प्रतिपदादि तिथियों को चान्द्र-मान कहते हैं ॥ ६ ॥

तत्तन्मासैर्द्वादशभिस्तत्तदब्दो भवेत्ततः।
गुरुचारेण सम्भूताः षष्टयब्दाः प्रभवादयः॥ ७॥
प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अंगिराः श्रीमुखो भावो युवाधाता तथेश्वरः॥ ८॥
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमोवृषसंज्ञकः।
चित्रभानुः स्वभानुश्च तारणः प्रार्थिवो व्ययः॥ ९॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विवृतः खरः।
नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥ १०॥
हेमलंबो विलम्बश्च विकारी शार्वरी प्लवः।
शुभकृच्छोभनः (भकृत्) क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥ ११॥
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्।
परीधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥ १२॥
पिंगलः कालयुक्तिश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मतीः।
दुंदुभी रुधिरोद्गारी, रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥ १३॥

अन्वय—अतिसुगमम्।

विमला—अपने-अपने मान के अनुसार १२ माह का वर्ष होता है। गुरुमान से प्रभवादि ६० सम्वत्सर होते हैं जिनका नाम क्रमशः १ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापतिः ६ अंगिरा, ७ श्रीमुख, ८ भावी, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम १५ वृष, १६ चित्रभानु, १७ स्वभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० व्यय, २१ सर्वजित्, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी २४ विकृत, २५ खर,

२६ नंदन, २७ विजय, २८ जय, २६ मन्मथ, ३० दुर्मुख, ३१ हेमलम्ब, ३२ विलम्ब, ३३ विकारी, ३४ शार्वरी, ३५ प्लव, ३६ शुभकृत्, ३७ शोभन ३८ क्रोधी, ३६ विश्वावसु, ४० पराभव, ४१ प्लवंग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य, ४४ साधारण, ४५ विरोधिकृत्, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनन्द ४६ राक्षस, ५० नल, ५१ पिंगल, ५२ कालयुक्ति, ५३ सिद्धार्थी, ५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुंदुभी, ५७ रुधिरोद्गारी, ५८ रक्ताक्ष, ५६ क्रोधन, और ६० क्षय संवत्सर होता है ॥ ७-१३ ॥

युगं स्यात्पंचभिर्वर्षैर्युगानि द्वादशैव ते ।
तेषामीशाः क्रमाज्ज्ञेया विष्णुर्देवपुरोहितः ॥ १४ ॥
पुरन्दरो लोहितश्च त्वष्टाहिर्बुध्नसंज्ञकः ।
पितरश्च ततो विश्वे शशीन्द्राग्नीभगोश्विनौ ॥ १५ ॥
युगस्य पंचवर्षेशा वह्नीनेन्द्रब्जजेश्वराः ।
तेषां फलानि प्रोच्यन्ते वत्सराणां पृथक् पृथक् ॥ १६ ॥

अन्वयः—पंचभिः वर्षैः युगं स्यात् ते युगानि द्वादशैव । तेषां (द्वादश युगानां ईशाः क्रमाद् विष्णुः, देवपुरोहितः, लोहितः (च) त्वष्टा, अहिर्बुध्न (संज्ञकः) पितरः च ततः विश्वे, शशी, इन्द्राग्नि, भगः, अश्विनौ, ज्ञेया युगस्य पञ्चवर्षेशा वह्नि, इनः, इन्द्र, अब्जजः, ईश्वराः (शिवः) ज्ञेयाः । तेषां (षष्टि संवत्सराणां) वत्सराणां पृथक् पृथक् फलानि प्रोच्यन्ते ।

विमला—५ वर्षों का एक युग होता है । इस प्रकार ६० संवत्सरों में कुल १२ युग होते हैं, उनके क्रमशः विष्णु, गुरु, इन्द्र, मंगल, त्वष्टा अहिर्बुध्न्य, पितर, विश्वे देवा, चन्द्रमा, इन्द्राग्नि, भग और अश्विनी-कुमार अधिपति हैं । एक युग में जो ५ वर्ष होते हैं, उनके अधिपति क्रमशः अग्नि-सूर्य-चन्द्रमा-वरुण (ब्रह्मा) और ईश्वर (शिव) हैं । उपर्युक्त प्रभवादि षष्टि संवत्सरों का फल पृथक् २ कहा जा रहा है ॥

क्वचिद्वृद्धिः क्वचिद्धानिः क्वचिद्भीतिः क्वचिद्रुदः ।
तथापि मोदते लोकः प्रभवाब्दे विमत्सरः ॥ १७ ॥

नोट—प्रभवादि षष्टि संवत्सरों का अन्वय अति सुगम होने से नहीं दिया गया है ।

विमला—प्रभव संवत्सर में कहीं हानि, कहीं भय तो कहीं रोग होने पर भी प्रजावर्ग परस्पर वैर रहित हो सुखी रहता है॥ १७॥

आन्वीक्षिकीसु निरताः स प्रजाः स्युः क्षितीश्वराः।
कर्षकाभिमता वृष्टिर्विभवाब्दे विवैरिणः॥ १८॥

विमला—विभवनाम संवत्सर में राजा प्रजा के सहित तर्क और आध्यात्म में लगा रहता है वर्षा कृषकों के मनोनुकूल होती है तथा लोग वैर रहित रहते हैं॥ १८॥

सकलत्रात्मजाञ्छश्वल्लालयंत्यवला जनाः।
अमरस्पर्द्धिनः शुक्ले वत्सरे विगतारयः॥ १९॥

विमला—शुक्ल नाम के संवत्सर में पुरुष निरन्तर स्त्री पुत्रादि के सुख से युक्त रहते हैं। आनन्द का भोग देवताओं की तरह शत्रु रहित होकर प्रजा करती है॥ १६॥

अतिव्याध्यर्दिता लोकाः क्षितीशाः कलहोत्सुकाः।
प्रमोदाब्दे प्रमोदन्ते तथापि निखिला जनाः॥ २०॥

विमला—प्रमोद नामक संवत्सर में जनवर्ग रोग से पीड़ित तथा राजाओं में पारस्परिक कलह होते हुए भी प्रजावर्ग सुखी रहता है॥२०॥

क्लेशः[1] क्वचिन्न प्रेक्ष्यन्ते[2] स्वजनानामनामयः।
एवं वै मोदते लोका[3] प्रजापति शरद्युतः[4]॥ २१॥

विमला—प्रजापति नामक संवत्सर में कहीं कष्ट दृष्टिगोचर नहीं होता तथा जनवर्ग रोग रहित आनन्द पूर्वक रहता है॥ २१॥

अतिथिस्वजनैस्साद्धमन्नं वोभुज्यते मधु।
पेपीयन्ते कामिनीभिरंगिराऽब्दे निरन्तम्॥ २२॥

विमला—अंगिरा संवत्सर मे अतिथि एवं स्वजनों के साथ मधुर भोजन लोग करते हैं, तथा मधुका पान कामिनियों के साथ करते हैं॥ २२॥

श्री मुखेऽब्दे दुग्धपूर्णा गोकर्णवलयेव भूः।
सस्यपीतावरावारि गावस्तुंग पयोधराः॥ २३॥

---

१. 'क्लैशान्' २. मेक्ष्यंते ३. लोकः ४. शरद्यतः इति मूलपाठः।

विमला—श्री मुख संवत्सर में दुग्ध से परिपूर्ण गोकर्ण वलयाकृति भूमि होती है। धान्य के उपज के अनुकूल श्रेष्ठ जल होता है तथा गायें उत्तम पयोधर वाली होती हैं ॥ २३ ॥

स्युर्भूभुजो प्रभाभाजः प्रभंजनभुजः परे।
भावाब्दे भूसुरग्राम[1] भ्रमणं लोभतः सदा ॥ २४ ॥

विमला—भाव (भावी) संवत्सर में राजा प्रभाशाली, तथा अन्य जनवर्ग वायुपान करने वाले अर्थात् दुर्भिक्ष पीड़ित रहे एवं लोभ वश ब्राह्मण समूह भ्रमण करेंगे ॥ २४ ॥

नात्यजस्रं रमयति युवाब्दे युवतीजनः।
युवानो निखिला लोकाः क्षितिश्चापि फलोत्कटा ॥ २५ ॥

विमला—युवा नामक संवत्सर में युवतियाँ निरन्तर शिष्टाचार युत रमण करती हैं तथा सभी लोग हृष्ट पुष्ट एवं भूमि फलों से परिपूर्ण रहती है ॥ २५ ॥

धात्री धात्रीव लोकानामभया च फलप्रदा।
धात्र्यब्दे[2] धरणीनाथाः परस्परजयोत्सुकाः ॥ २६ ॥

विमला—धाता नामक संवत्सर में राजा परस्पर जयाभिलाषी तथा भूमि धाय की तरह लोक (संसार) को अभय फल देने वाली होती है ॥ २६ ॥

ईश्वराब्दे स्थिराः क्ष्मेशाः जगदानंदिनी मही।
अध्वरे निरता विप्राः स्वस्वमार्गे रताः परे ॥ २७ ॥

विमला—ईश्वर नामक संवत्सर में सभी राजा स्थिर (शान्त तथा सुखी) रहते हैं। भूमि संसार के लिए आनन्ददायिनी ब्राह्मण यज्ञ कर्म से निरत तथा अन्य वर्ग अपने अपने धर्म के अनुकूल कर्म करते हैं ॥ २७ ॥

बहुधान्ये च बहुभिर्धान्यैः पूर्णाखिला धरा।
प्रभूत-पयसो-गावो राजानः स्युर्विवैरिणः ॥ २८ ॥

विमला—बहुधान्य में भूमि विविध धान्यों से परिपूर्ण, गायें प्रचुर दूध देनेवाली राजागण शत्रु रहित होते हैं ॥ २८ ॥

---

१. भूगणाग्राम २. धात्राब्दे इतिमूल पाठः।

बलाहका न मुञ्चन्ति कुत्रचित्प्रचुरं पयः।
प्रमाथ्यब्दे वीतरागास्तथापि निखिला जनाः॥ २९॥

विमला—प्रमाथी नामक संवत्सर में मेघ कहीं भी प्रचुर जल नहीं देते फिर भी जनवर्ग वीतराग रहता है॥ २९॥

प्रवहन्ति जलं स्वच्छं स्रवन्ति प्रचुरं पयः।
विक्रमाब्देऽखिलाः क्ष्मेशाः विक्रमाक्रान्तभूमयः॥ ३०॥

विमला—विक्रम नामक संवत्सर मे उत्तम वर्षा से सुन्दर जल की धारा बहती है तथा नरेश अपने पराक्रम से परिपूर्ण रहते हैं॥ ३०॥

विविधैरन्नपानाद्यैर्हृष्टपुष्टांगचेतसः।
मदोन्मत्ताखिला लोका वृषाब्दे वृषसन्निभाः॥ ३१॥

विमला—वृष नामक संवत्सर मे विविध प्रकार के अन्नो के भोजन से हृष्ट पुष्ट शरीर वाले एवं प्रसन्न मनवाले तथा मदोन्मत्त सभी लोग वृषभ के सदृश रहते हैं॥ ३१॥

विचित्रा वसुधा चित्रपुष्पवृष्टिफलादिभिः।
चित्रभानुशरद्येषा भाति चित्राङ्गना यथा॥ ३२॥

विमला—चित्रभानु संवत्सर में विचित्र पुष्प फलादिकों के प्रभाव से यह भूमि विचित्र शोभा से उसी प्रकार शोभित होती है जैसे कोई सुन्दर युवती शोभित हो॥ ३२॥

नन्दन्तीह[1] जनाः सर्वे भूमिर्भूरि फलान्विता।
सुभानुवत्सरे[2] भूमिर्भीम भूपाल विग्रहा॥ ३३॥

विमला—सुभानु (स्वर्भानु) संवत्सर में सभी लोग आनन्दित रहते हैं। भूमि अनेक प्रकार के प्रचुर फलों से युक्त रहती है तथा भूपालों में युद्ध की स्थिति रहती है॥ ३३॥

प्रतरन्त्युडुपोपायैः सरितोर्थाय सन्ततम्।
तारणाब्दे त्वतुलिता अर्थवंतो हि जन्तवः॥ ३४॥

---

१. 'भजन्ते भेषजं मुक्ता' इति पाठान्तरम्।

२. 'स्वर्भानु' इति पाठान्तरम्।

विमला—तारण नामक संवत्सर मे अतुलित धन की अभिलाषा से निरन्तर मनुष्य नौकाओं के द्वारा नदियों को पार करते हैं ॥ ३४ ॥

पतन्ति करकोपेताः पयोधारा निरंतरम् ।
पापादपेतमनसः पार्थिवाब्दे तु पार्थिवाः ॥ ३५ ॥

विमला—पार्थिव संवत्सर में ओले से युत निरंतर वृष्टि होती है तथा सभी राजा अपने मन से पाप का चिन्तन करते हैं ॥ ३५ ॥

दीप्यते वसुधा वीरभटवारणवाजिभिः ।
व्यपेतव्याधयः सर्वे व्ययाब्दे तु व्ययान्विताः ॥ ३६ ॥

विमला—व्यय नामक संवत्सर में पृथ्वी शूरवीर, हाथी, घोड़े आदि से सुशोभित होती है। जनवर्ग नीरोग रहे तथा धन का व्यय बहुत करे ॥ ३६ ॥

गीर्वाणपूर्णगीर्वाणाः[1] गर्वनिर्भरचेतसः ।
सर्वजिद्वत्सरे सर्व उर्वीशान् हन्ति भूमिपान् ॥ ३७ ॥

विमला—सर्वजित् संवत्सर मे बुद्धिजीवी वर्ग अभिमान से पूर्ण रहता है। सभी बड़े राजा अपने से छोटे राजाओं को नष्ट करते हैं॥ ३७॥

सर्वधारीवत्सरेऽस्मिन्, जगदानंदिनी धरा ।
प्रशान्तवैरा राजानः प्रजापालन तत्पराः ॥ ३८ ॥

विमला—सर्वधारी नामक संवत्सर में भूमि सभी जीवों को आनन्द दायिनी होती है। तथा प्रजा पालन में तत्पर सभी राजा वैर रहित होते हैं ॥ ३८ ॥

विरोधं[2] सततं कुर्वन्त्यन्योन्यं क्षितिपाः प्रजाः ।
विरोधिवत्सरे भूमिभूरिवारिधरैर्वृता ॥ ३९ ॥

विमला—विरोधी नामक संवत्सर में राजा और प्रजा परस्पर विरोध करें तथा भूमि पर वर्षा अधिक होवे ॥ ३९ ॥

विकृतिः प्रकृतिं याति प्रकृतिर्विकृतिं तथा ।
तथापि मोदते लोकस्तस्मिन् विकृतवत्सरे ॥ ४० ॥

---

१. 'गीर्वाणान्' इति पाठान्तरम्। २. 'विरोधे' इति मूलपाठ·।

विमला—विकृत नामक सम्वत्सर मे सभी कार्य विपरीत होंगे अर्थात् नीच जन ऊँचे उठेंगे तथा अच्छे लोग अनाहृत होंगे। फिर भी जनवर्ग आनन्दित रहेगा ॥ ४० ॥

खराब्दे सततं सम्यग्वध्यन्ते पशवः प्रजाः।
राजानो विलयं यान्ति परस्परविरोधतः ॥ ४१ ॥

विमला—खर नामक संवत्सर मे पशु तथा जनवर्ग परस्पर मारे जाते हैं। तथा परस्पर के विरोध के कारण राजाओं का नाश होता है ॥ ४१ ॥

आनन्ददा धराजस्रं प्रजाभ्यः फलसंचयैः।
नन्दनाब्दे स्वहानिः स्यात्कोशधान्यविनाशकृत् ॥ ४२ ॥

विमला—नन्दन नामक संवत्सर के पूर्वार्द्ध में फल संचय के द्वारा भूमि सर्वदा जनवर्ग के लिए आनन्द दायिनी होगी। तथा उत्तरार्द्ध में संचित धनधान्यादि की हानि होवे ॥ ४२ ॥

नश्यते वारिधाराभिः पूर्वकृष्यखिलं फलम्।
राजभिश्चापरं सर्वं विजयाब्दे जयेच्छुभिः ॥ ४३ ॥

विमला—विजय नामक संवत्सर में अतिवृष्टि के कारण पहली खेती का नाश होता है तथा जय के अभिलाषी राजाधों के द्वारा पिछली खेती (ग्रीष्म की फसल) भी नष्ट होवे ॥ ४३ ॥

शैलोद्यानवनाराम फलैरतुलिता मही।
जेगीयते वेणुनादैर्जयाब्दे च महाजलम् ॥ ४४ ॥

विमला—जय नामक संवत्सर में सम्पूर्ण भूमि, पर्वत, उद्यान, वन और उपवन फलों से परिपूर्ण रहें, तथा अधिक वृष्टि होगी एवं वायु के अनुकूल चलने से वेणु छिद्रों से सुन्दर संगीत की ध्वनि सुनाई पड़ेगी। मानो जय की आनन्द ध्वनि हो ॥ ४४ ॥

मन्मथाब्दे खिला लोकास्तत्केलिपरलोलुपाः।
शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवा धरा ॥ ४५ ॥

विमला—मन्मथ नामक सवत्सर में सभी लोग रमणियों के संग रमण में तत्पर रहते हैं। चावल आदि धान्य-ईख, जौ, गेहूँ आदि अन्नों से भूमि मनोहर दीखलाई पड़ती है ॥ ४५ ॥

दुर्मुखाब्देऽग्निरोगाः स्युः प्रचुरान्नं तथा पयः ।
राजानः स प्रजास्तुष्टा निःस्वाश्च द्विज सत्तमा ॥ ४६ ॥

विमला—दुर्मुख नामक संवत्सर में प्रचुर मात्रा में अन्न तथा दूध होगा। अग्नि भय तथा रोग हो। राजा प्रजा प्रसन्न रहेंगे किन्तु श्रेष्ठ ब्राह्मण धन हीन रहेगा ॥ ४६ ॥

हेमलम्बे नृपाः सर्वे परस्पर विरोधिनः ।
प्रजा पीडात्वनर्घत्वं तथापि सुखिनो जनाः ॥ ४७ ॥

विमला—हेमलम्ब नामक संवत्सर में सभी राजा परस्पर विरोधी तथा प्रजा पीड़ित होगी। वस्तुओं का भाव महंगा रहेगा फिर भी जनवर्ग सुखी रहेगा ॥ ४७ ॥

विलम्बि[1]वत्सरे राजविग्रहो भूरिवृष्टयः ।
आतंक पीडिता लोकाः प्रभूतं चापरं फलम् ॥ ४८ ॥

विमला—विलम्बि नामक वर्ष में राजाओं में युद्ध, वर्षा बहुत हो, जनवर्ग आतंक से पीडित रहे अर्थात् विविध रोगों से ग्रस्त हो अन्य फल उत्तम रहे ॥ ४८ ॥

विकारिणो विकार्यब्दे पित्तरोगादिभिर्नराः ।
मेघो वर्षति संपूर्ण समुद्र वसन क्षितौ ॥ ४९ ॥

विमला—विकारी नामक संवत्सर में मनुष्य पित्त आदि रोगों पीड़ित रहता है वर्षा के कारण पृथ्वी पर सर्वत्र जल ही दृष्टिगोचर होता है ॥ ४६ ॥

शार्वरी वत्सरे सर्वसस्य वृद्धिरनुत्तमा ।
चलिताचल संकाशैः पयोदैरावृतं नमः ॥ ५० ॥

विमला—शार्वरी नामक संवत्सर में सभी प्रकार के धान्यों की उपज उत्तम होती है। तथा चलते हुए पर्वतों की तरह सुन्दर मेघों से आकाश मण्डल आच्छादित रहता है ॥ ५० ॥

दीप्यन्ते सततं भूपाः प्लवाब्दे प्लवगा जनाः ।
राजते पृथिवी सर्वा सततं विविधोत्सवैः ॥ ५१ ॥

---

१. 'विलम्ब' इति पाठान्तरम् ।

विमला—प्लव संवत्सर में राजा लोग निरन्तर सुशोभित होते हैं जनता नौका विहार करती है तथा विविध उत्सवों से सारी भूमि सुशोभित होती है।

शुभकृद्वत्सरे सर्व सस्यानामति वृद्धयः।
नृपाणां स्नेहमन्योन्यं प्रजानां च परस्परम् ॥ ५२ ॥

विमला—शुभकृत् संवत्सर में विविध अन्नों की उपज अत्यधिक तथा राजा एवं प्रजा में परस्पर स्नेह की वृद्धि होती है।

शोभनाख्येहायनेतु शोभनं भूरिवर्त्तते ।
नृपाश्चैवात्र निर्वैराः सर्वसम्पद्युता धरा ॥ ५३ ॥

विमला—शोभन नामक वर्ष में राजा वैररहित होते हैं तथा भूमि सर्वधान्य सम्पन्न हो शोभित होती है।

क्रोध्यब्दे सततं रोगाः सर्वसस्य समृद्धयः।
दम्पत्योर्वैरमन्योन्यं प्रजानां च परस्परम् ॥ ५४ ॥

विमला—क्रोधी नामक संवत्सर में विविधान्नों की उपज उत्तम होती है। तथा जनवर्ग सतत रोग से पीड़ित एवं दाम्पत्य कलह से युक्त रहता है॥ ५४ ॥

शश्वद्विश्वावसावब्दे मध्य सस्यार्धवृष्टयः।
प्रचुराश्चौर रोगाश्च नृपा लोभाभिभूतयः ॥ ५५ ॥

विमला—विश्वावसु वत्सर में मध्यमवर्षा के कारण मध्यम उपज होती है, और अन्न का भाव महंगा रहता है। रोग एवं चोरों की वृद्धि होती है तथा राजा लोभी होते हैं ॥ ५५ ॥

पराभवाब्दे राजानः प्राप्नुवन्ति पराभवम्।
आमयः क्षुद्रधान्यानि प्रभूतानि सुवृष्टयः ॥ ५६ ॥

विमला—पराभव नामक वर्ष में राजा पराभव (तिरस्कार) को प्राप्त होते हैं। वर्षा अधिक होती है तथा मोटे अन्नों की उपज अधिक होती है ॥ ५६ ॥

प्लवंगाब्दे सस्यहानिश्चौररोगार्दिता जनाः।
मध्यवृष्टिः क्षितीशानां विरोधं च परस्परम् ॥ ५७ ॥

विमला—प्लवंगाब्द में रोग तथा चोरों के द्वारा धान्य की हानि होती है जनवर्ग त्रस्त रहता है। सामान्य वृष्टि एवं राजाओं में परस्पर विरोध रहता है ॥ ५७ ॥

प्रचुराः पित्तरोगाः स्युर्मध्या वृष्टिरहेर्भयम् ।
कीलकाब्दे त्वीतिभयं प्रजाक्षोभः परस्परम् ॥ ५८ ॥

विमला—कीलक नामक संवत्सर में पित्तरोग अधिक होता है, वर्षा सामान्य होती है, सर्प भय बना रहता है। ईति भय होता है तथा जनवर्ग परस्पर क्षुभित रहता है ॥ ५८ ॥

प्रचुरा शैत्यरोगाः स्युर्मध्या वृष्टिरहेर्भयम् ।
सौम्याब्दे चैव सततं शान्तवैरा क्षितीश्वराः ॥ ५९ ॥

विमला—सौम्य नामक वर्ष में शीत प्रकोपजन्य रोग अधिक होता है मध्यम वृष्टि होती है तथा सर्पों का भय रहता है एवं सभी राजा परस्पर शान्त वैर होते हैं अर्थात् प्रसन्न रहते हैं ॥ ५९ ॥

साधारणेब्दे राजानः सुखिनो गतमत्सराः ।
प्रजाश्च पशवः सर्वे वृष्टिः कर्षकसम्मता ॥ ६० ॥

विमला—साधारण नाम संवत्सर में वैर त्याग कर राजा लोग सुखी रहते हैं। साथ ही प्रजा तथा पशुओं में भी परस्पर स्नेह रहता है तथा कृषकों के अनुकूल वर्षा होती है ॥ ६० ॥

विरोधकृद्वत्सरे तु परस्पर विरोधिनः ।
राजानो मध्यमा वृष्टिः प्रजा स्वस्था निरन्तरम् ॥ ६१ ॥

विमला—विरोधकृत् नामक संवत्सर में सभी राजा परस्पर विरोधी हो जाते हैं। वर्षा मध्यम होती है और जनवर्ग स्वस्थ चित्त रहता है ॥ ६१ ॥

अनर्घ्यामयरोगेभ्यो भीतिरीतिनिरन्तरम् ।
[1]परिधावीवत्सरे तु नृणां वृष्टिस्तु मध्यमा ॥ ६२ ॥

---

१. इस श्लोक का उत्तरार्द्ध चौखम्भा पुस्तकालय से प्रकाशित नारद संहिता ख्रीस्ताब्द १९०५ में नहीं है।

विमला—परिधावी नामक संवत्सर में अन्न का भाव महंगा रहता है। रोग टिड्डी आदि उपद्रवों का भय होता है तथा वर्षा सामान्य होती है ॥ ६२ ॥

[1]नृपसंक्षोभमत्युग्रं प्रजापीडा त्वनर्घता ।

[2]तथापि दुःखमाप्नोति प्रमादीवत्सरे जनः ॥ ६३ ॥

विमला—प्रमादी वर्ष में राजाओं में अत्यन्त वैर प्रजा को कष्ट सभी वस्तुओं का भाव महंगा तथा जनवर्ग दुःखी रहता है ॥ ६३ ॥

आनन्दवत्सरे सर्वजंतवः पशवः सदा ।

आनन्दयन्ति चान्योन्यमन्यथा तु क्वचित् क्वचित् ॥ ६४ ॥

विमला—आनन्द नामक संवत्सर में सभी जीव आनन्द से तथा परस्पर स्नेह से रहते हैं। कष्ट कहीं-कहीं ही दृष्टि गोचर होता है ॥६४॥

[3]प्रजायां मध्यमसुखं तदधीशाहवोन्वहम् ।

निष्क्रिया राक्षसाब्दे तु राक्षसा इव जन्तवः ॥ ६५ ॥

विमला—राक्षस नामक संवत्सर में प्रजा को मध्यम सुख रहता है। राजाओं में प्रतिदिन युद्ध की स्थिति बनी रहती है और सभी जीव राक्षसी वृत्ति का आचरण करते हैं ॥ ६५ ॥

अनलाब्देऽनलभयं मध्यवृष्टिरनर्घता ।

नृपाः संक्षोभसंभूता भूरिभीकरभूमिपाः ॥ ६६ ॥

विमला—अनल नामक वर्ष में अग्नि का भय होता है। मध्यम वर्षा होती है। तथा अन्न का भाव महंगा रहता है। राजाओं में परस्पर असन्तोष के कारण युद्ध की स्थिति बनी रहती है ॥ ६६ ॥

पिङ्गलाब्दे तु सततं दिक्पूरितघनस्वनम् ।

राजानः स्वभुजाक्रान्ता भुञ्जते क्ष्मामनुत्तमाम् ॥ ६७ ॥

विमला—पिंगल नामक संवत्सर में सभी दिशायें वर्षा एवं मेघ की गर्जना से पूर्ण रहती हैं तथा राजागण अपनी विजय की हुई उत्तम भूमि का सुख प्राप्त करते हैं ॥ ६७ ॥

---

१. नृप संक्षोभ इत्यादि पूर्वार्द्ध पद चौखम्भा से प्रकाशित नारद संहिता ख्रीस्ताब्द १९०५ में नहीं छपा है।

२. 'तथा च' इति साधु पाठः ।

३. 'आनता मध्य फलदा' इति मूल पाठः ।

अतिवृष्टिः कालयुक्ते वत्सरे सुखिनो जनाः ।
सततं सर्वसस्यानि संपूर्णाश्च तथा द्रुमाः ॥ ६८ ॥

विमला—कालयुक्त संवत्सर में उत्तम वर्षा, जनवर्ग सुखी । सभी भूमि धनधान्य से परिपूर्ण तथा वृक्ष सफल रहते हैं ॥ ६८ ॥

सिद्धार्थीवत्सरे भूपाश्चान्योन्यं स्नेहकांक्षिणः ।
संपूर्णसस्यां वसुधां दुदुहुर्गा यथा तथा ॥ ६९ ॥

विमला—सिद्धार्थी नामक संवत्सर में राजा लोग परस्पर स्नेहाभिलाषी, भूमि सस्य सम्पन्न तथा उत्तम दूध देने वाली गाय के दूध की तरह उत्तम अन्न उपजाने वाले कृषक होते हैं ॥ ६९ ॥

अन्योन्यं नृपसंक्षोभं चौरव्याघ्रादिभिर्भयम्[1] ।
मध्यवृष्टिरनर्घत्वं रौद्राब्दे नैव गुर्जरे ॥ ७० ॥

विमला—रौद्रनामक संवत्सर में राजाओं में क्षोभ, चोर व्याघ्रादि भय, मध्य वृष्टि तथा महंगी होती है । किन्तु गुजरात में ऐसा नहीं होता अर्थात् शुभ फल होता है ॥ ७० ॥

दुर्मत्यब्दे दुर्मलयो भवन्त्यखिल भूमिपाः ।
तथापि सुखिनो लोकाः संग्रामे निर्जितारयः ॥ ७१ ॥

विमला—दुर्मति नामक संवत्सर में सभी राजा अधम बुद्धि के हो जाते हैं । फिर भी प्रजा सुखी रहती है और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करती है ॥ ७१ ॥

[2]सर्वं सस्यैश्च संपूर्णा धात्री दुन्दुभिवत्सरे ।
राजभिर्पाल्यते पूर्वं देशेश्वर विनाशनम् ॥ ७२ ॥

विमला—दुन्दुभि नामक संवत्सर में विविध प्रकार के अन्नों से भूमि परिपूर्ण रहती है तथा राजा जनवर्ग का पालन करता है एवं पूर्व देश के राजा का विनाश होता है ॥ ७२ ॥

आहवे निहताः सर्वे भूपा रोगैस्तथा जनाः ।
तथापि तत्रजीवन्ति रुधिरोद्गारि वत्सरे ॥ ७३ ॥

---

१. 'भरम्' इति मूल पाठः ।
२. 'सर्व सस्येषु' इति मूल पाठः ।

विमला—रुधिरोद्गारी नामक संवत्सर में युद्धरत सभी राजा मारे जाते हैं और जनवर्ग रोग से ग्रस्त हो मरने पर भी शेष रह जाता है ॥ ७३ ॥

रक्ताक्ष[1] वत्सरे सस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा ।
प्रेक्षन्ते सर्वदान्योन्यं राजानो रक्तलोचनाः ॥ ७४ ॥

विमला—रक्ताक्ष नामक संवत्सर में धान्य की वृद्धि तथा उत्तम वृष्टि होती है। सभी राजा लोग परस्पर द्वेष के कारण क्रूर दृष्टि से एक दूसरे को देखते हैं ॥ ७४ ॥

क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टिः पूर्वसस्यं न तु क्वचित् ।
संपूर्णमितरं सस्यं सर्वे क्रोधपरा जनाः ॥ ७५ ॥

विमला—क्रोधन नामक संवत्सर में मध्यम वर्षा होती है, पूर्व-सस्य (खरीफ की फसल) का नाश होता है आगे की फसल (रवी) उत्तम होती है तथा जनवर्ग क्रोध से चूर रहता है ॥ ७५ ॥

कार्पास गुडतैलेक्षु मधुसस्य विनाशनम् ।
क्षीयमाणाश्चापि नराः जीवन्ति क्षयवत्सरे ॥ ७६ ॥

विमला—क्षयनामक संवत्सर में कपास, गुड़, तेल, ईख, मधु तथा धान्य की हानी होती है और जनवर्ग क्षीण काय हो जीवित रहता है ॥ ७६ ॥

आद्यब्देश चमूनाथ सस्यपानां वलावलम् ।
तत्कालग्रहचारं च सम्यग् ज्ञात्वा फलंवदेत् ॥ ७७ ॥

विमला—पहले वर्षेश, सेनापति, (मन्त्री) और सस्येश इनका बलाबल जान कर तात्कालिक गोचर ग्रह की स्थिति का ज्ञान कर फला-देश करना चाहिए ॥ ७७ ॥

सौम्यायनं मासषट्कं मृगाद्यं भानुयुक्तितः ।
अहः सुराणां तद्रात्रिः कर्काद्यं दक्षिणायनम् ॥ ७८ ॥

विमला—सूर्य के राशिभोग के अनुसार मकर से मिथुन पर्यन्त ६ राशि (मास) का सौम्यायन देवताओं का दिन और कर्क से धनु

---

१. 'रक्ताक्षि' इति पाठान्तरम् ।

तक ६ राशि (मास) दक्षिणायन होता है जो देवताओं की रात्रि कहलाती है ॥ ७८ ॥

गृहप्रवेशवैवाह प्रतिष्ठा मौञ्जिबन्धनम् ।
यज्ञादिमङ्गलं कर्म कर्त्तव्यं चोत्तरायणे ॥
याम्यायनेऽशुभं कर्म मासप्राधान्यमेव च ॥ ७९ ॥

विमला—गृह प्रवेश, विवाह, प्रतिष्ठा, मौञ्जीबंधन, यज्ञादि मंगल कार्य सूर्य के उत्तरायण काल में ही करना चाहिए, तथा दक्षिणायन में अशुभकर्म एवं मास प्रधान कर्म करना चाहिए ॥ ७६ ॥

क्रमाच्छिशिरवासन्तग्रीष्माः स्युश्चोत्तरायणे ।
वर्षा शरच्च हेमन्त ऋतवो दक्षिणायने ॥ ८० ॥

विमला—उत्तरायण में क्रमशः शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्म ये तीन ऋतुएँ होती हैं और दक्षिणायन में वर्षा-शरद-तथा हेमन्त ऋतुएँ होती हैं ॥ ८० ॥

माघादिमासौ द्वौद्वौच ऋतवः शिशिरादयः ।
चान्द्रो दर्शावधिः सौरः संक्रान्त्या सावनो दिनैः ॥८१॥
त्रिंशद्भिश्चन्द्रभगणो मासो नाक्षत्र संज्ञकः ।
मधुश्च माधवः शुक्रः शुचिश्चापि नभाह्वयः ॥ ८२ ॥
नभस्य इष ऊर्जश्च सहाख्यश्च सहस्यकः ।
तपस्तपस्यः क्रमशश्चैत्रादीनां तु संज्ञकाः ॥ ८३ ॥

विमला—माघ मास से आरम्भ कर दो दो मास की शिशिर आदि ऋतुएँ होती हैं जैसे—माघ फाल्गुन, शिशिर। चैत्र, वैशाख-वसन्त। ज्येष्ठ,-आषाढ़-ग्रीष्म। श्रावण, भाद्रपद-वर्षा। आश्विन, कार्तिक-शरद। अग्रहन (मार्गशीर्ष) पौष-हेमन्त। शुक्ल प्रतिपदा से अमावास्या तक चान्द्रमास। एक संक्रान्ति से द्वितीय संक्रान्ति पर्यन्त काल को सौर-मास और ३० दिन का सावन मास होता है। चन्द्रमा के भगण-पूर्तिकाल को नाक्षत्र मास कहते हैं। चैत्रादि १२ महीनों के नाम क्रमशः १—मधु, २—माधव, ३—शुक्र, ४—शुचि, ५—नभ, ६—नभस्य, ७—इष, ८—ऊर्ज, ९—सह, १०—सहस्य, ११—तपः, १२—तपस्य बताया गया है ॥ ८१–८३ ॥

यस्मिन्मासे पौर्णमासी येन धिष्ण्येन संयुता ।
तन्नक्षत्राह्वयो मासः पौर्णमासी तथा ह्वया ॥ ८४ ॥

विमला—जिस महीने की पूर्णिमा को जो नक्षत्र रहता है उसी नक्षत्र के नाम के अनुसार महीने का नाम होता है। जैसे-चित्रानक्षत्र में पूर्णिमा का योग होने से चैत्री पूर्णिमा तथा चैत्रमास और विशाखा पूर्णिमा के योग में वैशाख मास तथा वैशाखी पूर्णिमा कहते हैं ॥ ८४ ॥

तत्पक्षौ दैवपैत्र्याख्यौ शुक्लकृष्णौ च तावुभौ ।
शुभाशुभे कर्मणि च प्रशस्तौ भवतः सदा ॥ ८५ ॥

विमला—महीने में दो पक्ष १५, १५ दिन का शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष होता है। शुक्ल पक्ष दैव कार्य में और कृष्ण पक्ष पैत्र्य कार्य में तथा क्रमशः शुभ अशुभ कर्म में प्रशस्त कहे हैं ॥ ८५ ॥

इति श्रीनारदसंहितायां संवत्सराध्यायः तृतीयः ।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

वह्निर्विरञ्चिर्गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः ।
दुर्गान्तको विष्णुहरी स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ॥१॥
अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥२॥

अन्वयः—अति सुगमम् ।

विमला—प्रतिपदा आदि तिथियों के स्वामी १ अग्नि, २ ब्रह्मा, ३ गिरिजा (गौरी), ४ गणेश, ५ सर्प, ६ स्कन्द, ७ सूर्य, ८ शिव, ९ दुर्गा, १० यम, ११ विश्वेदेवा, १२ हरि, १३ कामदेव, १४ शर्व, १५ चन्द्रमा तथा ३० पितर क्रमशः कहे गये हैं ॥ १-२ ॥

[2]तिथीनामपराः संज्ञाः कथ्यन्ते ता यथा क्रमात् ।
नन्दाभद्राजयारिक्ता पूर्णास्युस्तिथयः पुनः ॥ ३ ॥

अन्वयः—तिथीनां अपरा संज्ञाः कथ्यन्ते ता नन्दा भद्रा जया रिक्ता क्रमात् तिथयः स्युः ॥ ३ ॥

विमला—तिथियों की संज्ञा अन्य भी क्रमशः नन्दा-भद्रा-जया और रिक्ता तथा पूर्णा कही गई है । यथा १, ६, ११ नन्दा । २, ७, १२ भद्रा । ३, ८, १३ जया । ४, ९, १४ रिक्ता और ५, १०, १५ ये पूर्णा हैं ।

---

१. नारद संहिता के विभिन्न प्रतियों में पाठान्तर प्राप्त होता है तथा मुहूर्त चिन्तामणि से बहुत ही अन्तरित है । यथाः—

क्रमानियोशा ब्रह्माग्निर्विरञ्चि विष्णु शैलजे ।
विनायको यमो नागश्चन्द्रः स्कंदोर्क वासवौ ॥ १ ॥
महेश वसवो नाग दुर्गादण्डधराह्वयः ।
शिवो विश्वे हरिश्चन्द्रः कामाः शर्वकली ततः ॥ २ ॥
शशि विश्वे दर्श संज्ञास्तिथीशाः पितरस्तथा ।

इस मूल पाठ के स्थान पर संशोधित पाठ दिया गया है ।

२. किसी-किसी प्रति में केवल पूर्वार्द्ध तथा किसी में केवल उत्तरार्द्ध ही मिलता है । किन्तु दोनों का योग शुद्ध समझकर यहाँ दे दिया गया है ।

पर्यायत्वेन विज्ञेया नेष्टमध्येष्टदाः सिते ।
कृष्णपक्षेऽपीष्टमध्यनेष्टदाः क्रमशः सदा ॥ ४ ॥

अन्वयः—पर्यायत्वेन सिते क्रमशः नेष्ट मध्य इष्टदा तथा कृष्णपक्षे इष्ट मध्य नेष्टदा सदा विज्ञेया ।

विमला—१५ तिथियों को तीन भागों में विभक्त कर यथा पञ्चमी तक, दशमी तक, पूर्णिमा तक ये तीन खण्ड क्रमशः शुक्लपक्ष में अशुभ, मध्यम तथा शुभ और कृष्ण पक्ष में शुभ, मध्यम तथा अशुभ समझना चाहिए ॥ ४ ॥

चित्रलेख्यासवक्षेत्र तैलशय्यासनादि यत् ।
वृक्षच्छेदो गृहाश्माथ कर्म प्रतिपदीरितम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—अथ चित्रलेख्य-आसव-क्षेत्र-तैल-शय्या-आसन-वृक्षच्छेदो-गृह-अश्मा आदि यत कर्म (तत्) प्रतिपदि इरितम् ।

विमला—चित्रकारी, आसव-अरिष्ट निर्माण (या मदिरा निर्माण) क्षेत्रकर्म (कृषिकर्म) तेल शय्या आसन, वृक्ष काटना, गृहकर्म तथा पत्थर आदि का कर्म प्रतिपदा में करना उत्तम होता है ॥ ५ ॥

विवाह मौञ्जी यात्रा च सुरस्थापनभूषणम् ।
गृहं पुष्टयखिलं कर्म द्वितीयायां विधीयते ॥ ६ ॥

अन्वयः—विवाह मौञ्जी, यात्रा, सुरस्थापनं भूषणं, गृहं, पुष्टि अखिलं च कर्म द्वितीयायां विधीयते ।

विमला—विवाह, मौंजीबन्धन (व्रत बन्ध) यात्रा, देवप्रतिष्ठा, आभूषण, गृहारम्भ, तथा सम्पूर्ण पौष्टिक कर्म द्वितीया तिथि को करना चाहिए ॥ ६ ॥

मौञ्जी प्रतिष्ठाश्च शिल्पविद्या निखिलमङ्गलम् ।
पश्विभोष्ट्राम्बुयानोक्तं तृतीयायां विभूषणम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—मौंजी, प्रतिष्ठा, शिल्पविद्या मंगलं पशु इभ उष्ट्र अम्बु यान उक्तं निखिलं विभूषणं च कर्म तृतीयायां (विधीयते) ।

विमला—मौंजीबन्धन (उपनयन) देवप्रतिष्ठा, शिल्पविद्या, एवं माङ्गलिककार्य, पशुकर्म हाथी तथा ऊँट से सम्बन्धित काम, जलपूजन, वाहन तथा भूषण कर्म तृतीया में करना शुभ है ॥ ७ ॥

अथर्वविद्याशस्त्राग्निबन्धनोच्चाटनादिकम् ।
मारणाद्यखिलं कर्म रिक्तास्वेव विधीयते ॥ ८ ॥

विमला—अथर्वविद्या, शस्त्रबन्धन, अग्निबन्धन, उच्चाटन, मारणादि सम्पूर्ण कर्म रिक्ता में करे ॥ ८ ॥

यानोपनयनोद्वाह ग्रहशान्तिक पौष्टिकम् ।
चरस्थिराखिलं कर्म पञ्चम्यां मङ्गलोत्सवम् ॥ ९ ॥

विमला—सवारी करना, उपनयनकर्म विवाह, ग्रहशान्ति, पौष्टिक-कर्म, सभी चर स्थिर कर्म एवं माङ्गलिक उत्सव पंचमी तिथि में करना उत्तम होता है ॥ ९ ॥

पशुवास्तु महीसेवा पण्यांवु क्रय विक्रये ।
भूषणं व्यवहारादिकर्म षष्ठ्यां विधीयते ॥ १० ॥

विमला—पशु दमनादिकर्म, वास्तुकर्म, भूमिकर्म, सेवा, पण्य (बाजार) जलकर्म, क्रयविक्रय भूषण तथा व्यवहारादिकर्म षष्ठी में करना चाहिए ॥ १० ॥

यानस्थापनवाहादि राजसेवादिकर्मयत् ।
विवाहवास्तुभूषाद्यं सप्तम्यां चोपनायनम् ॥ ११ ॥
कृषिवाणिज्यधान्याश्मलोहसंग्रामभूषणं ।
शिवस्थापन खातांवु कर्माष्टम्यां विधीयते ॥ १२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सवारी, स्थापना, वहन करना, राजसेवा, विवाह, वास्तु-कर्म, भूषा घट्टन तथा उपनयन कर्म सप्तमी में करना चाहिए। कृषि, वाणिज्य, धान्य, पाषाण, लौह, संग्राम, भूषण, शिवस्थापन, खातकर्म जलकर्म ये सभी कार्य अष्टमी तिथि में करना चाहिए ॥ ११–१२ ॥

प्रासादस्थापनं यानमुद्वाहं व्रतबन्धनं ।
शान्तिपुष्ट्यादिकं कर्मदशम्यांतु प्रशस्यते ॥ १३ ॥
व्रतोपवास वैवाह कृषिवाणिज्य भूषणं ।
शिल्पनृत्यं गृहकर्म एकादश्यां विचित्रकम् ॥ १४॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—प्रासाद स्थापना, यान (वाहन) विवाह, उपनयन, शान्तिकपौष्टिककर्म दशमी में प्रशस्त होता है व्रतोपवास, विवाह, कृषि, व्यापार, भूषण, शिल्पविद्या, नृत्य, गृहकर्म तथा चित्रकारी का कार्य एकादशी तिथि को करना चाहिए ॥ १३-१४ ॥

चरस्थिराखिलं कर्मदानशान्तिकपौष्टिकम् ।
यात्रान्नग्रहणंत्यक्त्वाद्वादश्यां निखिलं हितम् ॥ १५ ॥
अग्न्याधानं प्रतिष्ठा च विवाहव्रतवन्धनं ।
निखिलं मङ्गलं यानं त्रयोदश्यां प्रशस्यते ॥ १६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चर-स्थिर कर्म, दान, शान्तिकपौष्टिक कर्म, यात्रा, अन्न ग्रहण (नवान्न भक्षण) आदि के अतिरिक्त कर्म द्वादशी में करना चाहिए। अग्न्याधान, प्रतिष्ठा, विवाह, उपनयन, यान तथा सम्पूर्ण माङ्गलिक कार्य त्रयोदशी तिथि में शुभ होता है १५-१६ ॥

बन्धनाग्नि-प्रदानोग्रघातव्रण रणक्रिया ।
शस्त्रास्त्रलोहकर्माणि चतुर्दश्यां विधीयते ॥ १७ ॥
तैल स्त्रीसङ्गमं चैव दन्तकाष्ठोपनायनम् ।
सक्षौरं पौर्णमास्यां च विनान्यदखिलं हितम् ॥ १८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—बन्धन, अग्निदाह, उग्रकर्म, घात, व्रणक्रिया, युद्ध, शस्त्र अस्त्र निर्माण, लौहकर्म चतुर्दशी में शुभ होता है। तैलकर्म, स्त्रीसंगम, दंतधावन, जनेऊ (उपनयन) और इन कार्यों को छोड़कर सभी कर्म पूर्णिमा में करना शुभ है ॥ १७-१८ ॥

पितृकर्मत्वमावास्यामेकं मुक्त्वा कदाचन ।
न विदध्यात् प्रयत्नेन यत्किञ्चिन्मङ्गलादिकम् ॥ १९ ॥
अष्टमीद्वादशीषष्ठी चतुर्थी च चतुर्दशी ।
तिथयः पक्षरन्ध्राख्या दुष्टास्ता अतिनिन्दिताः ॥ २० ॥
चतुर्थमनुरन्ध्राङ्कतत्व संज्ञास्तु नाडिकाः ।

त्याज्या दुष्टासुतिथिषु [1]चतसृष्वपि सर्वदा ॥ २१ ॥

अन्वय—सुगमम् ।

विमला—पितृकर्मातिरिक्त अन्य शुभकर्म अमावाश्या में नहीं करना चाहिए । अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, चतुर्थी और चतुर्दशी ये पक्षरन्ध्र की तिथियाँ है। ये दुष्ट तथा अतिनिन्दित मानी गई हैं। इनकी आदि की ४,१४,७, ६ और ५ नाड़ी क्रमशः त्याज्य होती है तथा शेष उत्तम है ॥ १६–२१ ॥

अमावास्या च नवमी त्यक्ता विषय संज्ञिकाः ।
तिथयस्ताः प्रशस्ताः स्युर्मध्यमा प्रतिपत्तथा ॥ २२ ॥
दर्शषष्ट्यां प्रतिपदि द्वादश्यां प्रतिपर्वसु ।
नवम्यां च न कुर्वीत कदाचिदन्तधावनम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अमावास्या और नवमी के अतिरिक्त विषम तिथियाँ (३, ५, ७,११, १३) प्रशस्त मानी गई हैं। तथा पतिपद मध्यम तिथि है। अमावास्या, षष्ठी, प्रतिपदा, द्वादशी और नवमी तथा प्रत्येक पर्व में अर्थात् प्रत्येक संक्रान्ति (ग्रहण) के दिन दन्तधावन (दातून) नहीं करना चाहिए ॥ २२–२३ ॥

षष्ठ्यां तैलं तथाष्टम्यां मांसं क्षौरं तथाकले ।
पूर्णिमादर्शयोर्नारीसेवनं परिवर्जयेत् ॥ २४ ॥
व्यतीपाते च संक्रान्तौ एकादश्यां च पर्वसु ।
अर्कभौमदिने षष्ठ्यां नाभ्यङ्गं च न वैधृतौ ॥ २५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—षष्ठी को तैल सेवन, अष्टमी को मांस सेवन, चतुर्दशी को क्षौरकर्म, तथा पूर्णिमा और अमावास्या को स्त्री प्रसंग नहीं करना चाहिए। व्यतिपात, संक्रान्ति, एकादशी, तथा पर्व में रवि तथा मंगल के दिन षष्ठी को तथा वैधृति में अभ्यंग (उबटन) नहीं करना चाहिए ॥ २४–२५ ॥

१. पंचस्त्रेतासु' इति साधु ।

यः करोति दशम्यां च स्नानमामलकैः सह ।
पुत्रहानिर्भवेत्तस्य त्रयोदश्यां धनक्षयः ॥ २६ ॥
अर्थपुत्रक्षयं तस्य द्वितीयायां न संशयः ।
अमायां च नवम्यां च सप्तम्यां च कुलक्षयः ॥ २७ ॥

अन्वयः—अति सुकरम् ।

विमलाः—जो दशमी को आँवले से स्नान करता है उसे पुत्र हानि तथा त्रयोदशी को धन नाश होता है। द्वितीया में धन और पुत्र का नाश, अमावास्या, नवमी और सप्तमी के दिन आँवले से स्नान करने से कुल का नाश होता है ॥ २६-२७ ॥

सा पूर्णमास्यनुमतिर्निशि चन्द्रवती तु या ।
दिवा चन्द्रवती राका अमावास्या तथा द्विधा ॥ २८ ॥

अन्वयः—या पूर्णिमा निशि चन्द्रवती सा अनुमतिः (सा च) दिवाचन्द्रवती (सा) राका (पूर्णिमा) तथा अमावास्या अपि द्विधा ।

विमलाः—यदि रात्रि में चन्द्रोदयव्यापिनी पूर्णिमा हो उसे अनुमति नाम पूर्णिमा तथा दिन में हि चन्द्रमा का उदय दृष्टिगोचर हो तो उसे राका पूर्णिमा कहते हैं। इसी प्रकार अमावास्या भी दो प्रकार की कही गई है ॥ २८ ॥

सिनीवाली सेन्दुमती कुहुर्नेन्दुमती मता ।
कार्तिके शुक्ल नवमीत्वादिः कृतयुगस्य सा ॥ २९ ॥

अन्वयः—सेंदुमती सिनीवाली न इन्दुमती कुहुः मता (कथिता) कार्तिके शुक्ल नवमी सा कृतयुगस्य तु आदिः ।

विमला—जिस अमावास्या में चन्द्रमा दृष्टिगोचर हो उसे सिनीवाली तथा जिसमें चन्द्रमा न दिखाई दे उसे कुहू कहते हैं। कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि सत्ययुगादि तिथि है ॥ २९ ॥

त्रेतादिर्माधवेशुक्ला तृतीया पुण्यसंज्ञिता ।
कृष्णा पञ्चदशी माघे द्वापरादिरुदीरिता ॥ ३० ॥

अन्वयः—माधवे शुक्ला तृतीया पुण्य संज्ञिता त्रेतादिः। माघे कृष्णा पञ्चदशी द्वापरादिः उदिता ।

विमला—वैशाख शुक्ल तृतीया त्रेता की आदि तिथि है यह पवित्र है। माघ की अमावास्या द्वापर युग की आदि तिथि कही है ॥ ३० ॥

कल्पादिः स्यात्कृष्णपक्षे नभस्ये च त्रयोदशी ।
द्वादश्यूर्जे शुक्लपक्षे नवम्याश्वयुजे सिते ॥ ३१ ॥
चैत्रे भाद्रपदे चैव तृतीया शुक्ल संज्ञिता ।
एकादशी सिता पौषेऽप्याषाढे दशमी सिता ॥ ३२ ॥
माघे च सप्तमी शुल्का नभस्येप्यसिताष्टमी ।
श्रावणे मास्यमावास्या फाल्गुने मासिपूर्णिमा ॥ ३३ ॥
आषाढे कार्तिकेमासि चैत्रेज्येष्ठे च पूर्णिमा ।
मन्वादयः स्नानदान श्राद्धेस्वानन्त पुण्यदाः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—अति सुगमम्

विमला—भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी कलियुगादि तिथि कही गई है। कार्तिक शुक्ल द्वादशी, आश्विन शुक्ल नवमी, चैत्र शुक्ल तृतीया, भाद्रपद शुक्ल तृतीया, पौष शुक्ल एकादशी, आषाढ़ शुक्ल दशमी, माघ शुक्ल सप्तमी, भाद्रपदकृष्ण अष्टमी, श्रावण की अमावास्या, फाल्गुन आषाढ़ कार्तिक चैत्र और ज्येष्ठ की पूर्णिमा को मन्वादि तिथि कहते हैं। ये स्नान दान श्राद्धादिकर्मों में अनन्तपुण्य फलदायक होती हैं ॥३१–३४॥

भाद्रकृष्णे त्रयोदश्यां मघास्विन्दुः करे रविः ।
गजच्छाया तदा ज्ञेया श्राद्धेत्यन्तफल प्रदा ॥ ३५ ॥

अन्वयः—भाद्रकृष्णे त्रयोदश्यां मघासु इन्दुः करे रविः तदा गजच्छाया ज्ञेया (सा) श्राद्धेत्यन्त फलप्रदा ।

विमला—भाद्रपदकृष्णपक्षत्रयोदशी को मघानक्षत्र पर चन्द्रमा और हस्तनक्षत्र पर सूर्य हों तो गजच्छाया योग होता है। यह योग श्राद्धकर्म में अत्यन्त फलदायक होता है ॥ ३५ ॥

एकस्मिन्वासरे तिस्रस्तिथयः स्युः क्षयातिथिः ।
तिथिर्वारत्रयेष्वेका त्वधिकात्यन्त निन्दिता ॥ ३६ ॥

अन्वयः—तिस्रः तिथयः एकस्मिन्वासरे स्युः (तदा सा) क्षयातिथिः । वारत्रयेषु एकातिथिः (तदा सा) तु अधिका अत्यन्त निन्दिता ।

विमला—एक ही दिन तीन तिथियों का भोग होना क्षयतिथि तथा तीन दिनों तक एक ही तिथि का भोग तिथिवृद्धि है। यह अत्यन्त निन्दित है ॥ ३६ ॥

सूर्यास्तमन पर्यन्तं यस्मिन्वारेऽपि या तिथिः ।
विद्यते सात्वखण्डा स्यादूना चेत्खण्डसंज्ञिता ॥३७॥

विमला—जिसदिन सूर्यास्तकाल पर्यन्त जो तिथि हो उसे अखण्डा और न्यून होने पर खण्डा तिथि कहते हैं ॥ ३७ ॥

तिथेः पञ्चदशो भागः क्रमात्प्रतिपदादयः ।
द्विघटी प्रमितं तत्र मुहूर्तं कथितं बुधैः ॥ ३८ ॥

तिथिका १५ वाँ भाग क्रमशः प्रतिपदादि तिथियां अर्थात् चन्द्र मण्डलका १५ वाँ भाग प्रतिपदादि तिथियाँ होती हैं। २ घटी बराबर एक मुहूर्त विद्वानों ने कहा है ॥ ३८ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां तिथिलक्षणाध्यायः चतुर्थः ।

अथ पञ्चमोऽध्यायः

नृपाभिषेकमाङ्गल्य सेवायानास्त्रकर्म यत् ।
औषधाहवधान्यादि विधेयं रविवासरे ॥ १ ॥

अन्वयः—रविवासरे नृपाभिषेक, माङ्गल्य, सेवा, यान, अस्त्रकर्म, औषध, आहव, धान्यादि यत् कर्म (तत्) विधेयम् ।

विमला—राज्याभिषेक, मङ्गलकार्य, सेवा, यान, अस्त्रकर्म, औषध, युद्ध और धान्यकर्म रविवार को करना चाहिए ॥ १ ॥

शंखमुक्ताम्बुरजत वृक्षेक्षुस्त्रीविभूषणम् ।
पुष्पगीत क्रतुक्षीर कृषि कर्मेन्दुवासरे ॥ २ ॥

विमला—शंख, मुक्ता (शुक्ति) चाँदी, वृक्ष, ईख, स्त्री आभूषण, पुष्प, गीत, यज्ञ, क्षीर और कृषी कर्म सोमवार को करना उत्तम होता है ॥ २ ॥

विषाग्नि वंधनस्तेयं सन्धि विग्रहमाहवे ।
धात्वाकर प्रवालास्त्रीकर्म भूमिज वासरे ॥ ३ ॥

विमला—विष, अग्नि, बंधन, चोरी, सन्धि, विग्रह, धातु खजाना, मूँगा शस्त्रकर्म मंगलवार को करना चाहिए ॥ ३ ॥

नृत्यशिल्पकलागीत लिपिभूरससंग्रहम् ।
विवाहधातु संग्रामकर्म सौम्यस्यवासरे ॥ ४ ॥

विमला—नृत्य, शिल्पकला, गीत, लेखनकार्य, पृथ्वी के रसों का संग्रह, विवाह, धातु और संग्राम ये कर्म बुधवार के दिन करना चाहिए ।

यज्ञ पौष्टिक माङ्गल्य स्वर्णवस्त्रादि भूषणं ।
वृक्षगुल्मलता यानकर्म देवेज्य वासरे ॥ ५ ॥
नृत्यगीतादिवादित्र स्वर्णस्त्री रत्नभूषणं ।
भूपण्योत्सवगोधान्यकर्म भार्गव वासरे ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—यज्ञ, पौष्टिककर्म, मांगलिककार्य, स्वर्ण, वस्त्र, आभूषण, वृक्षादि, एवं वाहनकर्म गुरुवार के दिन तथा शुक्रवार के दिन नृत्य, गीत, वाद्य, स्वर्ण, स्त्री, रत्न, आभूषण, भूमि, पुण्य, उत्सव गौ तथा धान्य कर्मादि करना चाहिए ॥ ५-६ ॥

त्रपुसीसायसोऽश्मास्त्र विषपापासवानृतम् ।
स्थिरकर्माखिलंवास्तु संग्रहं सौरिवासरे ॥ ७ ॥

अन्वयः—सौरिवासरे, त्रपु, सीसा, आयस, आश्मा, अस्त्र, विषय, पाप, आसव, अमृत, वास्तु संग्रह अखिलं स्थिर कर्म (कर्त्तव्यम्) ।

विमला—शनिवार को त्रपु (रांगा) सीसा, लोहा, पत्थर, अस्त्र, विषय, जल (या पाप कर्म) आसव, झूठ बोलना वास्तु संग्रह तथा अन्य सभी स्थिरकर्म करना उत्तम होता है ॥ ७ ॥

रविः स्थिरश्चरश्चन्द्रः कुजः क्रूरो बुधोखिलः ।
लघुरीज्यो मृदुः शुक्रस्तीक्ष्णो दिकरात्मजः ॥ ८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्य स्थिर, चन्द्रमा चर, मंगल क्रूर, बुध मिश्रगुणवाला, गुरु लघु, शुक्र मृदु तथा शनि तीक्ष्ण स्वभाव का है ॥ ८ ॥

अभ्यक्तो भानुवारे यः स नरः क्लेशवान्भवेत् ।
ऋक्षेशे कान्तिभाग् भौमे व्याधिः सौभाग्यमिन्दुजे ॥९॥
जीवेनैस्वं सितेहानिर्मन्दे सर्वसमृद्धयः ।
उदयादुदयंवार इतिपूर्वविनिश्चितम् ॥ १० ॥

अन्वयः—यः नरः भानुवारे अभ्यक्तः स क्लेशवान्भवेत् । (एवं) ऋक्षेशे कान्तिभाग् । भौमे व्याधिः । इन्दुजे सौभाग्यं । जीवेनैस्वं, सितेहानिः, मन्दे सर्वसमृद्धयः, उदयादुदयं वार इति पूर्व विनिश्चितम् ॥

विमला—रविवार के दिन अभ्यङ्ग (उबटन तैल आदि का लगाना) करने वाला रोगी होता है । इसी प्रकार सोमवार को कान्तिमान् । मंगलवार को व्याधि । बुध को सौभाग्य । गुरुवार को निर्धन शुक्रवार को हानि तथा शनिवार को अभ्याङ्ग करने से सर्वसमृद्धि की प्राप्ति होती है । तथा सूर्योदय से सूर्योदय पर्यन्त एक दिन का प्रमाण माना गया है ॥ ९-१० ॥

---

१. 'विषयापासवानृतं' इति मूल पाठः ।

लंकोदयात् स्याद्वारादिस्तस्मादूर्ध्वमधोऽपि वा।
देशान्तरचरार्द्धाभिर्नाडीभिरपरो भवेत् ॥ ११ ॥

अन्वयः—वारादिः लंकोदयात् स्यात् तस्मात् उर्ध्वं अधः अपि वा देशान्तर चरार्द्धाभिः नाडीभिः (अन्तरितः) अपरो भवेत्।

विमला—'लंका नगर्यामुदयाच्चभानोः' इत्यादि के द्वारा भी सिद्ध है कि दिनादि लंका के सूर्य उदयकाल से आरम्भ होता है। तथा उससे उपर तथा नीचे के देशों में देशान्तर चरखण्डों से आनीत नाड़ी से अन्तरित सूर्योदय होता है। अर्थात् वारप्रवेश सर्वत्र एक कालिक नहीं होता ॥ ११

वलप्रदस्य खेटस्य वारेसिध्यति यत्कृतम्।
तत्कर्मवलहीनस्य दुःखेनापि न सिध्यति ॥ १२ ॥

अन्वयः—अति सुगमम्।

विमला—वलवान ग्रह के दिन जो कार्य सरलता से सिद्ध होता है वह कार्य हीनवली ग्रह के दिन अत्यधिक प्रयास करने और कष्ट झेलने पर भी सिद्ध नहीं होता ॥ १२ ॥

बुधेन्दुजीवशुक्राणां वासराः सर्वकर्मसु।
सिद्धिदाः क्रूरवारेषु यदुक्तं कर्मसिध्यति ॥ १३ ॥
रक्तवर्णो रविश्चन्द्रो गौरो भौमस्तु लोहितः।
दूर्वावर्णो बुधोजीवः पीतः श्वेतस्तु भार्गवः ॥ १४ ॥
कृष्णः शौरि स्ववारेषु स्वस्ववर्णाः क्रियाः शुभाः।

अन्वयः—अति सुगमम्।

विमला—सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार सभी कामों में शुभ माने गये हैं। तथा क्रूर दिनों (रविवार, मंगलवार, शनिवार) में तत्तद्वार कथित कर्म ही सिद्ध होते हैं। रक्तवर्ण सूर्य का, गौरवर्ण चन्द्रमा, लोहितवर्ण मंगल, दूर्वावर्ण बुध, पीतवर्ण गुरु, श्वेतवर्ण शुक्र और कृष्ण वर्ण शनि का होता है। अपने-अपने दिन में अपने वर्ण का कार्य शुभ होता है ॥ १३-१४ ॥

अद्रिवाणाब्धयस्तर्कतोयाकर धराधराः ॥ १५ ॥
वाणाग्नि लोचनानि स्युः वेद वाहु शिलीमुखाः ॥

लोकेन्दु वसवो नेत्र शैलाग्नीन्दु रसो रसः ॥ १६ ॥
कुलिका यमघंटाख्या अर्धप्रहर संज्ञकाः ।
प्रहरार्ध प्रमाणास्ते विज्ञेयाः सूर्यवासरात् ॥ १७ ॥

अन्वयः—अद्रि, बाण अब्धिः । तर्क, तोयाकर, धराधराः । वाणाः, अग्नि, लोचनादि । वेद वाहु, शिलीमुखाः । लोकः, इन्दुः, वासवः । नेत्र, शैल, अग्निः । इन्दु, रसो, रसः । प्रहरार्द्ध प्रमाणास्युः ते सूर्यवासरात् कुलिका, यमघंटाख्या, अर्धप्रहर संज्ञकाः विज्ञेया ।

विमला—कुलिक, यमघंट और अर्द्ध प्रहर नामक दुष्टयोग प्रहरार्द्ध प्रमाण में सूर्यादिवारों में क्रमशः इस प्रकार समझना चाहिए । रविवार को ७, ५, ४ । सोमवार को ६, ४, ७ मंगलवार को ५, ३, २ । बुधवार को ४, २, ५ । गुरुवार को ३, १, ८ । शुक्रवार को २, ७, ३ तथा शनिवार को १, ६, ६ ॥ १५-१७ ॥

यस्मिन्वारे क्षणो वार इष्टस्तद्वासराधिपः ।
आद्यः षष्ठो द्वितीयोस्मात्तस्मात् षष्ठस्तृतीयकः ॥ १८ ॥
षष्ठषष्ठश्चेतरेषां कालहोराधिपाः स्मृताः ।
सार्धनाडीद्वयेनैवं दिवारात्रौ यथाक्रमात् ॥ १९ ॥
यस्यखेटस्य यत्कर्मवारे प्रोक्तं विधीयते ।
ग्रहस्यकर्मवारेपि तस्य तत्क्षण सर्वदा ॥ २० ॥

इति श्रीनारदसंहितायां वारलक्षणाऽध्यायः पञ्चमः ।

अन्वयः—सुगमम्

विमला—जिस दिन जो क्षण वार का होता है, उसका अधिपति उस वार का अधिपति होता है । छठवां प्रथम होता है तथा उससे छठवां द्वितीय पुनः द्वितीय से छठवां तृतीय इस क्रम से काल होराधिप होते हैं । २½ नाड़ी दिन रात्रि के क्रम से जिस ग्रह का जो कर्म जिस दिन करने को कहा गया है वह करना चाहिए । अर्थात् यदि सोमवार होने पर भी बुध की होरा हो तो बुधवार के दिन के लिए कहे गये कार्यों को ही करना चाहिए ॥ १८-२० ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में वारलक्षणाध्याय समाप्त ।

अथ षष्ठोऽध्यायः

नक्षत्रेशाः क्रमादस्रयमवह्निपितामहाः ।
चन्द्रेशादितिजीवा हि पितरो भगसंज्ञिताः ॥ १ ॥
अर्यमार्कत्वष्टृमरुत् शक्राग्निमित्रवासवाः ।
नैऋत्युदग्विश्वऽजश्वगोविन्दो[1] वसुतोयपाः ॥ २ ॥
ततोजपादहिर्बुध्न्यः पूषा चेति प्रकीर्तिताः ।

अन्वयः—दस्र, यम, वह्नि, पितामहाः, चन्द्रेशा, अदिति, जीव, अहि, पितरो, भगसंज्ञिताः, अर्यमा, अर्कत्वष्ट्र, मरुत् , शक्र, अग्नि, मित्र, वासवाः, नैऋति, उदक् , विश्वे, अजः, गोविन्द, वसु, तोयपाः, ततः अजपाद्, अहिर्बुध्न्य, पूषा च इति क्रमात् नक्षत्रेशाः प्रकीर्तिताः ।

विमला—अश्विन्यादि नक्षत्रों के स्वामी क्रमशः अश्विनीकुमार (दस्र), यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, शिव, अदिति (देवमाता) गुरु, सर्प, पितर, भग (सूर्य विशेष) अर्यमा, सूर्य विश्वकर्मा (त्वष्टा) पवन, इन्द्राग्नी, मित्र, निऋति (राक्षस) जल, विश्वेदेव ब्रह्मा, गोविन्द, (विष्णु), वसु, तोयप (वरुण), अजचरण, अहिर्बुध्न्य और रेवती का पूषा (सूर्यविशेष) हैं ॥ १–२ ॥

वस्त्रोपनयनं क्षौरः सीमन्ताभरण क्रिया ॥ ३ ॥
स्थापनाश्वादियानं च कृषिविद्यादयोश्विभे ।

अन्वयः—वस्त्रः, उपनयनं, क्षौरः, सीमन्तः, आभरणक्रिया, स्थापना अश्वादियानं कृषि विद्यादयः च अश्विभे (करणीयम्) ।

विमला—वस्त्रधारण, उपनयन, क्षौरकर्म, सीमन्त, आभूषण क्रिया, स्थापनादिकर्म, अश्वादि वाहनकर्म, कृषि, विद्या कर्म आदि अश्विनी नक्षत्र में करना शुभद होता है ॥ ३ ॥

वापीकूप तडागादि विषशस्त्रोग्रदारुणम् ।
विलप्रवेश गणितनिक्षेपा याम्यभे शुभाः ॥ ४ ॥

---

१. 'विश्वविधिः' इति पाठान्तरम् ।

अन्वयः—याम्य भे वापी, कूप, तडागादि, विष, शस्त्र, उग्र, दारुण, विलप्रवेश, गणित, निःक्षेपः शुभाः ।

विमला—वापी, कूप, तड़ाग, विषयोग, शस्त्र, उग्र तथा दारुण कर्म, विलप्रवेश (किले में प्रवेश), गणित, निक्षेप (धरोहर या फिक्स-डिपाजिट) वे कर्म भरणी नक्षत्र में शुभद होते हैं ॥ ४ ॥

अग्न्याधानास्त्रशस्त्रोग्रसन्धिविग्रहदारुणाः ।
संग्रामौषधवादित्रक्रियाः शस्ताश्च वह्निभे ॥ ५ ॥

अन्वयः—वह्नि भे अग्न्याधान, अस्त्र, शस्त्र, उग्र, सन्धि, विग्रह, दारुणाः, संग्राम, औषध, वादित्र क्रिया च शस्ताः ।

विमला—अग्न्याधान, अस्त्र, शस्त्र, उग्रकर्म, सन्धि-विग्रह, दारुणकर्म, युद्ध, औषधनिर्माण तथा वादन क्रिया कृत्तिका नक्षत्र में शुभ होता है ॥ ५ ॥

सीमन्तोन्नयनोद्वाहवस्त्रभूषा स्थिर-क्रियाः ।
गजवास्त्वभिषेकाश्च प्रतिष्ठा ब्रह्मभे शुभाः ॥ ६ ॥

अन्वयः—ब्रह्म भे सीमन्तोन्नयन, उद्वाह, वस्त्र, भूषा, स्थिर क्रियाः, गज, वास्तु, अभिषेक, प्रतिष्ठाश्च शुभाः ।

विमला—सीमन्तोन्नयन, (सीमन्त तथा उपनयन मतान्तर से) विवाह, वस्त्र, आभूषण, स्थिरकर्म, गजकर्म, वास्तुकर्म, अभिषेक और प्रतिष्ठा रोहिणी में शुभ होता है ॥ ६ ॥

प्रतिष्ठा भूषणोद्वाह सीमन्तोन्नयन क्रियाः ।
क्षौर वास्तु गजोष्ट्राश्च यात्राः शस्ता च चन्द्रभे ॥ ७ ॥

अन्वयः—चन्द्र भे प्रतिष्ठा, भूषण, उद्वाह, सीमन्तोन्नयनक्रियाः, क्षौर, वास्तु, गज, उष्ट्र, अश्व यात्रा च शस्ताः ।

विमला—प्रतिष्ठा, भूषण, विवाह, सीमन्तोन्नयन, क्षौर, वास्तु, गज, उष्ट्र, अश्व, यात्रा आदि कर्म मृगशिरा नक्षत्र में करना शुभ होता है ॥७॥

ध्वजतोरण संग्राम प्राकारास्त्रक्रिया शुभाः ।
संधि विग्रह वैतान रसाद्याः शर्वभे शुभाः ॥ ८ ॥

अन्वयः—सर्व भे ध्वज, तोरण, संग्राम, प्राकार, अस्त्र क्रिया शुभाः, संधिविग्रह वैतान रसाद्याच शुभाः ॥

---

१. 'सीमन्तोपनयोद्वाह' इति पाठान्तरम् ।

विमला—ध्वज तोरण, संग्राम, प्राकार, अस्त्रक्रिया, सन्धि-विग्रह, वितान, रस आदि का कर्म आर्द्रानक्षत्र में करना शुभदायक होता है॥८॥

प्रतिष्ठा यान सीमन्त वस्त्रवास्तूपनायनम् ।
क्षौरास्त्रकर्मादितिभे विधेयं धान्य भूषणम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—प्रतिष्ठा, सवारी, सीमन्त, वस्त्र, वास्तु, उपनयन, क्षौरकर्म, अस्त्रकर्म, धान्य और आभूषण का निर्माणादि कार्य पुनर्वसु में शुभ होता है ॥ ९ ॥

यात्रा प्रतिष्ठा सीमन्त व्रतबन्ध प्रवेशनम् ।
करग्रहं विनासर्वं कर्म देवेज्यभे शुभम् ॥ १० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—यात्रा, देव प्रतिष्ठा, सीमन्त, व्रत बन्ध, गृह प्रवेश, तथा विवाह से अतिरिक्त अन्य सभी शुभकर्म पुष्य नक्षत्र में करना शुभ-प्रद होता है ॥ १० ॥

अनृत व्यसनद्यूत क्रोधाग्निविष दाहकम् ।
विवाद रसवाणिज्यं कर्म कद्रुजभे शुभम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—सुगमन् ।

विमला—झूठ बोलना, व्यसन, जूआ खेलना, क्रोध, अग्नि, विष, जलाना, विवाद, मद का व्यापार आश्लेषा नक्षत्र में करना शुभ होता है॥

कृषि वाणिज्य गोधान्य रणोपकरणादिकं ।
विवाह नृत्य गीताद्यं निखिलं कर्म पैतृभे ॥ १२ ॥

अन्वयः—पैतृभे कृषिवाणिज्य गोधान्यरणोपकरणादिकं विवाह नृत्य-गीताद्यं निखिलं कर्म कार्यमिति ।

विमला—कृषि, वाणिज्य, गोपालन, धान्यकर्म, रण के उपकरणादि, विवाह, नृत्य गीतादि सभी कर्म मघा में करना शुभ होता है ॥ १२

विवाद विष शस्त्राग्निदारुणोग्राहवादिकं ।
पूर्वात्रयेखिलं कर्म कर्त्तव्यं मांस विक्रयम् ॥ १३ ॥

अन्वयः—विवाद, विषशस्त्राग्नि दारुण, उग्र, आहव, मांसविक्रय आदिकं अखिलं कर्म पूर्वात्रयेकर्त्तव्यम् ।

विमला—विवाद, विष, शस्त्र, अग्नि, दारुण, उग्रकर्म, युद्ध तथा मांसविक्रय कार्य तीनों पूर्वा में करना चाहिए ॥ १३ ॥

वस्त्राधिषेक लोहाश्म विवाह व्रत बन्धनं।
प्रवेश स्थापनाश्वेत वास्तुकर्मोत्तरात्रये ॥ १४ ॥

अन्वयः—वस्त्र, अभिषेक, लोहाश्म, विवाह, व्रतबन्धनं, प्रवेशः, स्थापना, अश्व, इभ वास्तुकर्म उत्तरात्रये कर्त्तव्यम्।

विमला—वस्त्रधारण, अभिषेक, लौहकर्म, पाषाणकर्म, विवाह, उपनयन, प्रवेश, स्थापना, अश्वकर्म गजकर्म, वास्तुकर्म आदि सभी तीनों उत्तराओं में करना शुभद होता है ॥ १४ ॥

प्रतिष्ठोद्वाह सीमन्त यानवस्त्रोपनायनं।
क्षौरवास्त्वभिषेकाश्वभूषणं कर्मभानुभे ॥ १५ ॥

अन्वयः—भानुभे प्रतिष्ठा, उद्वाह सीमन्त, यानवस्त्रोपनायनं क्षौर वास्तु, अभिषेक भूषणकर्म च कर्त्तव्यम्।

विमला—प्रतिष्ठा-विवाह-सीमन्त-यानकर्म-वस्त्रनिर्माण धारणादि-उपनयन-क्षौर-वास्तुकर्म-अभिषेक तथा भूषणकर्म हस्त नक्षत्र में करना शुभद होता है ॥ १५ ॥

प्रवेशवस्त्रसीमन्तप्रतिष्ठाव्रतबन्धनम्।
त्वाष्ट्रभे वास्तुविद्या च क्षौरभूषणकर्म यत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—यत् प्रवेश वस्त्र सीमन्त प्रतिष्ठा व्रतबन्धनं वास्तुविद्या क्षौर भूषण कर्म च (तत् सर्वम्) त्वाष्ट्र भे (कर्त्तव्यम्)।

विमला—प्रवेश, वस्त्रधारणादि, सीमन्त, प्रतिष्ठा, व्रतबन्ध वास्तुविद्या क्षौर भूषण कर्मादि कार्य चित्रा नक्षत्र में करना चाहिए ॥ १६ ॥

प्रतिष्ठोपनयोद्वाह वस्त्रसीमन्तभूषणम्।
प्रवेशाश्वेभकृष्यादि[1] क्षौरकर्म समीरभे ॥ १७ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—प्रतिष्ठा, उपनयन, विवाह, वस्त्र, सीमन्त, आभूषण, प्रवेश, अश्वकर्म, गजकर्म, कृषी क्षौरकर्म ये सभी कार्य स्वाती नक्षत्र में करना शुभ होता है ॥ १७ ॥

वस्त्रभूषणवाणिज्यवस्तुधान्यादि संग्रहः।

---

१. 'विवाहाश्वेभ' इति मूल पाठः।

२. 'कृष्णादि' इति मूल पाठः।

इन्द्राग्निभे नृत्यगीतशिल्पलोहाश्म लेखनम् ॥ १८ ॥

विमला—वस्त्र, आभूषण, वाणिज्य, धान्यादि वस्तुओं का संग्रह, नृत्यगीत, शिल्पकर्म, लौहकर्म, पाषाण कर्म तथा लेखन कार्य विशाखा नक्षत्र में करना चाहिए ॥ १८ ॥

प्रवेशस्थापनोद्वाह-व्रतबन्धाष्टमंगलम् [1] ।
वास्तुभूषणवस्त्राश्व मैत्र भे संधि विग्रहम् ॥ १९ ॥

विमला—प्रवेश, स्थापना, विवाह, व्रतबन्ध, अष्टमंगल, वास्तु, भूषण, वस्त्र, अश्वकर्म, तथा सन्धि विग्रह अनुराधा नक्षत्र में करना चाहिए ॥ १९ ॥

क्षौरास्त्र[2]शस्त्र वाणिज्य गोमहिष्यम्बु कर्म यत् ।
इन्द्र भे गीत वादित्र शिल्प लोहाश्म लेखनम् ॥ २० ॥

विमला—क्षौर, अस्त्र, शस्त्र, वाणिज्य, महिषी, जलकर्म, गीत, वादित्र, शिल्प, लौह, पाषाण लेखन आदि का कार्य ज्येष्ठा नक्षत्र में शुभ होता है ॥ २० ॥

विवाह कृषि वाणिज्य दारुणाहव भेषजम् ।
नैर्ऋते[3] नृत्यशिल्पसंधिविग्रहलेखनम् ॥ २१ ॥

विमला—विवाह, कृषि, व्यापार, दारुणकर्म, युद्ध, औषधि, नृत्य, शिल्प, संधि-विग्रह तथा लेखन कर्म मूल नक्षत्र में शुभ होता है ॥२१॥

प्रतिष्ठाक्षौरसीमंतयानोपनयनौषधम् ।
पुरग्राम[4] गृहारम्भा विष्णुभे पट्टबंधनम् ॥ २२ ॥

---

१. अष्टमंगलम्-अष्टसुस्थानेषु उरः खुर चतुष्टयपुच्छ मुख पृष्ठस्थ श्वेत रूपात्मक मंगलमश्वः । अष्टानां मंगल द्रव्याणां समाहारो वा । "लोकेऽस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः हिरण्यं सर्पिरादित्य आपो राजा तथाष्टमः"

शब्दस्तोम महानिधिः पृष्ठ ५५ ॥

२. 'क्रूरोग्र' इति पाठान्तरम् ।

३. निऋतिभे नृत्य शिल्प सन्धि विग्रह लेखनम्" मुहूर्तचिन्तामणौ पियूषधारायाम् । "नैऋते नृत्य शिल्पास्त्र शस्त्र लोहाश्म लेखनम्" इति पाठान्तरम् ।

४. "पुराणमगृहारम्भे विष्णुं पद प्रबन्धनं" पाठान्तरम् । "पुराणैस्तु गृहारम्भो विष्णुभे च समीरितम्" इति पाठान्तरम् ।

विमला—प्रतिष्ठा, क्षौर, सीमन्त, यान (वाहन) उपनयन, औषध, पुर-ग्राम-गृहारम्भ, पट्ट बंधन ये कार्य श्रवण नक्षत्र में शुभ हैं ॥ २२ ॥

वस्त्रोपनयनं क्षौरं मौंजिवन्धन भेषजम् ।
वसुभेवास्तु[1] सीमन्त प्रवेशाश्च विभूषणम् ॥ २३ ॥

विमला—वस्त्रधारण, उपयन, क्षौर, मौंजी बन्धन, औषध, वास्तु, सीमन्त, प्रवेश तथा आभूषण कार्य धनिष्ठा नक्षत्र में करना शुभद होता है ॥ २३ ॥

प्रवेशस्थापनं क्षौर मौंजीवंधन भेषजम् ।
अश्वारोहणसीमन्तवास्तुकर्म जलेश भे ॥ २४ ॥

विमला—गृह प्रवेश, प्रतिष्ठा, क्षौर, मौंजीबन्धन, औषध, घोड़े की सवारी, सीमन्त संस्कार, वास्तु कर्म, ये सभी शतभिषा नक्षण में करना चाहिए ॥ २४ ॥

विवाहव्रतवंधाश्च प्रतिष्ठायानभूषणम् ।
प्रवेशवस्त्रसीमन्तक्षौरभेषजमन्त्यभे ॥ २५ ॥

विमला—विवाह, व्रतबन्ध, प्रतिष्ठा, यान, आभूषण, प्रवेश, वस्त्र, सीमन्त संस्कार, क्षौर औषधि निर्माणादि कार्य रेवती में करना शुभ फलदायक होता है ॥ २५ ॥

पूर्वात्रयाग्निमूलाहिद्विदैवत्यमघान्तकम्[2] ।
अधोमुखं तु नवकं भानां तत्र विधीयते ॥ २६ ॥
विलप्रवेशगणितभूतसाधनलेखनम् ।
शिल्पकर्मलताकूपनिक्षेपोद्धारणादि यत् ॥ २७ ॥

अन्वयः—पूर्वात्रय, अग्नि, मूल, आश्लेषा, द्विदैवत्य मघा, अन्तकं तु भानां नवकं अधोमुखं । तत्र विलप्रवेशः, गणित, भूतसाधन लेखनादि-कार्य शिल्पकर्म, लता निक्षेपोद्धारणादि यत् कर्म तत् विधीयते ॥

---

१. "वस्त्रोपनयन क्षौर प्रतिष्ठायान भूषणम् । वसुभे वास्तु सीमन्त प्रवेशाश्च विभूषण ॥" इतिपाठ भेदः ॥ पियूषधारायाम् ।

२. 'मघान्तिकम्' इति मूलपाठः ।

विमला—तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्र पद) कृत्तिका, मूल, आश्लेषा, विशाखा मघा, भरणी, ये नवनक्षत्र अधोमुख संज्ञक हैं। तथा इनमें गुफाप्रवेश, गणित, मंत्र यन्त्र यन्त्रादिकों से भूतसाधन, लेखन क्रिया, शिल्पकर्म, लता लगाना, तथा निःक्षेपोद्धार कर्म करते हैं॥ २६-२७॥

मित्रेन्दुत्वाष्ट्र हस्तैन्द्रा दितिभान्त्योश्व वायुभम्।
तिर्यङ्मुखाख्यं नवकं भानां तत्र विधीयते॥ २८॥
हलप्रवाहगमनं गंत्रीयंत्रगजोष्ट्रकम्।
अजादिगमनं चैव हयकर्म यतस्ततः॥ २९॥

अन्वयः—मित्र, इन्दु, त्वाष्ट्र, हस्त, ज्येष्ठा, अदिति, भान्त्य, अश्व, वायुभं भानां नवकं तिर्यङ्मुखाख्यम्। तत्र हल प्रवाह, गमनं, गंत्रीयन्त्र, गज, उष्ट्रकम्, अजादि गमनं (ग्रहणं वा) हयकर्म यतस्ततः विधीयते॥

विमला—अनुराधा, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, आर्द्रा, पुनर्वसु, रेवती, अश्विनी और स्वाती ये नव नक्षत्र तिर्यङ् मुख संज्ञक हैं। इनमें हल जोतना, गमन, गाड़ी बनाना, हाथी, ऊँट बकरी आदि का खरीदना, घोड़े का क्रय विक्रयादि कार्य करना शुभ होता है॥ २८-२९॥

खरगोरथनौ यानं लुलायहयकर्म च।
शकटोखे[2] तथात्वोष्ट्रपश्वादि हयकर्म च॥ ३०॥

विमला—गदहा, बैलगाड़ी, नौके की सवारी, लुलायहयकर्म (भैंष तथा घोड़े का काम) शकटोखे (वायुयान) तथा उष्ट्र अश्वादि पशुकर्म करना शुभद होता है॥ ३०॥

ब्रह्मविष्णुमहेशार्य शततारावसूत्तराः।
उर्ध्वास्यं नवकं भानां प्रोक्तं चैव विधीयते॥ ३१॥
पुरहर्म्यगृहारामवारणध्वजकर्म च।
प्रासादं वारकोद्यान[3] प्राकारा चैव मंडपम्[4]॥ ३२॥

१. 'ग्रहण' इति साधुपाठः।
२. 'शकट ग्रहणं चैव तथा पश्वादिकर्म च" इति मूलपाठः।
३. 'भित्तिकोद्यान' इति पाठान्तरम्।
४. 'सिध्यति' इति मूल पाठः।

अन्वयः—ब्रह्म विष्णु महेश आर्य शततारा वसू उत्तराः (त्रय) च एव भानां नवकं उर्ध्वास्यं तत्र पुर, हर्म्य, गृह आराम वारण, ध्वज कर्म, देव प्रासादं, वारकोद्यान, प्राकाराश्च मण्डपम, विधीयते ।

विमला—रोहिणी, श्रवण, आर्द्रा, पुष्य, शतभिषा, धनिष्ठा, तथा तीनों उत्तरा ये नव नक्षत्र उर्ध्व मुख कहे गये हैं । इनमें ग्राम, गृह, वाटिका, हाथी, ध्वजकर्म, देवमन्दिर, उद्यान की दिवाल, किला तथा मंडप का कार्य करना शुभद होता है ॥ ३१–३२ ॥

स्थिरं रोहिण्युत्तराभं क्षिप्रं सूर्याश्वि पुष्यभम् ।
साधारणं द्विदैवत्यं वह्निभं चर संज्ञितम् ॥ ३३ ॥

अन्वयः—रोहिणी, उत्तराभं स्थिरं । सूर्य, अश्वि, पुष्यभं क्षिप्रं । द्वि दैवत्यं वह्निभं साधारणं । (अग्रे) चर संज्ञितम् ।

विमला—रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्र पदा, ये स्थिर संज्ञक । हस्त, अश्विनी, पुष्य ये क्षिप्र संज्ञक । विशाखा, कृत्तिका ये साधारण या मिश्र संज्ञक नक्षत्र हैं । आगेचर संज्ञक कहे गये हैं ॥ ३३ ॥

वस्वादित्यम्बुपस्वाती विष्णुभं, मृदुसंज्ञितम् ।
चित्रांत्य मित्र शशिभमुग्रं पूर्वा मघान्तकम् ॥
मूलेन्द्राह्यार्द्रभंतीक्ष्णं स्वनाम सदृशं फलम् ॥ ३४ ॥

अवन्यः—वस्वादित्यम्बुपस्वाती विष्णुभं (चरसंज्ञितम) । चित्रांत्य मित्र शशिभं मृदु संज्ञितम् । पूर्वा मघान्तकं उग्रं । मूलेन्द्राह्यार्द्रभं तीक्ष्णं (सर्वे) स्वनाम सदृशं फलम् । (ज्ञेयम्) ।

विमला—धनिष्ठा, पुनर्वसु, शतभिषा, स्वाती, श्रवण ये चर संज्ञक । चित्रा, रेवती, अनुराधा, मृगशिरा ये मृदु संज्ञक । मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा ये तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्र हैं तथा अपने नाम के सदृश फल देने वाले हैं ॥ ३४ ॥

चित्रादित्याश्विविष्ण्वंत्य रविमित्रवसूडुपु ।
समृगेषु च बालानां कर्णवेधक्रिया हिता ॥ ३५ ॥

---

१. 'मूलेन्द्रहीन्द्रभं' इति मूल पाठः ।

दस्रेन्द्वदिति तिष्येसु करादित्रितये तथा।
गजकर्माखिलं यत्तद्विधेयं स्थिरभेषु च ॥ ३६ ॥

अन्वयः—अति सुगमम्।

विमला—चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनी, श्रवण, रेवती, हस्त, अनुराधा, धनिष्ठा, और मृगशिरा इन नक्षत्रों में बालकों का वर्ण वेध (कान छिदवाना) संस्कार शुभ होता है। अश्विनी मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्प, हस्त, चित्रा और स्वाती इन नक्षत्रों में हाथी का काम शुभ है तथा स्थिर संज्ञक नक्षत्रों में भी गजकर्म करना शुभ होता है। ३५-३६ ॥

विविष्णुं चरभे क्षिप्रे मृदुभे स्थिरभेषु च।
वाजिकर्माखिलं कर्म सूर्यवारे विशेषतः ॥ ३७ ॥

विमला—श्रवण से अतिरिक्त चर संज्ञक नक्षत्र, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र, मृदु संज्ञक नक्षत्र, स्थिर संज्ञक नक्षत्र तथा रविवार को विशेष रूप से किसी भी प्रकार का अश्व कर्म करना उत्तम होता है ॥ ३७ ॥

चित्रा श्रवणवैरंचि[२] त्र्युत्तरासु गमागमम्।
दर्शाष्टम्यां चतुर्दश्यां पशूनां च कदाचन ॥ ३८ ॥

विमला—चित्रा, श्रवण, रोहिणी, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में तथा अमावास्या, चतुर्दशी अष्टमी इन तिथियों में पशुओं का गमागम (बेंच खरीद कर ले जाना या लाना) कभी भी नहीं करना चाहिए। क्योंकि शुभ नहीं होता ॥ ३८ ॥

मृदुध्रुवक्षिप्रचरविशाखापितृभेषु च।
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्मूलभे वृषैः ॥ ३९ ॥

विमला—मृदु नक्षत्र, ध्रुव नक्षत्र, चर नक्षत्र, विशाखा और मघा तथा मूल नक्षत्रों में बैल द्वारा प्रथम खेत जोतने का कार्य शुभ दायक होता है ॥ ३९ ॥

हलादौ वृषनाशायभत्रयं सूर्यभुक्तभात्।
अग्रे[३]त्रयं च वैलक्ष्म्यै सौख्यंपार्श्वे च पञ्चकम् ॥ ४० ॥

---

१. 'सुदिने' इति पाठान्तरम्।

२ 'वैरंत्रि' इति मूलपाठः। 'वैरिंचि' इति पाठान्तरम्।

३. 'अग्रे ऋक्षत्रयं लक्ष्म्यैः सौख्यं पार्श्वस्य पञ्चके' इति साधुपाठः।

शूलत्रयेपिनवकं मरणायान्य पञ्चकम् ।
श्रियै पुच्छेत्रयं श्रेष्ठं स्याच्चक्रेलाङ्गले शुभम् ॥ ४१ ॥

अन्वयः—सूर्य भुक्तभात् हलादौ भत्रयं वृषनाशाय, अग्रेत्रयं च बैलदम्यैः पार्श्वे पंचकं च सौम्यम् । शूलत्रयेपि नवकं मरणाय, अन्य पंचकं श्रियैः, पुच्छे त्रयं श्रेष्ठं इतिलाङ्गले चक्रे शुभं स्यात् ॥

विमला—सूर्य के नक्षत्र से हल के आदि में ३ नक्षत्र वृषभ को कष्ट दायक। अग्र भाग में ३ नक्षत्र लक्ष्मी दायक। दक्षिण पार्श्व में ५ सुख-दायक। तीनों शूलों (जुआ और दण्डाग्र) में नव नक्षत्र मरण कारक। वाम पार्श्व में ५ नक्षत्र श्रीप्रद तथा पूँछ में ३ नक्षत्र श्रेष्ठ फलद होता है। इसे लाङ्गल[1] (हल) चक्र के द्वारा स्पष्ट समझना चाहिए ॥३०–४१॥

मृदुध्रुवक्षिप्रभेषु पितृवायुवसूडुषु ।
समूलभेषु बीजोप्तिरत्युत्कृष्टफलप्रदा ॥ ४२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—मृदु, ध्रुव, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में मघा, स्वाती, धनिष्ठा, मूल इन नक्षत्रों में बीज बोना अत्यन्त शुभदायक होता है ॥ ४२ ॥

भवेद्भत्रितयं मूर्ध्नि धान्यनाशाय राहुभात् ।
गलेत्रयं कज्जलाय वृद्ध्यै च द्वादशोदरे ॥ ४३ ॥
निस्तंडुलत्वं लांगूले भचतुष्टयमीरितम् ।
नाभौ वह्निः पंचकं यद्बीजोप्ताविति चिंतयेत् ॥ ४४ ॥

अन्वयः—(राहु चक्रे, राहुभात् भत्रितयं मूर्ध्निधान्यनाशाय भवेत् । गलेत्रयं कज्जलाय । उदरे द्वादश वृद्ध्यै च (भवेत्) "लांगूले भ चतुष्टयं निस्तंडुलत्वं इरितम् । नाभौ पंचकं वह्निः यत् इति बीजोप्तौ चिन्तयेत् ॥"

विमला—राहु चक्र के अनुसार राहु के नक्षत्र से ३ नक्षत्र मस्तक पर हो तो धान्य नाश हो। गले में ३ नक्षत्र अवर्षण सूचक या रोग प्रद। उदर में १२ नक्षत्र वृद्धिदायक। पूंछ पर ४ नक्षत्र दाना कम पड़ने वाला। तथा ५ नक्षत्र नाभि में अग्निभय कारक होता है। इसका विचार बीज बोने के समय करना चाहिए ॥ ४३–४४ ॥

---

१. नरपतिजयचर्यायां लाङ्गल चक्रं द्रष्टव्यम् ।

स्थिरेष्वदिति सर्पान्त्यपितृमारुत भेसु च।
न कुर्याद्रोगमुक्तश्च स्नानं वारेन्दु शुक्रयोः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—स्थिरेषु, अदिति, सर्प, अन्त्य, पितृ, मारुत भेषु इन्दु शुक्रयोः वारे च रोगमुक्तश्च स्नानं न कुर्यात्।

विमला—स्थिर संज्ञक नक्षत्र, पुनर्वसु, आश्लेषा, रेवती, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में चन्द्रवार तथा शुक्रवार को रोग से विमुक्त व्यक्ति को प्रथम स्नान नहीं करना चाहिए ॥ ४५ ॥

उत्तरात्रयमित्रेन्द्र वसुवारुण भेषु च।
पुष्यार्क पौष्ण धिष्ण्येषु नृत्यारम्भः प्रशस्यते ॥ ४६ ॥

अन्वयः—उत्तरात्रय, मित्र, इन्द्र, वसु, वारुण भेषु, पुष्य, अर्क, पौष्ण धिष्ण्येषु च नृत्यारम्भः प्रशस्यते।

विमला—तीनों उत्तरा, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा, पुष्य, हस्त, रेवती इन नक्षत्रों में नृत्यारम्भ शुभ फलदायक होता है ॥ ४६ ॥

पूर्वार्धयुंजि षड्भानि पौष्णभाद्रुद्रभात्ततः।
मध्ययुञ्जि द्वादशर्क्षाणीन्द्रभान्नवभानि च ॥ ४७ ॥
परार्धयुञ्जि क्रमशः संप्रीतिर्दम्पतेर्मिथः।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—रेवती से मृगशिरा तक ६ नक्षत्र पूर्व युजि में। आर्द्रा से अनुराधा तक १२ नक्षत्र मध्य युजि में और ज्येष्ठा से उत्तरा भाद्रपद तक ६ नक्षत्र परार्द्ध युजि में आते हैं। इनमें क्रमशः पति पत्नी में पति श्रेष्ठ दोनों में प्रेम और पत्नी श्रेष्ठा होती है ॥ ४७ ॥

जघन्यास्तोयमार्द्राहि[1] पवनान्तक तारकाः[2] ॥ ४८ ॥
ध्रुवादितिद्विदैवत्यो बृहत्ताराः पराः समः।
तासां प्रमाणे घटिका त्रिंशन्नवति षष्ठयः[3] ॥ ४९ ॥

---

१. 'तारा जघन्या सार्पेद्रा वातार्द्रान्तक तोयपाः।' इति साधु पाठः।
२. 'तोयमाद्रोहि' इति मूल पाठः।
३. 'तासां प्रमाणेत्यादि' यह अंश कुछ प्रतियों में उपलब्ध नहीं है।

क्रमादभ्युदिते चन्द्रे त्वनर्घार्घसमानि च ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—शतभिषा, आर्द्रा, आश्लेषा, स्वाती भरणी, ज्येष्ठा ये ६ नक्षत्र जघन्य संज्ञक हैं। ध्रुव संज्ञक नक्षत्र, पुनर्वसु, विशाखा इन ६ नक्षत्रों की बृहद् संज्ञा है। तथा शेष नक्षत्र सम संज्ञक हैं। इन तीनों का प्रमाण क्रमशः ३० घटी (१५ मुहूर्त) ६० घटी (४५ मुहूर्त) और ६० घटी (३० मुहूर्त) इनमें चन्द्रोदय होने पर क्रमशः वस्तुओं के भाव में महंगी सस्ती और समभाव होता है ॥ ४८–४६ ॥

अश्व्यग्नीद्विजनैऋत्यभाग्यभात्वाष्ट्रत्र्युत्तरा ॥ ५० ॥
पितृद्विदैवताख्यातास्तारास्युः कुल संज्ञकाः ।
धातृ ज्येष्ठाऽदितिस्वाती पौष्णार्क हरिदेवताः ॥ ५१ ॥
अजपांतक भौजंग ताराश्चोपकुलाह्वया ।
शेषा कुलाकुलस्तारास्तासां मध्येकुलोडुषु ॥ ५२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर्ष, मूल, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, उ. फा. उ. षा, उ. भा. पदा मघा, विशाखा, ये कुल संज्ञक नक्षत्र हैं। रोहिणी, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, स्वाती, रेवती, हस्त, श्रवण, पूर्वाभाद्र पदा, भरणी और आश्लेषा ये उपकुल संज्ञक (अकुलगण) नक्षत्र कहे गये हैं। शेष नक्षत्र कुलाकुल संज्ञक कहे गये हैं। इनमें यदि राजा कुल गण संज्ञक नक्षत्रो में…॥ ५०–५२ ॥

गम्यते यदि भूपालैः पराजयमवाप्यते ।
भेषूपकुलसंज्ञेषु[2] जयं प्राप्नोति [3]भूमिपः ॥ ५३ ॥
सन्धिर्भवेत्तयोः साम्यं तदा कुलकुलोडुषु ।
अर्कार्कि भौमवारे चेद्भद्रायां विषमांघ्रिभे ॥ ५४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

---

१. 'अश्व्यग्नीन्दुभ' इति पाठान्तरम् ।
२. 'येऽकुल' इति मूल पाठः ।
३. 'गम्यति' इति पाठ भेदः ।

विमला—(कुल गण संज्ञक नक्षत्रों में) यदि राजा युद्ध यात्रा करता है तो पराजय को प्राप्त होता है। उपकुल (अकुल) संज्ञक नक्षत्रों में यात्रा करने पर विजय को प्राप्त करता है और यदि कुलाकुल गण संज्ञक नक्षत्रों में युद्धादि हो तो दोनों राजाओं में सन्धि होती है। सूर्य, शनि और मंगलवार को भद्रा तिथि से यदि त्रिपुष्कर (एक राशि में ३ नक्षत्र चरण जैसे कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्र पदा) योग हो तो ॥ ५३–५४ ॥

त्रिपुष्करे त्रिगुणदं द्विगुणं यमलाग्रिभे।
दद्यात्तदोषनाशाय गोत्रयं मूल्यमेव वा ॥ ५५ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—त्रिपुष्कर योग में शुभ या अशुभ फलों को त्रिगुण तथा द्विपुष्कर (एक राशी में २ नक्षत्र चरण जैसे—मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा) योग हो तो शुभ या अशुभ फल द्विगुणित होता है। इस दोष के नाश के लिए क्रमशः ३ तथा दो गायों का दान तन्मूल्योपकल्पित द्रव्य का दान करना चाहिए। ५५ ॥

द्विपुं[1]ष्करे द्वयं दद्यात् न दोषो ऋक्षगेऽपि वा।
पुष्ये परकृतं हंतु शक्तस्तेवापि यत्कृतम् ॥ ५६ ॥
दोषं परो न शक्तस्तु चन्द्रेप्यष्टमगेपि वा।
क्रूरोविद्युतो वापि पुष्यो यदिवलान्वितः ॥ ५७ ॥
[2]विनाशं निग्रहं सर्वे मंगलस्त्विष्टदः सदा।

अन्वय—(वा) त्रिपुष्करे द्वयं (गां) दद्यात्। ऋक्षगे दोषो न।

विमला—श्लोक ५५ के अन्तर्गत ग्रन्थकार त्रिपुष्कर योग में ३ गायों का दान या तीन गायों के मूल्य के बराबर द्रव्य का दान कह चुके हैं। द्विपुष्कर योग में दो गायों का दान या दो गायों के मूल्य के बराबर द्रव्य का दान करना चाहिए। केवल नक्षत्र मात्र होने से कोई दोष नहीं होता है। पुष्य नक्षत्र यात्रा काल के आप सभी दोषों को नष्ट करने में समर्थ होता है। यदि स्वयं पुष्य नक्षत्र किसी विशेष दोष में

१. 'त्रिपुष्करे' इति पाठभेदः।
२. 'विना शनिगृहं' इति पाठान्तरम्।

पड़ा हो तो उस दोष को कोई अन्य योग नहीं हटा सकता। यदि पुष्य सबल हो तो क्रूरग्रहयुक्त चन्द्रमा या अष्टमस्थादि चन्द्रमा का दोष बिनाश कर निग्रह करता है तथा सभी मंगल और इष्ट को देने वाला होता है ॥ ५६–५७ ॥

रामा ३ ग्नि ३ ऋतु ६ वाणा ५ ग्नि ३
भू १ वेदा ४ ग्नि ३ शरे ५ षवः ५ ॥ ५८ ॥
नेत्र २ बाहु २ शरें ५ द्विं १ दु
१ वेद ४ वेदा ४ ग्नि ३ शंकराः ११ ।
बाहु २ नेत्रा २ ग्नि ३ वह्नय ३ ब्धि ४ शत
१०० द्वि २ द्वि २ रदाः ३२ क्रमात् ॥ ५९ ॥
तारा संख्यास्तु विज्ञेया दस्रादीनां पृथक्-पृथक् ।
या दृश्यते दीप्ततारा भगणे योगतारका ॥ ६० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अश्विन्यादि (साभिजित) २८ नक्षत्रों की तारा संख्या इस प्रकार है। अश्विनी ३, भरणी ३, कृतिका ६, रोहिणी ५, मृगशिर्ष ३ आर्द्रा १, पुनर्वसु ४, पुष्य ३, आश्लेषा ५, मघा ५, पूर्वाफाल्गुनी २, उत्तरा फाल्गुनी २, हस्त ५, चित्रा १, स्वाती १, विशाखा ४, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ३, मूल ११, पूर्वाषाढ़ा २, उत्तराषाढ़ा २, अभिजित् ३, श्रवण ३, धनिष्ठा ४, शतभिषा १००, पूर्वाभाद्रपदा २, उत्तराभाद्रपदा २, और रेवती के ३२ तारा हैं। ये पृथक् पृथक् अश्विन्यादि नक्षत्रों की तारायें हैं। जो दीप्ततारा दृष्टिगोचर होती है उसे योग तारा कहते हैं। योग तारा की विस्तृत व्याख्या अपनी पियूष धारा की हिन्दी टीका में श्री पं० केदार दत्त जोशी जी ने किया है ॥ ५८–६० ॥

विशेषः—तारा संख्या सम्बन्धी मतभेद नारद संहिता के विभिन्न प्रकाशित प्रतियों में तथा मूल प्रतियों में भी है। विद्याबिलास प्रेस की मूल प्रकाशित प्रति इस सम्बन्ध में अत्यधिक अशुद्ध है तथा श्री बेंकटेश्वर प्रेस बम्बई की छपी प्रति में संशोधक बुद्धिमान विद्वान् ने अपनी ओर से सम्भवतः श्लोक की पूर्तिकर अभिजित के साथ दिखलाने का प्रयास किया है। मुहूर्त चिन्तामणि पियूषधारा टीका के अन्तर्गत श्री आचार्य रामदैवज्ञ ने नक्षत्र प्रकरण के ५७ वनवें श्लोक की टीका में नारदीय संहिता के मूल "रामाग्निऋतुवाणाग्नि भूवेदाग्निशरेषवः" इत्यादि

श्लोकों को उधृत करते हुए अभिजित की तारा का उल्लेख नहीं किया है यथा—'वाहुनेत्राग्न्यब्धिशतं वाहुनेत्ररदाः क्रमात्" इसीलिए नारद संहिता के 'तुरगमुखसदृक्षम' इत्यादिनाष्टाविंशतिनक्षत्राणामावृतिकथनात् सप्तविंशतिनक्षत्राणां च तारा मानोक्तेरिति पूर्वापर विरोधः शंक्येत्" इसके द्वारा स्पष्ट होता है कि तारा का कथन भी साभिजित होगा। अतः यदि 'बाहुनेत्राग्निवह्न्यब्धि शत द्वि द्वि रदाः क्रमात्' इसे रक्खा जाय जो किसी किसी प्रति में उपलब्ध भी है तो अति उत्तम होगा और विरोध भी नहीं रहेगा। इन्हीं विवेचनों के साथ हमने अन्तिम पद में अभिजित के साथ को प्रधान मानकर उसे ही दिया है।

वृषवृक्षोऽश्विभाद्याम्यधिष्ण्यात्पौरूषकस्ततः ।
उदुम्बरो ह्यग्निधिष्ण्याद्रोहिण्याजम्बुकस्तरुः ॥ ६१ ॥
इन्दुभात्खदिरो जातः कलिवृक्षश्च रौद्रभात् ।
सम्भूतो दितिभाद्वंशः पिप्पलः पुष्यसम्भवः ॥ ६२ ॥
सर्पधिष्ण्यान्नागवृक्षो वटः पितृभसम्भवः ।
पालाशो भाग्यजातश्च प्लक्षश्चार्यमसम्भवः ॥ ६३ ॥
अरिष्टवृक्षो रविभात् श्रीवृक्षस्त्वाष्ट्रसम्भवः ।
स्वात्यृक्षादर्जुनोवृक्षो द्विदैवात्पाहिकं ततः ॥ ६४ ॥
मित्रभात् वकुलोजातो विष्टिः पौरन्दरर्क्षजः ।
सर्जवृक्षो मूलभाच्च वंजुलो वारिधिष्ण्यजः ॥ ६५ ॥
पनसो विश्वभाज्जातो ह्यर्कवृक्षस्तु विष्णुभात् ।
वसुधिष्ण्याच्छमीजाता कदम्बो वारुणर्क्षजः ॥ ६६ ॥
अजैकपाच्चूतवृक्षोऽहिर्बुध्न्यात् पिचुमन्दकः ।
मधुवृक्षः पौष्णधिष्ण्यादेवं वृक्षं प्रपूजयेत् ॥ ६७ ॥
अरियोनिभवो वृक्षो पीडनीयः प्रयत्नतः ।

इति श्रीनारदसंहिता नक्षत्र फलाध्यायः षष्ठः।

१. 'धिष्ण्येयं सकलस्ततः' इति मूल पाठः। यहां सकल का अर्थ एक प्रकार के सुगन्धित तृण है जिसे रोहित या रोहिणतृण या कतृण या अगियाघास भी कहते हैं।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अश्विनीनक्षत्र से वासा वृक्ष उत्पन्न हुआ है। भरणी से फालसा, कृत्तिका से गुल्लर, रोहिणी से जामुन, मृगशिरा से खैर, आर्द्रा से वहेड़ा, पुनर्वसु से बांस, पुष्य नक्षत्र से पीपल, आश्लेषा से नाग (गंगेरन) वृक्ष, मघा नक्षत्र से वट वृक्ष (वरगद), पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र से ढाक (पलास), उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र से पिलखन वृक्ष, हस्त नक्षत्र से अरिष्ट वृक्ष (रीठा), चित्रा से नारियल वृक्ष, स्वाती नक्षत्र से अर्जुन वृक्ष, विशाखा से पाहवृक्ष, अनुराधा से वकुलवृक्ष, ज्येष्ठा से देवदारुवृक्ष, मूल से रालका वृक्ष, पूर्वाषाढ़ से जलवेंतस, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से फालसा, श्रवण से अर्क (आक) धनिष्ठा से शमी (जांट) शतभिषा नक्षत्र से कदम्ब, पूर्वाभाद्रपदा से आम का वृक्ष, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र से नीम का वृक्ष, और रेवती नक्षत्र से महुआ (मधूक) वृक्ष उत्पन्न हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि अश्विन्यादिनक्षत्रों की शान्ति के लिए इन्हीं वृक्षों का पूजन करना चाहिए और इन नक्षत्रों के शत्रु संज्ञक योनि वाला जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र से उत्पन्न वृक्ष को काटने या तोड़ने तथा मारने से भी नक्षत्र जन्य दोष की शान्ति होती है ॥ ६१–६७ ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में फलाध्याय समाप्त।

अथ सप्तमोऽध्यायः

योगेशा यमविष्ण्विन्दु धातृजीवनिशाकराः ।
इन्द्रतोयाहिवह्न्यर्क भूमरुद्रुद्रऽतोयपाः ॥ १ ॥
गणेशरुद्रधनदत्वष्टृमित्र-षडाननाः ।
सावित्री कमला गौरी नासत्यौ पितरोऽदिति ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—विष्कुम्भादिक २७ योगों के स्वामी क्रमशः यम, विष्णु, चन्द्रमा, ब्रह्मा, बृहस्पती, चन्द्रमा, इन्द्र, वरुण, सर्प, अग्नि, सूर्य, भूमि, वायु, रुद्र, वरुण, गणेश, रुद्र, कुबेर, त्वष्टा, मित्र, षडानन, सावित्री, कमला, गौरी, अश्विनीकुमार, पितर और अदिति ये हैं ।

सवैधृतौ व्यतिपातौ महापातावुभौ सदा ।
परिघस्य तु पूर्वार्द्धं सर्वकार्येषु गर्हितम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—स वैधृतौ व्यतिपातौ उभौ सदा महापातौ (तथा) परिघस्य पूर्वार्द्धं तु सर्वकार्येषु गर्हितम् (कथितम्) ।

विमला—वैधृति और व्यतिपात ये दोनों महापात कहे जाते हैं । इनके साथ ही साथ परिघयोग का पूर्वार्द्ध भी सभी कार्यों में वर्जित है ।

विष्कुम्भवज्रयोः तिस्रः षट्कं गण्डातिगण्डयोः ।
व्याघाते नवशूले तु पञ्चनाड्यस्तु गर्हिताः ॥ ४ ॥

अन्वयः—विष्कुम्भवज्रयोःतिस्र, गण्डातिगण्डयोः षट्कं, व्याघाते नव, शूले तु पञ्चनाड्यः गर्हिताः ॥

विमला—विष्कुम्भ योग तथा वज्रयोग की ३ नाड़ी, गण्ड और अतिगण्ड योगों की ६ नाड़ी, व्याघात की नवनाड़ी, तथा शूलयोग की प्रथम ५ नाड़ी गर्हित (निन्दित) हैं । इनमें कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ।

अदितीन्दुमघाश्लेषामूलमैत्रेन्यभानि च ।
ज्ञेयानि सहचित्राणि मूर्ध्निभानि यथाक्रमात् ॥ ५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पुनर्वसु, मृगशिरा, मघा, अश्लेषा, मूल, अनुराधा, पुष्य, और चित्रा नक्षत्र ये मूर्ध्निनक्षत्र कहे गये हैं ।

लिखेदूर्ध्वगतामेकां तिर्यग्रेखास्त्रयोदश ।
तत्र खार्जूरिके चक्रे कथितं मूर्द्धिनभं न्यसेत् ॥ ६ ॥
भान्येकरेखागतयोः सूर्याचन्द्रमसोर्मिथः ।
एकार्गलो दृष्टिपातश्चाभिजिद्वर्जितानि वै ॥ ७ ॥

अन्वयः—एकां उर्ध्वगतां त्रयोदश तिर्यग् रेखां लिखेत् । तत्र खार्जूरिके चक्रे कथितं मूर्ध्निभं न्यसेत् । सूर्याचन्द्रमसो मिथ एकरेखा गतयोः भानि, एकार्गलः दृष्टि पातश्चवै अभिजित् वर्जितानि ॥

विमला—एक उर्ध्वगत रेखा खींचकर उसपर १३ आड़ी रेखा खींचे । इस प्रकार इस खार्जूरिक चक्र पर कहे गये नक्षत्रों को रखना चाहिए । एक रेखागत सूर्य से चन्द्रमा का नक्षत्र विषम पड़ने पर एकार्गल और दृष्टिपात दोष होता है । इस चक्र में गणना का क्रम अभिजित को छोड़कर करना चाहिए ।

लाङ्गले कमठे चक्रे फणिचक्रे त्रिनाडिके ।
अभिजिद्गणना नास्ति चक्रपाते विशेषतः ॥ ८ ॥
[1]त्रिनाडिभिर्द्वादशभिः सहितं घटिकाद्वयम् ।
योगप्रकरणं योगात्क्रमात्ते सप्तविंशति ॥ ९ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां योगाध्यायः सप्तमः ।

अन्वयः—अति सुगमम् ।

विमला—लाङ्गल, कमठ, फणि और त्रिनाडी चक्र में अभिजित की गणना नहीं होती विशेष करके चक्रपात में गिनती नहीं करना चाहिए । १२ त्रिनाड़ियों के सहित २ घटीमान एक योग का होता है ये योग क्रमशः २७ कहे गये हैं ॥ ८–९ ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में योगाध्याय समाप्त ।

---

१. यह श्लोक नारद संहिता की सभी प्रतियों में उपलब्ध नहीं होता है ।

अथाष्टमोऽध्यायः

इन्द्रः प्रजापतिर्मित्रस्त्वर्यमाभूर्हरिप्रिया ।
कीनाशः कलिरुक्षाख्यौ तिथ्यर्धेशास्त्वहिर्मरुत् ॥ १ ॥

अन्वयः—इन्द्रः, प्रजापतिः मित्रः, तु अर्यमा, भूः, हरिप्रिया, कीनाशः कलिः, उक्षः, अहिः, मरुत् एते तिथ्यर्धेशाः (प्रोक्ताः) ॥

विमला—क्रमशः करणों के अधिपति-वव के इन्द्र, वालव के प्रजापति, कौलव के सूर्य (मित्र) तैतिल के अर्यमा, गर के भूमि, वणिज के लक्ष्मी, विष्टि के यम, (कीनाश) तथा कृष्ण पक्ष के उत्तरार्द्ध के चार करणों के अधिपति शकुनि के कलि, चतुष्पद के रुद्र, नाग के सर्प और किंस्तुघ्न के पवन हैं ॥ १ ॥

ववादि वणिगंतानि शुभानि करणानि षट् ।
परीता विपरीता वा विष्टिर्नेष्टा तु मङ्गले ॥ २ ॥

अन्वयः—ववादि वणिगंतानि षट् करणानि शुभानि मङ्गले तु परीता विपरीता वा विष्टिः नेष्टा ॥

विमला—वव से वणिज तक (वव, वालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज) ६ करण शुभ होते हैं। और बाद के विष्टि, शकुनि, चतुष्पद और नाग तथा किंस्तुघ्न ये ५ करण विपरीत् अर्थात् अशुभ फलदायक होते हैं । मंगल कार्य में विष्टि सर्वथा निसिद्ध है ।

मुखे पंच गलेत्वेका वक्षस्येकादशस्मृताः ।
नाभौ चतस्रः कट्यां तु तिस्रः पुच्छाख्यनाडिका ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—भद्रा की सम्पूर्ण नाड़ी में प्रथम ५ घटी मुख, १ गला, ११ छाती, ४ नाभि, ३ कटिभाग में तथा ३ घड़ी पूंछ पर समझना चाहिए ॥ ३ ॥

कार्यहानिर्मुखे मृत्युर्गले वक्षसि निःस्वता ।
कट्यामुन्नयनं नाभौच्युतिः पुच्छेध्रुवो जयः ॥
स्थिराणि मध्यमान्येषां नेष्टं नाग चतुष्टये ॥ ४ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां करणाध्यायः अष्टमः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—भद्रा के मुखकी घड़ियों में कार्य की हानि, गले की घड़ियों में मृत्यु, छाती पर दरिद्रता कटि पर भ्रमण, नाभि पर हानि और पूंछ की घडियों में कार्य करने से कार्य सिद्धि होती है । स्थिर संज्ञक करण मध्यम तथा नाग और चतुष्पद ये अशुभ हैं ॥ ४–५ ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में करणाध्याय समाप्त ।

अथ नवमोऽध्यायः

दिवा मुहूर्त्ता रुद्राहिमित्रापितृवसूदकम् ।
विश्वे विधातृब्रह्मेन्द्रा इन्द्राग्न्यसुरतोयपाः ॥ १ ॥
अर्यमा भगसंज्ञश्च विज्ञेया दश पंच च ।
ईशाजपादहिर्बुध्न्यः पूषाश्वियमवह्नयः ॥ २ ॥
धातृचन्द्रादितीज्याख्य विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रवायवः ।
अह्नः पञ्चदशो भागस्तथा रात्रि प्रमाणतः ॥ ३ ॥

अन्वयः—अह्नः पंचदशो भागः दिवा मुहूर्त्ताः—रुद्र, अहिः, मित्रं, पितृ, वसु, उदकम्, विश्वे, विधातृ, ब्रह्म, इन्द्रा, इन्द्राग्नी, असुर, तोयपाः, अर्यमा, भग संज्ञश्च पंचदश विज्ञेया। तथा च रात्रि प्रमाणतः ईश, अजपाद्, अहिर्बुध्न्य पूषा, अश्वि, यम, वह्नि, धातृ, चन्द्र, अदिति, ईज्य वसु, अर्क, त्वाष्ट्र, वायवः पंचदश मुहूर्त्ताः विज्ञेया ।

विमला—दिन और रात्रि में दिन का १५ भाग दिवा मुहूर्त्त के अधिपति क्रमशः १ रुद्र, २ सर्प, ३ मित्र, ४ पितर, ५ वसु, ६ उदक, ७ विश्वेदेवा, ८ अभिजित्, ९ ब्रह्मा, १० इन्द्र, ११ इन्द्राग्नी, १२ राक्षस, १३ वरुण, १४ अर्यमा और १५ भग हैं इनका फल नाम के सदृश समझना चाहिए तथा प्रत्येक का प्रमाण २ घड़ी का होता है। इसी प्रकार रात्रि के १५ मुहूर्त्त क्रमशः १ शिव, २ अजपात्, ३ अहिर्बुध्न्य, ४ पूषा, ५ अश्विनीकुमार, ६ धर्मराज, ७ अग्नि, ८ ब्रह्मा, ९ चन्द्रमा, १० अदिति, ११ बृहस्पति, १२ विष्णु, १३ सूर्य, १४ त्वष्टा और १५ वायु ये हैं ॥ १-२ ॥

मुहूर्त्तमानं द्वे एव क्षणार्धं च समे वरे ।
अर्यमा, राक्षस ब्राह्मौ, पित्र्याग्नेयौ,[३] तथाभिजित् ॥ ६ ॥

---

१. दिवं मुहूर्ता रुद्राहिर्मित्रं पित्रवसूदकं ।
विश्वेविधातृ ब्रह्मेन्द्र इन्द्राग्यनिलतोयपाः ॥ १ ॥ इति मूल पाठः ।
२. धातृ चन्द्रादिति ज्याख्य वस्वर्कत्वाष्ट्र वायवः ।
अह्नः पंचदशो भागस्तथा रात्रि प्रमाणतः ॥ ३ ॥ इति मूल पाठः ।
३. 'तयोर्भिजित्' इति मूल पाठः ।

[1]राक्षसाप्यौ, ब्राह्मपित्र्यौ, [2]भौजंगेशविनादिषु।
वारेषु वर्जनीयास्ते [3]मुहूर्त्ता शुभ कर्मणि ॥ ५ ॥

अन्वयः—(अह्नः पंचदशोभाग तथा रात्रि प्रमाणतः) समे द्वे एव मुहूर्तमानं, अपरे (विपरीते) क्षणार्धं च। इनादिषु वारेषु (क्रमशः) अर्यमा, राक्षस-ब्राह्मौ, पित्र्याग्नेयौ, (ततो) अभिजित्, रक्षतोयौ, ब्रह्म-पित्र्यौ, भौजंगेशौ ते मुहूर्त्ताः शुभ कर्मसु वर्जनीया।

विमला—दिन और रात्रि के समान होने पर ये दो मुहूर्त के मान होते हैं। न्यूनाधिक होने पर इनका मान दो मुहूर्त्त से न्यूनाधिक होता है सूर्यादि वारों में क्रमशः अर्यमा, राक्षस और ब्रह्म, पितृ और अग्नि, अभिजित्, राक्षस और तोयप, ब्रह्म और पितृ, भुजंग और ईश ये मुहूर्त्त शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय हैं अर्थात् इनमें कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ॥ ४-५ ॥

[4]पौराणिका रौद्रसित मैत्र वार भवाः क्षणाः।
सावित्र वैराजिकाख्यौ गंधर्वाश्चष्टमो भिजित् ॥ ६ ॥
रोहिणी 'वल संज्ञश्च विजयो नैऋतस्तथा।
इन्द्रो जलेश्वरः पंचदशमो भग संज्ञकः ॥ ७ ॥
अष्टमो योभिजित् संज्ञः स एव कुतपः स्मृतः।
रौद्र गंधर्व यक्षेशाश्चारुणेमारुतोऽनलः ॥ ८ ॥
रक्षो धाता तथा सौम्यः पद्मजो वाक्पतिः स्मृतः।
पूषा हरिर्वायुनिऋत् मुहूर्त्ता रात्रि संज्ञिताः ॥ ९ ॥

---

१. 'राक्षसायौ' इति मूल पाठः।

२. 'भौजंगे रविनाड्षिु' इति मूल पाठः।

३. किसी किसी प्रति में—मुहूर्तमानं द्वे नाड्यौ कथिते गणकोत्तमैः। अथाशुभ-मुहूर्त्तानि वारादि क्रमशो यथा ॥ ४ ॥ इस प्रकार पाठ भेद अत्यधिक अन्तरित प्राप्त होता है। तथा इसी प्रकार 'अन्यानपि तु वक्ष्यामि योगानत्र शुभाशुभान्' ॥ यह भी अतिरिक्त पाठ है।

४. "पौराणिका रौद्रसिसित·········मुहूर्त्तारात्रि संज्ञिताः" ये ६ से ९ तक चार श्लोक नारद संहिता की बहुत सी प्रतियों में उपलब्ध नहीं होता है।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पौराणिकों के अनुसार वारोत्पन्न क्षण क्रमशः रौद्र, सित, मैत्र, सूर्य, सावित्र, वैराजिक, गन्धर्व, अभिजित (कुंतप), रोहिणी, बल, विजय, निऋति, इन्द्र जलेश्वर और भग ये १५ महूर्त दिन के हैं। तथा रौद्र, गन्धर्व, यक्ष, ईश, अरुण, मारुत्, अनल, रक्ष, धाता, सौम्य, पद्मजा, वाक्पति, पूषा, हरि वायु और निऋति ये रात्रि के १५ मुहुर्त हैं ॥ ६–६ ॥

[1]अभिजिद्बलयुक्तास्ते सर्वकार्येषु सिद्धिदाः ।
एषु ऋक्षेषु यत्कर्म कथितं निखिलं च यत् ॥ १० ॥
तदैवत्ये तन्मुहूर्त्ते कार्यं यात्रादिकं सदा ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—इनमें जो अभिजित् मुहूर्त दिन का आठवाँ मुहूर्त है, बलशाली होता है और सभी कार्यों में सिद्धि दायक होता है। इसी प्रकार अभिजित् नक्षत्र भी सर्वकार्य सिद्धि दायक होता है। जिन जिन नक्षत्रों में जो जो कार्य करने का विधान बतलाया गया है। यदि दिन में आवश्यक होने पर वर्तमान नक्षत्र से काम नहीं चलता तो जिस नक्षत्र की आवश्यकता हो उसनाम के मुहूर्त को निकाल कर वह कार्य करना उत्तम होता है। यात्रादि सभी शुभ कार्यों में अपनी आवश्यकता अनुसार मुहूर्त ज्ञातकर कार्य करना चाहिए॥ १० ॥

सूर्य भाद्वेद गोतर्क दिग्विश्व नखसंमिते ।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोष संघ विनाशकाः ॥ ११ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां मुहूर्त्ताध्यायो नवमः ।

विमला—सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा का नक्षत्र (वर्तमान नक्षत्र) ४, ६, ६, १०, १३, २० इन संख्याओं पर होवे तो इसे रवियोग कहते हैं। यह दोषों के समूह को नष्ट करने वाला होता है ॥ १० ॥

इति नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में मुहूर्त्ताध्याय समाप्त ।

---

1. दशम श्लोक कई प्रतियों में न होने पर भी मुहुर्त चिन्तामणि पियूष धारा टीका में उद्धृत उपलब्ध होता है। (श्लो० ५१ विवाह प्रकरण)॥

अथ दशमोऽध्यायः

भूकंपः सूर्यभात्सप्तमर्क्षे विद्युच्च पंचमे।
शूलोष्टमे[1] च दशमे शनिरष्टादशे तथा ॥ १ ॥
केतुः पंचदशे दंड उल्का एकोन विंशतिः।
मोह निर्घातकंपाश्च[2] कुलिशं[3] परिवेषणम् ॥ २ ॥
विज्ञेयमेकविंशर्क्षादारभ्य च यथाक्रमम्।
चन्द्रयुक्तेषु भेष्वेषु शुभकर्म न कारयेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गणना करने पर यदि वर्तमान नक्षत्र सूर्यनक्षत्र से ७ वाँ पड़े तो भूकम्प होता है। पांचवाँ हो तो विजली गिरे। आठवाँ हो तो शलभ भय हो। चौदहवाँ हो तो शनि तथा अठारहवाँ हो तो केतु संज्ञक योग पन्द्रहवाँ हो तो दंड, १६ वाँ उल्का, २१ वाँ मोह, २२ वाँ निर्घात, २३ वाँ कंप और २४ वाँ वज्र एवं २५ वाँ परिवेषण ये योग होते हैं। इनमें शुभ कर्म नहीं करना चाहिए ॥ १–३ ॥

[4]सूर्यभात्सार्प पित्रर्क्षत्वाष्ट्रमित्रांत्यभेषु च।
सविष्णुभेषु क्रमशो दश्रभाच्चन्द्रसंयुते ॥ ४ ॥
धिष्ण्येतावति संख्येत्र दुष्टयोगः पतत्यसौ।
चण्डीश चण्डायुधाख्ये तस्मिन्नेवाचरेत्शुभम् ॥ ५ ॥

---

१. 'शूलोष्टमेऽब्धिदिग्भे' इति पाठान्तरम्।

२. 'पंचाश्च' इति मूल पाठः।

३. 'कुविशं' इति मूल पाठः।

४. ये ४, ५ दोनों ही श्लोक अन्य प्रतियों में नहीं है। श्री वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से मुद्रित प्रति में 'ककचं हि प्रवक्ष्यामि'''''तस्मिमैवाचरेत्शुभम्' यह श्लोक दिया गया है।

अन्वयः—सूर्यभात् सार्प ७ पित्र्यर्क्ष १० त्वाष्ट्र १३ मित्र १७ अन्त्य २७ भेषु सविष्णु भेषु २२ च दस्रभात् (गणना दस्र भात् कार्यम्) (एवं) चन्द्र संयुते एतावति (पूर्वोक्त) संख्ये धिष्ण्ये अत्र असौ दुष्ट योगः पतति। तस्मिन् चण्डीश चण्डायुधाख्ये (दुष्टयोगे) शुभम् नैव आचरेत्।

विमला—सूर्य नक्षत्र से ६, १०, १४, १७, २२ और २७ वें नक्षत्र में चण्डीश तथा अश्विनी से इन्हीं उपरोक्त संख्या तुल्य नक्षत्रों में चन्द्रमा के रहने पर चण्डायुध नामक दुष्ट योग होता है अतएव इसमें मङ्गल कार्य का आरम्भ नहीं करना चाहिए।

क्रकचं हि प्रवक्ष्यामि योगं शास्त्रानुसंमतम्।
निन्दितं सर्वकार्येषु तस्मिन्नैवाचरेत् शुभम्॥ ४॥

अन्वयः—शास्त्रानुसंमतं सर्व कार्येषु निंदितं क्रकचं योगं हि प्रवक्ष्यामि। तस्मिन् शुभम् नैव आचरेत्।

विमला—शास्त्र संमत क्रकच योग को कह रहे हैं जो सभी कार्यों में निन्दित है इसमें कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए॥ ४॥

त्रयोदशस्युर्मिलने संख्यया तिथिवारयोः।
क्रकचो नाम योगोयं मंगलेष्वतिगर्हितः॥ ५॥
सप्तम्यामर्कवारश्चेत्प्रतिपत्सौम्य वासरे।
संवर्तयोगो विज्ञेयः शुभकर्म विनाशकृत्॥ ६॥

अन्वयः—तिथि वारयोः मिलने त्रयोदश संख्यया क्रकच नामयोगः स्युः मंगलेषु अयं अति गर्हितः। चेत् सप्तम्यामर्कवारः, सौम्यवासरे प्रतिपद्, तदा संवर्त योगः शुभकर्म विनाशकृत् विज्ञेयः॥ ५-६॥

विमला—जब तिथि और वार का योग १३ हो जाय तब क्रकच योगहोता है। जैसे रविवार १ + द्वादशी १२। सोमवार २ + एकादशी ११। मंगलवार ३ + दशमी १०। बुधवार ४ + ९ नवमी। गुरुवार ५ + ८अष्टमी। शुक्रवार ६ + ७ सप्तमी। शनिवार ७ + ६ षष्ठी। यह शुभ कर्म में वर्जित है। इसी प्रकार सप्तमी तिथि को रविवार और प्रतिपदा को बुधवार होवे तो संवर्त्तक योग होता है, यह योग शुभ कार्य को नष्ट करता है।

(इति संवर्त्तक योगः)

आनन्दः कालदण्डश्च धूम्रधातृसुधाकराः ।
ध्वांक्ष ध्वजाख्य श्रीवत्स वज्रमुद्गर छत्रकाः ॥ ८ ॥
मित्र मानस पद्माख्यलुंवकोत्पात मृत्यवः ।
काणः सिद्धिः शुभामृतमुसलातंक[1] कुञ्जराः ॥ ९ ॥
राक्षसाख्यः चरस्थैर्य वर्धमानाः क्रमादमी ।
योगाः स्वसंज्ञाफलदास्त्वष्टाविंशति संख्यकाः[2] ॥ १० ॥

अन्वयः—क्रमात् आनन्दः, कालदण्डश्च. धूम्रः, धातृ, सुधाकराः, ध्वांक्षः, ध्वजाख्यः श्रीवत्सः, वज्र, मुद्गर, छत्रकाः मित्र, मानस, पद्माख्य लुंवकः, उत्पात, मृत्यवः, काणः सिद्धिः, शुभा, मृत्यु मुसल, अन्तकः, कुञ्जराः, राक्षसाख्यः, चरः, स्थैर्यः, वर्धमानः अमी अष्टाविंशति संख्यका योगाः स्वसंज्ञ फलदाः स्युः ।

विमला—१ आनन्द, २ कालदण्ड, ३ धूम्र. ४ धाता, ५ सुधाकर (सौम्य), ६ ध्वांक्ष, ७ ध्वज, ८ श्रीवत्स, ९ वज्र, १० मुद्गर, ११ छत्र, १२ मित्र, १३ मानस, १४ पद्म, १५ लुम्ब, १६ उत्पात, १७ मृत्यु, १८ काँण, १९ सिद्धि, २० शुभ, २१ मृत्यु, २२ मुसल २३ अन्तक २४ कुञ्जर, २५ राक्षस, २६ चर, २७ स्थिर और २८ वर्धमान ये २८ आनन्दादि योग हैं, जो अपने नाम के अनुसार फल देने वाले हैं ॥ ८–१० ॥

रविवारे क्रमादेते दस्रभादिन्दुभाद्विधौ ।
सार्पाद्भौमे बुधेहस्तान्मैत्रभात्सुरमंत्रिणः ॥ ११ ॥
वैश्वदेवेभृगुसुते वारुणात् भास्करात्मजे ।

अन्वयः—रविवारे दस्रभात्, विधौ इन्दुभात्, भौमे सार्पात्, बुधे हस्तात् सुरमन्त्रिणः मैत्रभात्। भृगुसुते वैश्वदेवे, भास्करात्मजे वारुणात्। एते क्रमात् गण्ये (तदा आनन्दादि अष्टाविंशति योगाः स्युः)।

विमला—रविवार के दिन अश्विनी से चन्द्रवार के दिन मृगशीर्ष से मंगलवार के दिन आश्लेषा से, बुधवार के दिन हस्त से, गुरुवार के

---

१. 'मृत्युर्मुसलान्तक कुञ्जराः' इति पाठ भेदः ।
२. 'संज्ञकाः' इति मूल पाठः ।

दिन अनुराधा से, शुक्रवार के दिन उत्ताराषाढ़ा से तथा शनिवार के दिन शतभिषा नक्षत्र से (अभिजित् के साथ) इष्ट दिन के नक्षत्र तक गिनती करने से जो संख्या मिलेगी। उतनी ही संख्या का वह आनन्दादि योग प्राप्त होगा ॥ ११ ॥

स्फुटार्थं चक्र

सूर्य	अश्वि.	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
चन्द्र	मृगशि.	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
भौम	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.
बुध	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा
गुरु	अनुरा.	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.
शुक्र	उ. षा.	अभि.	श्रवण	धनिष्ठा
शनि	शतभि.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती

उदाहरणः—संवत् २०३६ चैत्र शुक्ल प्रतिपद को शुक्रवार तथा रेवती नक्षत्र है। शुक्रवार होने से उषा से रेवती तक अभिजित के साथ गिनने पर रेवती ८ वाँ नक्षत्र होने से उस दिन आनन्दादि योग का आठवाँ श्रीवत्स योग होगा।

[1]हस्तर्क्षेरविवारेस्यादिन्दुभं दस्रभं कुजे ॥ १२ ॥
सौम्ये मित्रभमाचार्ये तिष्यं पौष्णं भृगोः सुते ।
रोहिणी मन्दवारे तु सिद्धियोगाह्वया अमी ॥ १३ ॥

---

१. 'हस्तर्क्षमर्कवारेन्दाविन्दुभं दस्रभंकुजे' तथाऽपरे 'हस्तर्क्षे रविवारेऽब्जे चेन्दुभं कुजे" नोट—श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित प्रति में :—

'यत्र स्यादिन्दु नक्षत्रमानन्दादिगणस्ततः ।
अष्टाविंशतियोगानां क्रमोयं प्रोच्यते बुधैः ॥ १३ ॥

यह श्लोक अधिक दिया गया है इसमें विशेष बात यह है कि चन्द्रमा का वर्तमान नक्षत्र जो हो वही आनन्दादि योग समझना चाहिए ।

अन्वयः—अर्कवारे-हस्तर्क्षं, इन्दौ-इन्दुभं, कुजे-दस्रभं, सौम्ये-मित्रभं (अनुराधा) आचार्ये (गुरौ)-पुष्यं, भृगोः सुते-पौष्णं, मन्दवारे-तु रोहिणी अमी सिद्धाह्वयाज्ञेया।

विमला—रविवार को हस्तनक्षत्र, सोमवार को मृगशीर्ष, मंगलवार को अश्विनी बुधवार को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती, शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होने पर सिद्धि योग होता है ॥ १२-१३ ॥

आदित्यभौमयोर्नन्दा भद्राशुक्रशशाङ्कयोः।
जयासौम्ये [1]भृगौरिक्ता शनौ [2]पूर्णेतिनोशुभाः ॥१४॥

अन्वयः—आदित्य भौमयोः नन्दा, शुक्र शशांकयोः भद्रा, सौम्ये जया, भृगौ रिक्ता, शनौ पूर्णा इति शुभाः नो।

विमला—रवि तथा मंगल को नन्दा तिथि। शुक्र तथा सोमवार को भद्रातिथि। बुधवार को जया तिथि, गुरुवार को रिक्ता और शनिवार को पूर्णा तिथि, होती है इसे अमृत योग कहा गया है। इसमें शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ॥ १४ ॥

नन्दातिथिः शुक्रवारे सौम्ये भद्राजयाकुजे।
रिक्तामन्दे गुरोर्वारे पूर्णासिद्धाह्वया अमी ॥ १५ ॥

अन्वयः—शुक्रवारे नन्दातिथिः, सौम्ये भद्रा, कुजे जया, मन्दे रिक्ता, गुरोर्वारे पूर्णा अमी सिद्धाह्वया (ज्ञेया)।

विमला—शुक्रवार को नन्दातिथि, बुधवार को भद्रातिथि, मंगलवार को जया तिथि, शनिवार को रिक्तातिथि और गुरुवार को यदि पूर्णातिथि होवे तो इसे सिद्धियोग कहते हैं। इसमें सभी शुभ कार्य करना चाहिए ॥ १५ ॥

एकादश्यामिन्दुवारो द्वादश्यामार्किवासरः।
षष्ठीबृहस्पतेर्वारे तृतीयाबुधवासरे ॥ १६ ॥

---

१. 'गुरौ' इति साधु पाठः।

२. "शनौ पूर्णामृतिप्रदा" इति पाठान्तरम्। 'पूर्णाऽमृताह्वया' तु पाठान्तरम्। किन्तु भद्रं भद्रं सदाब्रूयात् इति वचनमाश्रित्य अमृताह्वया पठितम् इत्यनुमीयते।

अष्टमीशुक्रवारे तु नवम्यामर्कवासरः ।
पञ्चमीभौमवारे तु दग्धयोगाः प्रकीर्तिताः ॥ १७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—एकादशी तिथि सोमवार को, द्वादशी शनिवार, षष्ठी गुरुवार, तृतीया बुधवार को तथा अष्टमी शुक्रवार, नवमी रविवार, पंचमी मंगलवार को हो तो दग्ध योग होता है ॥ १६–१७ ॥

दग्धयोगाश्च विज्ञेया पङ्गुयोगाभिधा अमी ।
यमर्क्षमर्कवारेऽब्जे चित्राभौमे तु विश्वभम् ॥ १८ ॥
बुधे धनिष्ठार्यमभं गुरौज्येष्ठा भृगोर्दिने ।
रेवतीमन्दवारे तु दग्धयोगाभवंत्यमी ॥ १९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—दग्ध योग को पंगु योग भी कहते हैं । रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगल को उत्तराषाढ़ा, बुधवार को धनिष्ठा, बृहस्पति वार को उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा शनिवार को रेवती नक्षत्र हो तो ये दग्धयोग होते हैं ॥ १८–१९ ॥

विशाखादिचतुर्वर्गमर्कवारादिषु क्रमात् ।
उत्पातमृत्युकाणाख्याः सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥२०॥
तिथिवारोद्भवानेष्टा योगा वारर्क्षसम्भवाः ।
हूणवङ्ग खशेभ्योन्यदेशेष्वतिशुभप्रदाः ॥ २१ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां उपग्रहाध्यायो दशमः ।

अन्वयः—विशाखादि चतुर्वर्ग क्रमात् अर्कवारादिषु, उत्पात, मृत्यु, काणाख्याः सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः । तिथिवारोद्भवायोगानेष्टा, वारर्क्ष सम्भवाः (योगाः) हूणवंग खशेभ्योन्यदेशेषु अति शुभ प्रदाः ।

विमला—विशाखा आदि चार नक्षत्रों का वर्ग सूर्यादि सातवारों में क्रमशः उत्पात, मृत्यु, काण और सिद्धि ये चार योग होते हैं । तिथि और वारों से उत्पन्न योग अशुभ फलदायक होते हैं तथा वार और

नक्षत्रों के द्वारा उत्पन्न योग हूण बंग और खश देशों के अतिरिक्त सर्वत्र शुभ फलदायक होते हैं ॥ २०–२१ ॥

स्फुटार्थ चक्र

योगाः	उत्पात	मृत्यु	काँण	सिद्धि
रवि	विशाखा	अनुरा.	ज्येष्ठा	मूल
सोम	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्रवण
मंगल	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.
बुध	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
गुरु	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुनर्वसु
शुक्र	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू. फा.
शनि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में उपग्रहाध्याय समाप्तः।

अथ एकादशोऽध्यायः

घोराध्वांक्षीमहोदर्यो [1]नन्दामन्दाकिनीमता ।
मिश्राराक्षसिकानाम सूर्यवारादिषु क्रमात् ॥ १ ॥

अन्वयः—सूर्यवारादिषु क्रमात् (संक्रान्तिः) घोरा, ध्वाँक्षी, महोदरी, नन्दा, मन्दाकिनी, मिश्रा राक्षसिका नाम (वेद्या भवन्ति) ।

विमला—सूर्यादि वारक्रम से संक्रान्ति क्रमशः घोरा, ध्वाँक्षी महोदरी नन्दा (या मन्दा) मन्दाकिनी, मिश्रा और राक्षसी नाम की होती है ॥ १ ॥

[2]शूद्रविट्तस्करक्ष्माप भूदेवपशुनीचजाः ।
अनुक्तानां च सर्वेषां घोराद्याः सुखदाः स्मृताः ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—घोरा संक्रान्ति शूद्रों को सुख देने वाली ध्वांक्षी वैश्यों को सुख देने वाली । महोदरी चोरों को, मन्दाकिनी राजाओं को, नन्दा (मन्दा) ब्राह्मणों को, मिश्र पशुओं को और राक्षसी चाण्डालादिकों को तथा सम्पूर्ण नीच जातियों को सुख देनेवाली होती है ॥ २ ॥

पूर्वाह्नेनृपतीन्हन्ति विप्रान्मध्यंदिने विशः ।
अपराह्णेऽस्तगे शूद्रान्प्रदोषे च पिशाचकान् ॥ ३ ॥
निशिरात्रिचरान्नाट्यकारानपररात्रिके ।
[3]गोमाहिषेतिसन्ध्यायां [4]लिङ्गिनो निशिसंक्रमः ॥ ४ ॥
दिवाचेन्मेषसंक्रान्तिरनर्थकलहप्रदा ।
रात्रौसुभिक्षमतुलं सन्ध्ययोर्वृष्टिनाशनम् ॥ ५ ॥

---

१. 'मन्दा' इति मूलपाठः । यथा कश्यपः—"घोराध्वांक्षी महोदर्यो मंदा मंदाकिनी तथा । मिश्रा राक्षसिकासूर्य संक्रान्तित्वर्क वासरात्" ॥

२. 'शूद्रतस्कर वैश्यक्ष्मादेव भूपगणा क्रमात्' इति मूल पाठः

३. 'गो मानुषेति' इति मूल पाठः ।

४. 'लिङ्गितो' इति मूल पाठः ।

अन्वयः—अति सुगमम् ।

विमला—दो पहर के पूर्व संक्रान्ति हो तो राजाओं को नष्ट करे, मध्याह्न में ब्राह्मणों को, दोपहर के बाद तीसरे पहर में वैश्यों को तथा सायंकाल में होने वाली संक्रान्ति शूद्रों को। प्रदोषकाल में पिशाचों को, रात्रि में राक्षसों को, आधीरात के बाद नृत्यादि करने वालों को पीड़ा कारक होती है। प्रातः की वेला में गाय, भैंस आदि पशुओं को, प्रभात काल में सन्यासी आदिकों को कष्ट कारक होती है। दिन में मेष की संक्रान्ति अशुभ फल देने वाली तथा प्रजा में परस्पर कलह कराने वाली होती है। रात्रि में अत्यन्त सुभिक्ष तथा दोनों संध्याओं में वर्षा का नाश होता है ॥ ३–५ ॥

हरिशार्दूलवाराहखर-कुञ्जरमाहिषाः ।
[1]अश्वश्वाजवृषाः पादायुधाः करणवाहनाः ॥ ६ ॥

अन्वयः—हरि, शार्दूल, वाराह, खर, कुञ्जर, महिष, अश्व, श्वा, अज, वृषाः, पादायुधा करण वाहनाः स्युः ।

विमला—संक्रान्ति वाहन ववादि करणों के आधार पर करण वाहन के नाम से क्रमशः हरि (सिंह) व्याघ्र, वाराह, खर (गदहा) हाथी, महिष, अश्व, श्वान, मेष, वृष तथा मुर्गा कहा गया है ॥ ६ ॥

[2]खशवाह्लिकवङ्गेषु संक्रान्तिर्धिष्ण्यवाहना ।
अन्यदेशेषु तिथ्यर्धवाहना स्याद्ववादितः ॥ ७ ॥

अन्वयः—खश, वाह्लिक वङ्गेषु धिष्ण्य वाहना संक्रान्तिः । अन्यदेशेषु ववादितः तिथ्यर्धवाहनास्याद् ।

विमला—खश, वाह्लिक और वंग देशों में संक्रान्ति वाहन नक्षत्रों के आधार पर तथा अन्यत्र ववादि करणों के आधार पर वाहन का ज्ञान करना चाहिए ॥ ७ ॥

भुशुण्डिभिन्दिपालासि दण्डकोदण्डतोमरान् ।
कुन्तपाशाङ्कुशास्त्रेषून्बिभर्तिकरणेष्विनः ॥ ८ ॥

---

१. 'अश्वोष्ट्रज वृषाः' इति मूल पाठः ।

२. 'खरावाहिक बंगेषु' इति मूल पाठः ।

विमला--भुशुण्डि, भिन्दिपाल, खड्ग, दंड, धनुष, तोमर, भाला, फास, अंकुश, अस्त्र (तेगा) वाण ये वव आदि करणों के क्रमशः शस्त्र संक्रान्ति वश कहे गये हैं ।। ८ ॥

अन्नं च पायसं भैक्ष्यमपूपं च पयोदधि ।
चित्रान्नं गुडमध्वाज्यशर्कराबवतो हविः ॥ ९ ॥

विमला—ववादि करणों में संक्रान्ति का भोजन क्रमशः अन्न, पायस भिक्षा, मालपूआ, दूध, दही, चित्रान्न, गुड़, मधु, और शर्करा है ॥ ९ ॥

निविष्टी वाणिजे विष्ट्यां बालवे च गरे ववे ।
कौलवे शकुने भानुः किंस्तुघ्ने चोर्ध्वसंस्थिता ॥ १० ॥
चतुष्पात्तैतिलेनागे सुप्ताक्रान्तिकरोति सा ।
धान्यार्घवृष्टिसु भवेदनिष्टक्रमशस्तदा ॥ ११ ॥

अन्वय—वणिजे, विष्ट्यां, बालवे, गरे, ववे च निविष्टी । कौलवे, शकुने किंस्तुघ्ने (भानुः रवि संक्रान्तिः) च उर्ध्व संस्थिता (उत्थितेति शेषः) । चतुष्पाद, तैतिले, नागे च सा सुप्ताक्रान्ति करोति तदा क्रमशः धान्यार्घ, वृष्टिः, अनिष्टं च भवेत् ।

विमला—वणिज, विष्टि, बालव, गर, वव में स्थिति निविष्टा होती है । कौलव, शकुनि और किंष्तुघ्न में स्थिति खड़ी । चतुष्पद तैतिल और नाग में स्थिति सुप्ता होती है । निविष्टा (बैठी) स्थिति में अन्न सस्ता, खड़ी में वर्षा और सुप्ता में अशुभ फल जानना चाहिए ॥१०-११॥

आयुधं वाहनाहारो यज्जातीयजनस्य च ।
स्वापोपविष्टतिष्ठंतस्तेलोकाः क्षयमाप्नुयुः ॥ १२ ॥

अन्वय--स्वापोपविष्टतिष्ठन्तः आयुधं वाहनाहारो यज्जातीय जनस्य च ते लोकाः क्षयमाप्नुयुः ।

विमला--शयन, उपविष्ट (बैठना) तथा खड़ी जैसी स्थिति हो आयुध वाहन आहार जिस जाति का हो उसी का तथा तज्जन्य पदार्थों का नाश होता है ॥ १२ ॥

अंधकं मंदसंज्ञश्च मध्यसंज्ञः सुलोचनः ।
पर्यायात्गणयेद्भानि रोहिण्यादि चतुर्विधम् ॥ १३ ॥

अन्वयः—रोहिण्यादि चतुर्विधम् अन्धकं-मंदसंज्ञश्च-मध्यसंज्ञः-सुलोचनः पर्यायात् भानि गणयेत् ।

विमला—अन्ध, मन्द, मध्य, और सुलोचन इनकी गणना रोहिणी आदि से क्रमशः करना चाहिए। इस प्रकार ७, ७ नक्षत्र अन्ध-मन्द-मध्य और सुलोचन के ७ आवृत्ति में होंगे जैसे—रोहिणी अन्ध। मृगशिरा मन्द। आर्द्रा मध्य और पुनर्वसु सुलोचन। पुनः पुष्य अन्ध। आश्लेषा मन्द। मघा मध्य। पू० फा० सुलोचन। इस प्रकार ७ आवृत्ति में ७ अन्ध। ७ मन्द। ७ मध्य और ७ सुलोचन साभिजित गणना करने से होंगे ॥ १३ ॥

स्थिरभेष्वर्क संक्रान्तिर्ज्ञेया विष्णुपदाह्वया ।
षडशीतिमुखीज्ञेया द्विस्वभावेषु राशिषु ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्थिरभेषु, अर्कसंक्रान्तिः विष्णुपदाह्वयाज्ञेया। द्विस्वभावेषु राशिषु (अर्क संक्रान्तिः) षडशीतिमुखीज्ञेया।

विमला—स्थिर राशियों (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) पर सूर्य की संक्रान्ति होवे तो विष्णुपदा नामक, तथा द्विस्वभाव राशियों (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) पर सूर्य की संक्रान्ति होवे तो उसे षडशीतिमुखी संक्रान्ति कहते हैं ॥ १४ ॥

सौम्ययाम्यायने नूनं [1]भवेतां मृगकर्किणोः ।
तुलाधराजयोर्ज्ञेयो विषुवत्सूर्य संक्रमः ॥ १५ ॥

अन्वयः—मृग कर्किणोः नूनं सौम्य याम्यायने भवेतां तुलाधराजयोः सूर्य संक्रमः विषुवत् (ज्ञेयः)।

विमला—मृग (मकर) की संक्रान्ति से सौम्यायन और कर्क की संक्रान्ति से दक्षिणायन आरम्भ होता है। तुला और मेष की संक्रान्ति के दिन विषुवत् काल अर्थात् दिन रात समान होता है ॥ १५ ॥

अहः संक्रमणे कृत्स्नं महत्पुण्यं प्रकीर्तितम् ।
रात्रौसंक्रमणे भानोर्व्यवस्था सर्वसंक्रमे ॥ १६ ॥

विमला—दिन में संक्रान्ति होने से दिन में महान पुण्य रहता है। रात्रि में संक्रान्ति होने से व्यवस्था कही गई है ॥ १६ ॥

---

१. 'भवेत्तौ' इति मूलपाठः ।

सूर्योदयसंध्यायां यदियाम्यायनं भवेत् ।
तदोदयादहः पुण्यं पूर्वाह्नः परतो यदि ॥ १७[1] ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—प्रातः सन्धि (सूर्योदयकाल) में दक्षिणायन अर्थात् कर्क की संक्रान्ति होवे तो उदय दिन में ही पुण्यकाल होता है और सूर्योदय से पहले संक्रान्ति होवे तो पहले ही दिन पुण्यकाल होता है । यह व्यवस्था कर्क की संक्रान्ति के लिए है ॥ १७ ॥

सूर्यास्तमनवेलायां यदि सौम्यायनं भवेत् ।
तदोपेयादहः पुण्यं पराह्णः परतो यदि ॥ १८ ॥

विमला—यदि सूर्यास्त काल में मकर की संक्रान्ति हो तो उसी दिन पुण्यकाल होता है तथा संधि के वाद रात्रि में (सूर्यास्त से ३ घड़ी वाद) संक्रान्ति हो तो अगले दिन पुण्यकाल होता है ॥ १८ ॥

अर्धार्कास्तमनात्संध्याघटिकात्रय संमिता ।[2]
तथैवार्धोदयात्प्रातर्घटिकात्रय संमिता ॥ १९ ॥

विमला—सूर्य के आधा मण्डल अस्त होने के वाद तीन घड़ी तक सायं संध्या और आधा मंडल उदय होने से पूर्व ३ घड़ी तक प्रातः संध्या कही गई है ॥ १९ ॥

प्रागर्धरात्रात्पूर्वाह्ने पूर्ववद्विष्णुपादयोः ।
षड्शीतिमुखीचैव परतश्चेत्परेऽहनि ॥ २० ॥

अन्वयः—पूर्ववत् षड़शीतिमुखी, विष्णु पादयोः अर्धरात्रात्प्राक् (संक्रमे) पूर्वाह्ने (एवं च) परतश्चेत् परेऽहनि चैव (पुण्यकालः) ।

विमला—पूर्वोक्त विष्णुपदा और षडशीतिमुखी संक्रान्ति यदि आधीरात के पहले हो तो पहले दिन और आधीरात के वाद हो तो दूसरे दिन पुण्यकाल होता है ॥ २० ॥

पश्चात्पराहः संक्रान्तिः षड्शीतिर्त्रिपर्ययात् ।
यादृशेनेन्दुना भानोः संक्रान्तिस्तादृशं फलम् ॥ २१ ॥

---

१. यह १७ नं० का श्लोक मूल पुस्तक में नहीं है, किन्तु मुहूर्त चिन्तामणि पियूषधारा टीका संक्रान्ति प्रकरण श्लोक ७ की टीका में उदाहृत है ।

२. 'अर्धास्तमन संध्या स्यात् घटिकात्रय संमिता' इति मूलपाठः ।

नरः प्राप्नोतितद्राशौ शीतांशोः साध्वसाधु[1] वा ।
संक्रान्तिग्रहणर्क्षे वा [2]पूर्वभाद्गणनाक्रमः ॥ २२ ॥
रवेरयनसंक्रान्तिस्तदा तद्राशि [3]संक्रमः ।
संक्रान्तिग्रहणर्क्षे वा [4]जन्मभावधिगण्यताम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—षडशीति विपर्ययात् पश्चात्पराहः (विष्णुपदा) संक्रान्तिः । यादृशेन, इन्दुना भानोः संक्रान्तिः नरः तादृशं फलं प्राप्नोति तत् (तस्य नरस्य) राशौ शीतांशोः साधु असाधु वा (तथा फलं प्राप्नोति) संक्रान्ति ग्रहणर्क्षे वा गणनाक्रमः पूर्वभात् कार्या । रवेरयन संक्रान्तिः (यदा) तदा तद्राशि संक्रमः । संक्रान्ति ग्रहणर्क्षे वा जन्म भावधि गण्यताम् ।

विमला—षडशीतिमुखी नाम की संक्रान्ति और विष्णुपदा नाम की संक्रान्तियों का फल विपरीत होता है । जैसे चन्द्रमा में संक्रान्ति होती है उसका फल भी वैसा ही होता है । सूर्यसंक्रान्तिः के दिन जिसका चन्द्रमा अच्छा हो उसे श्रेष्ठ फल होता है । संक्रान्ति के दिन से पहले दिन के नक्षत्र से गणना करना चाहिए । सूर्य के अयन की संक्रान्ति या अन्य राशियों की संक्रान्ति जिस दिन हो उसी दिन के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गणना करे और उसके अनुसार फल का ज्ञान करे ॥ २१-२३ ॥

नेष्टं त्रयं षट् च शुभं पर्यायाच्च पुनः पुनः ।
हानिर्वृद्धिः स्थानहानिस्तत्प्राप्तिर्भानुतः क्रमात् ॥ २४ ॥

अन्वयः—नेष्टं त्रयं षट् च शुभं पर्यायाच्च पुनः पुनः भानुतः क्रमात् हानिः वृद्धिः, स्थानहानिः तत्प्राप्तिः (स्थानलाभः) ।

विमला—संक्रान्ति दिन के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र पर्यन्त गणना करने पर प्रथम ३ नक्षत्र अशुभ, बाद के ६ नक्षत्र शुभदायक, ३ नक्षत्र हानिकारक, ६ नक्षत्र वृद्धिकारक, ३ नक्षत्र स्थान हानिकारक और ६ नक्षत्र लाभप्रद होते हैं ॥ २४ ॥

---

१. 'साधु साधुना' इति मूल पाठः ।

२. 'जयत्युभय पार्श्वयोः' इति मूल पाठः ।

३. 'संक्रमात्' इति मूल पाठः ।

४. 'जन्मन्युभय पार्श्वयोः' इति मूल पाठः ।

तिलोपरि लिखेचक्रं त्रिशूलं च त्रिकोणकम् ।
तत्रहेमं विनिक्षिप्य दद्यात्तद्दोषशान्तये ॥ २५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—किसी थाल में तिल भरकर उसके उपर कुम्कुम से चक्र, त्रिशूल और त्रिकोण लिखने के बाद उसमें सोने का टुकड़ा रखकर उसका पूजन करे और सुपात्र ब्राह्मण को दान दे दे। इससे संक्रान्ति जन्य दोष की शान्ति होती है ॥ २५ ॥

तारावलेन शीतांशुर्वलवांस्तद्वशाद्रविः ।
स संक्रमणतस्तद्वद्वशात्खेट वलाधिकः ॥ २६ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां संक्रान्तिलक्षणाध्यायः एकादशः ।

अवन्यः—तारावलेन शीतांशुः वलवान्, तद्वशात् (चन्द्रवशात्) रविः। स रविः संक्रमणतः तद्वत् (तद्वशात्) खेट वलाधिकः ।

विमला—तारा के बल से चन्द्रमा बलवान होता है। उसी प्रकार चन्द्रमा से सूर्य बलवान होता है। तथा सूर्य सक्रान्ति के वश अन्य ग्रहों का बल प्राप्त कर बलवान होता है ॥ ६ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
संक्रान्तलक्षणाध्याय समाप्त ।

अथ द्वादशोऽध्यायः

शुभोऽर्को जन्मतस्त्र्यायदशषट्सु न विध्यते ।
जन्मतो नवपञ्चाम्बुव्ययगैर्व्यर्किभिस्तदा ॥ १ ॥

अन्वयः—यदा अर्कः जन्मतः नव-पञ्च-अम्बु-व्ययगै व्यर्किभिः (ग्रहैः) न विध्यते तदा जन्मतः त्रि आय, दश, षट्सु शुभः ।

विमला—यदि सूर्य जन्म से ९, ५, ४, १२ स्थानों में शनि से अतिरिक्त किसी ग्रह से विद्ध न हो तो जन्म से ३, ११, १०, ६ इन स्थानों में शुभ फलदायक होता है। राशिचक्र में ३ से ९, ११ से ५ १० से ४ और ६ से १२ का वेध होता है। अतः यदि सूर्य जन्म राशि से तृतीय स्थान में है तो ९ स्थान में बैठे ग्रह से विद्ध होने के कारण शुभ फलदायक नहीं होगा इसी प्रकार अन्य स्थानों को भी समझना चाहिए ॥ १ ॥

विध्यते जन्मतो नेन्दुर्द्युनाद्यायारिखत्रिषु ।
स्वेष्वष्टान्त्याम्बुधर्मस्थैर्विबुधैर्जन्मतः[1] शुभः ॥ २ ॥

अन्वयः—जन्मतः इन्दुः द्यून-आद्य-आय-अरि-ख-त्रिषु (स्थानेषु) शुभः (यदा) जन्मतः स्व-इषु-अष्ट-अन्त्य-अम्बु-धर्मस्थै विबुधै (बुध-रहितान्यद्ग्रहैः) न विध्यते ।

विमला—चन्द्रमा जन्म राशि से ७।१।११।६।१० और ३ इन स्थानों में शुभ फलदायक होता है किन्तु यदि जन्म से २।५।८।१२।४ और ९ इन स्थानों में बैठे हुए बुध से अतिरिक्त अन्य किसी ग्रह से विद्ध न हो ॥ २ ॥

त्र्यायारिषु कुजः श्रेष्ठो जन्मराशेर्न विध्यते ।
व्ययेष्वर्कग्रहे सौरिरप्यसूर्येण[2] जन्मतः ॥ ३ ॥

अन्वयः—जन्म राशेः त्रि-आय-अरिषु कुजः श्रेष्ठः (यदा) व्यय-इषु-अर्क ग्रहे न विध्यते । सौरि-अपि (यथा कुजः स्यात्तथा) सूर्येण बिना ।

विमला—जन्म राशि से ३-११-६ इन स्थानों में यदि मंगल, जन्म से १२।५।९ स्थानों में स्थित किसी ग्रह से विद्ध न हो तो श्रेष्ठ फल-

---

१. 'विबुधैः शुभः' इति मूल पाठः ।

२. शनैश्चरस्य सूर्य पुत्रत्वात्तद्वेधो नाङ्गीकार्यः ।

दायक होता है। मंगल की तरह ही शनि का भी विचार करना चाहिए किन्तु शनि का सूर्य द्वारा वेध नहीं माना जाता ॥ ३ ॥

ज्ञोद्विचब्धयष्टखायेषु जन्मतश्च न विध्यते ।
धीत्र्यङ्काद्याष्टान्त्यखेटैर्जन्मतो [1]व्यब्जकैः शुभः ॥ ४ ॥

अन्वयः—जन्मतश्च ज्ञः द्वि २, अब्धि ४, अरि ६, अष्ट ८, ख १०, आयेषु ११ न विध्यते (शुभः भवेत्)। परन्तु जन्मतः धी ५, त्री ३, अंक ९, आद्य १, अष्ट ८ अन्त्य १२ व्यब्जकैः खेटैः शुभः ।

विमला—जन्म राशि से २, ४, ६, ८, १०, ११ इन स्थानों पर बुध का वेध नहीं होता अर्थात् शुभ होता है। परन्तु जन्म से ५, ३, ९, १, ८, १२ इन स्थानों पर चन्द्रमा से अतिरिक्त अन्य किसी ग्रह को नहीं रहना चाहिए ॥ ४ ॥

[2]जन्मतः स्वायगोक्षास्तेस्वन्त्याष्टा[3]यजलत्रिगैः ।
जन्मराशेर्गुरुः श्रेष्ठो ग्रहैर्यदि न विध्यते ॥ ५ ॥

अन्वयः—गुरुः जन्मराशेः स्व-आय-गो-अक्ष-अस्तेषु श्रेष्ठः यदि जन्मतः अन्त्य, अष्ट, आय (ख इति शुद्ध पाठः), जल, त्रिगैः ग्रहैः न विध्यते ।

विमला—जन्म राशि से २।११।९।५।७ इन स्थानों में गुरु श्रेष्ठ होता है यदि किसी भी ग्रह से १२।८।१०.४।३ इन स्थानों पर होते हुए विद्ध न होवे ॥ ५ ॥

कुद्व्यग्न्यब्धिसुताष्टांकान्त्याये शुक्रो न विध्यते ।
जन्मभान्मृत्युसप्ताद्यखाङ्केष्वायारि [4]पुत्रगैः ॥ ६ ॥

---

१. 'व्यब्जकैः' इति मूल पाठः ।

ज्ञ स्वाब्ध्यर्यष्टखायेषु जन्मतश्चेन्न विध्यते ।
सुतत्र्यंकाद्यष्टभान्त्य संस्थितैरिन्दुजः शुभः ॥ मु० चि० पियूष धारायाम् ।

२. 'जन्म भादासुताष्टांकांत्यायेष्विष्टो न विध्यते' इति मूल पाठः ।

३. "...त्याष्ट खजलत्रिगैः" इति साधु पाठः ।

४. 'च त्रिगैः' इति साधु पाठः ।

पियूषधाराटीका में यह श्लोक भिन्नरूप से प्राप्त होता है यथा—

"जन्मभादासुताष्टाङ्कान्त्यायेष्विष्टो न विध्यते ।
भार्गवो मृत्यु सप्तायस्याङ्केष्वाशारिरामगैः ॥"

अन्वयः—जन्मभात् मृत्यु, सप्त, आद्य, ख, अङ्क, इषु, आय, अरि, पुत्रगैः (अन्य ग्रहैः यदि) न विध्यते (तदा) कु, द्वि, अग्नि, अब्धि, सुत, अष्ट, अङ्क, अन्त्य आये शुक्रो (श्रेष्ठः) ।

विमला—जन्म नक्षत्र से यदि ८, ७, १, १०, ९, ५, ११, ६, ५, इन स्थानों पर स्थित कोई ग्रह न हो तो १, २, ३, ४, ५, ८, ९, १२, ११ इन स्थानों में बैठा हुआ शुक्र शुभ फलदायक होता है ॥ ६ ॥

न ददाति शुभं किञ्चिद्गोचरे वेधसंयुते ।
तस्माद्वेधं विचार्याथ कथ्यते तच्छुभाशुभम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—वेध से युक्त ग्रह कुछ भी फलदायक नहीं होता, इसलिए ग्रह का वेध विचार कर ही शुभ या अशुभ फल का आदेश करना चाहिए ॥ ७ ॥

वामवेधविधानेनाप्यशुभोऽपिग्रहो शुभः ।
अतस्तान्विविधान्वेधान्विचार्याथ वदेत्फलम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—अथ वामवेध विधानेन अशुभो अपि ग्रहः शुभः । अतः तान् विविधान् वेधान् विचार्य फलं वदेत् ।

विमला—यदि ग्रहों का वामवेध होता हो अर्थात् वेध के स्थान पर ग्रह और शुभ स्थान पर वेध करने वाला ग्रह (इस प्रकार विपरीत स्थित) हो तो अशुभ ग्रह भी शुभ दायक होते हैं। अतः विविध प्रकार के वेधों को अच्छी तरह विचार कर ही फलादेश करना चाहिए ॥ ८ ॥

अज्ञात्वाविविधान्वेधान्यो ग्रहज्ञो [1]फलं वदेत् ।
स मृषावचनाभाषी हास्यं याति नरः सदा ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—विविध वेध विधियों को जाने विना जो दैवज्ञ फल कहते हैं उनकी भविष्यवाणी व्यर्थ होती है और वे सदा उपहास के पात्र बनते हैं ॥ ९ ॥

सौम्येक्षितो नेष्टफलः शुभदः पापवीक्षितः ।
निष्फलौ तौ ग्रहौ चोभौ शत्रुणा च विलोकितौ ॥ १० ॥

अन्वयः—नेष्ट फलः (ग्रहः) सौम्येक्षितः शुभदः । पापविक्षितः शत्रुणा च विलोकितौ तौ च उभौ ग्रहौ निष्फलौ ।

---

१. 'बलं वदेत्' इति मूल पाठः ।

विमला—अशुभ फलदायक ग्रह भी शुभ ग्रहों की दृष्टि से शुभद होता है। पाप ग्रहों से दृष्ट तथा शत्रु ग्रह से दृष्ट ग्रह शुभ फलदायक होने पर भी अशुभ होते हैं॥ १०॥

नीचराशिगतः स्वस्य शत्रुक्षेत्रगतोपि वा।
शुभाशुभफलं नैव दद्यादस्तमितोऽपि वा॥ ११॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—नीच राशि पर स्थित, अपने शत्रुगृह में गया हुआ ग्रह तथा अस्तंगत ग्रह निष्फल होते हैं॥ ११॥

ग्रहेषु विषमस्थेषु शान्तिं यत्नात्समाचरेत्।
हानिर्वृद्धिर्ग्रहाधीना तस्मात्पूज्यतमा ग्रहाः॥ १२॥

अन्वयः—अति सुगमम्।

विमला—विषमस्थान स्थित अनिष्ट फलद ग्रहों की यत्नपूर्वक शान्ति करनी चाहिए। ग्रहों के आधीन हानि लाभ सब कुछ होता है अतएव ग्रह पूज्यतम हैं॥ १२॥

मणिमुक्ताफलं विद्रुमाख्यं गारुत्मकाह्वयम्।
पुष्परागं त्वथोवज्रनीलगोमेद संज्ञके॥
वैडूर्यं भास्करादीनां तुष्ट्यैधार्यं यथाक्रमम्॥ १३॥

इति श्रीनारदसंहितायां गोचराऽध्यायः द्वादशः।

अन्वयः—भास्करादीनां तुष्ट्यै यथा क्रमं मणि-मुक्ताफलं-विद्रुमाख्यं-गारुत्मकाह्वयम् (पन्ना) पुष्परागं, तु अथ वज्र-नील-गोमेद संज्ञके, वैडूर्यं च धार्यम्।

विमला—सूर्यादि ग्रहों की तुष्टी के लिए क्रमशः मणि आदि रत्नों को धारण करना चाहिए। यथा—सूर्य के लिए माणिक्य, चन्द्रमा के लिए मोती, मंगल के लिए (प्रवाल) मूंगा, बुध के लिए पन्ना, गुरु के लिए पुष्पराग (पुषराज) शुक्र के लिए हीरा, शनि के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद और केतु के लिए वैडूर्यमणि या लहसुनिथाँ धारण करना चाहिए[1]॥ १३॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में गोचराध्याय समाप्त।

---

१. विशेष जानकारी के लिए मेरे द्वारा सम्पादित नवग्रहस्तोत्र संग्रह देखिए।

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

शुक्लपक्षादिदिवसे चन्द्रो यस्य शुभप्रदः।
स पक्षस्तस्य शुभदः कृष्णपक्षोऽन्यथाशुभः ॥ १ ॥

अन्वयः—शुक्ल पक्षादिदिवसे यस्य चन्द्रः शुभप्रदः तस्य स पक्षः शुभप्रदः अन्यथा कृष्णपक्षः शुभः।

विमला—शुक्लपक्ष का प्रथम दिन जिसका चन्द्रमा शुभप्रद होता है उसका शुक्ल पक्ष उत्तम रहता है और चन्द्रमा अशुभ हो तो कृष्ण पक्ष शुभ फलद रहता है। कुछ दैवज्ञों ने 'कृष्णपक्षोऽन्यथा शुभः' का अर्थ कृष्णपक्ष अन्यथा अर्थात् अन्य विधि (तारा विचार) से शुभ होता है ऐसा अर्थ किया है जो असंगत नहीं प्रतीत होता है। इसे स्पष्ट ५ श्लोक के द्वारा समझना चाहिए ॥ १ ॥

शुक्लपक्षे शुभश्चन्द्रो द्वितीयनवपञ्चके।
रिपुमृत्यम्बुसंस्थश्च न विद्धो गगनेचरैः ॥ २ ॥

अन्वयः—शुक्ल पक्षे द्वितीय नव पञ्चके चन्द्रः शुभः (यदि) रिपु-मृत्यु-अंबु संस्थः गगनेचरैः च न विद्धः।

विमला—शुक्ल पक्ष में २, ९, ५ वाँ चन्द्रमा शुभप्रद होता है किन्तु बुध से अतिरिक्त ६, ८, ४ में स्थित किसी ग्रह से विद्ध न होय ॥ २ ॥

नोट :—गोचराध्याय के द्वितीय श्लोक में जन्म राशि से ७।१।११। ६।१० और ३ स्थानों पर चन्द्रमा शुभ होता है यदि बुध से अतिरिक्त २।५।८।१२।४।७ इन स्थानों में स्थित किसी ग्रह से विद्ध न हो। अर्थात् इसका विचार गोचर फल के लिए तथा 'शुक्ल पक्षे……गगनेचरैः' का विचार अन्यकार्यों में करना चाहिए।

जन्मसम्पद्विपत्क्षेम [1]प्रत्यरिस्साधको वधः।
मित्रं परममित्रं च जन्मभाच्च पुनः पुनः ॥ ३ ॥

अन्वयः—अति सुगमम्।

---

१. 'प्रत्यक् साधनैधनं' इति मूल पाठः।

विमला—किसी भी व्यक्ति के तारा ज्ञान के लिए जन्म नक्षत्र से वर्तमान दिन नक्षत्र तक गिन कर उसमें ६ का भाग दे देना चाहिए, तथा शेष क्रमशः १ जन्म, २ सम्पद, ३ विपत्, ४ क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ बध, ८ मित्र और ६ या ० शेष में परम मित्र नाम की तारा समझना चाहिए॥ ३॥

जन्मत्रिपञ्चसप्ताख्या तारा नेष्टफलप्रदाः।
अनिष्टपरिहाराय दद्यादेतद्विजातये ॥ ४ ॥
शाकं गुडं च लवणं सतिलं काञ्चनं क्रमात्।
कृष्णे बलवतीतारा शुक्लपक्षेवली शशीः ॥ ५ ॥

अन्वयः—जन्म, त्रि, पञ्च सप्ताख्या तारा नेष्ट फलप्रदाः। एतद्-अनिष्ट फल परिहाराय शाकं, गुडं, लवणं, सतिलं काञ्चनं च क्रमात् द्विजातये दद्यात्। कृष्णे तारा बलवती, शुक्ल पक्षे शशी बली।

विमला—जन्म, विपत्, प्रत्यरि, वध ये तारायें अशुभ फलद होती हैं। इनके अनिष्ट फल शान्ति के लिए परिहार स्वरूप क्रमशः शाक-गुड़-नमक और सतिल स्वर्ण का दान ब्राह्मण को देना चाहिए। शुक्लपक्ष में चन्द्रमा और कृष्णपक्ष में तारा का बल अधिक है॥ ४-५॥

चन्द्रस्य द्वादशावस्था दिवा रात्रौ यथाक्रमात्।
यत्रोद्वाहादिकार्येषु संज्ञातुल्यफलप्रदा ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—दिन और रात्रि को क्रमशः बारह अवस्थायें कही गई हैं। विवाहादि कार्यों में ये द्वादश अवस्थायें नाम के अनुसार फल देने वाली होती हैं। इनके जानने का प्रकार तथा इनका नाम अग्रिम श्लोकों में दिया गया है॥ ६॥

षष्टिघ्नं चन्द्रनक्षत्रं तत्कालघटिकान्वितम्।
वेदघ्नमिषुवेदाप्तमवस्था भानुभाजिताः ॥ ७ ॥
प्रवासनष्टाख्यमृता जयाहास्यारतिर्मुदा।
सुप्तिर्भुक्तिज्वराकम्पसुस्थितिर्नामसंनिभाः ॥ ८ ॥

इति श्री नारद संहितायां चन्द्रबलाऽध्यायः त्रयोदशः।

अन्वयः—चन्द्रनक्षत्रं षष्टिघ्नं तत्कालघटिकान्वितम्। वेदघ्नं, इषुवेदाप्तं (शेषं) भानुभाजिता १ प्रवास, २ नष्टा, ३ मृता, ४ जया, ५ हास्या, ६ रतिः, ७ मुदा, ८ सुप्तिः, ६ भुक्तिः, १० ज्वरः, ११ कंपः, १२ सुस्थितिः अवस्था नाम संज्ञिभाः (फल प्रदा)।

विमला—अश्विन्यादिगत नक्षत्र संख्या को ६० से गुणा कर वर्तमान नक्षत्र घटी प्रमाण जोड़ दें उसमें ४ का गुणा कर ४५ का भाग देने से जो शेष बचे उसमें १२ का भाग देने पर क्रमशः १ प्रवास, २ नष्ट, ३ मृत, ४ जया, ५ हास्या, ६ रति, ७ मुदा, ८ सुप्ति, ६ भुक्ति, १० ज्वर, ११ कंप और १२ वाँ सुस्थिति नाम की अवस्था होती है। ये अवस्थायें अपने नाम के अनुसार ही फल देती हैं॥ ७-८॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
चन्द्रबलाऽध्याय समाप्त।

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

पट्टबन्धनयानोग्रसन्धि विग्रहभूषणम् ।
धात्वाकराहवं कर्म मेषलग्ने प्रसिध्यति ॥ १ ॥

अन्वयः—मेष लग्ने पट्टबंधन, यान, उग्रसन्धि, भूषणं, धात्वाकरः, आहवं कर्म प्रसिध्यति ।

विमला—मेष लग्न में पट्टबन्धन, सवारी, सन्धि, विग्रह, आभूषण, खजाना (कोश) और युद्ध कर्म करना उत्तम फलदायक होता है ॥ १ ॥

मङ्गलानि स्थिराण्येव वेश्मकर्म प्रवर्तनम् ।
कृषिवाणिज्यपश्वादि वृषलग्ने प्रसिध्यति ॥ २ ॥

अन्वयः—वृष लग्ने मङ्गलानि, स्थिराणि, वेश्मकर्म (प्रवर्तनम्) कृषि, वाणिज्य, पश्वादि (कर्म) प्रसिध्यति ।

विमला—वृष लग्न में सभी मंगलकार्य, स्थिरकार्य, गृह सम्बन्धी-कार्य, वाणिज्य और पशु आदि का काम करना चाहिए ॥ २ ॥

कलाविज्ञानसिद्धिश्च भूषणाहव संश्रयम् ।
गजोद्वाहाभिषेकाद्यं कर्त्तव्यं मिथुनोदये ॥ ३ ॥

अन्वयः—मिथुनोदये कला, विज्ञान, सिद्धिः, भूषण, आहव, संश्रयं, गज, उद्वाह, अभिषेकाद्यं च (कर्म) कर्त्तव्यम् ।

विमला—मिथुन लग्न में, कला, विज्ञान, सिद्धि, आभूषण, युद्ध, आश्रय (शरण) गज (हाथी) सम्बन्धीकार्य, विवाह तथा राज्याभिषेक आदि कार्य करना चाहिए ॥ ३ ॥

वापीकूपतडागादि वारिबन्धन मोक्षणे ।
पौष्टिकं लिपिलेखादि कर्त्तव्यं कर्कटोदये ॥ ४ ॥

अन्वयः—कर्कटोदये, वापी, कूप, तडागादि, वारिबन्धन, मोक्षणे, पौष्टिकं, लिपिलेखादि (कर्म) कर्त्तव्यम् ।

विमला—कर्क लग्न में वावली कुँआ, तालाब, वारिबन्धन (पुल बाँधना) नहर चलाना तथा पौष्टिककर्म एवं लेखनादिकर्म करना शुभ होता है ॥ ४ ॥

इक्षुधान्य वणिक्पण्य कृषिसेवादि यत्स्थिरम् ।
साहसावहभूपाढ्यं सिंहलग्ने प्रसिध्यति ॥ ५ ॥

अन्वयः—सिंह लग्ने इक्षु-धान्य-वणिज्-पण्य-कृषि-सेवादि यत्स्थिरम्, साहस, आवह, भूपाढ्यं (कर्म) प्रसिध्यति ।

विमला—सिंह लग्न में ईख, धान्य, वाणिज्य, दुकान, कृषि सम्बन्धी, सेवा आदि स्थिर कर्म साहसिककार्य, युद्ध तथा राजा का कार्य करना चाहिए ॥ ५ ॥

विद्याशिल्पौषधोकर्म भूषणं च चरं स्थिरम् ।
कन्यालग्नेविधेयं तत् पौष्टिकाखिल मङ्गलम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—कन्या लग्ने विद्या, शिल्प, औषधिकर्म, भूषणं स्थिरं चरं च (कर्म) पौष्टिकाखिल मङ्गलं तत् विधेयम् ।

विमला—कन्या लग्न में विद्या, शिल्प (कला), औषध, आभूषण, चरकर्म, स्थिरकर्म, तथा पौष्टिक और सभी मंगलकार्य करना शुभ होता है ॥ ६ ॥

कृषिवाणिज्ययानाश्वपशूद्वाहव्रतादिकम् ।
तुलायामखिलं कर्मतुलाभाण्डाश्रितं च यत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—तुलायां कृषि, वाणिज्य, यान, अश्व, पशु, उद्वाह, व्रतादिकं तुला, भांडाश्रितं च यत् कर्म तदखिलं (कार्यम्) ।

विमला—तुला लग्न मे कृषि, व्यापार, सवारी, घोड़े का काम, पशु कर्म, विवाह, व्रतादि कार्य, तुला सम्बन्धी कार्य तथा भाण्डाश्रित सभी कार्य करना चाहिए ॥ ७ ॥

स्थिरकर्माखिलं कार्यं राजसेवाभिषेचनम् ।
चौर्यकर्मस्थिरारम्भाः कर्त्तव्यावृश्चिकोदये ॥ ८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सभी स्थिर कार्य, राजसेवा, अभिषेक, चोरी का काम, स्थिरकार्य का आरम्भ वृश्चिक लग्न में करना शुभफल दायक होता है ॥ ८ ॥

व्रतोद्वाहप्रयाणाश्व ह्यङ्गशिल्पकलादिकम् ।
चरं स्थिरं सशस्त्रास्त्रं कर्त्तव्यं कार्मुकोदये ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—धनु लग्न में व्रत, विवाह, तिर्थादि यात्रा (प्रयाण) अंग, शिल्प, कला, चर स्थिर कर्म शस्त्र अस्त्रादि का काम करना शुभ दायक होता है ॥ ९ ॥

तोयवन्धनमोक्षास्त्रकृष्यं चोष्ट्रादिकर्म यत्।
प्रस्थानं पशुदासादिकर्त्तव्यं मकरोदये ॥ १० ॥

अन्वयः—मकरोदये, तोयबन्धन, मोक्ष, अस्त्र, कृषि, उष्ट्रादि कर्म, प्रस्थान, पशु, दासादि यत् कर्म कर्त्तव्यम्।

विमला—मकर लग्न में जल बन्ध (बाँध या पुल निर्माण), मोक्ष सम्बन्धी कार्य, अस्त्रनिर्माण, कृषि, ऊँट सम्बन्धी कार्य, प्रस्थान पशुकर्म तथा दासादि कर्म करना लाभ दायक होता है ॥ १० ॥

कृषिवाणिज्यपश्वम्बु शिल्पकर्म कलादिकम्।
जलयात्रास्त्रशस्त्रादि कर्त्तव्यं कलशोदये ॥ ११ ॥

अन्वयः—कलशोदये कृषि, वाणिज्य, पशु, अम्बु, शिल्प,-कला, जलयात्रा, अस्त्र शस्त्रादि कर्म कर्त्तव्यम्।

विमला—कुम्भ लग्न में कृषि, व्यापार, पशु, जल, शिल्प कला, जल यात्रा तथा अस्त्र शस्त्रादि का काम करना शुभ दायक होता है ॥ ११ ॥

व्रतोद्वाहाभिषेकाम्बुस्थापनं सन्निवेशनम्।
भूषणं जलपात्रं च कर्ममीनोदयेशुभम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—मीनोदये व्रत, उद्वाह, अभिषेक, जलस्थापनं, सन्निवेशनं, भूषणं, जलपात्रं च कर्म शुभम्।

विमला—मीन लग्न में व्रत, विवाह, अभिषेक, जलस्थापन, प्रवेश कर्म, आभूषण तथा जलपात्र का काम करना शुभफल दायक होता है ॥ १२ ॥

गोयुग्मकर्ककन्यान्त्यतुलाचापधराः शुभाः।
शुभग्रहास्पदत्वात्स्युरितरे[1] पापराशयः ॥ १३ ॥

अन्वयः—गो, युग्म, कर्क, कन्या, अन्त्य, तुला चापधराः शुभ ग्रहास्पदत्वात् शुभाः स्युः। इतरे पाप राशयः (स्युः)।

---

१. 'समेतराः' इति मूल पाठः।

विमला—शुभ ग्रहों का घर होने के कारण वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, मीन, तुला और धनु ये ७ राशियाँ शुभ कही गई हैं। इनसे अतिरिक्त मेष, सिंह, कुम्भ और वृश्चिक राशियाँ अशुभ हैं ॥ १३ ॥

क्षीणेन्द्वर्कार्किभूपुत्राः [1]पापाभ्यां संयुतोबुधः।
पूर्णचन्द्रबुधाचार्यशुक्रास्ते स्युः शुभग्रहाः ॥ १४ ॥

अन्वयः—क्षीणेन्दु, अर्क, अर्कि, भूपुत्राः पापाभ्यां संयुतो बुधः (पापाः स्युः) पूर्णचन्द्र, बुध, आचार्य, शुक्राः ते शुभ ग्रहाः स्युः।

विमला—क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, शनि और मंगल तथा पापयुत बुध पापग्रह और पूर्णचन्द्रमा, बुध, गुरु शुक ये शुभग्रह कहे गये हैं ॥१४॥

सौम्योग्रं तेषां राशिनाम्प्रकृत्येव फलं भवेत्।
योगेन सौम्यपापैश्च खचरैर्वीक्षितेन वा ॥ १५ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—सौम्य और उग्र ये राशियों के प्रकृत फल हैं। पाप और सौम्य ग्रहों के योग, तथा दृष्टि वश भी इनका शुभाशुभ फल होता है ॥ १६ ॥

सौम्याश्रितत्वात्क्रूरो वा स राशिः शोभनः स्मृतः।
सौम्योपि राशिः क्रूरः स्यात्क्रूरग्रहयुतो यदि ॥१६॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—सौम्य ग्रह के आश्रित होने से क्रूर राशी भी शुभ होती है, तथा सौम्य राशि भी क्रूर ग्रह से युत होकर अशुभ फल दायक होती है ॥ १६ ॥

ग्रहयोगावलोकाभ्यां [2]राशिर्धत्तेगृहोद्भवम्।
फलं ताभ्यां विहीनोसौ स्वं भावमुपसर्पति ॥ १७ ॥

अन्वयः—राशिः (शशी) ग्रह योगावलोकाभ्यां ग्रहोद्भवम् फलं धत्ते। ताभ्यां विहीनः असौ स्वं भावं उपसर्पति।

---

१. 'पापाः स्युः' इति पाठान्तरम्।
२. 'शशी' इति पाठान्तरम्।

विमला—राशि (या चन्द्रमा) ग्रहों के योग और दृष्टिवश तद्ग्रह जन्य फल को देता है तथा स्वतन्त्र रहने पर अपने प्रकृत स्वभावानुसार फल का अनुसरण करता है ॥ १७ ॥

आदौसम्पूर्णफलदं मध्येमध्यफलप्रदम् ।
अन्ते तुच्छफलं लग्नं सर्वस्मिन्नेवमेव च ॥ १८ ॥

अन्वयः—लग्नं आदौ सम्पूर्ण फलदं, मध्ये मध्यफलप्रदं, अन्तेतुच्छ फलं एवमेव सर्वस्मिन् च ।

विमला—लग्न आदि में पूर्ण फलदायक मध्य में मध्यम और अन्त में अत्यल्प फल देता है। यह सभी लग्नों का फल होता है ॥ १८ ॥

सर्वत्र प्रथमं लग्नं कर्तुश्चन्द्रबलं ततः ।
कन्यान्य इन्दौवलिनि सन्त्यन्ये वलिनो ग्रहाः ॥१९॥

अन्वयः—कर्तुः सर्वत्र प्रथमं लग्नं ततः चन्द्रबलं, कन्यान्य (राशौ) इन्दौ बलिनि सन्ति (चेत्) अन्ये ग्रहाः बलिनो (भवन्ति) ।

विमला—कर्त्ता को सर्व प्रथम लग्न बल का विचार करना चाहिए। तदनन्तर चन्द्र बल देखना चाहिए। कन्या से अन्य राशि पर यदि बलवान चन्द्रमा हो तो सभी ग्रह बलवान होते हैं ॥ १९ ॥

चन्द्रस्यवलमाधारमाधेयं चान्यखेटजम् ।
आधारभूतेनाधेयं दीयते परिनिष्ठितम् ॥ २० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चन्द्रमा का बल आधार (मूल) है और अन्य ग्रहों का बल आधेय है। आधार (चन्द्रमा) के बल पर ही आधेय की रक्षा होती है ॥ २० ॥

सचेन्दुः शुभदः सर्वग्रहाः शुभफलप्रदाः ।
अशुभश्चेदशुभदो वर्जयित्वा दिनाधिपम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—स च इन्दुः (यदा) शुभदः (तदा) सर्वग्रहाः शुभफलप्रदाः । चेत् अशुभः (तदा) दिनाधिपम् वर्जयित्वा (सर्वग्रहाः) अशुभदः (वाच्यः) ।

विमला—अतएव चद्रमा के बली होने से सभी ग्रह शुभफलदायक होते हैं। अन्यथा अशुभ किन्तु सूर्य के लिए यह नियम नहीं है ॥२१॥

लग्नेह्यभ्युदयो येषां तेष्वंशेषु स्थिताग्रहाः ।
लग्नोद्भवं फलं धत्तेचैवमेवं प्रकल्पयेत्[1] ॥ २२ ॥

अन्वयः—येषां (राशिनां) लग्ने अभ्युदयः तेषु अंशेषु स्थिता (अपि) ग्रहाः लग्नोद्भवं फलं धत्ते च (इति) एवम् प्रकल्पयेत् ।

विमला—लग्न में स्थित ग्रह जिस राशि में होकर शुभ या अशुभ फल दायक होते हैं । उन लग्नों की राशि नवांशों में भी इसी तरह के फल की कल्पना करना चाहिए ॥ २२ ॥

एवं स्थानेषु शेषेषु चैवमेव प्रकल्पयेत् ।
लग्नं सर्वगुणोपेतम्लभ्यते यदितेन हि ॥
दोषाल्पत्वं गुणाधिक्यं वहुसंततमिष्यते ॥ २३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सभी स्थानों का विचार लग्न की तरह करना चाहिए । यदि लग्न सर्वगुण सम्पन्न हो तो दोष न्यून होता है और गुण की वृद्धि होती है ॥ २३ ॥

दोषदुष्टो हि कालः स परिहार्यः पितामह ।
अथ शक्त्या गुणाधिक्यं दोषाल्पत्वं ततो हितम् ॥ २४ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां सर्वलग्नाध्यायः चतुर्दशः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—दोष युक्त समय को यथा शक्ति टाल देना चाहिए । जिस लग्न में दोष अल्प तथा गुण की अधिकता हो वह शुभफल दायक होता है ॥ २४ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की विमला हिन्दी टीका में
सर्वलग्नाध्याय समाप्त ।

—०:०—

---

१. लग्नेप्यभ्युदयो येषां तेष्वंशेषु स्थिता ग्रहाः । लग्नोद्भवं फलं धत्ते ज्ञानातीते द्वितीयजं' इति मूलपाठः ।

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

अमारिक्ताष्टमीषष्ठीद्वादशी प्रतीपत्स्वपि ।
परिघस्यतु पूर्वार्धे व्यतीपाते च वैधृतौ ॥ १ ॥
सन्ध्यासूपप्लवे विष्ट्यामशुभं प्रथमार्त्तवम् ॥

अन्वयः—अमा, रिक्ता, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी, प्रतिपत्सु, अपि च वैधृतौ, व्यतिपाते परिघस्य पूर्वार्धे, संध्यासु, उपप्लवे विष्ट्यां च प्रथमार्त्तवम् अशुभम् ।

विमला—अमावास्या, रिक्ता (चौथ, चतुर्दशी, नवमी) अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी और प्रतिपद इन तिथियों में । परिघ योग के पूर्वार्ध, व्यतिपात और वैधृति इन योगों मे, सन्ध्या काल उपप्लव (किसी प्रकार के उत्पात या आपत्ति काल), और भद्रा में प्रथम रजोदर्शन अशुभ फल को देने वाला होता है ॥ १ ॥

रुग्णा पतिव्रता दुःखी पुत्रिणी भोगभागिनी ।
पतिप्रिया क्लेशयुक्ता सूर्यवारादिषु क्रमात् ॥ २ ॥

अन्वयः—सूर्यवारादिषु क्रमात् (प्रथमार्त्तवम्) रुग्णा, पतिव्रता, दुःखी, पुत्रिणी, भोग भागिनी, पतिप्रिया (एवं) क्लेश युक्ता (स्युः) ।

विमला—रविवार को रुग्णा, सोमवार को पतिव्रता, मंगलवार को दुःखी, बुधवार को पुत्रिणी गुरुवार को भोग भागिनी, शुक्रवार को पति प्रिया और शनिवार को प्रथम रज दिखाई देने से नारी क्लेश युक्ता होती है ॥ २ ॥

श्रीयुक्ता सुभगा पुत्रवती सौख्यान्विता स्थिरा ।
मानीकुलाधिकानारीचाश्विन्यां प्रथमार्त्तवा ॥ ३ ॥

अन्वयः—अग्रेऽध्यायान्तं यावत् अति सुगमम् ।

विमला—अश्विनी नक्षत्र में प्रथम आर्त्तव (रजोदर्शन) होने से स्त्री श्री संपन्न, सुभगा, पुत्रवती, सुखी, स्थिर, मानी, तथा कुल में विशेष समादर प्राप्त करने वाली होती है ॥ ३ ॥

दुःशीला स्वैरिणीवंध्यागर्भपातनतत्परा ।
परप्रेष्या काकवन्ध्या भरण्यां प्रथमार्त्तवा ॥ ४ ॥

विमला—भरणी नक्षत्र मे प्रथमार्त्तव वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली, व्यभिचारिणी, वंध्या गर्भपात कराने वाली, दासी का कार्य करने वाली, तथा काकवन्ध्या (केवल लड़का या केवल लड़की पैदा करने वाली) होती है ॥ ४ ॥

अन्यथा पुंश्चली वन्ध्या गर्भपातनतत्परा ।
वेश्या मृतप्रजा चापि वह्निभे प्रथमार्त्तवा ॥ ५ ॥

विमला—कृतिका नक्षत्र मे प्रथमार्त्तववाली व्यभिचारिणी, वन्ध्या, गर्भपात कराने वाली, वेश्या मृतप्रजा (लड़के होकर मर जाया करें) होती है ॥ ५ ॥

सुशीला सुप्रजा चान्या पतिभक्ता दृढव्रता ।
गृहार्चनरता नित्यं धातृभे प्रथमार्त्तवा ॥ ६ ॥

विमला—रोहिणी नक्षत्र मे यदि प्रथम आर्त्तव हो तो स्त्री सुशील, सुन्दर सन्तान वाली, पति से विशेष स्नेह रखने वाली, दृढ़व्रता, तथा निरन्तर गृहकार्य मे लगी रहती है ॥ ६ ॥

गुणान्विता धर्मरता नारी सर्वसहा सती ।
पतिप्रिया सुपुत्रा या चन्द्रभे प्रथमार्त्तवा ॥ ७ ॥

विमला—मृगशिरा नक्षत्र में प्रथमार्त्तव युक्त नारी, गुणों से युक्त, धर्म मे रुचि रखने वाली, सहनशील, पतिव्रता, पतिप्रिया तथा सुन्दर पुत्र वाली होती है ॥ ७ ॥

कुलटा दुर्भगा दुष्टा मृतपुत्रा खला जडा ।
दुष्टव्रतपरिभ्रष्टा रौद्रभे प्रथमार्त्तवा ॥ ८ ॥

विमला—आर्द्रा नक्षत्र मे प्रथमार्त्तव वाली स्त्री व्यभिचारिणी, दुर्भगा, दुष्टस्वभाव वाली, मृतवत्सा, खल, जड़ एवं दुष्टव्रत तथा आचरण वाली होती है ॥ ८ ॥

पतिभक्ता[1] पुत्रवती परसन्तानमोदिनी ।
[2]कलाचारानुरक्ता या दितिभे प्रथमार्त्तवा ॥ ९ ॥

---

१. 'सतिभक्ता' इति मूल पाठः ।
२. 'कुलाचारानुरक्ता' इति साधु पाठः ।

विमला—पुनर्वसु नक्षत्र मे प्रथमार्त्तव होने से स्त्री पतिभक्ता, पुत्रवती, दूसरों की सन्तान को भी आनन्द देने वाली, कला मे पटु, अनुराग युक्त या कुल के आचार मे अनुरक्त होती है ॥ ९ ॥

प्रतिप्रिया पुत्रवती मानभोगवती शुभा ।
सुकर्मनिरता दक्षा तिष्यर्क्षे प्रथमार्त्तवा ॥ १० ॥

विमला—पुष्य नक्षत्र मे प्रथम रजोदर्शन से स्त्री पुत्रवती, मान भोग वाली, शुभ तथा सुन्दर कर्म मे लगी रहने वाली तथा दक्ष (निपुण) होती है ॥ १० ॥

परभर्तृरता प्रेष्या कोपिनी निर्घृणालसा ।
मृषावादी च दुष्पुत्रा भौजंगे प्रथमार्त्तवा ॥ ११ ॥

विमला—आश्लेषा नक्षत्र मे प्रथम रजोदर्शन से स्त्री परपुरुष गामिनी, दासी, क्रोधिनी, दया रहित, आलस्ययुक्त, झूठ बोलने वाली तथा दुष्ट सन्तान पैदा करने वाली होती हैं ॥ ११ ॥

निर्द्वेष्या रोगसंयुक्ता सर्वदा ज्ञेय[1] लोलुपा ।
पितृवेश्मरता मान्या पैतृभे प्रथमार्त्तवा ॥ १२ ॥

विमला—मघा नक्षत्र मे प्रथम आर्त्तव होने पर स्त्री वैर रहित, रोगिणी, ज्ञान से रहित, लोभ युक्त, पिता के घर मे रहने वाली तथा मनिनी होती है ॥ १२ ॥

परकार्यरतादीना दुष्पुत्रा क्लेशभागिनी ।
मालिनी कर्कशा क्रुद्धा भाग्यभे प्रथमार्त्तवा ॥ १३ ॥

विमला—मजदूरी करने वाली, दीन, बुरे पुत्रों वाली, कष्ट भोगने वाली, मलिन, कर्कशा तथा क्रोध से युक्त वह स्त्री होता है जिसका प्रथम आर्तव पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मे होता है ॥ १३ ॥

प्रजावती धर्मरता निर्वैरा मित्रपूजिता ।
सती मित्रगृहेसक्तार्यमर्क्षे(तु)रजस्वला[2] ॥ १४ ॥

---

१. 'सर्वदाज्ञा च लोलुपा' इति पाठ भेदः ।
२. 'सती मित्रगृहेसक्ता त्वार्यमर्क्षे रजस्वला' इति साधु पाठः ।

विमला—उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे यदि प्रथम आर्त्तव हो तो स्त्री, सन्तान वाली, धर्म निरत, वैर रहित, पूजनीया, सती तथा इष्ट सम्बन्धियों से प्यार (समादर) को प्राप्त करने वाली होती है ॥ १४ ॥

निर्द्वेष्या भूरिविभवा पुत्राढ्या भोगभोगिनी ।
प्रधाना दानकुशला हस्तर्क्षे प्रथमार्त्तवा ॥ १५ ॥

विमला—हस्त नक्षत्र मे प्रथम आर्त्तव होने से स्त्री द्वेषरहित, अधिक वैभव युक्त, पुत्रवती भोग भोगने वाली, दान करने मे कुशल प्रधान होती है ॥ १५ ॥

चित्रकर्मा भोगिनी च कुशला क्रयविक्रये ।
विकीर्णकामा सुश्लक्ष्णा त्वाष्ट्रभे प्रथमार्त्तवा ॥ १६ ॥

विमला—चित्रा नक्षत्र मे प्रथम आर्त्तव होने पर चित्रकारी मे निपुण, भोगवती, क्रयविक्रय कार्य मे कुशल, कार्य कुशल तथा सुन्दर एवं चतुर स्त्री होती है ॥ १६ ॥

वहुवित्तवती नस्यात्कुशला शिल्प कर्मणि ।
पुत्रपौत्रवती साध्वी वायुभे प्रथमार्त्तवा ॥ १७ ॥

विमला—स्वाती नक्षत्र मे जिस स्त्री को प्रथम आर्त्तव होता है वह बहुत धनवाली न हो तथा शिल्प कला मे चतुर पुत्र पौत्रों से युक्त तथा पतिव्रता होती है ॥ १७ ॥

नीचकर्मरता दुष्टा परसक्ता परप्रिया ।
विपुत्रा मलिना क्रुद्धा द्विदैवे प्रथमार्त्तवा ॥ १८ ॥

विमला—विशाखा नक्षत्र मे प्रथमार्त्तव होने से स्त्री नीचकर्म रत, दुष्टा, परसक्ता, परपुरुष की प्रिया, पुत्रहीन, मलीन तथा क्रोधी होती है ॥ १८ ॥

स्वामिपक्षार्चिता सौख्य[1]गुणैः सम्यग्विभूषिता ।
सुपुत्रा शुभदा कांता मित्रर्क्षे प्रथमार्त्तवा ॥ १९ ॥

विमला—अनुराधा नक्षत्र मे प्रथमार्त्तव होने से स्त्री पतिकुल से पूजित, सुखदायक, गुणवती, सत्सन्तान युक्त, पतिप्रिया, होती है ॥ १९ ॥

---

१. 'सस्यगुणैः' इति पाठान्तरम् ।

दुश्चरित्रा क्लेशिन्यार्त्तवा पुंश्चली व्यसुः ।
दुःसंतानवती ज्येष्ठानक्षत्रे प्रथमार्त्तवा ॥ २० ॥

विमला—ज्येष्ठा नक्षत्र मे जिस स्त्री को प्रथम रजोदर्शन होता है वह चरित्रहीना, दुःखी, कष्टार्त्तव युक्त, व्यभिचारिणी, शक्तिहीन, दुष्ट सन्तति वाली होती है। कष्टार्त्तव का तात्पर्य जिस स्त्री को मासिक धर्म के समय अत्यधिक पीड़ा होती ॥ २० ॥

संतानार्थगुणैरन्यैर्युक्तान्यक्लेशमोचिनी ।
स्वकर्मनिरता नित्यं मूलभे प्रथमार्त्तवा ॥ २१ ॥

विमला—मूल नक्षत्र मे प्रथम आर्त्तव होने से स्त्री सन्तान, धन, गुणादि से युक्त तथा दुःख को दूर करने वाली, अपने कर्म में तत्पर होती है ॥ २१ ॥

प्रच्छन्नपापा दुष्पुत्रा प्राणिहिंसनतत्परा ।
अजस्रव्यसना सक्ता तोयभे प्रथमार्त्तवा ॥ २२ ॥

विमला—पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में प्रथम आर्त्तव जिस स्त्री को होता है वह छिपकर पाप करने वाली, दुष्ट सन्तानवाली, जीव हिंसा करने वाली तथा निरन्तर व्यसन मे आसक्ता होती है ॥ २२ ॥

कार्याकार्येषु कुशला सदा धर्मानुवर्तिनी ।
गुणाश्रया भोगवती विश्वभे प्रथमार्त्तवा ॥ २३ ॥

विमला—उत्तराषाढ़ानक्षत्र में जिस स्त्री को सर्व प्रथम आर्त्तव होता है वह कार्य-अकार्य में कुशल, धर्माचरण करने वाली, गुणों से युक्त, भोगवती होती है ॥ २३ ॥

धनधान्यवती भोग पुत्रपौत्र-समन्विता ।
कुलानुमोदिनी मान्या विष्णुभे प्रथमार्त्तवा ॥ २४ ॥

विमला—श्रवण नक्षत्र में प्रथम आर्त्तव होने से स्त्री धनधान्य सम्पन्न, पुत्र पौत्रादिकों के भोग से युक्त, कुल को प्रसन्न रखने वाली तथा मान्या होती है ॥ २४ ॥

पुत्र पौत्रान्विता भोग धनधान्यवती सती ।
स्वकर्मनिरता मान्या वसुभे प्रथमार्त्तवा ॥ २५ ॥

विमला—धनिष्ठा नक्षत्र में यदि किसी स्त्री को प्रथम आर्त्तव हो तो वह पुत्र पौत्रादि संयुक्त, भोग एवं धन धान्य से पूर्ण, कार्य कुशल, तथा मान्या होती है ॥ २५ ॥

बहुपुत्रा धनवती स्वकर्मनिरता सती ।
कुलानुमोदिनी मान्या वारुणे प्रथमार्त्तवा ॥ २६ ॥

विमला—शतभिषा नक्षत्र में यदि प्रथमार्त्तव हो तो स्त्री बहुत सन्तान वाली, धनी, कार्य कुशल पतिव्रता, कुलीन तथा मान्या होती है ॥ २६ ॥

बंधकी बंधुविद्वेष्या नित्यं दुष्टरता खला ।
शिल्प कार्येषु कुशलाऽजांघ्रिभे प्रथमार्त्तवा ॥ २७ ॥

विमला—पूर्वाभाद्रपदानक्षत्र में प्रथम आर्त्तव हो तो स्त्री व्यभिचार रत. बन्धु द्वेषी, दुष्टों से रमण कराने वाली, दुष्टा, शिल्पकार्य में कुशल होतो है ॥ २७ ॥

आढ्या पुत्रवती मान्या सुप्रसन्ना पति प्रिया ।
बंधुपूज्या धर्मवत्यहिर्बुध्न्ये प्रथमार्त्तवा ॥ २८ ॥

विमला—उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में प्रथम रजोदर्शन होने से स्त्री धनी, सन्तानयुत माननीय, प्रसन्नचित्त, पतिप्रिया, बन्धुओं से पूजित, तथा धर्माचारिणी होती है । २८ ॥

दृढ़व्रताधर्मवती पुत्रसौख्यार्थ-संयुता ।
विशाखागुणसम्पन्ना पौष्णभे प्रथमार्त्तवा ॥ २९ ॥

विमला—रेवती नक्षत्र मे प्रथम रजोदर्शन जिस किसी स्त्री को होता है । वह स्त्री दृढ़व्रत-वाली, धर्मात्मा, पुत्र तथा धन सुख से युक्त एवं विशाखानक्षत्र में कहे गुणों से युत होती है ॥ २६ ॥

कुलीरवृषचापान्त्यनृयुक्कन्या तुलाधराः ।
राशयः शुभदाज्ञेया नारीणां प्रथमार्त्तवे ॥ ३० ॥

विमला—स्त्रियों के प्रथम आर्त्तव काल में कर्क, वृष, धनु, मीन, मिथुन, कन्या तथा तुला लग्न उत्तम होता है ॥ ३० ॥

तिथ्यर्क्षवार निंद्याश्चेत्सेककर्म न कारयेत् ।
दोषाधिक्ये गुणाल्पत्वे तथापि न च कारयेत् ॥ ३१ ॥

विमला—प्रथम आर्त्तव काल में यदि तिथि, वार, नक्षत्र ये तीनों निन्दित हों तो तथा च दोष अधिक और गुण स्वल्प हो तो अभिषेक कर्म (सेक कर्म) नहीं करना चाहिए ॥ ३१ ॥

दोषाल्पत्वे गुणाधिक्ये सेककर्म समाचरेत् ।
निंद्यर्क्षे तिथिवारेषु यत्रपुष्पं प्रदृश्यते ॥ ३२ ॥
तत्र शान्तिः प्रकर्त्तव्या घृतदूर्वातिलाक्षतैः ।
प्रत्येकमष्टशतं च गायत्र्या जुहुयात्ततः ॥ ३३ ॥

विमला—यदि दोष अल्प और गुण अधिक हो तो सेक कर्म (अभिषेक) करना चाहिए। निंदित नक्षत्र तथा तिथिवार होने से घी दूर्वा तिल और अक्षत से शान्ति के लिए प्रत्येक की १०८ आहुति गायत्री मन्त्र से देना चाहिए ॥ ३२–३३ ॥

स्वर्णगोभूतिलान्दद्यात्सर्वदोषापनुत्तये ।
भर्ता तस्यापि गमनं वर्जयेद्रक्त दर्शनात् ॥ ३४ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां प्रथमार्त्तवाध्यायः पञ्चदशः ।

विमला—सोना, गाय, भूमि, तिल आदि का यथा शक्ति दान करने से सभी प्रकार का दोष दूर होता है। सामान्य रजस्वला काल में पति को भा स्त्री गमन ४ दिन तक वर्जित है ॥ ३४ ॥

इति श्रीनारद संहिता की 'विमला' हिन्दीटीका में
प्रथमार्त्तवाध्याय समाप्त ।

अथ षोडशोऽध्यायः

रजोदर्शनतोऽस्पृश्या नार्यो दिनचतुष्टयम् ।
ततः शुद्धाक्रियाश्चैताःसर्वे वर्णेस्वयं विधिः ॥ १ ॥

अन्वयः—नार्यः, रजोदर्शनतः, दिनचतुष्टयं, अस्पृश्या, ततः शुद्धा क्रियाश्च । एता अयं विधिः सर्व वर्णेसु ।

विमला—रजस्वला होने से चार दिन तक स्त्री स्पर्श करने योग्य नहीं होती फिर बाद में अर्थात् पांचवें दिन शुद्ध होती है। यह नियम सभी वर्णों के लिए समान है ॥ १ ॥

ओजराश्यंशगे चन्द्रे लग्ने [1]सुग्रहविक्षिते ।
उपवीती युग्मतिथौ नग्नं[2] कामयेत्स्त्रियम् ॥ २ ॥

अन्वयः— सुगमम् ।

विमला—विषम राशि एवं विषमनवांश में चन्द्रमा हो तथा पुरुष ग्रह या शुभ ग्रह लग्न को देखते हों तो सम तिथियों मे स्त्री सम्पर्क करे किन्तु नग्न होकर स्त्री कामना न पूर्ण करे ॥ २ ॥

पुत्रार्थी पुरुषं त्यक्त्वा पौष्णमूलाहिपैतृभम् ।
युग्मेषु शशांके च लग्नेस्त्रीग्रहवीक्षिते ॥ ३ ॥

अन्वयः—पुत्रार्थी पौष्ण, मूल, अहि, पैतृभं, शशांके युग्मभेपु, स्त्री ग्रहवीक्षिते लग्ने च पुरुषं (न व्रजेत्) ।

विमला—पुत्र की अभिलाषावाली स्त्री रेवती, मूल, अश्लेषा, मघा इन नक्षत्रों में समराशि गत चन्द्रमा के होने पर और लग्न स्त्री ग्रहों से दृष्ट हो तो पति का संग न करे ॥ ३ ॥

[3]अयुग्मेदिवसे भार्या कन्यार्थी कामयेत्पतिः ।
निर्वीजानामिमे योगाः सर्वदा निष्फलप्रदाः ॥ ४ ॥

अन्वयः—कन्यार्थी भार्या अयुग्म दिवसे पतिः कामयेत् । इमे योगाः निर्वीजानां सर्वदा निष्फलप्रदाः ।

---

१. 'पुंग्रहाविक्षिते' इति पाठान्तरम् ।

२. 'सुस्नातां कामयेत्स्त्रियम्' इति पाठ भेदः ।

३. 'सुदुग्मे' इति मूल पाठः ।

विमला—रजस्वला होने के दिन से विषम तिथियों में कन्या की अभिलाषा से स्त्री पति का संग करे। जो पुरुष शक्तिहीन हैं उनके लिये ये सारे योग निष्फल हैं। उन्हें सन्तान नहीं हो सकती ॥ ४ ॥

पुंग्रहाः सूर्यभौमार्याः स्त्री ग्रहौ शशिभार्गवौ ।
नपुंसकौ सौम्यसौरी शिरोमात्रं विधुंतुदः ॥ ५ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां आधानाध्यायः षोडशः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्य मंगल और गुरुपुरुष ग्रह हैं तथा चन्द्रमा और शुक्र स्त्री ग्रह हैं। बुध और शनि नपुंसक तथा राहु का शिर मात्र नपुंसक कहा गया है ॥ ५ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
आधानाध्याय समाप्त ।

अथ सप्तदशोऽध्यायः

प्रसिद्धं विषमे गर्भे तृतीये वाथ मासि च ।
कुर्यात्पुंसवनं कर्म सीमन्तं च यथा तथा ॥ १ ॥[1]

इति श्री नारदीय संहितायां पुंसवनाध्यायः सप्तदशः ।

विमला—गर्भ के तीसरे महीने में या विषम (५, ७) मास में पुंसवन तथा सीमन्त कर्म करना चाहिए ॥ १ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
पुंसवनाध्याय समाप्त ।

१. इस अध्याय में मात्र एक श्लोक देकर अध्याय समाप्त किया है जो समझ में नहीं आरहा है किन्तु नारदसंहिता के अलग-अलग चार प्रतियों को देखने से सर्वत्र यही स्थिति मिली ।

अथाष्टादशोऽध्यायः

चतुर्थेमासि षष्ठे वाप्यष्टमे वा तदीश्वरे ।
बलसम्पन्नदंपत्योश्चन्द्रताराबलान्विते ॥ १ ॥
अरिक्ता पर्वदिवसे कुजजीवार्कवासरे ।
तीक्ष्णमिश्रोग्र वर्जेषु पुंसंज्ञभांशके शशी ॥ २ ॥
शुद्धेऽष्टमे जन्मलग्नात्तयोर्लग्ने न नैधने ।
शुभग्रहयुते दृष्टे पापखेटयुतेक्षिते ॥ ३ ॥
मासेऽष्टके चतुर्भिर्वा दृष्टेऽर्के बीजपूरकैः ।
स्त्रीणांतु प्रथमे गर्भे सीमन्तोन्नयनं शुभम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चौथे, छठवें या आठवें महीने में जब मासाधिपति बल सम्पन्न हों तथा स्त्री पुरुष का चन्द्रमा और तारा अनुकूल हो, रिक्ता, अमावास्या, मंगल, गुरु तथा रविवार के अतिरिक्त तिथि एवं दिनों में । तीक्ष्ण नक्षत्र (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा) मिश्र नक्षत्र (विशाखा, कृत्तिका), उग्र नक्षत्र (पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, भरणी, मघा,) इनको छोड़ कर शेष नक्षत्रों मे, पुरुष संज्ञक राशिनवांश पर चन्द्रमा के होने पर, लग्न तथा अष्टम शुद्ध हो तथा इनपर शुभ ग्रहों की जब दृष्टि हो, आठवाँ महीना हो और पूर्णबली चार ग्रहों से सूर्य दृष्ट हो तब स्त्रियों का प्रथम गर्भ सम्बन्धी सीमन्त कर्म करना अत्यन्त शुभदायक होता है ॥ १–४ ॥

शुभग्रहेषु धीधर्मकेन्द्रेष्वरिभवे त्रिषु ।
पापेषु सत्सु चंद्रेन्त्य निधनाद्यारि वर्जिते ॥ ५ ॥

विमला—केन्द्र (१, ४, ७, १०) पंचम तथा नवम स्थान मे शुभ ग्रह बैठे हों । षष्ठ, ग्यारह और तृतीय भाव में पाप ग्रह बैठे हों तथा चन्द्रमा लग्न, अष्टम और द्वादश भाव में न हो तो सीमन्त कर्म करना शुभद होता है ॥ ५ ॥

क्रूरग्रहाणामेकोऽपिलग्नादंत्यात्मजाष्टगाः ।
सीमंतिनीनां सद्गर्भं वलोहन्ति न संशयः ॥ ६ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां सीमन्तोन्नयनाध्यायः अष्टादशः ।

विमला—क्रूर ग्रहों में यदि एक भी ग्रह लग्न से वारहवें, पांचवें, आठवें स्थान में हो तो स्त्रियों के उत्तम गर्भ को नष्ट करता है क्योंकि वह बली होता है ॥ ६ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
सीमन्तोन्नयनाध्याय समाप्त ।

अथोनविंशोऽध्यायः

तस्मिञ्जन्म मुहूर्त्तेऽपि सूतकान्तेऽपि वा शिशोः ।
जातकर्म प्रकर्त्तव्यं पितृपूजनपूर्वकम् ॥ १ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां जातकर्माध्याय एकोनविंशतितमः ।

अन्वयः—शिशोः तस्मिन् जन्म मुहूर्तेऽपि सूतकान्तेऽपि वा, पितृ पूजन पूर्वकं जात कर्म प्रकर्त्तव्यम् ।

विमला—जन्म होते ही अथवा सूतक समाप्ति के बाद पितरों का पूजनादि कार्य सम्पन्न करके शिशु का जातकर्म संस्कार करना चाहिए ॥ १ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
जातकर्माध्याय समाप्त ।

अथ विंशोऽध्यायः

सूतकान्ते नामकर्म विधेयं स्वकुलोचितम् ।
नामपूर्वं प्रशस्तं स्यान्मङ्गलैश्च शुभाक्षरैः ॥ १ ॥

अन्वयः—सूतकान्ते स्वकुलोचितं नाम कर्म विधेयम् । नामपूर्वं मङ्गलैश्च शुभाक्षरैः (नाम कर्म) प्रशस्तं स्यात् ॥

विमलाः—सूतक (१० दिन) के वाद अपने कुल परम्परा के अनुसार नामकर्म संस्कार करना चाहिए । नाम का प्रथमाक्षर शुभ मांगलिक रखना उत्तम होता है ॥ १ ॥

देशकालोपयाताद्यैः कालातिक्रमणं यदि ।
अनस्तगे भृगाविज्ये तत्कार्यं चोत्तरायणे ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि देशकालोपयाताद्यैः कालातिक्रमणं (तदा) भृगौ, इज्ये अनस्तगे उत्तरायणे च तत्कार्यं विधेयम् ।

विमलाः—यदि देश कालोपयादिवश अर्थात् किसी भी परिस्थिति वश सूतकान्त मे नामकर्म संस्कार न हो सके तो शुक्र और बृहस्पति के उदितावस्था एवं उत्तरायण में करना चाहिए ॥ २ ॥

चरस्थिर-मृदुक्षिप्रनक्षत्रे शुभवासरे ।
चन्द्रतारावलोपेते दिवसे च शिशोः पिता ॥ ३ ॥
शुभलग्ने शुभांशे च नैधने शुद्धिसंयुते ।
लग्नेन्त्यनैधने सौम्ये संयुते वा निरीक्षिते ॥ ४ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां नामकरणाध्यायो विंशतितमः ।

अन्वयः—चर, स्थिर, मृदु, क्षिप्र नक्षत्रे, शुभवासरे, चन्द्रतारा वलोपेते दिवसे, शुभ लग्ने शुभांशे नैधने शुद्धि संयुते च लग्ने-अन्त्ये नैधने सौम्ये संयुते निरीक्षिते वा (नामकरणं) कर्त्तव्यम् ।

विमला—चरनक्षत्र (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्टा, शतभिषा), स्थिर नक्षत्र (तिनों उत्तरा, रोहिणी), मृदु नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती,

चित्रा, अनुराधा) और क्षिप्रनक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित) में शुभ दिन (गुरु शुक्र चन्द्र बुध) में जब चन्द्रमा तथा तारा वली हो, शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में अष्टम शुद्ध लग्न में लग्न द्वादश तथा अष्टम में शुभ ग्रह के योग या दृष्टि समय में पिता अपने नवजात शिशु का नामकरण संस्कार सम्पन्न करे ॥ ३-४ ।

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
नामकरणाध्याय समाप्त ।

अथैकविंशोऽध्यायः

षष्ठे [1]मास्यष्टमेवापि पुंसां स्त्रीणां तु पञ्चमे।
सप्तमे मासि वा कार्यं [2]नवान्नप्राशनं शुभम् ॥ १ ॥

अन्वयः—पुंसां षष्ठे अष्टमे वापि मासे स्त्रीणां तु पंचमे सप्तमे वा मासि नवान्न प्राशनं शुभम्।

विमला—लड़कों का अन्नप्राशन छठें या आठवें महीने में तथा लड़कियों का अन्नप्राशन पांचवें या सातवें महीने में करना शुभ होता है ॥ १ ॥

[3]रिक्तां दिनक्षयं नन्दा द्वादशीमष्टमीममाम्।
त्यक्त्वान्यतिथयः श्रेष्ठाः प्राशने शुभवासरे ॥ २ ॥

अन्वयः—प्राशने रिक्तां, दिनक्षयं (तिथिक्षयमित्यर्थः) नन्दा (तिथि) द्वादशो, अष्टमी, अमां त्यक्त्वा अन्यतिथयः शुभवासरे श्रेष्ठाः।

विमला—अन्नप्राशन मे तिथिक्षय, रिक्तातिथि ;(४, १४, ९) नन्दा तिथि (१, ६, ११) द्वादशी अष्टमी और अमावास्या के अतिरिक्त तिथियों में शुभ दिन में अन्नप्राशन शुभ होता है ॥ २ ॥

चरस्थिरमृदुक्षिप्रनक्षत्रे शुभनैधने।
दशमे शुद्धिसंयुक्ते शुभलग्ने शुभांशके ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—चर-स्थिर, मृदु, क्षिप्र नक्षत्रों मे अष्टम और दशम भाव शुद्ध हो तथा शुभलग्न और शुभ ग्रहों का नवांश हो तो अन्नप्राशन करना शुभ होता है ॥ ३ ॥

---

१. 'षष्ठमास्यष्टमे' इति पाठान्तरम्।

२. नवान्न का तात्पर्य ग्रन्थकार का प्रथम अन्नप्राशन से ही है। नये अन्न से नहीं।

३. 'रिक्ता' इति मूल पाठः।

पूर्वाह्णे सौम्यखेटेन संयुक्ते वीक्षितेऽपि वा[1] ।
त्रिषष्ठलाभगैः क्रूरैः केन्द्रधीधर्मगैः शुभैः ॥ ४ ॥

अन्वयः—पूर्वाह्णे, सौम्यखेटेन संयुक्ते वा विक्षितेऽपि (लग्ने) क्रूरैःत्रि-षष्ठ-लाभगैः शुभैः केन्द्र धी धर्मगैः (अन्न प्राशनं शुभम्)।

विमला—१२ बजे से पहले शुभ ग्रहों से युक्त या इष्ट लग्न में जब लग्न से तृतीय षष्ठ और एकादश मे क्रूर ग्रह बैठे हों तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) पंचम और नवम स्थान मे शुभग्रह हों तो अन्नप्राशन करना शुभ दायक होता है ॥ ४ ॥

व्ययारिनिधनस्थेन चन्द्रेण प्राशनं शुभम्।
अन्नप्राशन लग्नस्थे क्षीणेन्दौ वास्तनीचगे ॥ ५ ॥
नित्यभोक्तुश्च दारिद्रयं रिष्फषष्ठाष्टगेऽपि वा ॥

इति श्रीनारदीय संहितायामन्नप्राशनाध्याय एकविंशतितमः ।

अन्वयः—व्ययारि निधनस्थेन चन्द्रेण प्राशनं शुभम् न (भवति)। अन्न प्राशन लग्नस्थे, क्षीण, अस्त, नीचगे, रिष्फ, षष्ठ, अष्टमेऽपि वा इन्दौ नित्यभोक्तुश्च दारिद्र्यं लभते ।

विमला—बारहवें, आठवें और छठें चन्द्रमा मे अन्नप्राशन शुभ नहीं होता है। तथा अन्नप्राशन लग्न मे क्षीण चन्द्रमा, अस्तंगत चन्द्रमा या नीच राशिगतचन्द्रमा बैठा हो अथवा चन्द्रमा ६, ८, १२ मे हो तो अन्नप्राशन करने वाला नित्य दरिद्र होता है। अर्थात् उसकी दरिद्रता दूर नहीं होती ॥ ५ ॥

इति श्रीनारद संहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
अन्नप्राशनाध्याय समाप्त ।

---

१. 'शुक्लपक्षे च पूर्वाह्णे सौम्ययुक्त निरीक्षिते' इति पीयूषधारा टीकायां नारद वचनम् । उल्लिखितम् ।

अथ द्वाविंशोऽध्यायः

तृतीये पंचमाब्देवा स्वकुलाचारतोऽपि वा।
बालानां जन्मतः कार्यं चौलमावत्सरत्रयात् ॥ १ ॥

अन्वयः—बालानां चौलं जन्मतः आवत्सर त्रयात् तृतीये पंचमाब्दे वा स्वकुलाचारतोऽपि वा कार्यम्।

विमला—बालकों का चौलकर्म (मुण्डन) जन्म से तीन वर्ष से लेकर तृतीय या पंचम वर्ष में अथवा अपने कुल के आचार के अनुसार करना चाहिए ॥ १ ॥

सौम्यायने नास्तगयोरसुरासुरमंत्रिणेः।
अपर्वरिक्ततिथिषु शुक्रेज्ज्येन्दुवासरे ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—उत्तरायण सूर्य हो गुरु और शुक्र अस्त न हों, पूर्णिमा, रिक्ता, से वर्जित तिथि तथा शुक्र, बुध और गुरुवार तथा चन्द्रवार को मुंडन संस्कार (चौलकर्म) करना चाहिए ॥ २ ॥

दस्रादितीज्य चन्द्रेन्द्रपूषा भानि शुभान्यतः।
चौलकर्मणि हस्तर्क्षात्त्रीणि त्रीणिच विष्णुभात् ॥ ३ ॥
पट्टबंधनचौलान्नप्राशने चोपनायने।
शुभदं जन्मनक्षत्रमशुभं त्वन्यकर्मणि ॥ ४ ॥

अन्वयः—चौलकर्मणि दस्र, अदिति, इज्य, चन्द्र, इन्द्र, पूषा हस्तर्क्षात् त्रीणि, विष्णुभात् च त्रीणि भानि शुभानि पट्टबन्धन, चौल, अन्नप्राशन उपनायने च जन्मनक्षत्रं शुभदं। अन्यकर्मणि तु अशुभदम्।

विमला—चौलकर्म संस्कार मे दस्र (अश्विनी) अदिति (पुनर्वसु) इज्य (पुष्य) चन्द्र (मृगशिरा) इन्द्र (ज्येष्ठा) पूषा (रेवती) ये नक्षत्र तथा हस्त से तीन नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती) और श्रवण से तीन नक्षत्र (श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) तक शुभ है।

चौलकर्म, पट्टबन्धन, अन्नप्राशन उपनयन इनमे जन्मनक्षत्र शुभ तथा अन्य कर्मों मे अशुभ समझना चाहिए ।। ३-४ ।।

अष्टमे शुद्धि-संयुक्ते शुभलग्ने शुभांशके ।
न नैधने भे शीतांशौ षष्ठेन्त्ये[1] तु विवर्जयेत् ।। ५ ।।

अन्वयः—अष्टमे शुद्धि संयुक्ते, शुभलग्ने, शुभांशके, न नैधने भे षष्ठेन्त्ये तु शीतांशौ विवर्जयेत् ।

विमला—शुभ लग्न एवं शुभनवांशक में तथा शुभ एवं पाप ग्रह से रहित जब अष्टम भाव हो, निधन राशि न हो एवं ६, ८, १२, में चन्द्रमा न हो तो चौलकर्म करना शुभदायक होता है ।। ५ ।।

धनत्रिकोणकेन्द्रस्थैः शुभैस्त्र्यायारिगैः परैः ।
अभ्यक्ते सन्ध्ययोर्नाते निशि भोक्तुर्न चाहवे ।। ६ ।।

अन्वयः—धनत्रिकोण केन्द्रस्थैः शुभैः, परैः त्र्यायारिगैः, अभ्यक्ते (क्षौरंकार्यम्) । निशि, आहवे सन्ध्ययोः भोक्तुः, अन्ते च न ।

विमला—२, ६, ५, १, ४, ७, १० इन स्थानों में शुभग्रह । ३, ६, ११ में पापग्रह के होने पर तेल लगाकर क्षौर कर्म कराना चाहिए । सन्ध्याकाल में, भोजन के बाद, रात्रि में तथा युद्ध में क्षौर नहीं कराना चाहिए ।। ६ ।।

नोत्कटे भूषिते नैव न याने नवमेऽह्नि च ।
क्षौरकर्म महीशानां पञ्चमे पञ्चमेऽहनि ।। ७ ।।
कर्त्तव्यं क्षौरनक्षत्रे अथवास्योदयेष्टदं ।
नृपविप्राज्ञया यज्ञे मरणे वाद, मोक्षणे[2] ।
उद्वाहेऽखिल वारर्क्षतिथिषु क्षौर मिष्टदम् ।। ८ ।।

इति श्रीनारदीय संहितायां चौलाध्यायो द्वाविंशतितमः ।

अन्वयः—उत्कटे न, भूषिते नैव, याने न । नवमेऽह्नि, पंचमेऽहनि च महीशानां क्षौर कर्म न । क्षौर नक्षत्रे अथवा इष्टदस्योदये (क्षौर)

---

१. 'षष्ठाष्टे, इति मूल पाठः ।

२. 'वन्दिमोक्षणे, इति मूल पाठः ।

कर्त्तव्यम्। नृप, विप्र, आज्ञया, यज्ञे, मरणे, वादमोक्षणे (वन्दीगृहात निःसरिते सति) उद्वाहे, अखिल, वार, ऋक्ष तिथिषु क्षौरं इष्टदम्।

विमला—स्वरूप विकृत करके अर्थात् क्रोधावस्था में, सजधज कर तथा सवारी पर बैठकर क्षौर कर्म नहीं करना चाहिए। राजाओं को नवें दिन तथा पांचवें दिन क्षौर कर्म नहीं कराना चाहिए। केवल क्षौर में विहित वार नक्षत्र तिथि में ही क्षौरकर्म करना चाहिए। ब्राह्मण तथा राजा की आज्ञा प्राप्त कर, यज्ञ में, मरण में, वन्दीगृह से निकलने वर विवाह में चाहे जो भी तिथिवार नक्षत्र हो क्षौर कर्म कराना शुभद होता है॥ ७-८॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
चौलाध्याय समाप्त।

अथ त्रयोऽविंशोध्याय

कर्त्तव्यं मङ्गलेष्वादौ मङ्गलेषु[1] करार्पणम् ।
नवमे सप्तमे मासि पञ्चमे दिवसेऽपि वा ॥ १ ॥
तृतीये वीजनक्षत्रे शुभवारे शुभोदये ।
[2]सम्यग्गृहाण्यलंकृत्य वितानध्वजतोरणैः ॥ २ ॥

अन्वयः—मङ्गलेषु आदौ तृतीये, पञ्चमे, सप्तमे, नवमे मासि दिवसे अपि वा वीजनक्षत्रे शुभवारे, शुभोदये वितानध्वज तोरणैः सम्यक् गृहाणि अलंकृत्य अंकुरार्पणं कर्त्तव्यम् ।

विमला—मंगलकृत्यों के पूर्व ३, ५, ७, ९ महीनों में दिन में वीजारोपण मुहूर्त मे कहे गये नक्षत्रों मे, शुभ दिन को शुभ लग्न मे चांदनी, ध्वजा और तोरणादि के द्वारा घर को सुन्दर सजाकर अंकुरार्पण करना चाहिये ॥ १–२ ॥

आशिषो वाचनं कार्यं पुण्यं पुण्याङ्गनादिभिः ।
महावादित्र नृत्याद्यैर्गताः प्रागुत्तरां दिशम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—पुण्याङ्गनादिभिः पुण्यं आशिषो वाचनं कार्यम् । महावादित्र नृत्याद्यैः प्रागुत्तरां दिशम् गताः ।

विमला—सौभाग्यवती स्त्रियों एवं ब्राह्मणों के द्वारा मङ्गलगीत एवं स्वस्तिवाचन कराते हुए वाद्य से युक्त हर्ष पूर्णनृत्यादि करते पूर्व उत्तर दिशा के मध्य (ईशानकोण) मे जाय ॥ ३ ॥

तत्र मृत्तिसकतां श्लक्ष्णां गृहीत्वा पुनरागतः ।
मृन्मयेष्वथवा वैणवेसु पात्रेषु पूरयेत् ॥
अनेक वीजसंयुक्तं तोयं पुष्पोपशोभितम् ॥ ४ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां मङ्गलाङ्कुरार्पणं नामत्रयोविंशतितमः ।

---

१. 'मंगलेष्वंकुरार्पणम् 'इति पाठ भेदः ।

२. 'सभ्यागृहाणि' इति पाठान्तरम् ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—वहाँ से सिकतामिट्टी जो उत्तम हो लेकर लौटे और किसी मिट्टी के पात्र (गमले) अथवा बाँस के बने पात्र मे उसे भरदे । तदनन्तर उसके अन्दर मांगलिक बीजों को अङ्कुरित होने के लिए बोवे और जल छिड़क कर पुष्प से शुभोभित कर रख दे ।। ४ ।।

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
अङ्कुरार्पणाध्याय समाप्त ।

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः

आधानादष्टमे वर्षे जन्मतो वाग्रजन्मनाम् ।
राज्ञामेकादशे मौञ्जी बन्धनं द्वादशे विशाम् ॥ १ ॥

अन्वयः—आधानात् जन्मतो वा अग्रजन्मनां अष्टमे, राज्ञां एकादशे, विशां द्वादशे वर्षे मौंजी बन्धनम् (कार्यम्) ।

विमला—जन्म से या आधान काल (गर्भाधान) से ब्राह्मणों का ८ वें वर्ष, क्षत्रियों का ग्यारहवें वर्ष और वैश्यों का बारहवें वर्ष में व्रत-बन्ध (उपनयन) करना चाहिए ॥ १ ॥

[1]आजन्मात्पञ्चमे वर्षे वेदशास्त्रविशारदः ।
उपनीतो यतः [2]श्रीमान् कार्यं तत्रोपनायनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—यतः आजन्मात् पंचमे वर्षे उपनीतः वेदशास्त्रविशारदः, श्रीमान् (अतः) तत्र उपनायनम् (कार्यम्) ।

विमला—जन्म से पांचवें वर्ष में उपनयन संस्कार होने से श्रीमान् तथा वेदशास्त्र का विशारद होता है अतः इस प्रकार की अभिलाषा रखकर पांचवे वर्ष मे उपनयन संस्कार कराना चाहिए ॥ १२ ॥

बालस्य बलहीनोऽपि शान्त्या जीवो बलप्रदः ।
यथोक्तवत्सरे कार्यमनुक्ते नोपनायनम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सरलम् ।

विमला—बृहस्पति यदि बालक का दुर्बल हो न बनता हो तो शान्ति कराकर कहे गये वर्षों में ही उपनयन संस्कार करना चाहिए । अर्थात् उपनयन मे वर्ष की प्रधानता महर्षिनारद जी ने माना है ॥ ३ ॥

---

१. 'आजनेः' इति पाठान्तरम् ।

२. आपस्तम्ब वचनं विश्व प्रकाश पद्धतौ-'पञ्चमे विद्यापुत्रकामः, षष्टे च धन कामः, सप्तमे ब्रह्म वर्चसकामोष्टमेत्वायुष्कामो, नवमे तेजस्कामः दशमेऽन्नायकामः, एकादशे इन्द्रियकामो, द्वादशेपशुकामः, त्रयोदशेः जयकामश्चतुर्दशे पौरुष कामः। पञ्चदशे पूर्णकामः षोडशे राज्यकामः'' इति ।

दृश्यमाने गुरौशुक्रे दिनेशे चोत्तरायणे ।
वेदानामधिपा जीवशुक्रभौमवुधाः क्रमात् ॥ ४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गुरु और शुक्र का उदयकाल हो, सूर्य उत्तरायण का हो तो उपनयन संस्कार करना चाहिए। ऋग्, यजुः, साम और अथर्व वेद के क्रमशः गुरु, शुक्र, मंगल और बुध अधिपति हैं ॥ ४ ॥

शरद्ग्रीष्म वसन्तेषु व्युत्क्रमात्तु द्विजन्मनाम् ।
मुख्यं साधारणं तेषां तपो मासादि पंचसु ॥ ५ ॥

अन्वयः—द्विजन्मनां शरद्-ग्रीष्म-वसन्तेषु व्युत्क्रमात् मुख्य। तपोमासादि पंचसु तेषां साधारणम् ।

विमला—मुख्यरूप से शरद् ऋतु में वैश्यों को ग्रीष्मऋतु मे क्षत्रियों को और वसन्त ऋतु में ब्राह्मणों को उपनयन संस्कार करना चाहिए। सामान्यतया माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ मास मे द्विजाति मात्र को उपनयन करना चाहिए ॥ ५ ॥

स्वकुलाचारधर्मज्ञो माघमासे तु फाल्गुने ।
विधिज्ञो ह्यर्थवांश्चैत्रे वेदवेदाङ्ग पारगः ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्वकुलाचार धर्मज्ञः माघमासे, विधिज्ञः अर्थवान् फाल्गुने, वेद वेदाङ्गपारगः चैत्रे ।

विमला—अपने कुल के आचार धर्म का ज्ञाता माघ मास में। विधि का जानकार तथा धनवान् फाल्गुन मे एवं वेद वेदांग पारंगत होने के अभिलाषी चैत्र में उपनयन संस्कार कराते हैं ॥ ६ ॥

वैशाखेधनवान्वेदशास्त्र-विद्याविशारदः ।
उपनीतो बलाढ्यश्च ज्येष्ठे विधिविदां वरः ॥ ७ ॥

अन्वयः—वैशाखे उपनीतः धनवान् वेद शास्त्र विद्या विशारदः ज्येष्ठे उपनीतः विधि विदांवरः बलाढ्यश्च ।

विमला—वैशाख में उपनयन करने से धनी, वेद शास्त्र तथा विद्या विशारद एवं ज्येष्ठ मे उपनयन से विधिवेत्ता तथा बलशाली होता है ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षे द्वितीया च तृतीया पञ्चमी तथा ।
त्रयोदशी च दशमी सप्तमी व्रतबन्धने ॥ ८ ॥
श्रेष्ठात्वेकादशी षष्ठी द्वादश्येतास्तु मध्यमाः ।
एका चतुर्थी संत्याज्या कृष्णपक्षे च मध्यमाः ॥ ९ ॥
आपञ्चम्यास्तु तिथयः पराः स्युरतिनिंदिताः ।

अन्वयः—शुक्लपक्षे द्वितीया, तृतीया, पंचमी च तथा त्रयोदशी, दशमी सप्तमी च व्रतबन्धे श्रेष्ठा । एकादशी, षष्ठी, द्वादशी एतास्तु मध्यमा । कृष्णपक्षे आपंचम्यास्तु तिथयः मध्यमा (तत्र) एका चतुर्थी संत्याज्या । परा अनिन्दिताः स्युः ।

विमला—शुक्रपक्ष की द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी और त्रयोदशी तिथियाँ उपनयन में श्रेष्ठ । षष्ठी, एकादशी और द्वादशी मध्यम तिथियाँ हैं । कृष्णपक्ष मे चतुर्थी को छोड़कर सभी तिथियां पंचमी तक मध्यम तथा अन्य त्याज्य हैं ॥ ८-९ ॥

श्रेष्ठान्यर्कत्रयांत्येज्य रुद्रादित्युत्तराणि च ॥ १० ॥
विष्णुत्रयाश्वमित्राज योनिभान्युपनायने ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, पुष्य, आर्द्रा, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी अनुराध और पूर्वाभाद्रपदा ये नक्षत्र उपनयन संस्कार में शुभद कहे गये हैं ॥ १० ॥

जन्मभाद्दशमं कर्मसंघातर्क्षं च षोडशम् ।
अष्टादशं सामुदायं त्रयोविंशं विनाशनम् ॥
मानसं पंचविंशर्क्षे नाचरेच्छुभमेवतु[1] ॥ १२ ॥

अन्वयः—जन्मभात् दशमं षोडशं च ऋक्षं कर्मसंघात (संज्ञकं) अष्टादशं सामुदायं, त्रयोविंशं विनाशनम् , पञ्चविंशर्क्षेमानसम् , (तत्र) शुभं न आचरेत् ।

विमला—जन्म नक्षत्र से दशवाँ और सोलहवाँ नक्षत्र कर्मसंघात-नक्षत्र, अठारहवाँ सामुदायक, तेइसवाँ विनाशन और पचीसवाँ मानस संज्ञक है इनमें उपनयन निषेध है ॥ १२ ॥

---

१. 'शुभमेवयत्' इति मूल पाठः ।

आचार्यसौम्यकाव्यानां वाराः शस्ताः शशीनयोः ।
वारौतौ मध्यफलदावितरौ निन्दितौ व्रते ॥ १३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गुरु, वुध और शुक्रवार-शुभ फलदायक हैं, सोमवार, रवि-वार मध्यम फलद हैं और अन्यवार (मंगल, शनि) उपनयन संस्कार में निन्दित हैं ॥ १३ ॥

त्रिधाविभज्य दिवसं तत्रादौ कर्मदैविकम् ।
द्वितीये मानुषं कार्यं तृतीयांशे च पैतृकम् ॥ १४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—दिनमान का तृतीयांश भाग प्रथम देवकर्म के लिए, द्वितीय तृतीयांश मानुष कर्म के लिए तथा तृतीय तृतीयांश पितृ कर्म के लिए, उत्तम होता है ॥ १४ ॥

स्वनीचगे तदंशेवा स्वारिभे वा तदंशके ।
गुरौ भृगौ च शाखेशे कुलशीलविवर्जितः ॥ १५ ॥
स्वाधिशत्रुगृहस्थे वा तदंशस्थेऽथवा व्रती ।
शाखेशे वा गुरौ शुक्रे महाघातककृद्भवेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—गुरौ, भृगौ, शाखेशे च स्वनीचगे, तदंशे वा स्वारिभे वा तदंशके कुलशील विवर्जितः । स्वाधिशत्रुगृहस्थे वा तदंशस्थे शाखेशे गुरौ वा शुक्रे महाघातक कृद्भवेत् ।

विमला—उपनयन संस्कार के समय गुरु शुक्र या शाखेश यदि अपनी नीचराशि मे या नीचराशि नवांश में, अपनी शत्रुराशि मे या शत्रुराशि नवांश मे हों तो उपनीत जातक कुलशील से रहित होता है । यदि गुरु शुक्र और शाखेश अपने अधिशत्रु के गृह या नवांश में हों तो उपनीत बालक महाघातकी होता है ॥ १५-१६ ॥

स्वोच्चसंस्थे तदंशे वा स्वराशौ राशिगे गणे ।
शाखेशे वा गुरौ शुक्रे केन्द्रगे वा त्रिकोणगे ॥ १७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अपनी उच्चराशि, मे स्थित, उच्चराशिनवांश मे स्थित,

अपनी राशि मे तथा राशिनवांश मे स्थित शाखेश वा गुरु शुक्र के केन्द्र और त्रिकोण मे स्थित होने पर उपनयन शुभ होता है ॥ १७ ॥

अतीवबलवांश्चैव वेदवेदाङ्गपारगः ।
परमोच्चगते जीवे शाखेशे वाथवा सिते ॥ १८ ॥
व्रती शिशुर्धनाढ्यश्च वेदशास्त्रविशारदः ।
मित्रराशिगतेर्जीवे तदंशे वा स्वराशिगे ॥ १९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पूर्वश्लोक की स्थिति होने पर यदि उपनयन संस्कार होवे तो जातक उत्पन्न बल शाली तथा वेद वेदाङ्ग का ज्ञाता होता है। शाखेश वा गुरु अथवा शुक्र के परमोच्च राशिपर होने से व्रती बालक धनी तथा वेद शास्त्र का विशारद होता है। गुरु मित्र राशि का हो या मित्रनवांश अथवा स्वराशि का हो तथा (अग्रिम श्लोक से सम्बन्ध है) ॥ १४-१६ ॥

शुक्रे वाचार्यसंयुक्ते तदा तत्र व्रतीशिशुः ।
स्व स्वमित्रगृहस्थेवा तस्योच्चस्थे तदंशके ॥ २० ॥
गुरौ भृगौवा शाखेशे विद्याधनसमन्वितः ।

विमला—शुक्र और गुरु का एक राशि गत योग हो इस स्थिति मे उपनीत शिशु विद्या धन से युक्त होता है। अपने २ मित्र गृह मे स्थित अथवा मित्र राशि के उच्च या नवांश में यदि गुरु शुक्र और शाखेश हों तो विद्याधन से व्रती पूर्ण होता है ॥ २० ॥

शाखाधिपतिवारश्च शाखाधिपबलं शिशो ।
शाखाधिपतिलग्नं च दुर्लभं त्रितयं व्रते ॥ २१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—शाखाधिपति का दिन, बालक के लिए शाखाधिपतिका बल तथा शाखाधिपति का लग्न ये तीनों बाते व्रतबन्ध में दुर्लभ हैं ॥ २१ ॥

तस्माच्छुभांशगे चन्द्रे व्रती विद्याविशारदः ।
पापेष्टगे स्वांशगे वा दरिद्रो नित्यदुःखितः ॥ २२ ॥

अन्वयः—तस्मात् चन्द्रे शुभांशगे व्रती विद्या विशारदः भवेत्। पापेष्टगे वा स्वांशगे तदाव्रती नित्य दुःखितः दरिद्रो भवेत्।

विमला—अतः चन्द्रमा शुभ राशिनवांश का होने से व्रती विद्या विशारद होता है और यदि पाप ग्रह अष्टमस्थान में हों तथा अपनी राशि के नवांश में हों तो व्रती बालक दरिद्र होता है तथा नित्य दुःखी रहता है ॥ २२ ॥

श्रवणादिति नक्षत्रे कर्क्यंशस्थे निशाकरे।
[1]सदाव्रती वेदशास्त्रधनधान्यसमृद्धिमान् ॥ २३ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—श्रवण, और पुष्य नक्षत्र हो, कर्कराशि नवांश का चन्द्रमा हो तो ऐसी स्थिति में उपनीत बालक वेदशास्त्र धनधान्यादि की समृद्धि से युक्त रहता है ॥ २३ ॥

शुभलग्ने शुभांशे च नैधने शुद्धिसंयुते।
लग्नेत्वनैधने सौम्यैः संयुक्ते वा निरीक्षिते ॥ २४ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—शुभ लग्न तथा नवांश हो अष्टम शुद्ध हो अथवा अष्टम में शुभ ग्रह का योग या शुभग्रह की दृष्टि हो ॥ २४ ॥

दृष्टैर्जीवार्कचन्द्राद्यैः पंचभिर्बलिभिर्ग्रहैः।
स्थानादिबलसम्पूर्णैश्चतुर्भिर्वा समन्वितैः ॥ २५ ॥

विमला—गुरु, सूर्य चन्द्रमा आदि बलवान पांच शुभ ग्रहों से दृष्ट, स्थानादिबल से पूर्ण या चार शुभ ग्रहों से संयुक्त ॥ २५ ॥

ईक्षिते वा चैकविंशन्महादोष विवर्जिते।
राशयः सकलाः श्रेष्ठा शुभ ग्रहयुतेक्षिताः ॥ २६ ॥

विमला—(४ शुभ ग्रहों से संयुक्त) या दृष्ट हो अथवा २१ महा-दोषों (संक्रान्ति गन्डान्तादि) से रहित तथा सभी राशियाँ जो शुभ ग्रहों से युत हों या दृष्ट हों, शुभ फलद होती हैं ॥ २६ ॥

---

१. 'तदाव्रती' इति मूल पाठः।

शुभा नवांशाश्च तथा गृह्यास्ते शुभराशयः ।
पापग्रहस्य लग्नांशः शुभेक्षितयुतोऽपि वा ॥ २७ ॥

अन्वयः—ते शुभ राशयः तथा शुभानवांशाश्च गृह्याः वा पाप ग्रहस्य लग्नांशः शुभेक्षित युतः अपि गृह्याः ।

विमला—शुभ राशियों का नवांशक भी शुभ होता है तथा पाप ग्रहों का नवांश यदि शुभ ग्रहसे युत या दृष्ट हो तो शुभ होता है ॥२७॥

तस्माद्गोमिथुनांत्याश्च तुलाकन्यांशकाः शुभाः ।
एवं विधे लग्नगते नवांशे व्रतमीरितम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—तस्मात् गो, मिथुन, अन्त्य, तुला, कन्या अंशकाः शुभाः । एवं विधे लग्नगते नवांशे (वा) व्रतमीरितम् ।

विमला—अतएव वृष, मिथुन, मीन, तुला और कन्या के नवांशक शुभ होते हैं । इस प्रकार के शुभ लग्न या शुभ लग्न के नवांश में उपनयन संस्कार करना चाहिए ॥ २८ ॥

त्रिषडायगतैः पापैः षडष्टांत्यविवर्जितैः ।
शुभैः षष्ठाष्टलग्नांत्य वर्जितेन हिमांशुना ॥ २९ ॥

अन्वयः—पापैः त्रिषडाय गतैः, शुभैः षडष्टांत्य विवर्जितैः । षष्टाष्ट लग्नांत्य हिमांशुनावर्जितेन ।

विमला—पापग्रह ३, ६, ११, मे स्थित हों, शुभग्रह ६, ८, १२ में न हों तथा चन्द्रमा १, ६, ८, १२ में न हो तो उपनयन शुभ होता है ॥ २९ ॥

स्वोच्चसंस्थोऽपि शीतांशुर्व्रातिनो यदिलग्नगः ।
तं करोति शिशुं निःस्वं सततं क्षयरोगिणम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—शीतांशुः स्वोच्च संस्थः अपि व्रातिनो यदि लग्नगः । तं शिशुं निःस्वं सततं क्षयरोगिणं च करोति ।

विमला—अपनी उच्चराशि का होने पर भी यदि चन्द्रमा उपनयन संस्कार वाले बालक के लग्न में हो तो उसे निरन्तर दरिद्र और क्षय रोग से युक्त करता है ॥ ३० ॥

स्फूर्जितं केन्द्रगेभानौ व्रतिनो वंशनाशनम् ।
कूजितं केन्द्रगे भौमे शिष्याचार्यविनाशनम् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—उपनयन संस्कार के समय केन्द्र मे सूर्य हो और मेघ की गर्जना सुनाई पड़े तो व्रती के वंश का नाश होता है, तथा केन्द्र में मंगल हो और उपनयन के समय पक्षियों का कलरव सुनाई दे तो शिष्य तथा आचार्य का नाश होता है ॥ ३१ ॥

करोति रुदितं केन्द्रसंस्थे मंदेऽतुलान् गदान् ।
लग्नात्केन्द्रगते राहौ रंध्रे मातृविनाशनम् ।
उग्रकेन्द्रगते केतौ तातवित्तविनाशनम् ।
पंच[1]दोषैर्युतं लग्नं शुभदं नोपनायने ॥ ३२ ॥

अन्वयः—मंदे केन्द्र संस्थे रुदितं अतुलान् गदान् करोति । राहौ लग्नाकेन्द्रगते रध्रे वा मातृ विनाशनम् केतौ उग्रकेन्द्र गते तात वित्त विनाशनं (करोति) । पंचदोषैर्युतं लग्नं उपनायने शुभदं न ।

विमला—शनि केन्द्र में हो और उपनयनकाल मे रुलाई सुनाई दे तो रोग प्रद, केन्द्र मे राहु या अष्टम राहु (७ मे विशेष) मातृकष्टकारक उग्र केन्द्र मे केतु के होने पर पिता को कष्ट तथा धन की हानि करता है अत एव पांच दोषों से युत लग्न में उपनयन करना शुभद नहीं होता है ॥ ३२-३३ ॥

विना वसन्तऋतुना कृष्णपक्षे गलग्रहे ।
अनध्यायोपनीतश्च पुनः संस्कारमर्हति ॥ ३४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—वसन्त ऋतु से अतिरिक्त ऋतु मे, कृष्णपक्ष मे तथा गल ग्रहयोग में एवं अनध्याय में उपनयन संस्कार करने से पुनः संस्कार करना पड़ता है । अतः इनमें उपनयन संस्कार नहीं करना चाहिए ॥ ३४ ॥

---

१. 'पंचदोसेतरं लग्नं शुभदं नोपनायने' इति मूल पाठः । 'पञ्चदोषेतरं लग्नं शुभदं चोपनायने' इति साधु पाठः ।

त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्यादि दिनत्रयम् ।
चतुर्थी चैकतः प्रोक्ता ह्यष्टावेते गलग्रहाः ॥ ३५ ॥

इति श्री नारदीयसंहितायां उपनयनाध्यायश्चतुर्विंशतितमः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या और प्रतिपदा, सप्तमी, अष्टमी और नवमी, तथा चतुर्थी ये ८ तिथियाँ गलग्रह योग संज्ञक हैं ॥ ३५ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
उपनयनाध्याय समाप्त ।

अथ पञ्चविंशोऽध्यायः

छुरिकाबन्धनं वक्ष्ये नृपाणां प्राक्करग्रहात् ।
विवाहोक्तेषु मासेषु शुक्लपक्षेऽप्यनस्तगे ॥ १ ॥
शुक्रेजीवे च भूपुत्रे चन्द्रतारा बलान्विते ।
[1]मौंजीबन्धर्क्षतिथिषु कुजवर्जितवासरे ॥ २ ॥

अन्वयः—नृपाणां करग्रहात्प्राक् छुरिका बन्धनं वक्ष्ये । विवाहोक्तेषु मासेषु, शुक्लपक्षे शुक्रे जीवे भू पुत्रे च अनस्तगे चन्द्रतारा बलान्विते मौंजीबन्धर्क्षतिथिषु कुजवर्जित वासरे छुरिकाबन्धनं शुभम् ।

विमला—विवाह से पहले राजाओं के छुरिकाबन्धन का मुहूर्त बतला रहे हैं। विवाह के महीनों में शुक्लपक्ष में, गुरु शुक्र और मंगल के उदय काल में चन्द्रतारा के बलवान होने पर उपनयन में कहे गये नक्षत्रों एवं तिथियों में मंगल से अतिरिक्त दिनों में ॥ १–२ ॥

तेषां[2] लग्नोदये कर्तुरष्टमोदय वर्जिते ।
शुद्धेऽष्टमे [3]तिथौलग्नात्षडष्टांत्यविवर्जिते ॥ ३ ॥[4]

विमला—पूर्वोक्त प्रकार से शुद्ध लग्न में कर्त्ता की जन्मराशि से अष्टम ग्रह रहित तथा वर्तमान लग्न से अष्टम भाव की शुद्धि होने पर अर्थात् भाव में चन्द्रमा के न रहने पर तथा लग्न से ६, ८, १२ में चन्द्रमा के न रहने पर ॥ ३ ॥

धनत्रिकोणकेन्द्रस्थैः शुभैस्त्र्यायारिगैः परैः ।
छुरिकाबन्धनं कार्यमर्चयित्वामरान्पितृन्[5] ॥ ४ ॥

विमला—शुभ ग्रह जब २, ५, ९, १, ४, ७, १० स्थानों में और पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों में हों तो देवताओं तथा पितरों का सविधि पूजन कर छुरिकाबन्धन करना चाहिए ॥ ४ ॥

---

१. 'मौञ्जीबन्धन ऋक्षेषु भौमवर्जित वासरे, इति पीयूषधारायाम् ।
२. 'व्रत' इति पाठान्तरम् ।
३. 'विधौ' इति मूल पाठः ।
४. 'धन त्रिकोणगैः सौम्यैः पापैर्भवरिपुत्रिगैः' इति पाठान्तरम् पीयूषे ।
५. 'सुरान्पितृन्' इति पाठभेदः ।

अर्चयेत्क्षुरिकां सम्यक् देवतानां च सन्निधौ ।
[1]तत्तं सुलग्ने बध्नीयात् कट्यां लक्षणसंयुताम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—देवताओं का पूजन करने के बाद देवताओं के सामने सम्यक् प्रकार से छुरिका का पूजन कर सुन्दरलग्न में लक्षणों से युक्त छुरिका को कमर में बांधना चाहिए ॥ ५ ॥

तस्यास्तुलक्षणं वक्ष्ये यदुक्तं ब्रह्मणा पुरा ।
संमितं छुरिकायामविस्तारेणैवताडयेत् ॥ ६ ॥

विमला—जैसा पहले ब्रह्माजी ने कहा है उस लक्षण को कहते हैं। अपने इष्ट (इच्छा) के अनुसार लम्बा चौड़ा पीटकर उस लोहे को कर ले ॥ ६ ॥

भाजितं गजसंख्यैश्च [2]अंगुलीन्परिकल्पयेत् ।
आयामार्द्धाग्रविस्तार प्रमाणेनैव छेदयेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—गज संख्यैश्च भाजितं अंगुलीन्परिकल्पयेत् । आयामार्द्धाग्र विस्तार प्रमाणेन एव छेदयेत् ।

विमला—लोहे को पीटकर इक्षित लम्बाई चौड़ाई का चिन्ह करदे और उसे नापकर आठ का भाग दे दे तथा लम्बाई के आधे लम्बा तथा चौड़ाई के आधे भाग के बराबर उसका अग्र भाग (नोक) चिन्हित कर काट लें ॥ ७ ॥

तच्छेदखंडान्यायाः स्युर्ध्वजाये रिपुनाशनम् ।
धूम्रांये मरणं सिंहे [3]जयश्चाश्वे निरोगिता ॥ ८ ॥
धनलाभो वृषेत्यन्तं दुःखी भवति गर्दभे ।
गजायेऽत्यन्तसंप्रीतिर्ध्वांक्षेवित्तविनाशनम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

---

१. 'ततः' इति पाठान्तरम् ।
२. 'ह्यङ्गुलीः' इति पाठान्तरम् ।
३. 'जयश्चाय' इतिपाठान्तरम् ।

विमला—पुनः उस कटे लौह भाग से आय (पिण्ड) साधन करे। इस आठ प्रकार के आय का फल क्रमशः इस प्रकार समझना चाहिए। ध्वज आय मे शत्रुका नाश, धूम्र आय आने पर मरण, सिंह आय में विजय, अश्व आय में निरोगिता, वृष आय में धन का लाभ, गर्दभ आय में अत्यन्त दुःख, गज आय में अत्यन्त प्रीति, और ध्वांक्ष (या काक) आय होने पर विनाश होता है ॥ ८–९ ॥

खड्गपुत्रिकयोर्मानं गणयेत्स्वाङ्गुलेन तु।
मानाङ्गुले तु पर्यायानेकादशमितांस्त्यजेत् ॥ १० ॥
शेषाणामङ्गुलानां च फलानि स्युर्यथाक्रमात्।
पुत्रलाभः शत्रुवृद्धिः स्त्रीलाभो गमनं शुभम् ॥ ११ ॥
अर्थहानिश्चार्थवृद्धिः प्रीतिः सिद्धिर्जयःस्तुतिः॥
धूमगर्द्धभयोर्नैव व्रणं श्रेयोंत्यभागकम् ॥ १२ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां छुरिका वन्धनाध्यायः पञ्चविंशतितमः।

अन्वयः—स्वाङ्गुलेन तु खड्गपुत्रिकयोर्मानं गणयेत्। मानांगुले एकादश मितान् पर्यायान् त्यजेत्। शेषाणामंगुलानां यथाक्रमं फलानि स्युः। यथा पुत्रलाभः, शत्रुवृद्धिः स्त्रीलाभो, गमनं, शुभम्, अर्थहानिः, अर्थवृद्धि, प्रीतिः, सिद्धिः, जयः, स्तुतिः, धूमगर्द्धभयोर्नैव व्रणं अन्त्य भागकं श्रेयः।

विमला—तलवार या छुरिका को अपने अंगुलमान से नाप कर उसमें ११ का भाग दे दे। शेष १ हो तो पुत्र लाभ, २–शत्रुवृद्धिः, ३–स्त्रीलाभ, ४–गमन (यात्रा), ५–शुभ, ६–अर्थहानि, ७–अर्थवृद्धिः, ८–प्रीति, ९–सिद्धि, १०–जय, ११ स्तुति। इसमे धूम (२) अधम, गर्द्धभ (६) व्रण तथा अन्त्य भाग में कल्याण होता है ॥ १०–१२ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
छुरिकाबन्धनाध्याय समाप्त।

अथ षड्विंशोऽध्यायः

अथोत्तरायणे शुक्रजीवयोर्दृश्यमानयोः ।
द्विजातीनां गुरोर्गेहान्निवृत्तानां यतात्मनाम् ॥ १ ॥

अन्वयः—अथ गुरोर्गेहात्, निवृत्तानां, यतात्मनां, द्विजातीनां शुक्र-जीवयोः दृश्यमानयोः, दृश्यमानयोः, उत्तरायणे (समावर्तनं शुभम्) ।

विमला—गुरु के गृह में अध्ययन रत ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को गुरु शुक्र के उदयकाल में उत्तरायण होने पर समावर्तन संस्कार करना उत्तम होता है ॥ १ ॥

[1]चित्रोत्तरादितीज्यान्त्य हरिमैत्रेंदुभात्रिषु ।
भेष्वर्केन्द्वीज्य शुक्रज्ञवारलग्नांशकेषु च ॥ २ ॥

अन्वय—अति सुगमम् ।

विमला—चित्रा, तीनो उत्तरा, अदिति (पुनर्वसु) इज्य (पुष्य) रेवती, श्रवण, अनुराधा, मृगशिरा, आर्द्रा पुनर्वसु, रवि, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र और बुध इन दिनों में तथा इनके राशिनवांशकों में भी समावर्त्तन उत्तम होता है ॥ २ ॥

अथवा [2]वस्त्र नक्षत्र वार लग्नांशकेष्वपि ।
[3]प्रतिपत्सर्वरिक्तामा [4]अष्टमी च दिनत्रयम् ॥
हित्वान्य दिवसे कार्यं समावर्तन [5]मंडनम् ॥ ३ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां समावर्त्तनाध्यायः षड्विंशतितमः ।

---

१. 'चित्रोत्तरा दितीज्येन्दु हरि मित्र विधातृषु' इति पीयूषधारायाम् ।
२. 'अथवावस्था नछत्र' इति मूल पाठः ।
३. 'प्रतिपत्पर्व रिक्तामा' इति पाठ भेदः ।
४. 'सप्तमीतो' इति पाठान्तरम् ।
५. 'मुंडनम्' इति पीयूषधारायाम् ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अथवा वस्त्रधारण नक्षत्र दिन तथा लग्न नवांशकों में समावर्तन संस्कार करना चाहिए। प्रतिपद्, संक्रान्ति, रिक्तातिथि, अमावास्या, अष्टमी, नवमी, दशमी को छोड़कर समावर्तन और सजावट का कार्य करना चाहिए ॥ ३ ॥

विशेष नोट—श्लोक की प्रथम पंक्ति का अर्थ कहीं वस्त्रधारण नक्षत्र तो कहीं यात्रा नक्षत्र आदि विभिन्न दिया गया है। वास्तविकता यह है कि एक नकार के छूट जाने से ही यह भ्रम है। यदि 'अथवावस्थान नक्षत्र वार लग्नांश के स्वपि' इस प्रकार शुद्ध करलें तो अल्प प्रयास में अर्थ संगति भी ठीक हो सकती है। समावर्तन का सम्बध घरको आना या घर में लौटना भी होता है जो गृह प्रवेश से है अतः गृह प्रवेश में उल्लिखित नक्षत्र वार लग्न लग्ननवांश आदि में भी समावर्तन संस्कार करना शुभ होता है ॥ ३ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
समावर्तनाध्याय समाप्त ।

अथ सप्तविंशोऽध्यायः

सर्वाश्रमाणामाश्रेयं गृहस्थाश्रममुत्तमम् ।
[1]यतस्तदपि योषायां शीलवत्यां स्थितस्ततः ॥ १ ॥
तस्यास्तच्छीललब्धिस्तु सुलग्नवशतःखलु ।
पितामहोक्तां संवीक्ष्य लग्नशुद्धिं प्रवच्म्यहम् ॥ २ ॥

अन्वयः—यतः सर्वाश्रमाणां गृहस्थाश्रमं उत्तमं आश्रेयं तदपि शीलवत्या योसायां स्थितः खलु तस्याः तत्शील लब्धिस्तु सुलग्न वशतः (अतः) पितामहोक्तां लग्नशुद्धिं संवीक्ष्य अहम् प्रवच्मि ।

विमला—यतः सभी (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास) आश्रमों में उत्तम गृहस्थाश्रम ही सबका आधार है फिर भी वह शीलवती गृहिणी के आश्रित है । 'भार्या च प्रियवादिनी' । और उस गृहिणो का शीलवती होना अच्छेलग्न के प्रभाव से सम्बन्ध रखता है अतएव ब्रह्मा के द्वारा कही लग्न शुद्धि को कहता हूँ ॥ १-२ ॥

पुण्येऽह्नि लक्षणोपेतं सुखासीनं सुचेतसम् ।
प्रणम्य देववत्पृच्छेद्दैवज्ञं भक्तिपूर्वकम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—शुभलक्षणों से युक्त शुभ दिन में स्वस्थचित्त हो आनन्द से बैठे हुए ज्योतिषीको देवता की भाँति (दण्डवत्) प्रणाम कर भक्ति पूर्वक प्रश्न करे ॥ ३ ॥

तांबूलफलपुष्पाद्यैः पूर्णाञ्जलिरूपाग्रतः ।
कर्तानिवेद्य दंपत्योर्जन्मराशिं स जन्मभम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—प्रश्नकर्ता पान, फल और फूल तथा द्रव्यपूर्ण अंजलि को आगे कर प्रथम ज्योतिषी को देवे, तदनन्तर स्त्री और पुरुष की जन्म राशि तथा जन्म नक्षत्रादि (जन्म पत्री मिलान के लिए) बतलावे ॥ ४ ॥

---

१. 'यतः सोऽपि च' इति पाठ भेदः ।

पृच्छकस्य भवेल्लग्नादिन्दुः षष्ठाष्टगोऽपि वा ।
दंपत्योर्मरणं वाच्यमष्टमर्क्षान्तरे यदि ॥ ५ ॥

अन्वयः—पृच्छकस्य लग्नात् (प्रश्न लग्नात्) इन्दुः षष्ठ अपि वा अष्टगः यदि (तदा) दंपत्योः मरणं वाच्यम् । (लग्नात्) अष्टमर्क्षान्तरे (चन्द्रे) अपि वा दंपत्योर्मरणं वाच्यम् ।

विमला—प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न लग्न से छठे या आठवें स्थान में चन्द्रमा हो अथवा प्रश्न नक्षत्र से आठवें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो स्त्री पुरुष दोनों की मृत्यु होगी, ऐसा कहना चाहिए ॥ ५ ॥

[1]यदि लग्नगतश्चन्द्रस्तस्मात्सप्तमगः कुजः ।
विज्ञेयं भर्तृमरणंत्वष्टमेऽब्दे न संशयः ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—यदि चन्द्रमा प्रश्न लग्न में हो और सप्तम मंगल हो तो आठवें वर्ष में पति की मृत्यु निःसन्देह होगी ऐसा समझना चाहिए ॥ ६ ॥

लग्नात्पंचमगः पापः शत्रुदृष्टः स्वनीचगः ।
मृतपुत्रा तु सा कन्या कुलटा न तु संशयः ॥ ७ ॥

विमला—लग्न से पंचम स्थान में पापग्रह शत्रु ग्रह से इष्ट अपनी नीच राशिका हो तो वह स्त्री मृतवत्सा होती है तथा व्यभिचारिणी होती है ॥ ७ ॥

तृतीय पञ्चसप्तायकर्मगश्च निशाकरः ।
लग्नात्करोति सम्बन्धं दंपत्योर्गुरुवीक्षितः ॥ ८ ॥

विमला—३, ५, ७, ११ तथा दशवें स्थान में चन्द्रमा हो और गुरु से दृष्ट हो तो सम्बन्ध (वैवाहिक सम्बन्ध) उत्तम होता है । ८ ॥

तुलागो कर्कटे लग्ने संस्थाः शुक्रेन्दु संयुताः ।
वीक्षिताः स्त्रीग्रहा नृणां कन्या लाभो भवेत्तदा ॥ ९ ॥

---

१. 'यदि लग्नगतः क्रूरः' इति पाठान्तरम् । पीयूषधारा टीकायां नारद वचनोदाहरणे ।

अन्वयः—तुला, गो, कर्कटे, लग्ने स्त्रीग्रहा संस्थाः शुक्र, इन्दु संयुता वीक्षिता (त्रा) तदा नृणां कान्यालाभो भवेत् ।

विमला—तुला कर्क या वृष लग्न हो उसमें स्त्री ग्रह बैठे हों तथा शुक्र और चन्द्रमा से युत या दृष्ट हों तो मनुष्य को कन्या का लाभ अवश्य होता है ॥ ९ ॥

शुक्रेन्दू युग्मराशिस्थौ युग्मांशकगतौ तदा ।
वलिनौ वीक्षितौ[1] लग्नं कन्यालाभो भवेत्तदा ॥ १० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—प्रश्न समय मे शुक्र और चन्द्रमा समराशि मे तथा समराशि नवमांश में हों और पूर्ण वली हो लग्न को देखते हों तो कन्या लाभ होता है ॥ १० ॥

स्त्रीनिवासो युग्म लग्नं यदि चेत्स्यात्समागमः ।
वीक्षितश्चन्द्र शुक्राभ्यां कन्या लाभो भवेत्तदा ॥ ११ ॥[2]

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सप्तम भाव में समराशि हो और उसमें चन्द्रमा तथा शुक्र का योग या इसकी दृष्टि हो तो कन्या लाभ होता है ॥ ११ ॥

अयुग्म राशिगौ चेत्तौ शुक्रेन्दू वलिनौ तथा ।
पश्यतो लग्नमेतौ चेद्वरलाभो भवेत्तदा ॥ १२ ॥[3]

विमला—यदि शुक्र और चन्द्रमा विषम राशि में हों और बलवान हों तथा लग्न को देखते हों तो कन्या को वर का लाभ होता है ॥१२॥

एवं स्त्रीणां भर्तृलब्धिः पुंग्रहैरवलोकिते ।
कृष्णपक्षे प्रश्नलग्नाद्युग्म राशौ शशी यदि ॥
पापदृष्टेऽथ वा रन्ध्रे न संबन्धो भवेत्तदा ॥ १३ ॥

---

१. 'पश्यतो' इति पाठान्तरम् ।

२. यह श्लोक नारद संहिता के सभी प्रतियों में नहीं है ।

३. यह श्लोक नारद संहिता के मूल प्रति में नहीं मिलता है ।

अन्वयः—एवं पुंग्रहै अवलोकिते स्त्रीणां भर्तृ लब्धिः भवेत्। कृष्ण पक्षे प्रश्न लग्नात् यदि युग्मराशौ शशी पापदृष्टे अथवा रन्ध्रे तदा सम्बन्धो न भवेत्।

विमला—इस तरह पुरुष ग्रहों द्वारा देखे जाने पर स्त्री को पति का लाभ कहना चाहिए। कृष्णपक्ष में प्रश्न लग्न से सम राशि में चन्द्रमा हो या अष्टम में हो गया हो या पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो सम्बन्ध नहीं होता ॥ १३ ॥

पुण्यैर्निमित्त शकुनैः प्रश्नकाले तु मङ्गलम्।
दम्पत्योरशुभैरेतैरशुभं सर्वतो भवेत् ॥ १४ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां विवाह प्रश्न लग्नाऽध्यायः सप्तविंशतितमः।

अन्वय—सुगमम्।

विमला—यदि शुभ शकुन हो तो कार्य की सिद्धि और अशुभ शकुन होने पर कार्य की हानि होती है ॥ १४ ॥

इति श्री नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
विवाह प्रश्नलग्नाध्याय समाप्त।

अथ अष्टाविंशोऽध्यायः

पंचाङ्गशुद्धिदिवसे चन्द्रतारावलान्विते ।
विवाहभस्योदये वा कन्यावरणमिष्यते ॥ १ ॥

अन्वयः—चन्द्रतारावलान्विते पंचाङ्ग शुद्धि दिवसे, विवाह भस्योदये वा कन्या वरणं इष्यते ।

विमला—चन्द्रतारा जब बली हो ऐसे पंचाङ्ग शुद्धि दिन अथवा विवाहोक्त नक्षत्र तथा लग्न में कन्या का वरण करना उत्तम होता है।

भूषणैः पुष्पताम्बूलैः फलगन्धाक्षतादिभिः ।
(शुभ्रा) शुक्लाम्बरैर्गीत वाद्यैर्विप्राशिर्वचनैः सह ॥ २ ॥
कारयेत्कन्यकागेहे वरः[1] प्रणव पूर्वकम् ।
तदा कुर्यात् पिता तस्याः प्रदानं प्रीतिपूर्वकम् ॥ ३ ॥

अन्वय—सुगमम् ।

विमला—आभूषण, पुष्प, पान, फल गंधाक्षत आदि के साथ सुन्दर वस्त्रादि से अलंकृत गीत वाद्य के साथ एवं स्वतिवाचन पूर्वक कन्या के घर जाकर वर का पिता प्रीति पूर्वक कन्या वरण करे और तदनन्तर कन्या का पिता प्रीति पूर्वक कन्यादान करे ॥ २–३ ॥

कुलशील-वयोरूप-वित्तविद्यायुताय च ।
वराय रूप संपन्नां कन्यां दद्यात्यवीयसीम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—कुल, शील, वय, रूप, धन और विद्या से युक्त वर के लिए वयः प्राप्त रूप सम्पन्न कन्या का दान करे ॥ ४ ॥

संपूज्य प्रार्थयित्वा तां शचीं देवीं गुणाश्रयाम् ।
त्रैलोक्यसुन्दरीं दिव्यां गन्धमाल्याम्बरावृताम् ॥ ५ ॥
सर्वलक्षणसंयुक्तां सर्वाभरणभूषिताम् ।
अनर्घ्यं मणिमालाभिर्भासयन्तीं दिगन्तराम् ॥ ६ ॥

---

१. 'वरणं प्रीति पूर्वकम्' इति पाठान्तरम् ।

विलासिनीसहस्राद्यैः सेव्यमानामहर्निशम् ।
एवं विधां कुमारीं तां पूजान्ते प्रार्थयेदिति ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गुणों की आश्रय इन्द्राणी देवो की पूजा कर प्रार्थना करे। त्रैलोक्य सुन्दरी, दिव्या गन्ध-माल्य, वस्त्रादि से आवृत, सभी लक्षणों से युक्त, सर्वाभरण भूषिता, बहुमूल्य मणि मालाओं से दिगन्त को प्रकाशित करने वाली हजारों दिव्याङ्गनाओं से पूजिता तथा अहर्निश वन्दिता कुमारी की पूजा कर अन्त में प्रार्थना करे ॥ ५-७ ॥

देवीन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्र प्रियभाषिणी ।
विवाहं भाग्यमारोग्यं पुत्रलाभं च देहि मे ॥ ८ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां कन्यावरणाऽध्यायोऽष्टाविंशतितमः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—हे देवि ! हे इन्द्राणि ! हे देवेन्द्र प्रिय भाषिणी तुमको नमस्कार है। हे देवि तुम विवाह, सौभाग्य, आरोग्य तथा पुत्रलाभ मुझे दो ॥ ८ ॥

इति श्री नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
कन्यावरणाध्याय समाप्त ।

अथ एकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः

युग्मेब्दे जन्मतः स्त्रीणां प्रीतिदं पाणिपीडनम् ।
एतत्पुंसामयुग्मेऽब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः ॥ १ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—जन्म से समवर्षों में स्त्री का तथा विषमवर्षों में पुरुष का विवाह शुभ होता है। इसके विपरीत (कन्या का विषम और वर का सम) होने से दोनों का नाश होता है।

माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासाः शुभप्रदाः ।
मध्यमः कार्तिको मार्गशीर्षो वै निन्दिताः परे ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम्

विमला—माघ, फाल्गुन, वैशाख, और ज्येष्ठ मास विवाह में शुभ प्रद। कार्तिक, मार्गशीर्ष मास मध्यम और शेष मास अधम (अशुभ) होता है।

न कदाचिद्दशर्क्षेषु भानोरार्द्राप्रवेशनात् ।
विवाहं देवतानां च प्रतिष्ठां चोपनायनम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—भानोरार्द्रा प्रवेशनात्, दशर्क्षेषु कदाचित् विवाहं, देवतानां प्रतिष्ठां उपनायनं च न (कुर्यात्) ।

विमला—सूर्य के आर्द्रा प्रवेश होने पर आर्द्रा से १० नक्षत्र तक विवाह, देव प्रतिष्ठा तथा उपनयन कभी नहीं करना चाहिए।

नास्तंगते सितेजीवे न तयोर्बालवृद्धयोः ।
न गुरौ सिंहराशिस्थे सिंहांशकगतेऽपि वा ॥ ४ ॥

अन्वयः—सिते, जीवे अस्तंगते न तयोः वालवृद्धयोः न, सिंह राशिस्थे गुरौ, सिंहांशक गते अपि वा (गुरौ) न (कुर्यात्)।

विमला—शुक्र और गुरु के अस्तकाल में या इनके वाल वृद्ध काल में तथा जब गुरु सिंह राशि या सिंह नवांशक में हो तो भी विवाहादि मांगलिक कार्य नहीं करना चाहिए।

पश्चात् प्रागुदितः शुक्रः पञ्च सप्तदिनं शिशुः ।
अस्तकाले तु वृद्धत्वं तद्वदेव गुरोरपि ॥ ५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—शुक्र के उदय होने पर बाल दोष तथा अस्त समय वृद्ध दोष होता है। पश्चिम में उदय होने पर ७ दिन तथा पूर्व में ५ दिनतक बालत्वदोष रहता है इसी प्रकार पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में ७ दिन तक वृद्धत्व दोष होता है. इसी तरह गुरु के बालत्व वृद्धत्व को भी समझना चाहिए।

अप्रबुद्धो हृषीकेशो यावत्तावन्न मङ्गलम् ।
उत्सवे वासुदेवस्य दिवसे नान्यमङ्गलम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—जब तक हरिशयन दोष हो तब तक मङ्गल कार्य नहीं करना चाहिए। देवोत्थानी एकादशी के दिन भी विवाहादि माङ्गलिक कार्य नहीं करना चाहिए।

न जन्ममासेजन्मर्क्षे न जन्मदिवसेपि च ।
नाद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—आद्यगर्भसुतस्य अथ दुहितुर्वा करग्रहम् जन्म मासे न जन्मर्क्षे न जन्मदिवसे अपि च न ।

विमला—प्रथमगर्भोत्पन्न लड़का या लड़की का विवाह उसके जन्म मास, जन्म नक्षत्र और जन्म दिन को नही करना चाहिए।

नैवोद्वाहो ज्येष्ठपुत्रीपुत्रयोश्च परस्परम् ।
ज्येष्ठमासजयोरेकज्येष्ठे मासे हि नान्यथा ॥ ८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—जेठी सन्तान अर्थात् लड़की जेठी हो और लड़का भी अपने मां बाप का जेठा हो तो दोनों का परस्पर विवाह नहीं करना चाहिए तथा ज्येष्ठ मास में उत्पन्न सन्तान का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

उत्पात ग्रहणादुर्ध्वं सप्ताहमखिलग्रहे ।
नाखिले त्रिदिनं मात्र[1] तदानेष्टं[2] ऋतुत्रयम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—उत्पात, ग्रहे अखिल ग्रहणात्, उर्ध्वं सप्ताहम् । न अखिले मात्रत्रिदिनं ऋतु (उत्पातेऽपि) (दिन) त्रयम् नेष्टम् ।

विमला—वज्रपातादि उत्पात तथा सर्वग्रास ग्रहण के ७ दिन बाद तक तथा खण्डग्रास ग्रहण और ऋतुकाल के उत्पात में ३ दिन बाद तक विवाहादि शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ।

ग्रस्तास्ते त्रिदिनं पूर्वं पश्चात् ग्रस्तोदये तथा ।
सन्ध्याकाले त्रित्रिदिनं निःशेषे सप्त सप्त च ॥ १० ॥

अन्वयः—ग्रस्तास्ते पूर्वं तथा ग्रस्तोदये पश्चात् त्रिदिनं, सन्ध्याकाले (पश्चात् पूर्वं च) त्रित्रिदिन निःशेषे च (पश्चात् पूर्वं च) सप्त सप्त (दिनानि विवाहादि मङ्गलं निषिद्धम्) ।

विमला—ग्रस्तास्त ग्रहण के ३ दिन पूर्व, ग्रस्तोदय ग्रहण के ३ दिन बाद, सन्ध्याकालीन ग्रहण में ३ दिन पहले और ३ दिन बाद तथा सामान्य स्थिति में ७ दिन पहले तथा ७ दिन बाद तक विवाहादि मङ्गल कार्य नहीं करना चाहिए ।

मासान्ते पञ्चदिवसांस्त्यजेद्रिक्तां तथाष्टमीम् ।
षष्ठीं च परिघाद्यर्द्धं व्यतीपातं सवैधृतिम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—मासान्ते पञ्चदिवसां, रिक्ता, अष्टमीम् षष्ठीं परिघार्द्धं च तथा सवैधृतिम् व्यतीपातं (च) त्यजेत् ।

विमला—मासान्त का ५ दिन, रिक्ता, अष्टमी और षष्ठी तिथि, परिघयोग का पूर्वार्द्ध और वैधृति तथा व्यतिपात को विवाहादि सभी मङ्गल कार्यों में त्याग देना चाहिए ।

[3]पौष्णधात्र्युत्तरामैत्रमरुच्चन्द्रार्कं पैतृभम् ।
[4]समूलभैरविद्धैव स्त्री करग्रह इष्यते ॥ १२ ॥

---

१. 'चर्क्षं' । २. 'तथा नेष्टं' इति पाठान्तरम् ।
३. 'पौष्णमत्र्युत्तरा' इति पाठान्तरम् ।
४. 'समूलभं विधेभं च' इति पाठान्तरम् । 'समूलभैरविद्धैस्तैः स्त्रीकरग्रह इष्यते' इति पीयूषधारायाम् ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—वेध रहित रेवती, रोहिणी, तीनों उत्तरा, अनुराधा, स्वाती, मृगशिरा, हस्त, मघा और मूल इन नक्षत्रों में विवाह करना चाहिए ।

विवाहे बलमावश्यं दम्पत्योर्गुरुसूर्ययोः ।
तत्पूजा यत्नतः कार्या दुष्फलप्रदयोस्तयोः ॥ १३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—विवाह में स्त्री के लिए गुरु का बल तथा पुरुष के लिए सूर्य का बल आवश्यक है । अतः इसका विचार कर यदि गुरु और सूर्य न बनते हों तो उनके अनिष्ट फल को दूर करने के लिए शान्ति कराना चाहिए ॥ १३ ॥

गोचरं वा वेधजं चाष्टकवर्गरूपजं बलम् ।
यथोत्तरं बलाधिक्यं स्थूलं गोचरमार्गजम् ॥ १४ ॥

विमला—गोचर बल, वेध बल और अष्टक वर्ग बल ये तीनों उत्तरोत्तर बली होते हैं । गोचर स्थूल है ।

चन्द्रताराबलं वीक्ष्य ग्रहपश्वांगजं बलम् ।
तिथिरेक गुणा वारो द्विगुणस्त्रिगुणं च भम् ॥ १५ ॥

विमला—चन्द्रताराबल ग्रहबल, पशु आदि का शकुन बल, तथा अङ्गस्फुरण का बल देखना चाहिए । तिथि एक गुण फल, वार द्विगुण फल, नक्षत्र त्रिगुण फल दायक होता है ॥ १५ ॥

योगश्चतुर्गुणः पञ्चगुणं तिथ्यर्ध संज्ञकम् ।
ततो मुहूर्त्तो बलवाँस्ततो लग्नं बलाधिकम् ॥ १६ ॥

विमला—योग चतुर्गुण, करण पांच गुना, मुहूर्त्त (दुघड़िया) छ गुना, तथा लग्न सात गुना बलवान होता है । अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त्त और लग्न ये उत्तरोत्तर बलवान होते हैं ॥१६॥

ततोऽति बलिनी होरा द्रेष्काणोतिबली ततः ।
ततो नवांशो बलवान् द्वादशांशो बली ततः ॥ १७ ॥
त्रिशांशो बलवांस्तस्माद्वीक्ष्यते तद्बलाबलम् ।
शुभयुक्तेक्षिताः शस्ता विवाहेऽखिल राशयः ॥ १८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—लग्न से होरा, होरा से द्रेष्कॅण, द्रेष्कॉण से नवांश, नवांश से द्वादशांश, द्वादशांश से त्रिंशांश उत्तरोत्तर बली होते हैं। इस प्रकार बल का विचार करना चाहिए। शुभ ग्रहों से युत और दृष्ट राशियाँ विवाहादि मङ्गलों में शुभ फलदायक होती हैं ॥ १७–१८ ॥

चन्द्रार्केज्यादयः पञ्च यस्य राशेस्तु खेचराः ।
इष्टास्तच्छुभदं लग्नं चत्वारोऽपि बलान्विताः ॥ १९ ॥

विमला—चन्द्रमा, सूर्य और गुरु आदि पाँच ग्रह जिस राशि के स्वामी हैं वह लग्न तथा जिस लग्न में चार बलवान ग्रह हों वह लग्न बलवान होता है ॥ १६ ॥

जामित्र शुद्धयेकविंशन्महा दोष विवर्जितम् ।
एकविंशति दोषाणां नामरूपफलानि च ॥ २० ॥
[1]पितामहोक्तान्संवीक्ष्य तान्वक्ष्येत्र समासतः ।
पञ्चाङ्गशुद्धिरहितो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तितः ॥ २१ ॥

अन्वयः—जामित्र शुद्धया, एकविंशन्महादोष विवर्जितम् (विवाहलग्नं विचिन्त्यम्) एकविंशति दोषाणां नामरूप फलानि च पितामहोक्तान् संवीक्ष्य समासतः तानि अत्र वक्ष्ये। आद्यः दोषः तु पंचाङ्ग शुद्धिः प्रकीर्तितः।

विमला—जामित्र शुद्धि करके २१ महादोषों से वर्जित शुभ विवाह मुहूर्त को रखना चाहिए। यहाँ पर २१ महादोषों के नाम-रूप-फल को ब्रह्मा जी के वाक्यानुसार संक्षेप में कहता हूँ। पंचाङ्ग शुद्धि का न होना यह प्रथम दोष है ॥ २०–२१ ॥

उदयास्त शुद्धिहीनो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः ।
तृतीयः पापषड्वर्गो भृगुः षष्ठे कुजोऽष्टमे ॥ २२ ॥
गण्डान्तः कर्तरीरिःफषडष्टेन्दुश्च संग्रहः ।
दंपत्योरष्टमं लग्नं राशिर्विषघटी भवः ॥ २३ ॥
दुर्मुहूर्तो वारदोषः खार्जुरीकः समांघ्रिजः ।
ग्रहणोत्पातभं क्रूरविद्धर्क्षं क्रूरसंयुतम् ॥ २४ ॥

1. 'पितामहोक्तान्यावीक्ष्य वक्ष्येतानि समासतः' इति पाठान्तरम् ।

कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ।
तिथिवारर्क्षयोगानां करणस्य च मेलनम् ॥ २५ ॥
पञ्चाङ्गमस्य संशुद्धिः पञ्चाङ्गं समुदाहृतम् ।
यस्मिन्पञ्चाङ्ग दोषोस्ति तस्मिन्लग्नं निरर्थकम् ॥ २६ ॥

अन्वयः—अति सुगमम् ।

विमला—१-पञ्चाङ्ग शुद्धि (पहले श्लोक से) २-उदयास्त शुद्धि, ३-सूर्य संक्रम, ४-पाप षड्वर्ग, ५-षष्ठ शुक्र, ६-अष्टम मंगल, ७-गण्डान्त दोष, ८-कर्त्तरी योग, ६-६, ८, १२ स्थचन्द्रमा, १०-स्त्री पुरुष का अष्टम लग्न, ११-संग्रह दोष, १२-राशि दोष, १३-विषघटी, १४-दुष्ट मुहूर्त, १५-वार दोष, १६-खार्जुरीक समांघ्रिज (एकार्गल), १७-ग्रहणोत्पात नक्षत्र, १८-पाप ग्रह वेध, १६-पाप ग्रह युक्त, २०-दुष्ट नवांशक, २१-वैधृति तथा व्यतिपात ये २१ महादोष कहे गये हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण इन पांचों को पञ्चाङ्ग कहते हैं। इसकी संशुद्धि को पञ्चाङ्ग शुद्धि कहते हैं। जिस लग्न में पञ्चाङ्ग शुद्धि न हो वह लग्न अशुभ फलद होता है ॥ २२–२६ ॥

लग्नलग्नांशकौ स्वस्वपतिना विक्षितौ शुभौ ।
न चेद्वान्योन्यपतिना शुभमित्रेण वा तथा ॥ २७ ॥
वरस्य मृत्युः परमो [1]सप्तसप्तोदयांशकौ ।
[2]एवं तैर्वीक्षितयुतौ मृत्युर्वध्वाः करस्य[3] तु ॥ २८ ॥

अन्वयः—लग्न लग्नांशकौ स्वस्व पतिना विक्षितौ (चेत्तदा) शुभौ । तथा अन्योन्य पतिना शुभ मित्रेण (विक्षितौ) वा (शुभौ) न चेद् वा (अन्यथा अशुभमिति भावः) सप्त सप्तोदयांशकौ परमः वरस्य मृत्युः एवं तैर्विक्षितयुतौ न (तदा) कर ग्रहे वध्वा मृत्युः (स्यात्) ।

विमला—लग्न तथा लग्न का नवांश अपने अपने स्वामी से दृष्ट हो तो विवाह शुभ होता है। अथवा यदि एक दूसरे को परस्पर देखते हों

---

१. 'लग्नद्यूननवांशकौ' इति पाठ भेदः ।
२. 'नैवं' इति पाठान्तरम् ।
३. 'करग्रहे' इति पाठ भेदः ।

या अपने मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो विवाह शुभ होता है। लग्न या लग्न नवांश पति अपने घर को न देखे तथा मित्र ग्रह भी न देखता हो तो वर की मृत्यु होती है। और यदि सप्तम या सप्तम नवांश का पति अपने घर को न देखे तथा मित्र ग्रह की उसपर दृष्टि न हो तो वधू की मृत्यु होती है ॥ २७-२८ ॥

त्याज्या सूर्यस्य संक्रान्तिः पूर्वतः परतः सदा ।
विवाहादिषु कार्येषु नाड्यः षोडश षोडश ॥ २९ ॥

अन्वयः—विवाहादिषु कार्येषु सूर्यस्य संक्रान्तिः पूर्वतः परतः षोडश षोडश नाड्यः सदा त्याज्या ।

विमला—विवाहादि कार्यों में सूर्य संक्रान्ति से पहले और बाद में १६, नाड़ी का सर्वदा त्याग कर देना चाहिए यह अशुभ नाड़ी है। यही संक्रान्ति दोष का लक्षण ॥ २९ ॥

त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्धमुच्यते ।
लग्नत्रिभागो द्रेष्कॉणो नवमांशो नवांशकः ॥ ३० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—३० अंश का लग्न और उसके आधे १५ अंश की एक होरा, लग्न का त्रिभाग द्रेष्कॉण तथा ३० अंश का नवांभाग (३°.२०′) नवांशक कहलाता है ॥ ३० ॥

द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ।
सिंहस्याधिपतिर्भानुश्चन्द्रः कर्कटकेश्वरः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—राशि के बारहवें भाग को द्वादशांश, तीसवें भाग को त्रिंशांश कहते हैं यह पञ्चतारा ग्रहों का ही होता है जो सम राशि में शुक्र ५, ज्ञ ७, जीव ८, शनि ५, कुज ५ तथा विषम राशि में इसके विपरीत होता है। सिंह राशि का अधिपति ग्रह सूर्य तथा कर्क का चन्द्रमा होता है ॥ ३१ ॥

मेषवृश्चिकयोर्भौमः कन्यामिथुनयोर्बुधः ।
धनुर्मीन द्वयोर्मंत्री शुक्रो वृषतुलेश्वरः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—मेष वृश्चिक का मङ्गल, कन्या, मिथुन का बुध, धनु मीन का गुरु और वृष तुला का स्वामी शुक्र होता है ॥ ३२ ॥

शनिर्मकरकुम्भेश इत्येते राशि नायकाः ।
[1]होरार्कोजराशौ च समभे चन्द्रसूर्ययोः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—मकर और कुम्भ का अधिपति शनि होता है । ये राशि पति कहे गये हैं । होरा सूर्य और चन्द्रमा की १५, १५ अंश की होती है । समराशि में १५ प्रथम चन्द्रमा तदनन्तर १५ अंश सूर्य की होरा होती है । विषम राशियों में इसके विपरीत समझना चाहिए ॥ ३३ ॥

स्युर्द्रेष्काँणा लग्न पञ्च नन्द[2] राशीश्वराः क्रमात् ।
आरभ्य[3] लग्नराशेस्तु द्वादशांशेश्वराः क्रमात् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—द्रेष्काँणाः, लग्न पञ्च नन्द राशीश्वराः क्रमात् स्युः । लग्न राशेस्तु आरभ्य क्रमात् द्वादशांशेश्वराः (स्युः) ।

विमला—तीन भागों में विभक्त राशि में १० अंश तक प्रथम द्रेष्काँण उसी राशि का, ११ से २० अश तक द्वितीय द्रेष्काँण पाँचवीं राशि का तथा, २१ से ३० अंश तक तृतीय द्रेष्काँण नवीं राशि का होता है । द्वादशांश राशि के १२ वें भाग को कहते हैं जो अपनी राशि से क्रमशः आरम्भ होकर १२ राशियों का होता है ॥ ३४ ॥

कुजार्कीज्यज्ञशुक्राणां वाणेष्वष्टाद्रिमार्गणाः ।
भागाः[4] स्युर्विषमे ते तु समराशौ विपर्ययात् ॥ ३५ ॥

अन्वयः—कुज, अर्की, ईज्य, ज्ञ, शुक्राणां (क्रमात्) बाण, इषु, अष्ट, अद्रि, मार्गणाः भागाः विषमे, स्युः ते तु समराशौ विपर्ययात् (स्युः) ।

---

१. 'होरेन विष्वोरोजराशौ' इति पाठान्तरम् ।

२. 'मेष' इति मूल पाठः ।

३. 'मेषं सिंहं नवमश्चाजादयः कर्कटादयः' इति मूल पाठः ।

४. 'भागाः स्युर्विषमे ते तु समराशौ विपर्ययात्' अंशस्यास्य सर्वत्रोपलब्धिः नास्ति ।

विमला—मङ्गल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र का क्रमशः ५, ५, ८, ७, ५ अंश त्रिंशांश का विषम राशि में तथा समराशि में इसके विपरीत होता है ॥ ३५ ॥

त्रिंशांश चक्रम्	ओज त्रिंशांश						युग्म त्रिंशांश					
	ओज	५	५	८	७	५	युग्म	५	७	८	५	५
	अंशाः	५	१०	१८	२५	३०	अंशाः	५	१२	२०	२५	३०
	ग्रहाः	मं.	श.	बृ.	बु.	शु.	ग्रहाः	शु.	बु.	बृ.	श.	मं.
	राशयः	१	११	९	३	७	राशयः	२	६	१२	१०	८

भृगुः षष्ठाह्वयो दोषो लग्नात्षष्ठगते [1]सिते।
उच्चगे शुभसंयुक्ते तल्लग्नं सर्वदा त्यजेत् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—लग्नात्षष्ठगते सिते भृगुः षष्ठाह्वयः दोषः। उच्चगे शुभ संयुक्ते (सति) तल्लग्नं सर्वदा त्यजेत्।

विमला—विवाह लग्न से षष्ठ स्थान में शुक्र बैठा हो तो 'भृगु षष्ठाह्वय दोष होता है जो त्याज्य है। यदि लग्न उच्च ग्रह से युक्त हो या किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो भी उस लग्न में कभी विवाह कार्य सम्पन्न नहीं करना चाहिए ॥ ३६ ॥

नोट—किसी किसी आचार्य ने 'सिते' को 'ऽसिते' मानकर उसका अर्थ राहु से किया है। जो असंगत जान पड़ता है। पूर्व श्लोक २२ से स्पष्ट हो जाता है।

कुजाष्टमे महादोषो लग्नादष्टमगे कुजे।
शुभत्रययुतं लग्नं त्यजेत्तुङ्ग गते यदि ॥ ३७ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—लग्न से अष्टम स्थान में मङ्गल बैठा हो तो वह कुजाष्टम नामक महादोष होता है। यदि लग्न ३ शुभ ग्रहों से युत हो या उच्च ग्रहों से युक्त हो तब भी विवाह नहीं करना चाहिए ॥ ३७ ॥

---

१. 'ऽसिते' इति पाठान्तरम्।

पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योः संधिनाडीद्वयं सदा ।
गण्डान्तं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ ३८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पूर्णा तिथि के अन्त की १ घड़ी तथा नन्दा तिथि के आरम्भ की १ घड़ी सन्धि गण्डान्त है। इसमें जन्म, यात्रा, विवाह तथा व्रत आदि का होना मृत्युदायक होता है ॥ ३८ ॥

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीन-मेषयोः ।
गण्डान्तमन्तरालं स्याद्घटिकार्धं मृतिप्रदम् ॥ ३९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—कर्क-सिंह, वृश्चिक-धनु और मीन-मेष के अन्तराल की आधी घटी को भी गण्डान्त कहते हैं इसमें भी शुभ कार्य मृत्यु प्रद होने से निषिद्ध है ॥ ३९ ॥

सार्पेन्द्रपौष्णभेष्वन्त्यनाडीयुग्मं[1] तथैव च ।
तदग्रभेष्वाद्यपाद भानां गंडान्त संज्ञकाः ॥ ४० ॥

अन्वयः—सार्प, इन्द्र, पौष्ण भेषु अन्त्यं नाडी युग्मं, तदग्रभेषु तथैव आद्यपाद (नाड़ी द्वयं) भानां गण्डान्त संज्ञकाः ।

विमला—आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों की अन्त की दो दो नाड़ियाँ तथा मघा, मूल और अश्विनी नक्षत्रों के आदि की २, २ नाड़ियाँ नक्षत्र गण्डान्त कही जाती हैं ॥ ४० ॥

उग्रं च सन्धि त्रितयं गण्डान्त त्रितयं महत् ।
मृत्युप्रदं जन्मयानविवाहस्थापनादिषु ॥ ४१ ॥

विमला—इस प्रकार पूर्वोक्त तीन गण्डान्त (तिथि गण्डान्त, राशि और नक्षत्र गण्डान्त) उग्र हैं जन्म, यात्रा तथा विवाह में इसका परित्याग कर देना चाहिए ॥ ४१ ॥

लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोरसाध्वोः,
साकर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः ।

---

१. 'षोडशं शुभ संधयः' इति मूल पाठः ।

तावेव शीघ्रं यदि वक्रचारौ,
नो कर्तरीति न्यगदन्मुनीन्द्रैः ॥ ४२[1] ॥

(श्री वेंकटेश्वर' स्टीम प्रेस बम्बई, संवत् १९९४ के अनुसार)

अन्वयः—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोः असाध्वोः ऋतुवक्रगयोः स्यात् सा कर्त्तरी। तावेव वक्रचारौ यदि शीघ्रं कर्त्तरी न इति मुनीन्द्रैः न्यगदत्।

विमला—द्वितीय और द्वादश भाव में यदि कोई पापग्रह क्रमशः वक्री और मार्गी बैठे हों तो कर्तरीदोष होता है। यदि वे दोनों ग्रह शीघ्र गति वाले हों तो कर्तरीयोग नहीं होता ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है॥ ४२॥

लग्नाभिमुखयोः पापग्रहयोरुभयस्थयोः।
साकर्त्तरीति विज्ञेया दम्पत्योर्मृत्तिकर्तरी ॥ ४३ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—लग्न के उभय पार्श्व (द्वितीय और द्वादशभाव) में यदि पापग्रह हों तो कर्तरीयोग होता है यह दम्पति (वर-कन्या) को मृत्युदायक होता है॥ ४३॥

अपि सौम्यग्रहैर्युक्तं गुणैः सर्वैः समन्वितम्।
व्ययाष्टरिपुगे चन्द्रे लग्नदोषः स संज्ञितः॥ ४४॥

अन्वयः—सुगमम्।

---

१. यह श्लोक पीयूषधारा टीका में यदाहवशिष्ठः—कर के दिया गया है। भाषाकार ने भी इसे वशिष्ठ मुनि का वाक्य माना है फिर भी श्लोक संख्या क्रमशः दिया गया है। विद्याविलास प्रेस से मुद्रित मूल प्रति में (ई० सन् १९०५) इति पाठान्तरं कर के दिया गया है। किन्तु कर्तरी को पीयूषधारा टीका में यदाह नारदः—

'लग्नाभिमुखयोः पापग्रहयोर्ऋजुवक्रयोः।
सा कर्तरीति विज्ञेया दम्पत्योर्गलकर्त्तरी॥
कर्त्तरीदोष संयुक्तं यल्लग्नं तत्परित्यजेत्।
अपि सौम्यग्रहैर्युक्तं गुणैः सर्वैः समन्वितम्॥'

दिया गया है जो मूल में खण्ड रूप से मिलता है।

विमला—सभी गुणों से सम्पन्न तथा सौम्यग्रहों से युक्त होने पर भी कर्तरी योग में तथा चन्द्रमा के ६, ८, १२ स्थानों में होने से लग्न दोष होता है अतः इसमें विवाह नहीं करना चाहिए ॥ ४४ ॥

तल्लग्नं वर्जयेद्यत्ताज्जीवशुक्रसमन्वितम् ।
उच्चगे नीचगे वापि मित्रगे शत्रुराशिगे ॥ ४५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गुरु और शुक्र से युक्त लग्न का भी परित्याग कर देना चाहिए, यदि चन्द्रमा ६, ८, १२ स्थानों में उच्चराशि, नीचराशि या शत्रुराशि का चाहे जैसा भी क्यों न हो ॥ ४५ ॥

अपि सर्वगुणोपेतं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ।
शशांके पापसंयुक्ते दोषः संग्रह[1] संज्ञकः ॥ ४६ ॥

विमला—सर्व गुण सम्पन्न लग्न के होने पर भी वर कन्या को मृत्यु प्रद होता है। चन्द्रमा यदि पाप ग्रहों से युक्त हो तो संग्रह दोष कहलाता है ॥ ४६ ॥

तस्मिन्संग्रहदोषे तद्विवाहं नैवकारयेत् ।
सूर्येण संयुते चन्द्रे दारिद्र्यं भवति ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पूर्वोक्त संग्रह दोष होने पर विवाह कार्य नहीं करना। सूर्य चन्द्रमा का योग होने पर अवश्य ही दम्पति दरिद्र होता है ॥ ४७ ॥

कुजेन मरणं व्याधिर्बुधेन[2] त्वनपत्यता ।

---

१. शशाङ्के ग्रहसंयुक्ते दोषः संग्रह संज्ञकः ।
सूर्येण संयुते चन्द्रे दारिद्रयं भवति ध्रुवम् ॥
कुजेन मरणं व्याधिः सौम्येनत्वनपत्यता ।
दौर्भाग्यं गुरुणायुक्ते सापत्न्यं भार्गवेण तु ॥
प्रव्रज्यासूर्यपुत्रेण राहुणाकलहः सदा ।
केतुना संयुते चन्द्रे नित्यं कष्टं दरिद्रता ॥
तस्मिन्संग्रह दोषे तु विवाहं नैवकारयेत् ।
पीयूषधारा टीकायां नारदवचनोदाहरणे एष क्रमः ।

२. 'विबुधे' इति मूल पाठः ।

दौर्भाग्यं गुरुणाचैव सापत्न्यं भार्गवेन तु ॥ ४८ ॥

विमला—चन्द्रमा से मङ्गल का योग हो तो मरण या रोग, बुध का योग हो तो अनपत्य दोष हो। गुरु का योग हो तो दुर्भाग्यप्रद, शुक्र का योग हो तो सापत्न्य (सौत) दोष प्रद होता है ॥ ४८ ॥

प्रव्रज्या रविपुत्रेण राहुणा कलहः सदा।
केतुना संयुते चन्द्रे नित्यं कष्टं दरिद्रता ॥ ४९ ॥

विमला—शनि के साथ होने से परिव्राजक, राहु के साथ होने से कलह, केतु के योग से नित्य कष्ट तथा दरिद्रता रहती है ॥ ४९ ॥

पापद्वययुते चन्द्रे दम्पत्योर्मरणं भवेत्।
[1]पापग्रहयुते चन्द्रे नीचस्थे राहुराशिगे ॥ ५० ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—दो पाप ग्रहों से युत चन्द्रमा हो तो वर कन्या की मृत्यु होती है। पाप ग्रहों से युत चन्द्रमा नीच राशि या राहु की राशि कन्या में हो तो।

[2]दोषायनं भवेल्लग्नं दम्पत्योर्मरणप्रदम्।
स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रग्रहगतोविधुः ॥ ५१ ॥
युति दोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—पूर्वोक्तदोष होने पर लग्न दोषों का घर हो जाता है और वर कन्या को मरण प्रद होता है। (परिहार वाक्य कहते हुए कहते हैं) चन्द्रमा कर्कटराशि का वृष राशि का तथा अपने मित्र गृह में या मित्र ग्रहों से योग करता हो तो वर कन्या के लिए श्रेयस्कर होता है ॥ ५१ ॥

[3]दम्पत्योरष्ठगं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च ॥ ५२ ॥
यदि लग्नगतः सोपि दम्पत्योर्मरण[4] प्रदः।

---

१. 'शुभग्रह युते चन्द्रे स्वोच्चस्थे राहुराशिगे' इति मूल पाठः।
२. 'दोषाय न भवेल्लग्नं दंपत्योर्मरणप्रदम्' इति मूल पाठः।
३. 'षष्ठगं' इति मूल पाठः।
४. 'निधनं' इति मूल पाठः।

स राशिः शुभयुक्तोऽपि लग्नं वा शुभसंयुतम् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—स्त्री और पुरुष के लग्न से आठवीं राशि लग्न हो या उनकी राशि से आठवीं राशि हो तो ऐसे लग्न में विवाह, वर कन्या को मृत्यु-दायक होता है। यदि वह राशि शुभ ग्रहों से युक्त हो या लग्न शुभ ग्रहों से युक्त हो तो ॥ ५२-५३ ॥

लग्नं विवर्जयेद्यत्नात्तदंशांश्च तदीश्वरान् ।
दम्पत्योर्द्वादशं लग्नं राशिर्वा यदि लग्नगम् ॥ ५४ ॥

विमला—उस लग्न को यत्न पूर्वक त्याग देना चाहिए उसके नवांश तथा नवांश पति भी अशुभ होते हैं। स्त्री पुरुष की राशि का लग्न हो अथवा जन्म लग्न से १२ वीं राशि लग्न होवे तो (द्रव्य की हानि होती है, इसका सम्बन्ध अग्रिम श्लोक से है) ॥ ५४ ॥

अर्थहानिस्तयोर्यस्मात्तदंशस्वामिनं त्यजेत् ।
जन्मराश्युद्गमे चैव जन्मलग्नोदये शुभा ॥ ५५ ॥
तयोरुपचयस्थाने यदा लग्नं गतं शुभम् ।
खमार्गणा वेदपक्षाः खरामाः शून्यसागराः ॥ ५६ ॥
वार्द्धिचंद्रा रूपदस्राः खरामा व्योमबाहवः ।
द्विरामाः खाग्नयः शून्यदस्रकुंजरभूमयः ॥ ५७ ॥

अन्वयः—तयोः अर्थहानि यस्मात् तदंश स्वामिनं त्यजेत् । जन्मराश्युद्गमे जन्मलग्नोदये च शुभा । तयोः उपचय स्थाने यदा लग्नं गतं (तदा) शुभम् । अग्रे सुगमम् ।

विमला—अर्थ की हानि होती है अतः इन लग्नों के नवांश स्वामियों को लग्न में त्याज्य समझे और जन्म की राशि तथा जन्म लग्न पर शुभ ग्रह हों और उनसे उपचय (३, ११, ५) स्थान लग्न हो तो शुभ होता है इसे राशि दोष कहते हैं। आगे विषघटी दोष कहते हैं।

अश्विनी में ५०, भरणी में २४, कृत्तिका में ३०, रोहिणी में ४०, मृगशिरा में १४, आर्द्रा में २१, पुनर्वसु में ३०, पुष्य में २०, आश्लेषा में ३२, मघा में ३०, पूर्वा फाल्गुनी में २० उत्तरा फाल्गुनी में १८ ॥५५-५७॥

रूपपक्षा व्योमदस्रा वेदचन्द्राश्चतुर्दश ।
शून्यचंद्रा वेदचन्द्राः षट्पञ्च वेदबाहवः ॥ ५८ ॥
शून्यदस्राः शून्यचंद्राश्शून्यचन्द्रा गजेन्दवः ।
तर्कचन्द्रा वेदपक्षाः खरामाश्चाश्विनी क्रमात् ॥ ५९ ॥
आभ्यः परा स्युश्चतस्रो नाडिका विष संज्ञिकाः ।
विवाहादिषु कार्येषु वर्ज्यास्ता विषनाडिका ॥ ६० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—हस्त में २१, चित्रा में २०, स्वाती में १४, विशाखा में १४, अनुराधा में १०, ज्येष्ठा में १४, मूल में ५६, पूर्वाषाढ़ा में २४, उत्तराषाढ़ा २०, श्रवण में १०, धनिष्ठा में १०, शतभिषा में १८, पूर्वाभाद्रपदा में १६, उत्तराभाद्रपदा में २४, और रेवती में ३० घड़ी । उपरोक्त नक्षत्र की उक्त घटिकाओं के बाद की चार नाड़ो को विषघटी कहते हैं । यह विषनाडिका विवाहादि कार्यों में सर्वथा त्याज्य है ॥५८-६०॥

ऋक्षाद्यंत[१] घटिमितं विषमानेन ताडितः ।
षष्टिभिर्हरते लब्धं पूर्वऋक्षेण योजयेत् ॥ ६१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पहले जो विषघटी प्रमाण बताया गया है वह मध्यममान से सभी नक्षत्रों का मान ६० घटी के बराबर मानकर दिया गया है । जब नक्षत्र का मान ६० घटी से अधिक हो या न्यून हो उस समय विषघटी आदि का स्फुट मान क्या होगा, इसके लिए आचार्य की उक्ति है ।

नक्षत्र मान को ध्रुवांक (जैसे अश्विनीका ध्रुवांक ५० घटी के बाद ४ घटी विष नाड़ी का ध्रुवांक) से गुणा कर ६० का भाग देने पर लब्धि वास्तविक ध्रुवांक[२] होता है ॥ ६१ ॥

---

१. "अत्रोपपत्तिस्त्रैराशिकेन—यदि घटीषष्ठ्यात्मकभोगेनेमे ध्रुवका इमाश्चतस्रो विषनाडिकाश्च लभ्यन्ते तदेष्टभभोगेन किमिति । तत्र ध्रुवा विषनाडिकाश्चेष्टभभोगेन गुण्याः षष्ट्याभाज्या इति फलितम्" पीयूषधाराटीकायां मुहूर्तचिन्तामणौ ।

२. इसका स्पष्ट उदाहरण श्री पं० केदार दत्त जोशी की 'पीताम्बरा' टीका में उल्लिखित किया है । ६।५१।२७२ द्रष्टव्य है ।

मुहूर्त दोष—

भास्करादिषु वारेषु ये मुहूर्ताश्च निन्दिताः ।
विवाहादि शुभे वर्ज्या अपि लग्न गुणैर्युताः ॥ ६२ ॥
ते वर्ज्या यदि तल्लग्नगुणैर्युक्ताश्चनिन्दिताः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्यादि वारों में जो निन्दित मुहूर्त हैं विवाहादि शुभ कार्यों में सर्वगुण सम्पन्न लग्न के होने पर भी इनका त्याग कर देना चाहिए। ये दुष्ट मुहूर्त लग्न के बली होने पर भी सर्वथा त्याज्य हैं ॥६२॥

वार दोष-एकार्गल दोष—

वारमध्ये तु ये दोषाः सूर्य वारादिषु क्रमात् ॥ ६३ ॥
अपि सर्वगुणोपेतास्ते वर्ज्याः सर्वमङ्गले ।
एकार्गलः समांघ्रिश्चेत्तत्र लग्नं विवर्जयेत् ॥ ६४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्यवारादिकों में क्रमशः जो वार दोष "अर्यमा···भौजंगेशाविनादिषु" कहा गया है। वह विवाहादि मङ्गलकार्यों में सर्वथा निन्दित है। इसी प्रकार एकार्गल (खार्जूरिक) दोष समांघ्रिज होवे अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा के योग से एकार्गल प्राप्त हो तो उस नक्षत्र का त्याग कर देना चाहिए। विवाह[1] के समय व्याघात, गंड, व्यतीपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ और अतिगण्ड योग हों तथा सूर्य के नक्षत्र से विषम नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो एकार्गल या खार्जूरिक दोष होता है ॥ ६३-६४ ॥

अथ रात्रिमुहूर्त्ताः—

ईशाजपादहिर्बुध्न्यपूषाश्वियमवह्नयः ।
धातृचन्द्रादितीज्याख्य विष्णवर्कत्वष्टवायवः ॥ ६५ ॥

विमला—शिव, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, पूषा, अश्विनीकुमार, यम,

---

१. 'व्याघातगंडव्यतिपातपूर्वे शूलान्त्यवज्रे परिभातिगण्डे ।
एकार्गलाख्योह्यभिजित्समेतो दोषः शशीचेद्विषमर्क्षगोऽर्कात् ॥'
(मुहूर्तचिन्तामणि वि. प्र. ६२)

अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्र, अदिति, बृहस्पति, विष्णु, सूर्य, त्वाष्ट्र और मरुत् ये रात्रि के १५ मुहूर्त होते हैं। रात्रि मान में १५ का भाग देकर एक मुहूर्त का मान लाया जाता है ॥ ६५ ॥

अपि शुक्रेज्यसंयुक्ता विषसंयुक्तदुग्धवत् ।
ग्रहणोत्पातभं त्याज्यं मङ्गलेषु त्रिधाऽशुभम्[1] ॥ ६६ ॥

विमला—यदि उपरोक्त एकार्गल दोष हो तो शुक्र और गुरु से युक्त होने पर भी उस लग्न को विष से मिश्रित दूध की तरह त्याग देना चाहिए। ग्रहण तथा उत्पात का नक्षत्र भी मंगल कार्यों में त्याज्य है ॥ ६६ ॥

यावच्चरविणा[2] भुक्त्वा मुक्तं तं दग्धकाष्ठवत् ।
मङ्गलेषु त्यजेत्क्रूरं विद्धं भं क्रूरसंयुतम् ॥ ६७ ॥

अन्वयः—(विवाहादि) मंगलेषु क्रूरं, क्रूरविद्धं, क्रूर संयुतं भं (एवं) यावच्चरविणा भुक्त्वा मुक्तं तं दग्ध काष्ठवत् त्यजेत् ।

विमला—विवाहादि मंगल कार्यों में क्रूरनक्षत्र, क्रूरविद्ध नक्षत्र, क्रूर युक्त नक्षत्र तथा रवि भुक्त नक्षत्र अधजली लकड़ी की तरह त्याग देना चाहिए ॥ ६७ ॥

अखिलर्क्षं पञ्चगव्यं सुराविन्दुयुतं तथा ।
पादमेव शुभैर्विद्धमशुभं नैव[3] कृत्स्नभम् ॥ ६८ ॥

विमला—यदि चरण मात्र का वेध हो तो भी मांगलिक कार्यों में सुराविन्दु युक्त पंचगव्य की भाँति अशुद्ध होता है ॥ ६८ ॥

क्रूरविद्धयुतं धिष्ण्यं निखिलं चैव पादतः ।
तुलामिथुनकन्यांशं धनुरंशैश्च[4] संयुताः ॥ ६९ ॥
एते[5] नवांशाः संग्राह्या अन्ये तु कु नवांशकाः ।
कुनवांशकलग्नं यत्त्याज्यं सर्वगुणान्वितम् ॥ ७० ॥

---

१. 'ऋदुत्रयं' इति मूल पाठः ।

२. 'यावच्चरणकं भुक्तं शेषं च दग्धकाष्ठवत्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'चैव' इति पाठ भेदः ।

४. 'धनुरंशार्धं' इति मूल पाठः ।

५. 'एतेनवांशाः न ग्राह्याः पतंगे कुनवांशकाः' इति मूल पाठः ।

अन्वयः—पादतः, एव च क्रूर विद्धयुतं निखिलं धिष्ण्यं (त्याज्यम्)। धनुः अंशैश्च संयुताः तुला मिथुन कन्यांशं (शुभम्, अतः) एते नवांशाः संग्राह्या अन्ये तु कुनवांशकाः। यत् कुनवांशक लग्नं (तत्) सर्व-गुणान्वितम् (अपि) त्याज्यम्।

विमला—क्रूर ग्रह विद्ध या युत नक्षत्र चरण वेध से ही सम्पूर्ण त्याज्य है। तुला, मिथुन, कन्या और धनु के नवांश शुभ होते हैं। अतएव ये ग्राह्य हैं। शेष कुनवांशक कहे गये हैं। यदि सभी गुणों से युक्त भी हो तो भी कुनवांशक त्याज्य है ॥ ६९–७० ॥

यस्मिन्दिने महापातस्तद्दिनं वर्जयेद्बुधः।
अपि सर्वगुणोपेतं दंपत्योर्मृत्युदं यतः ॥ ७१ ॥

अन्वयः—सुगमम।

विमला—जिस दिन महापात (व्यतिपात) योग हो वह सर्व गुण सम्पन्न होने पर भी बुद्धिमान को त्याग देना चाहिए। क्योंकि यह योग दम्पति को मृत्यु कारक होता है ॥ ७१ ॥

अनुक्ताः स्वल्पदोषाः स्युर्विद्युन्नीहारवृष्टयः।
प्रत्यर्क परिवेषेन्द्र चापाम्बुघन गर्जनम् ॥ ७२ ॥

विमला—विद्युत, नीहार (कुहरा) और वृष्टि ये विना कहे हुए स्वल्प दोष प्रद हैं। प्रत्यर्क (सूर्य के सन्मुख वादलों में दूसरे सूर्य का दर्शन) परिवेष (मण्डल) मेघगर्जन, और इन्द्रधनुष (अग्रिम सम्बन्ध है) ॥ ७२ ॥

एवमाद्यास्ततस्तेषां व्यवस्था क्रियतेऽधुना।
अकाले संभवन्त्येते विद्युन्नीहारवृष्टयः ॥ ७३ ॥
पत्यर्क परिवेषेन्द्र चापाभ्रघनयोर्यदि।
दोषाय मङ्गले नूनमदोषायैव कालजा ॥ ७४ ॥

अन्वयः—एवं आद्याः ततः अधुना तेषां व्यवस्था क्रियते। विद्युन्नी-हार वृष्टयः प्रत्यर्क परिवेषेन्द्रचापाभ्रघनयोः यदि एते अकाले संभवन्ति (तदा) मङ्गले दोषाय (भवन्ति) कालजाः नूनं अदोषाय एव (भवन्ति)।

विमला—पूर्वोक्त कहे हुए दोषों की व्यवस्था कर रहे हैं। विद्युत-नीहार, वृष्टि, प्रत्यर्क, परिवेष इन्द्रचाप और घनगर्जनादि अकाल में अर्थात् असमय मे हो तो दोषप्रद होता है। किन्तु ये सब यदि वर्षा काल में होवे तो दोष नहीं होता ॥ ७३-७४ ॥

बृहस्पतिः केन्द्रगतः शुक्रो वा यदि वा बुधः ।
एकोऽपि दोषविलयं करोत्येव[1] सुशोभनम् ॥ ७५ ॥

अन्वयः—केन्द्रगतः एकोऽपि बृहस्पतिः वा शुक्रः यदि वा बुधः दोष विलयं करोति (एवं) सुशोभनमेव ।

विमला—केन्द्र स्थान स्थित अकेला भी बृहस्पति, शुक्र या बुध दोषों को नष्ट कर शुभ करता है ॥ ७५ ॥

तिर्यक् पंचोर्ध्वगाः पञ्च रेखे द्वे द्वे च कोणयोः ।
द्वितीयं शम्भुकोणेऽग्नि भचक्रं[2] तत्र विन्यसेत् ॥ ७६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पांच रेखायें खड़ी और पांच रेखाएँ आड़ी तथा कोणों में जाने वाली दो दो रेखाओं के करने से २८ विन्दुओं से युक्त यह पंच शलाका चक्र बनता है। इसमें ईशान कोण के द्वितीय विन्दु से कृतिका का आरम्भ कर अभिजित के साथ रेवती पर्यन्त २८ नक्षत्रों की स्थापना करे ॥ ७६ ॥

भान्यतः साभिजित्येकरेखा खेटेन[3] विद्धभम् ।
पुरतः पृष्ठतोर्काद्यादिनर्क्षं लत्तयन्ति च ॥ ७७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—इस पूर्वोक्त विधि से अभिजित के साथ सम्पूर्ण नक्षत्र लिखें। यदि एक रेखा पर दो ग्रहों का नक्षत्र आजाय तो उसे वेध कहते हैं। यही वेध दोष है। सूर्य आदि ग्रह आगे और पीछे के नक्षत्रों को ताडित करते हैं अतएव इसे लत्ता दोष कहा गया है। इसका क्रम भी नीचे लिखे अनुसार है ॥ ७७ ॥

---

१. 'लगयन्ति च' 'लत्तितं च यत्' भेद इति मूल पाठः ।
२. 'अग्निधिष्ण्यं चक्रे च विन्यसेत्' इति पाठान्तरम् ।
३. 'कोणे च' इति पाठान्तरम् ।

ज्ञराहु पूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे भं सप्तगोजाति शरैर्मितं हि।
संलत्तयन्त्येऽर्क शनीज्यभौमा सूर्याष्ट तर्काग्निमितं [1]पुरस्तात्॥७७॥

(प्रक्षेप)

अन्वयः—ज्ञ, राहु, पूर्णेन्दु, सिताः स्वपृष्ठे (क्रमेण), सप्त, गो, जाति, शरैः मितं भं हि लत्तयन्ति। (तथा) अर्क, शनी, इज्य, भौमा (क्रमेण) सूर्याष्टतर्काग्निमितं भं पुरस्तात् लत्तयन्ति।

विमला—बुध, राहु, पूर्णचन्द्रमा और शुक्र अपने नक्षत्र से पीछे के ७ वें, ६ वें, २२ वें और ५ वें नक्षत्र को तथा सूर्य, शनि, गुरु और मंगल क्रमशः १२ वें, ८ वें, ६ वें और ३ सरे अग्रिम नक्षत्र को ताडित करते हैं। जैसे यदि सूर्य कृत्तिका नक्षत्र पर होतो अपने से आगे के कृत्तिका से १२ वें नक्षत्र चित्रा को ताडित करेगा। इसे लत्ता दोष कहते हैं। (यह श्लोक मुहूर्त चिन्तामणि का है)॥ ७७॥

अर्कात् कृति गुणागर्तु[2] वाणाष्टनव संख्यभम्[3]।
सूर्यभात्सार्पपित्र्यन्त्यत्वाष्ट्रमित्रेन्दु विष्णुभम्॥ ७८[4]॥[5]

---

१. यह श्लोक मुहूर्तचिन्तामणि का ज्यों का त्यों किसी किसी प्रति में उपलब्ध होता है जिसे प्रक्षेप करके दे दिया गया है। वास्तव में यह नारद-संहिता का नहीं ज्ञात होता।

२. 'गुणाढ्यञ्च' इति मूल पाठः।

३. 'संख्यकम्' इति मूल पाठः।

४. यह श्लोक नारदीय संहिता के सभी प्रतियों में उपलब्ध नहीं होता है। मुहूर्त चिन्तामणि पियूषधारा टीका में—

सूर्यभात्सार्पपित्र्यान्त्यत्वाष्ट्र मित्रोडुविष्णुभे।
संख्ययादिनभे तावदश्विभात्पात दुष्टभम्॥

यह दिया गया है।

५. श्लोक ७८ जो दिया गया है उसका अर्थ भी लिखा गया है। मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा टीका विवाह प्रकरण श्लोक संख्या ५७, ५८ की टीका से स्पष्ट है कि यह श्लोक दो श्लोकों का खण्ड भाग है इसीलिए किसी प्रति में मिलता है और किसी में नहीं मिलता है। खण्ड हो जाने से इसका अर्थ भी स्पष्ट नहीं होता है, अतः इन दोनों श्लोकों को पीयूषधारा टीका से स्पष्टी के लिए उधृत कर रहा हूँ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्य से ४, ३, ७, ६, ५, ८, ६ वें स्थान में यदि श्लेषा, मघा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा और श्रवण नक्षत्र होवे तो पात दोष होता है ॥ ७८ ॥

सौराष्ट्रशाल्व देशेषु लत्तितं भं विवर्जयेत् ।
कलिङ्गवङ्गदेशेषु पातितं भमुपग्रहम् ॥ ७९ ॥

अन्वयः—लत्तितं भं सौराष्ट्रशाल्व देशेषु पातितं भं (पातदोषं) कलिङ्ग वङ्ग देशेषु, उपग्रहम् वाह्लिके कुरुदेशे च विवर्जयेत्, अन्यस्मिन् देशे दूषणं न ।

विमला—लत्ता दोष सौराष्ट्र और शाल्वदेश में, पात दोष कलिङ्ग और वङ्ग देश में तथा उपग्रह दोष को वाह्लिक और कुरुदेश में त्याग देना चाहिए । अन्यत्र इसका दोष नहीं होता है ॥ ७६ ॥

---

(१) लतादोष 'शराहु पूर्णेन्दुसिताः ५७, इत्यादि श्लोक की टीका में—
पुरतः पृष्ठतोऽर्काद्यादिनक्षं लत्तितं च यत् ।
अर्काकृतिगुणांगर्त्तुबाणाष्टनवसंख्यभम् ॥

अर्थात् सूर्यादिग्रह अपने-अपने स्थान से अर्क १२ आकृति ८ गुण ३ अग ७ ऋतु ६ वाण ५ अष्ट ८ नव ९ इन स्थानों को लत्तित करते हैं इनके वेध का फल इस प्रकार दिया गया है—

रबिलत्ता वित्तहरी नित्यं कौजी विनिर्दिशेन्मरणम् ।
चान्द्री नाशं कुर्याद्बौधी नाशं वदत्येव ॥
सौरी मरणं कथयति बन्धुविनाशं वृहस्पतेर्लत्ता ।
मरणं लत्ताराहोः कार्यविनाशं भृगोर्वदति ॥

(२) पातदोष 'हर्षणवैधृतिसाध्य...५८ ॥' इसकी टीका में नारदेन, प्रकारान्तरेणैतत्प्रकार संवादकः पातोऽभिहितः—

सूर्यभात्सार्प पित्र्यान्त्यत्वाष्ट्र मित्रोडुविष्णुभे ।
संख्यया दिनभे तावदश्विभात्पात दुष्टभम् ॥

अर्थात् सूर्य नक्षत्र से सार्प, पितृ, अन्त्य, त्वाष्ट्र, मित्र, उडु, विष्णु नक्षत्र पर्यन्त अश्विनी क्रम गणना से पात दोष विद्यमान रहता है ।

मुहूर्त चिन्तामणि के लत्ता दोष और पात दोष से इसका सामञ्जस्य नहीं बैठता है टीकाकार ने उदाहरण अवश्य दे दिया है ।

बाह्लिके कुरुदेशे चान्यस्मिन्देशे न दूषणम् ।
तिथयोमासदग्धाख्या दग्धलग्नानि तान्यपि ॥ ८० ॥
मध्यदेशे विवर्ज्याणि न दूष्याणीतरेषु च ।
पंग्वंधकाणलग्नानि मासशून्याश्चराशयः ॥ ८१ ॥
गौडमालवयोस्त्याज्याश्चान्यदेशे न गर्हिताः ।
दोष[1] दुष्टः सदा कालोत्वर्जनीयः प्रयत्नतः ॥ ८२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—मास, दग्धातिथि, दग्ध लग्न मध्य देश के लिए वर्जित है अन्यत्र के लिए दोष नहीं है। पंगु, अन्ध, कॉण, लग्न तथा मास शून्य एवं शून्य राशी गौढ़ तथा मालव देश में वर्जित हैं, अन्यत्र नहीं। दोष दुष्टकाल को प्रयत्न पूर्वक त्याग कर शुभ कार्य करना चाहिए ॥८०-८२॥

[2]अपिभूरि गुणोऽन्यार्थे दोषाल्पत्वं गुणोदयः ।
परित्यज्य महादोषाज्छेषयोर्गुणदोषयोः ॥ ८३ ॥
गुणाधिकः स्वल्पदोषः सकलो मङ्गल प्रदः ।
दोषो न प्रभवत्येको गुणानां परिसंचये ॥ ८४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—जहाँ गुण और दोषों में दोष की अधिकता हो वहाँ गुण का परित्याग कर शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। गुण की अपेक्षा दोष अल्प होतो मंगल प्रद होता है गुणों के समूह में एकाध दोषों की गिनती नहीं की जाती ॥ ८३-८४ ॥

एकोयथातोयबिन्दुरुदचिर्षि[3] हुताशने ।
एवं सञ्चिन्त्य गणितशास्त्रोक्तं लग्नमानयेत् ॥ ८५ ॥
तल्लग्नं जलयन्त्रेण दद्याज्ज्योतिषिकोत्तमः ।

---

१. 'दोषदुष्टः सदाकालस्तं स्पष्टं च न शक्यते' इति मूल पाठः ।

२. 'अपिधातुरतोन्यार्थे दोषाल्पत्वं गुणोदयः । परित्यज्य महादोषान् शेषयोर्गुणदोषयोः' इति मूल पाठः ।

३. 'उदर्चिषि' इति मूल पाठः ।

अन्वयः—उदर्चिषिहुताशने यथा एकः तोर्यविन्दुः, एवं संचिन्त्य गणितशास्त्रोक्त लग्नं आनयेत्। तल्लग्नं ज्योतिषिकोत्तमः जलयन्त्रेण दद्यात्।

विमला—जल का एक बूंद प्रज्वलित अग्नि को शान्त नहीं कर सकती यह सोचकर गणितशास्त्र में कही हुई विधि के द्वारा लग्न निकालना चाहिए। उत्तम ज्योतिषी जलयन्त्र के द्वारा प्राप्त समय से लग्न आनयन करते हैं ॥ ८५ ॥

नोट—लग्न स्पष्टी के अतिरिक्त फलादेश की सहायक अन्य विधियाँ उत्कष्ठा रूपी प्रज्वलित अग्नि के लिए एक बूंद जल के बराबर हैं अतः शुद्ध विधि से समय का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त कर लग्नानयन करना चाहिए। अर्थात् लग्नज्ञान द्वारा फलादेश सन्तोष प्रद होता है।

षडङ्गुलमितोत्सेधं द्वादशाङ्गुलमायतम् ॥ ८६ ॥
कुर्यात्कपालवत्ताम्रपात्रं तद्दशभिः पलैः।
पूर्णं षष्टिर्जलपलैः षष्टिमज्जति वासरे ॥ ८७ ॥

अन्वयः—उत्सेधं षडङ्गुलम्, आयतम् द्वादशाङ्गुलम्, दशभिः पलैः कपालवत्, ताम्रपात्रं कुर्यात्। यः षष्टिर्जलपलैः पूर्णं स्यात् वासरे षष्टिमज्जति।

विमला—दशपल (४० तोले) ताँवे का एक कपालाकृति पात्र बनावे जो चार अंगुल ऊँचा और १२ अंगुल विस्तार (पूर्ण व्यास) वाला हो और जिसमें ६० पल (२४० तोला) जलडालने से भर जाय। इस प्रकार बना हुआ यह पात्र जल में रखने से एक अहोरात्र (२४ घंटे) में ६० बार डूब जायेगा ॥ ८६-८७ ॥

माषमात्रत्र्यंशयुतं स्वर्णवृत्तशलाकया।
चतुर्भिरङ्गुलैरापस्तथा विद्धं परिस्फुटम् ॥ ८८ ॥

अन्वयः—स्वर्णवृत्त शलाकया मासमात्र त्र्यंशयुतं परिस्फुटं बिद्धं तथा च चतुर्भिरङ्गुलैः आपः (पूरयेत्)।

विमलाः—सोने की शलाका (या सूई) से गुञ्जा के तृतीयांश भाग के बराबर स्पष्ट मध्य भाग में छिद्र कर उसमें ४ अङ्गुल जल भर दे ॥ ८८ ॥

कार्येणाभ्यधिकः षड्भिः पलैस्ताम्रस्य भाजनम् ।
द्वादशं मुखविष्कंभ उत्सेधः षड्भिरङ्गुलैः ॥ ८९ ॥
स्वर्णमासेन वै कृत्वा चतुरङ्गुलकात्मकः ।
मध्यभागे तथा विद्धा नाडिका घटिका स्मृता ॥ ९० ॥

अन्वयः—कार्येणाभ्यधिकः षड्भिः पलैः ताम्रस्य भाजनं (कार्यं यस्य) मुखविष्कम्भः द्वादशं, षड्भिरङ्गुलैः उत्सेधः, तथा चतुरङ्गुलमात्मकः स्वर्णमासेन मध्य भागे नाडिका विद्धा वै घटिका स्मृता ।

विमला—६ पल (२४ तोला) प्रमाण के ताम्रपात्र को जिसकी ऊँचाई ६ अङ्गुल और चौड़ाई १२ अङ्गुल हो तथा स्वर्णमास चार अङ्गुल प्रमाण नाड़ी का चिन्ह बनाकर मध्य में छेद करने से भी जल यन्त्र बनता है ॥ ८९–९० ॥

ताम्रपात्रे जलैः पूर्णे मृत्पात्रे वाऽथवा शुभे ।
गन्धपुष्पाक्षतैः सार्द्धैरलङ्कृत्य प्रयत्नतः ॥ ९१ ॥
तन्दुलस्थे स्वर्णयुते वस्त्रयुग्मेन वेष्टिते ।
मंडलार्द्धोदयं वीक्ष्य रवेस्तत्र विनिःक्षिपेत् ॥ ९२ ॥

अन्वयः—जलैः पूर्णे ताम्रपात्रे अथवा शुभे मृत्पात्रे वा गंध पुष्पाक्षतैः सार्द्धं प्रयत्नतः अलंकृत्य स्वर्णयुते तंडुलस्थे, वस्त्र युग्मेन वेष्टिते (ताम्र पात्रे मृत्पात्रे वा) रवे मंडलार्द्धोदयं वीक्ष्य तत्र विनिःक्षिपेत् ।

विमला—गंध पुष्प अक्षतादिकों से यत्न पूर्वक अलंकृत दो वस्त्रों से वेष्टित स्वर्ण युत तंडुल पर रक्खे गये जल से पूर्ण ताम्रपात्र या मृत्तिका पात्र में घटी यन्त्र को सूर्य के आधा गोला निकलने के समय छोड़ देवे ॥ ९१ ९२ ॥

मन्त्रेणानेन पूर्वोक्तलक्षणं यन्त्रमुत्तमम् ।
मुख्यं त्वमसि यन्त्राणां ब्रह्मणानिर्मितं पुरा ॥ ९३ ॥
भावाभवाय[1] दम्पत्योः कालसाधनकारणम् ।
द्वादशोङ्गुलकं प्रोक्तमिति शङ्कुप्रमाणकम् ॥ ९४ ॥

अन्वयः—"मुख्यं त्वमसि यन्त्राणां ब्रह्मणानिर्मितं पुरा, भावा भवाय दम्पत्योः काल साधन कारणम्" । अनेन मन्त्रेण पूर्वोक्त लक्षणं उत्तमं

---

१. 'भाव्याभाव्याय' इति पाठ भेदः ।

यन्त्रं (क्षिपेत्) अभावे द्वादशोङ्गुलकं शङ्कु प्रमाणकम् च (लग्नं) प्रोक्तं इति।

विमला—ब्रह्मा ने दम्पत्ति के शुभाशुभ ज्ञान के निमित्त काल ज्ञान (लग्न ज्ञान) के लिए आप का निर्माण किया था। हे यन्त्र ? आप सभी यन्त्रों में (काल नियामक होने के कारण) उत्तम (मुख्य) हैं। इस प्रकार इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए जलपूर्ण पात्र में घटी यन्त्र को छोड़े। इसके अभाव में १२ द्वादशाङ्गुल शंकु की छाया से काल ज्ञान कर लग्नानयन कर शुभाशुभ फलादेश करना चाहिए ।। ६३-६४ ।।

अन्ययन्त्रप्रयोगा ये दुर्लभाः कालसाधने।
एवं सुलग्ने दम्पत्योः कारयेत्सम्यगीक्षणम् ।। ९५ ।।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—काल साधन में दुर्लभ अन्यान्य प्रयोगों के द्वारा सुन्दर लग्न अच्छी तरह जानकर वरवधू का सम्बन्ध (विवाह) करना चाहिए ।। ६५ ।।

हस्तोच्छ्रितां चतुर्हस्तैश्चतुरस्रां समंततः।
स्तम्भैश्चतुर्भिः श्लक्ष्णैर्वा वामभागे स्वसद्मनः ।। ९६ ।।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—घर के वाम भाग में एक हाथ ऊँचा तथा चार हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा चबूतरा मंडप के अन्दर स्तम्भों से सुशोभित सुदृढ़ सुन्दर बनाना चाहिए ।। ६६ ।।

समण्डलं चतुर्दिक्षु सोपानैरति शोभनम्।
प्रागुदक्प्रवणारम्भास्तम्भा हयशुकादिभिः ।। ९७ ।।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—अत्यन्त सुन्दर सीढ़ियों से युक्त चारो दिशाओं में मण्डल बनाते हुए घोड़े और शुकादि से चित्रित मण्डप को ईशान कोण से बनाना आरम्भ करे ।। ६७ ।।

विचित्रितां चित्रकुम्भैर्विविधैस्तोरणाङ्कुरैः।
भृङ्गारपुष्पनिचयैर्वर्णकैः समलङ्कृताम् ।। ९८ ।।

विप्राशीर्वचनैः पुण्यस्त्रीभिर्दीपैर्मनोरमाम् ।
वादित्रनृत्यगीताद्यैर्हृदयानन्दिनीं शुभाम् ॥ ९९ ॥

अन्वयः—चित्र कुम्भैः विचित्रितां, विविधैस्तोरणांकुरैः, भृङ्गारपुष्प निचयैः वर्णकैः समलंकृताम् । पुण्य विप्राशीर्वचनैः, स्त्रीभिः मनोरमां दीपैः वादित्र, नृत्यगीताद्यैः शुभां हृदयानंदिनीं (वेदिकां विरचयेत्) ।

विमला—रंगीन चित्रित कलशों एवं अनेक प्रकार के तोरणादिकों से युत । सुगन्धित विविधरंगो वाले पुष्प समूहों से सुशोभित स्वतिवाचनादि ब्राह्मणों के आशीर्वाद एवं मंगल स्त्री समूहों के द्वारा दीपमाला, वाद्यगान एवं नृत्य के साथ शुभ हृदय को आनन्द देनेवाले मंडप का निर्माण करना चाहिए ॥ ९८–९९ ॥

एवं विधां तामारोहेन्मिथुनं साग्निवेदकम् ।
त्रिषडायगताः पापाः विना षष्ठाष्टमं विधुः ॥ १०० ॥

अन्वयः—एवं विधां तां (वेदिकायां) साग्निवेदकम् मिथुनं आरोहेत् । पापाः त्रिषडायगताः, विधुः षष्टाष्टमं विना ।

विमला—इस प्रकार सुसज्जित वेदी के ऊपर अग्निदेव के साक्ष्य में वैदिक मन्त्रों के सहित जब लग्न से ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह बैठे हों और चन्द्रमा ६, ८ में न हो तो विवाहकार्य करे ॥ १०० ॥

कुर्वन्त्यायुर्धनारोग्यं पुत्रपौत्रसमन्विताः ।
त्रिकोणकेन्द्रखत्र्यांये शुभं कुर्वन्ति खेचराः ॥ १०१ ॥

अन्वयः—त्रिकोण केन्द्र खत्र्याये खेचराः आयुः धनं आरोग्यं कुर्वन्ति । पुत्र पौत्र समन्वितां शुभं (च) कुर्वन्ति ।

विमला—३, ६, ११ स्थान में पापग्रह शुभ करते हैं । ९, ५, १, ४, ७, १०, ३, ११ इन घरों में बैठे हुए ग्रह आयु धन आरोग्य को करते हैं तथा पुत्र पौत्रादिकों के साथ शुभ करते हैं ॥ १०१ ॥

[1]द्यूनकेन्द्रभगः शुक्रं हित्वा पुत्रधनान्विताम् ।
धनत्रिबन्धुतनयधर्मज्ञायेषु[2] चन्द्रमाः ॥ १०२ ॥

---

१. 'द्यूनकेन्द्रभागं' इति पाठान्तरम् ।
२. "धनत्रिबंधुतनयाधर्मखायेषु चन्द्रमाः" इति पाठ भेदः ।

अन्वयः—द्यूनकेन्द्रभगः शुक्रं हित्वा (सर्वत्र १, ४, १०) पुत्रधनान्वितां (शुक्रः करोति)। धन, त्रि, बंधुः तनय, धर्म, (ख) ज्ञ, आयेषु चन्द्रमाः (पुत्र धनान्विताम्) करोति ।

विमला—सप्तम को छोड़कर केन्द्र में बैठा हुआ शुक्र तथा २, ३, ४, ५, ६, १०, ११ इन स्थानों में बैठा हुआ चन्द्रमा पुत्र और धन से युक्त करता है ॥ १०२ ॥

करोति सुतसौभाग्य भोगयुक्तां विवाहिताम् ।
अस्तगा नीचगाः शत्रुराशिगाश्च पराजिताः ॥ १०३ ॥

अन्वयः—विवाहितां सुतसौभाग्य भोग युक्तां करोति । अस्तगाः नीचगाः शत्रुराशिगाश्च (ग्रहाः) पराजिताः ।

विमला—पूर्वोक्त १, ४, १० स्थानगत शुक्र तथा २, ३, ४, ५, ६, १०, ११ स्थानगत चन्द्रमा दम्पति को सुत, सौभाग्य एवं भोग से युक्त करता है। अस्तंगत, नीचराशिगत तथा शत्रुराशिगत ग्रह पराजित कहे जाते हैं ॥ १०३ ॥

नाशक्तास्ते फलं दातुं दानमश्रोत्रिये यथा ।
गुरुरेकोऽपि लग्नस्थः सकलं दोषसंचयम् ॥ १०४ ॥
विनाशयति धर्मांशुरुदितस्तिमिरं यथा ।
एकोऽपि लग्नगः काव्यो बुधो वा यदि लग्नगः ॥ १०५ ॥

अन्वयः—ते (अस्तगाः नीचगाः शत्रुराशिगाश्च ग्रहाः) फलं दातुं शक्ता न, यथा अश्रोत्रिये दानं। एकोऽपि लग्नस्थः गुरुः सकलं दोषसंचयं (तथा) विनाशयति यथा उदितः धर्मांशुः तिमिरम्। एकोऽपि लग्नगः काव्यः वा यदि लग्नगः बुधः (अग्रिम श्लोकेन संबन्धः)।

विमला—जिस प्रकार अश्रोत्रिय को दिया हुआ दान का फल नहीं होता उसी प्रकार पराजित ग्रह भी फल नहीं देते। एक भी लग्नस्थ गुरु सभी दोषों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है, जिस प्रकार सूर्योदय काल में अन्धकार को उदित सूर्य नष्ट कर देता है। लग्नगत शुक्र अथवा बुध भी अकेला (दोष समूह का नाश करता है) ॥ १०४-१०५ ॥

नाशयत्यखिलान्दोषांस्तूलराशिमिवानलः ।
गुरुरेकोऽपि केन्द्रस्थः शुक्रो वा यदि वा बुधः ॥ १०६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—रुई की राशि को जैसे अग्नि नष्ट कर देता है उसी प्रकार केन्द्र में बैठा हुआ अथवा लग्न में बैठा गुरु या शुक्र या बुध भी दोष समूह को नष्ट कर देता है ॥ १०६ ॥

दोषसंघान्निहन्त्येव केसरीवेभसंहतिम् ।
दोषाणां[1] शतकं हन्ति बलवान् केन्द्रगो बुधः ॥ १०७ ॥
शुक्रोऽपहाय[2] वै द्यूनं द्विगुणं लक्षमंगिराः ।
लग्नदोषाश्च दोषा ये दोषाः षड्वर्गजाश्च ये ॥ १०८ ॥

अन्वयः—(गुरुः) इभ संहतिम् केसरी इव दोष संघान् निहन्ति एव बलवान केन्द्रगो बुधः दोषाणां शतकं हन्ति, शुक्रः वैः द्यूनं अपहाय (बुधात्) द्विगुणं (दोषं निहन्ति) अंगिराः षड्वर्गजाः च ये दोषाः लग्नदोषाश्च ये लक्षं दोषाः (तान् निहन्ति) ।

विमला—गुरु सम्पूर्ण दोष समूह को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार गजसमूह को सिंह नष्ट कर देता है। इसी प्रकार केन्द्रस्थ बलवान बुध सैकड़ों दोषों को नष्ट करता है। तथा सप्तम भाव के अतिरिक्त केन्द्रस्थित (१, ४, १०) शुक्र, बुध से द्विगुणित दोषों को नष्ट करता है। एवं बृहस्पति लग्न गत दोष तथा षड्वर्ग जन्य लाखों दोषों को विनष्ट कर देता है ॥ १०७-१०८ ॥

हन्तितांल्लग्नगोजीवो मेघसंघमिवानिलः ।
केन्द्र त्रिकोणगे जीवे शुक्रो वा यदि वा बुधः ॥ १०९ ॥

अन्वयः—लग्नगः जीवः तान् दोषान् तथैव हन्ति, यथा अनिलः मेघ संघं हन्ति । एतद् अतिरिक्तम् केन्द्र त्रिकोणगे जीवः शुक्रो बुधः वा यदि अस्ति त एव दोष संघान् हन्ति ।

विमला—लग्नस्थित गुरु सभी दोषों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है, जिस प्रकार बादलों के समूह को वायु नष्ट भ्रष्ट कर देता है। इसके

---

१. 'दोषाणां च त्रयं हन्ति' इति पाठ भेदः ।
२. 'अपहाय दिनं शुक्रो' इति मूल पाठः । अत्र दिनं द्यूनं वा सप्तममिति साधुः ।

अतिरिक्त केन्द्र (१, ४, ७, १०) में या त्रिकोण (५, ६) में गुरु, शुक्र या बुध हों तो सभी दोषों को नष्ट कर देते हैं (शुक्र सप्तम से अतिरिक्त में अर्थात् १, ४, १०, ५, ६ में रहने पर) ॥ १०६ ॥

दोषा विनाशमायान्ति पापानीव हरिस्मृतेः ।
गुरुर्बली त्रिकोणस्थः सर्वदोषविनाशकृत् ॥ ११० ॥

अन्वयः—त्रिकोणस्थः बली गुरुः सर्व दोष विनाशकृत् (भवति) यथा हरिस्मृतेः पापान् विनाशमायान्ति तथैव बली त्रिकोणस्थ गुरुः सन् दोषा विनाशमायान्ति ।

विमला—जिस प्रकार विष्णु भगवान के स्मरण मात्र से पाप विनष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार बलवान गुरु यदि त्रिकोण (५, ६) में हो तो सभी दोष मिट जाते हैं ॥ ११० ॥

निहन्ति निखिलं पापं प्रणाममिव शूलिनः ।
मुहूर्त्तपाप-षड्वर्गकुनवांश-ग्रहोत्थिताः ॥ १११ ॥

अन्वयः—मुहूर्त्त पाप, षड्वर्ग, कुनवांश ग्रहोत्थिताः सर्वे दोषाः तथैव निहन्ति, यथा शूलिनः प्रणामम् निखिलं पापं निहन्ति ।

विमला—जिस प्रकार शिवजी के प्रणाम करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार मुहूर्त्त दोष, षड्वर्ग, कुनवांश स्थित ग्रह जन्य दोष गुरु के त्रिकोण में होने से नष्ट हो जाते हैं ॥ १११ ॥

ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः [1]शशिः ।
[2]नाशयत्यखिलान्दोषान्यत्रैकादशगो रविः ॥ ११२ ॥

अन्वयः—यत्र (यस्मिन् जन्माङ्गे) एकादशगः शशी ये दोषाः तान् निहन्ति एव, तथैव एकादशगः रविः अखिलान् दोषान् नाशयति ।

विमला—लग्न से एकादश भाव में स्थित चन्द्रमा पूर्वोक्त सभी दोषों को दूर कर देता है। तथा एकादश भावस्थित सूर्य भी सम्पूर्ण दोषों को नष्ट कर देता है ॥ ११२ ॥

गङ्गायाः स्नानतो भक्त्या [3]सर्वपापानिवाचिरात् ।

---

१. 'शशी' इति पाठ भेदः ।

२. 'नाशयन्त्यखिलान् दोषान्' इति पाठान्तरम् ।

३. 'सर्वपापानिवाऽचिरात्' इति पाठ भेदः ।

वायूपसूर्यनीहारमेघगर्जन सम्भवाः ॥ ११३ ॥
दोषा नाशं ययुः सर्वे केन्द्रऽस्थाने बृहस्पतौ ।
ये दोषा मासदग्धास्तिथिलग्नसमुद्भवाः ॥ ११४ ॥

अन्वयः—केन्द्र स्थाने बृहस्पतौ सति वायु, उपसूर्य, नीहार, मेघ गर्जन सम्भवाः दोषाः मास दग्धाः तिथि लग्न समुद्भवाः च ये दोषा तेः सर्वे भक्त्या गंगाथाः स्नानतः अचिरात् सर्व पापानिव नाशं ययुः ।

विमला—वायु, प्रति सूर्य, धूम, रज, मेघगर्जन इत्यादि दोष केन्द्र स्थान में बृहस्पति के होने से उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार भक्तिभाव के साथ गंगास्नान करने से शीघ्र ही सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त मासदग्ध, तथा लग्नदग्ध आदि दोष भी केन्द्रस्थ गुरु के रहने से नष्ट हो जाते हैं ॥ ११३-११४ ॥

ते सर्वे विलयं यान्ति केन्द्रस्थाने बृहस्पतौ ।
वलवान् केन्द्रगो जीवः परिवेषोत्थ दोषहा ॥ ११५ ॥

अन्वयः—केन्द्र स्थाने बृहस्पता ते सर्वे विलयं यान्ति । वलवान् केन्द्रगो जीवः परिवेषोत्थ दोषहा भवति ।

विमला—केन्द्र स्थान में गुरु के होने से पूर्वोक्त सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। इसके आतरिक्त वलवान केन्द्रस्थ गुरु परिवेष (सूर्य मण्डल) जन्य दोषों को भी नष्ट कर देता है ॥ ११५ ॥

एकादशस्थः शुक्रो वा वलवाञ्छुभवीक्षितः ।
त्रिविधोत्पातजान् दोषान् हन्ति केन्द्रगतो गुरुः ॥ ११६ ॥

अन्वयः—वलवान्, शुभवीक्षितः एकादशस्थः शुक्रः, केन्द्रगतः गुरुः वा त्रिविधोत्पातजान् दोषान् हन्ति ।

विमला—वलवान शुभ ग्रहों से निरीक्षित एकादश भाव में शुक्र हो या केन्द्र गत गुरु हो तो तीनों प्रकार से उत्पन्न दोषों को नष्ट करता है ॥ ११६ ॥

स्थानादिवलसम्पूर्णः पिनाकी त्रिपुरं यथा ।
लग्न लग्नांश सम्भूतान् बलवान् केन्द्रगो गुरुः ॥ ११७ ॥

अन्वयः—स्थानादि वल संपूर्णः बलवान् केन्द्रगो गुरुः लग्न लग्नांश संभूतान् (दोषान् तथा हन्ति) यथा पिनाकी त्रिपुरं (जघान) ।

विमला—स्थानादि वल से पूर्ण वलवान केन्द्र गत गुरु लग्न तथा लग्न नवांश जन्य सभी दोषों को ऐसे ही नष्ट कर देता है जैसे शिवजी ने त्रिपुरा सुर को भस्म किया था ॥ ११७ ॥

'भस्मी करोति तान्दोषान्निधनानीव पावकः ।
अब्दायनर्तुमासोत्था ये दोषा लग्न संभवाः ॥
सर्वे ते विलयं यान्ति केन्द्रस्थाने बृहस्पतौ ॥ ११८ ॥

अन्वयः—केन्द्र स्थाने बृहस्पतौ अब्दायनर्तु मासोत्था लग्न सम्भवा च ये दोषाः ते सर्वे विलयं यान्ति । तान् दोषान् पावकः इन्धनानि इव भस्मी करोति ।

विमला—केन्द्रगत बृहस्पती वर्ष, अयन, ऋतु, मास जन्य सभी दोषों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार अग्नि इन्धन समूह को भस्म कर देती है ॥ ११८ ॥

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति वलीगुरुः ।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि भुजंगं गरुडो यथा ॥ ११९ ॥

अन्वयः—केन्द्रस्थः वली गुरुः सितोऽपि वा उक्तानुक्ताश्च ये दोषाः तान् सर्वान् हन्ति, यथा गरुडः भुजंगम् हन्ति ।

विमला—केन्द्र में स्थित वली गुरु या शुक्र कहे हुए या विना कहे गये सभी दोषों को उसी प्रकार नष्ट कर देते हैं जैसे गरुड सर्पों को नष्ट कर देता है ॥ ११९ ॥

वर्गोत्तम गतेलग्ने सर्वे दोषालयं ययुः ।
परमाक्षर विज्ञाने कर्माणीव न संशयः ॥ १२० ॥

अन्वयः—लग्ने वर्गोत्तम गते सर्वे दोषाः परमाक्षर विज्ञाने कर्माणि इव लयं ययुः इति न संशयः ।

विमला—यदि लग्न अपने वर्गोत्तम नवांश का हो तो सभी दोष ऐसे नष्ट हो जाते हैं, जैसे ब्रह्म के ज्ञान हो जाने से कर्मवासना नष्ट हो जाती है ॥ १२० ॥

---

१. 'उपरोक्त श्लोक सन् १९०५ में प्रकाशित विद्याविलास प्रेस की पुस्तक में उपलब्ध नहीं होता है।'

दुःस्थानस्थ ग्रहकृताः पापखेटसमुद्भवाः ।
ते सर्वेलयमायान्ति केन्द्रस्थाने बृहस्पतौ ॥ १२१ ॥

अन्वयः—दुः स्थानस्थ ग्रहकृताः पापखेट समुद्भवाः सर्वे ते दोषाः केन्द्र स्थाने बृहस्पतौ लयम् आयान्ति ।

विमला—यदि केन्द्र स्थान में बृहस्पति रहे तो दुष्टस्थानस्थित ग्रहों के दोष तथा पापग्रहजन्य दोष नष्ट हो जाते हैं ॥ १२१ ॥

उच्चस्थो गुरुरेकोऽपि लग्नगो दोष संचयम् ।
हन्तिदोषान् हरिदिने चोपवास व्रतं यथा ॥ १२२ ॥

अन्वयः—उच्चस्थः लग्नगः एकोऽपि गुरुः दोषसंचयम् हन्ति । यथा हरि दिने (एकादश्यां) उपवास व्रतम् दोषान् (पापान्) हन्ति ।

विमला—अपनी उच्चराशि (कर्क) पर स्थित लग्नस्थ गुरु अकेला ही सभी दोषों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे एकादशी व्रत का उपवास अशेष पाप को नष्ट कर देता है ॥ १२२ ॥

अष्टधा राशिकूटं च स्त्रीदूरगणराशयः ।
राशीशयोनिवर्णाख्य शुद्धाश्चेत्[1] पुत्र पौत्रदाः ॥ १२३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—आठ प्रकार का राशिकूट, स्त्रीदूर (नृ दूर) गण राशि, राशिस्वामी, योनि तथा वर्ण ये शुद्ध होवें तो पुत्र पौत्र दायक कहे गये हैं ॥ १२३ ॥

एकराशौ पृथक् धिष्ण्ये दम्पत्योः पाणिपीडनम् ।
उत्तमं मध्यमं भिन्नराश्यैकर्क्षजयोस्तयोः ॥ १२४ ॥

अन्वयः—एक राशौ पृथक् धिष्ण्ये दम्पत्योः पाणि पीडनम् उत्तमम् ज्ञेयम् । भिन्न राश्यैकर्क्षयोः तयोः मध्यमम् ज्ञेयम् ।

विमला—नक्षत्रों के पृथक् रहने पर एक राशि होने पर भी वर कन्या का विवाह उत्तम माना गया है । 'राश्यैके चेत् भिन्नमृक्षं शुभं स्यात्' ॥ एक नक्षत्र में भिन्न राशि होने पर विवाह सम्बन्ध मध्यम माना गया है ॥ १२४ ॥

---

१. 'रज्जवः' इति पाठान्तरम् ।

एकर्क्षेत्वेकराशौ च विवाहः प्राणहानिदः ।
स्त्रीधिष्ण्यादाद्यनवके स्त्रीदूरमति निंदितः ॥ १२५ ॥
द्वितीयं मध्यमं श्रेष्ठं तृतीये नवके भृशम् ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—यदि वर कन्या दोनों की एक राशि हो और एक ही नक्षत्र होतो प्राण नाशक होता है अतः विवाह सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। स्त्री के नक्षत्र से यदि पुरुष का नक्षत्र स्त्री के नक्षत्र से नव नक्षत्रों के अन्दर पड़े तो निंदित द्वितीय नवक (नवनक्षत्रों) के अन्दर पड़े तो मध्यम और तृतीय नवक (नवनक्षत्रों) के अन्दर पड़े तो श्रेष्ठ होता है। इसे स्त्रीदूर कहते हैं जो विवाह में विचारणीय है ॥ १२५ ॥

अथगणकूटमाहः—

तिस्रः[1] पूर्वोत्तरा-धातृयाम्यमाहेशतारकाः ॥ १२६ ॥
इति मर्त्यगणोज्ञेयः स्यादमर्त्यगणः परः ।
हयादित्यर्कवाय्विज्य मित्रेन्दु विष्णु चान्त्यभम्[2] ॥ १२७ ॥
रक्षोगणः पितृत्वाष्ट्र द्विदैवानींद्रतारकाः ।
वसुतोयेश मूलाहि तारकाभियुतोऽनलः ॥ १२८ ॥

अन्वयः—तिस्रः पूर्वोत्तरा, धातृ याम्य माहेशतारकाः मर्त्यगणः, परः हयादित्यर्कवायु-इज्य-मित्र-इन्दु-विष्णु च अन्त्यभं अमर्त्यगणः स्यात्। पितृ-त्वाष्ट्र-द्विदैवान् इन्द्रतारकाः-वसुतोयेश-मूल-अहि-तारका अनलः अभियुतः रक्षोगणः ज्ञेय इति ।

विमला—तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा) तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपदा) रोहिणी भरणी और आर्द्रा ये नव नक्षत्र मनुष्यगण। अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, स्वाती, पुष्य, अनुराधा, मृगशिरा, श्रवण, और रेवती ये नव नक्षत्र देवतागण।

---

१. मुहूर्तचिन्तामणौ पीयूषधारायां नारदवचनम् ।

यदाह नारदः—'रक्षोगणः पितृत्वाष्ट्र द्विदैवत्येन्द्रतारकाः । वसुवारीश मूलाहि कृत्तिकाभिर्युतास्ततः तिस्रः पूर्वोत्तराधातृयममाहेशतारकाः । इति मर्त्यगणाः ज्ञेया स्युरमर्त्यगणाः परे ।' हयादित्यार्कवाय्वन्त्य मित्राश्विज्येन्दु तारकाः ।' इति ।

२. 'ह्यादित्यार्कवायूत्थमित्राश्विजेन्दुतारकाः' इति पाठान्तरम् ।

तथा शेष मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा मूल, आश्लेषा, और कृत्तिका ये नव नक्षत्र राक्षस गण हैं ॥ १२७-१२८ ॥

दम्पत्योर्जन्मभे चैकगणे प्रीतिरनेकधा ।
मध्यमा देवमर्त्यानां राक्षसानां तयोर्मृतिः ॥ १२९ ॥

अन्वयः—यदि च एक गणे दम्पत्योः जन्मभे अनेकधा प्रीतिः भवति। देव मर्त्यानां देव राक्षसानां मध्यमा प्रीतिः, (मर्त्यानां) राक्षसानां तयोः मृतिः भवति ।

विमला—यदि एक गण में स्त्री पुरुष दोनों का नक्षत्र हो तो अनेक प्रकार से उत्तम स्नेह प्राप्त होता है। दोनों का परस्पर देवता मनुष्य होने से मध्यम स्नेह होता है। और मनुष्य राक्षण गण होने से मृत्यु होती है ॥ १२९ ॥

राशि कूटमाहः—

मृत्युः षडाष्टके पञ्च नवके त्वनपत्यता ।
नेष्टं द्विर्द्वादशेऽन्येषु दम्पत्योः प्रीतिरुत्तमा ॥ १३० ॥

अन्वयः—(दम्पत्योः) (राशिः परस्परं) षडाष्टके मृत्युः, पंचनवके तु अनपत्यता भवति । द्विर्द्वादशे नेष्टं एतदन्येषु दम्पत्योः उत्तमा प्रीतिः भवति ।

विमला—स्त्री और पुरुष दोनों की राशि यदि परस्पर षडाष्टक हो अर्थात् एक दूसरे से परस्पर छठवीं आठवीं राशि हो तो मृत्यु हो, नवम पंचम परस्पर हो तो सन्तान नहीं रहे, द्वितीय द्वादश परस्पर राशि होवे तो अशुभफल दायक होता है तथा इससे भिन्न सम्बन्ध होने पर स्त्री पुरुष दोनों में उत्तम स्नेह रहता है। मेष, कन्या में षडाष्टक, मेष सिंह में नवम पंचम तथा मेष वृष में द्विर्द्वादश सम्बन्ध होता है ॥ १३० ॥

एकाधिपे मित्रभावे शुभदं पाणिपीडनम् ।
द्विर्द्वादशे त्रिकोणे च न कदाचित्षडष्टके ॥ १३१ ॥

अन्वयः—एकाधिपे मित्र भावे च पाणिपीडनं शुभदं, द्विर्द्वादशे त्रिकोणे च न इति मध्यमं वोध्यम् किन्तु षडष्टके कदाचिदपि पाणि पीडनम् शुभदं न भवति ।

विमला—एकाधिपत्य होने पर तथा परस्पर मित्र राशि होने पर पाणि ग्रहण का संस्कार शुभ फलदायक होता है तथा द्विर्द्वादश त्रिकोण और षडष्टक दोष होने पर विवाह नहीं करना चाहिए ॥ १३१ ॥

विशेष—द्विर्द्वादश और त्रिकोण (नवम पंचम) सम्बन्ध मध्यम होता है तथा षडाष्टक सम्बन्ध सर्वथा त्याज्य होता है।

[1]शत्रुषडाष्टके कुम्भकन्ययोर्घटमीनयोः ।
वामोक्षयो नृयुकीटभयोः कुम्भकुलीरयो ॥ १३२ ॥
पञ्चास्यमृगयोश्चैव निन्दितं तदतीव तु ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—परस्पर शत्रु तथा षडाष्टक द्विर्द्वाश और नवम पंचम राशियों में विवाह सम्बन्ध करना उत्तम नहीं होता यथा—कुम्भ कन्या, कुम्भ मीन, कन्या वृष, मिथुन वृश्चिक, कुम्भ कर्क, सिंह मकर इत्यादि राशियों मे विवाह सम्बन्ध अत्यन्त निन्दित कहा गया है ॥ १३२ ॥

सूर्यादि ग्रहाणां नैसर्गिक मित्र सम शत्रवः—

सितार्कीज्येन्दुभौमास्ते[2] रिपुमित्र समा रवेः ॥ १३३ ॥
इन्दोर्नशत्रुरर्कज्ञौ कुजेज्यभृगुसूर्यजाः ।
कुजस्य ज्ञोर्कचन्द्रेज्याः शुक्रसूर्यसुतौ क्रमात् ॥ १३४ ॥
ज्ञस्येन्दुरर्कशुक्रौ च कुजजीव शनैश्वराः ।
गुरोर्ज्ञशुक्रौ सूर्येन्दुकुजाः स्युर्भास्करात्मजः ॥ १३५ ॥
शुक्रस्येन्दुरवीज्ञार्की कुजदेवेशपूजितौ ।
शनेरर्केन्दुभूपुत्राज्ञशुक्रौ देवपूजितः ॥ १३६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्यादि ग्रहों के शत्रु मित्र और समग्रहों को क्रमशः बतला रहे हैं। यथाः—सूर्य के शुक्र शनि शत्रु, गुरु चन्द्र मंगल मित्र और बुध सम हैं। चन्द्रमा का शत्रु कोई नहीं। सूर्य बुध मित्र और मंगल, गुरु,

---

१. 'शत्रुः षडाष्टकेनैव कन्ययोघटमीनयोः। वामोक्षयोर्नृषुः कीटभयोः कुम्भकुलीरयोः' इति पाठान्तरम् ।

२. 'भौमाज्ञो' इति पाठान्तरम् ।

शुक्र, शनि सम हैं। मंगल के शत्रु बुध। सूर्य-गुरु चन्द्र मित्र और शुक्र शनि सम हैं। बुध का चन्द्रमा शत्रु, सूर्य-शुक्र-मित्र और मंगल गुरु शनि ये सम हैं। वृहस्पति के बुध शुक्र शत्रु, सूर्य चन्द्रमा मंगल मित्र तथा शनि सम है। शुक्र के चन्द्र-सूर्य शत्रु, बुध-शनि मित्र, और मंगल-गुरु सम हैं। तथा शनि के सूर्य-चन्द्र-मंगल शत्रु, बुध-शुक्र मित्र और गुरु सम हैं॥ १३३-१३६॥

स्फुटार्थ नैसर्गिक ग्रहमैत्रीचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	जीवः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	मं. चं. सू.	बु. श.	बु. शु.	मित्राणि
बुधः	मं. बु. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	शनिः	मं. बृ.	गुरु	समाः
शु. श.	०	बुधः	चन्द्रः	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

अथ योनिकूटमाह :—

अश्वेभ-[1]मेषसर्पाहिश्वोतुमेषोतु-मूषकाः ।
[2]आखुर्गोमहिषव्याघ्राश्वद्विड् व्याघ्रो मृगद्वयम् ॥ १३७ ॥
श्वानः कपिर्बभ्रुयुग्मं कपिसिंहतुरङ्गमाः ।
सिंहगोहस्तिनो भानामेषां योनिर्यथाक्रमम् ॥ १३८ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—अश्विनी आदि २८ नक्षत्रों की क्रमशः योनि समझना चाहिए। यथा—१-अश्व, २-गज, ३-मेष, ४-सर्प, ५-सर्प, ६-श्वान, ७-मार्जार, ८-मेष, ९-मार्जार, १०-मूषक ११-मूषक, १२-गौ, १३-महिष, १४-व्याघ्र, १५-महिष, १६-व्याघ्र, १७-मृग, १८-मृग, १९-श्वान, २०-वानर, २१-नकुल, २२-नकुल, २३-वानर, २४-सिंह, २५-अश्व, २६-सिंह, २७-गौ, २८ गज॥ १३७-१३८॥

---

१. 'सर्प्याहिश्वोतुमेषौ' इति पाठान्तरम्।
२. 'आखुश्च महिषव्याघ्रः काले व्याघ्रो मृगद्वयम्' इति पाठ भेदः।

वैरं वभ्रूरंगमेषवानरं सिंहदन्तिनम् ।
गोव्याघ्रमाखुमार्जारं महिषाश्वं च शात्रवम् ॥ १३९ ॥

अन्वयः—बभ्रु-उरगम्, मेष वानरम्, सिंह दंतिनम्, 'गो व्याघ्रम्, आखु मार्जारम्, महिष-अश्वम् च परस्परं शत्रु भावः ।

विमला—नकुल-सर्प, मेष-वानर, सिंह-गज, गाय-व्याघ्र, चूहा-बिल्ली और महिष तथा अश्व का परस्पर योनिवैर होता है । अर्थात् ये परस्पर शत्रु हैं ॥ १३६ ॥

अथ वर्णकूट विचारमाहः—

झषालिकर्कटा विप्रास्तदूर्ध्वाः क्षत्रियादयः ।
पुंवर्णराशौ स्त्रीराशौ समेहीने तथा शुभम् ॥ १४०[1] ॥[2]

अन्वयः—झष-अलि-कर्कटाः विप्रा (विप्रवर्ण इति) तदूर्ध्वं क्षत्रियादयः (१,६,५ क्षत्रिय २,१०,६ वैश्य३,११,७ शूद्रः) पुंवर्णराशौ स्त्रीराशौ समे हीने सति शुभम् (भवति) ।

विमला—मीन, वृश्चिक और कर्क रायिशाँ ब्राह्मण वर्ण हैं । इनके वाद की राशिया क्रमशः क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वर्ण की हैं । यथा—मेष, धनु, सिंह क्षत्रिय वर्ण । वृष मकर कन्या वैश्य वर्ण और मिथुन-कुम्भ तुला ये राशियाँ शूद्र वर्ण हैं । कन्या का वर्ण वर के वर्ण से सम या न्यून होने पर शुभ होता है ॥ १४० ॥

चतुः त्रिधं त्रिधोत्थाय कन्याया स्वस्तिभाक्रमात् ।
वह्निभादिन्दुभान्नाडी त्रिचतुः पञ्चपर्वसु ॥ १४१[3] ॥

अन्वयः—त्रिधं त्रिधं उत्थाय चतुः (आवृत्या अश्विन्यादि नक्षत्राणां नाडी जायते यथा—आदि, मध्य, अन्त्य इति त्रिधं पुनः त्रिधं उत्थाय

---

१. 'मीनालिकर्कटाविप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः । शूद्रोयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यः कन्या वृषो मृगः' इति पाठ भेदः ।

२. वर्ण ज्येष्ठातु या नारी वर्णहीनस्तु यः पुमान् ।
विवाह यदि कुर्वीत तस्या भर्त्ता विनश्यति ॥ (मु. चि. पी. टी.)

३. 'नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां हीनवर्णं वरः सदा । आद्यमध्यान्त्यचरममध्याद्याश्विनीक्रमात्' इति पाठ भेदः । पुनश्च 'चतुस्त्रिद्वयंघ्रिभोत्थायाः कन्यायाः क्रमशोऽश्विभात् । वह्निभादिन्दुभान्नाडी त्रिचतुः पञ्चपर्वसु ॥' इति पीयूषधाराटीकायाम् ।

अर्थात् अन्त्य मध्य आदि अनेन क्रमेण चतुरावृत्या (आ. म. अं. अं. म. आ.) अश्विन्यादि नक्षत्राणां नाड़ी भवति । स्वस्तिभाक् कन्यायाः क्रमात् अश्विभात् त्रि, वह्नि भात् चतुः एवं इन्दुभात् पंच पर्वसु गणना कार्या ।

विमला—अश्विन्यादि नक्षत्रों की तीन तीन के क्रमशः अनुलोम विलोम विधि से आदि, मध्य, अन्त्य इत्यादि नाड़ी गणना की गई है। यह व्यवस्था कन्या के चतुश्चरण जन्म व्यवस्था के अनुसार है। यदि त्रिचरण नक्षत्र है तो कृत्तिका से आरम्भ कर नाड़ी की व्यवस्था समझें और यदि द्विचरण राशि नक्षत्र योग में कन्या का जन्म होवे तो नाड़ी की व्यवस्था मृगशिर्ष नक्षत्र से अभिजित के साथ करना चाहिए ॥१४१॥

विशेषः—इस प्रकार की व्यवस्था मात्र नारद संहिता में ही उपलब्ध है अन्यत्र सभी ग्रन्थों में अश्विन्यादि से (आ. म. अं. अं. म. आ.) चार आवृत्ति क्रम मे नाड़ी की व्यवस्था सर्वमान्य है।

गणयेत्संख्ययाचैकनाड्यां मृत्युर्न [1]पार्श्वयोः ।
प्राजापत्य ब्राह्मदैवा विवाहार्षकसंयुताः ॥ १४२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—उपरोक्त विधि से गणना कर नाड़ी का ज्ञान करना चाहिए। स्त्री और पुरुष की एक नाडी होने से मृत्यु होती है पार्श्व नाडी शुभ होती है। पाजापत्य, ब्राह्म, दैव और आर्ष इन विवाहों मे नाड़ी का विचार करना चाहिए ॥ १४२ ॥

उक्तकाले तु कर्त्तव्याश्चत्वारः फलदायकाः ।
आसुरों द्रविणादानात्पैशाचः कन्यका छलात् ॥ १४३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—प्राजापत्य, ब्राह्म, दैव और आर्ष ये उपरोक्त चार प्रकार के विवाह शुभ मुहूर्त्त मे करने से उत्तम फल दायक होता है। कन्या का पिता द्रव्य लेकर कन्या का विवाह करे तो उसे आसुर विवाह तथा वर यदि छल पूर्वक कन्या का अपहरण कर विवाह कर ले तो उसे पैशाच विवाह कहते हैं ॥ १४३ ॥

राक्षसो युद्धहरणद्गान्धर्वः समयान्मिथः ।
गान्धर्वासुरपैशाचराक्षसाख्यास्तु नोत्तमाः[2] ॥ १४४ ॥

---

१. 'न संशयः' इति पाठान्तरम् पीयूषधारायाम् ।
२. 'सर्वदा' इति पाठ भेदः ।

विमला—युद्ध में जीतकर कन्या से विवाह करे तो राक्षस विवाह। और स्त्री पुरुष दोनों की इच्छा से स्वयं विवाह सम्बन्ध को गान्धर्व विवाह कहते हैं, गान्धर्व, आसुर, पैशाच और राक्षस ये चार प्रकार के विवाह उत्तम नहीं हैं ॥ १४४ ॥

चतुर्थमभिजिल्लग्नमुदयर्क्षाच्च सप्तमम् ।
गोधूलिकं तदुभयं विवाहे पुत्रपौत्रदम् ॥ १४५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्य के उदय लग्न से चतुर्थ लग्न अभिजित लग्न तथा सप्तम लग्न को गोधूलि लग्न कहते हैं, इनमें विवाह करना पुत्र पौत्रादि एवं सौख्य प्रद होता है ॥ १४५ ॥

प्राच्यानां च कलिङ्गानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृतम् ।
अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्यं दोषविनाशकृत् ॥ १४६ ॥

अन्वयः—गोधूलिकं प्राच्यानां कलिङ्गानां च मुख्यं (फल दायकं) स्मृतम् । अभिजित सर्व देशेषु मुख्यं दोष विनाशकृत् भवेत् ।

विमला—गोधूलि लग्न पूर्व देश वासियों के लिए तथा कलिङ्ग देश वासियों के लिए विशेष शुभ फल दायक तथा दोष नाशक होता है। एवं अभिजित लग्न सभी देशों के लिए समान रूप से सर्वविघ्न नाशक है ॥ १४६ ॥

मध्यन्दिनगते भानौ मुहूर्तोऽभिजिदाह्वयः ।
नाशयत्यखिलान्दोषान्पिनाकी त्रिपुरं यथा ॥ १४७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्य के मध्याह्न काल में होने पर अर्थात् दिन के मध्य भाग में यह अभिजित लग्न होता है। यह उसी प्रकार सभी दोषों को नष्ट कर देता है जैसे शिव जी ने त्रिपुर असुर का नाश किया था ॥ १४७ ॥

मध्यंदिनगतेभानौ सकलं दोष संचयम् ।
करोति दोषमभिजित्तूलराशिमिवानलः ॥ १४८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—मध्याह्न कालिक अभिजित लग्न सम्पूर्ण दोषों को उसी प्रकार नष्ट करता है जैसे तूल राशि को अनल नष्ट कर देता है ॥ १४८ ॥

हन्त्येकश्च महादोषो गुणलक्षमपीह सः।
पावने पञ्चगव्यं तु पूर्णकुम्भं सुरालयम् ॥ १४९ ॥

विमला—एक भी महान दोष लाखों गुणों को नष्ट कर देता है जैसे पंचगव्य के पावन कलश को सुरा कण नष्ट कर देता है ॥ १४९ ॥

पुत्रोद्वाहात्परं पुत्री विवाहो न ऋतुत्रये।
न तयोर्व्रतमुद्वाहान्मंगले नान्यमङ्गलम् ॥ १५० ॥

विमला—पुत्र के विवाह के बाद ६ माह (३ ऋतु) तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिए। पुत्र और कन्या के विवाह के अनन्तर ६ माह तक व्रतादि मंगल कार्य भी नहीं करना चाहिए ॥ १५० ॥

विवाहश्चैकजन्यानां षण्मासाभ्यन्तरे यदि।
असंशयं त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैका विधवा भवेत् ॥ १५१ ॥

अन्वयः—यदि षण्मासाभ्यन्तरे एक जन्यानां विवाहः च (तदा) तत्र त्रिभिः वर्षैः एका असंशयं विधवा भवेत्।

विमला—यदि ६ माह के अन्दर दो सहोदरियों का विवाह हो तो ३ वर्ष के अन्दर उनमें से एक वैधव्य को प्राप्त करती है ॥ १५१ ॥

प्रत्युद्वाहो नैव कार्यो नैकस्मै दुहितुर्द्वयम्।
न चैक जन्मनोः पुंसोरेकजन्ये तु कन्यके ॥ १५२ ॥

अन्वयः—प्रत्युद्वाहः नैव कार्यः। एकस्मै दुहितुः द्वयम् च न। न च एक जन्मनोः पुंसो एक जन्ये कन्यके देये।

विमला—एक विवाह के साथ दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए। एक ही वर के लिए एक साथ दो कन्या नहीं देना चाहिए। तथा सहोदर भाइयों का विवाह सहोदरी बहनों से नहीं करना चाहिए। इससे अमंगल होता है ॥ १५२ ॥

नैवं कदाचिदुद्वाहो नैकदा मुन्डनद्वयम्।
दिवाजातस्तु पितरं रात्रौतुजननी तथा ॥ १५३ ॥
आत्मानं संध्ययोर्हन्ति नास्ति गंडे विपर्ययः।
सुतः [1]सुतावा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजाः ॥ १५४ ॥

---

१. "सुतं सुतां वा नियतं" इति पाठान्तरम्।

अन्वयः—एकदा कदाचित् नैव उद्वाहः न तु मुण्डन द्वयम्। दिवा जातः मूलजः पितरं रात्रौ जननीं तथा सन्ध्ययोः आत्मानं हन्ति। गंडे विपर्ययः नास्ति। मूलकाः सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति।

विमला—एक साथ दो विवाह या मुण्डन कर्म नहीं करना चाहिए। आगे गण्डान्त दोष कहते हैं। मूल नक्षत्र का बालक यदि दिन में जन्म लेतो पिता को रात्रि में जन्म ले तो माता को, सन्धियों में जन्म ले तो स्वयं अपने को मारता है। गंड में अन्य विपर्यय नहीं है। मूल नक्षत्रोत्पन्न बालक तथा बालिका अपने श्वसुर को नष्ट करता है॥ १५३–१५४॥

तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेजाद्यपादजः।
ज्येष्ठान्त्य पादजो ज्येष्ठं हन्ति वालो न वालिका॥ १५५॥
वालिका मूल ऋक्षे तु मातरं पितरं तथा।
ऐन्डी धवाग्रजं हन्ति देवरं तु द्विदैवजा॥ १५६॥

अन्वयः—तद् (मूलस्य) अन्त्य पादजः तथा श्लेषाद्य पादजः नंव (दोष कृन्न)। ज्येष्ठान्त्य पादजः वालः ज्येष्ठं (भ्रातर) हन्ति, बालिका (जायते चेत्) न हन्ति॥ मूल ऋक्षे वालिका तु मातरं पितरं तथा ऐन्द्री (ज्येष्ठा नक्षत्रजा) धवाग्रजं। द्विदैवजा (विशाखा नक्षत्रोत्पन्ना) तु देवरं हन्ति।

विमला—मूल नक्षत्र के अन्त्यचरण में तथा आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि जन्म हो तो दोष नहीं होता। ज्येष्ठा के चतुर्थ चरण में उत्पन्न बालक अपने बड़े भाई को नष्ट करता है। किन्तु कन्या का जन्म होतो दोष नहीं होता। मूल नक्षत्र में उत्पन्न बालिका माता और पिता दोनों को नष्ट करती है। ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न बालिका अपने ज्येष्ठ (पति के बड़े भाई) को तथा विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न बालिका देवर को नष्ट करती है॥ १५५–१५६॥

स्वस्थे नरे सुखासीने 'यावत्स्पन्दतिलोचनम्'[1][2]।
तस्यत्रिंशत्तमो भागस्तत्परः परिकीर्तितः॥ १५७॥

---

१. 'यावत्स्यंदति' इति पाठान्तरम्।

२. 'लोचने' इति साधु पाठः।

अन्वयः—स्वस्थेनरे सुखासीने लोचनं यावत्स्पन्दति (स्पन्दने यावत समयः लगति) तस्य त्रिंशत्तमो भागः तत्परः परिकीर्तितः।

विमला—स्वस्थ पुरुष सुख पूर्वक यदि बैठा हो उस समय उसके नेत्र स्फुरण में जितना समय लगता है उसके ३० वें भाग को तत्पर कहते हैं॥ १५७॥

तत्पराच्छतगो भागस्त्रुटिरित्यभिधीयते।
त्रुटेः सहस्रगो योंशो लग्नकालः स उच्यते॥ १५८॥
देवोपि तन्न जानाति किं पुनः प्राकृतो जनः।
स कालोऽथान्यकालोवा पूर्वकर्मवशाद्भवेत्॥ १५९॥
निमित्तमात्रं दैवज्ञस्तद्वशान्नशुभाशुभम्।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—तत्पर के शतांश को त्रुटि कहते है तथा त्रुटि से हजारवें भाग को लग्न काल कहते हैं। उसे देवता भी नहीं जानते फिर सामान्य जन की तो बात ही क्या है। वह लग्न काल या अन्य कोई भी काल जन्मान्तर कर्म के अनुसार स्वतः प्राप्त हो जाता है। दैवज्ञ निमित्त मात्र है उसके वश में शुभ अशुभ कुछ भी नहीं है॥ १५८-१५९॥

शंकुलक्षणमाहः—

न्यग्रोध खदिराश्वत्थ रक्तचन्दनवृक्षजाः॥ १६०॥
श्रीखण्डागरुदन्तोत्थं शुभशङ्कुमकल्मषम्।
द्वादशाङ्गुलमुत्सेधं परिणाहे षडङ्गुलम्॥ १६१॥
एवं लक्षणसंयुक्तं कल्पयेत्कालसाधने।
आरभ्योद्वाहदिवसात्षष्ठे वाप्यष्ठमे दिने॥ १६२॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—वरगद, खैर, पीपल, रक्त चन्दन, नारियल, अगर इन वृक्षों का अथवा हाथी दाँत का शुभ पवित्र वारह अंगुल ऊंचा (लम्बा) और ६ अंगुल मोटा शंकुका निर्माण सर्व लक्षण युक्त करे। यह निर्माण विवाह के मांगलिक कार्यारम्भ दिन से छठे या आठवें दिन विवाह में उत्तम काल साधन के लिए बनावे॥ १६०-१६२॥

वधूप्रवेशः संपत्त्यै दशमेऽथ समे दिने।
ह्ययनं द्वितयं जन्ममासाग्रदिवसानपि॥
सन्त्यज्य प्रतिशुक्रोऽपि यात्रा वैवाहिकी शुभा॥ १६३॥

इति श्रीनारदीय संहितायां विवाहाध्यायः
एकोनत्रिंशतमः॥ २९॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—विवाह के दिन से दशवें दिन या सम दिनों में, दोनों अयन, वर कन्या का जन्म का नक्षत्र और दिन तथा सन्मुख शुक्र का त्याग कर वैवाहिकी यात्रा (वधू प्रवेश) शुभकारक होती है॥ १६३॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
विवाहाध्याय समाप्त।

अथाष्टाविंशोध्यायः

श्रीप्रदं सर्वगीर्वाणस्थापनं चोत्तरायणे।
गीर्वाणपूर्वंगीर्वाणमन्त्रिणोर्दृश्यमानयोः ॥ १ ॥

अन्वयः—उत्तरायणे गीर्वाण पूर्व, गीर्वाणमत्रिणो दृश्य माने च च सर्वगीर्वाण स्थापनं श्रीप्रदम् (भवति)।

विमला—उत्तरायण (मकर राशिगत सूर्य से मिथुन राशि के सूर्य पयन्तकाल) तथा शुक्र और गुरु के उदय काल में सम्पूर्ण देवताओं को स्थापना करना चाहिए ॥ १ ॥

विचैत्रेष्वेत्रमासेषु माघादिषु च पञ्चसु।
शुक्लपक्षेषु कृष्णेषु[1] तदादि[2] पञ्चसु स्मृतम् ॥ २ ॥

अन्वयः—विचैत्रेषु माघादिषु पञ्चसु मासेषु, शुक्लपक्षेषु, कृष्णपक्षे तु तदादि पञ्चसु (तिथिषु) एव (गोर्वाणस्थापनं) स्मृतम् ॥

विमला—चैत्र को छोड़कर माघादि पांच महीनों के शुक्लपक्ष में तथा कृष्णपक्ष की आरम्भ की पांच तिथियों तक देव प्रतीष्ठा होती है ॥ २ ॥

दिनेषु यस्य देवस्य या तिथिस्तत्र तस्य च।
द्वितोयादिद्वयोः पञ्चम्यादितस्तिसृषु क्रमात् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—जिस देवता की जो तिथि है उसी तिथि में प्रतिष्ठा करनी चाहिए। द्वितीया से दो तथा पंचमी से तीन तिथियाँ प्रतिष्ठा कार्य में शुभ हैं ॥ ३ ॥

दशम्यादेश्चतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।
त्रिरुत्तरादितिश्चान्त्यहस्तत्रयगुरुडुषु ॥ ४ ॥
साश्विधातृजलाधीश हरिमित्रवसुस्वपि।
कुजवर्जित वारेषु कर्त्तुः सूर्यबलप्रदे ॥ ५ ॥

---

१. 'कृष्णे तु' इति साधु पाठः।

२. 'तदादिष्वष्टसु स्मृतम्' इति मूल पाठः।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—दशमी से चार तिथियाँ तथा पूर्णिमा विशेष कर स्थापना में उत्तम तिथियां हैं। तीनों उत्तरा पुनर्वसु, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती और पुष्य, अश्विनी, रोहिणी, शतभिषा, श्रवण, अनुराधा और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में मंगल से अतिरिक्त सभी-दिनों में, कर्त्ता के सूर्यबल उत्तम होने पर देवप्रतिष्ठा करना उत्तम होता है ॥ ४-५ ॥

चन्द्रतारा बलोपेते पूर्वाह्ले शोभने दिने ।
शुभलग्ने शुभांशे च कर्त्तुर्न निधनोदये ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चन्द्र तारा बल से युक्त दो पहर से पहले शुभ दिन शुभ लग्न में कर्त्ता की राशि से अष्टम लग्न शुद्धि होने पर देवप्रतिष्ठा करनी चाहिए ॥ ६ ॥

राशयः सकलाः श्रेष्ठाः शुभग्रहयुतेक्षिताः ।
शुभग्रहयुते लग्ने शुभग्रहयुतेक्षिते ॥ ७ ॥

अन्वयः—शुभग्रह युतेक्षिताः सकलाः राशयः श्रेष्ठाः। शुभग्रह युते, शुभग्रह युतेक्षिते च लग्ने (प्रतिष्ठा कार्या) ।

विमला—सभी राशियाँ शुभग्रहों के योग तथा दृष्टि से उत्तम होती हैं। तथा शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट लग्न भी देवप्रतिष्ठा में शुभ फल दायक होता है ॥ ७ ॥

राशिः स्वभावजं हित्वा फलं ग्रहजमाश्रयेत् ।
अनिष्टफलदः सोपि प्रशस्तफलदः शशी ॥ ८ ॥
सौम्यर्क्षगोधिमित्रेण गुरुणा वा विलोकितः ।
पञ्चेष्टिके शुभे लग्ने नैधने शुद्धिसंयुते ॥ ९ ॥

अन्वयः—राशिः स्वभावजं फलं हित्वा, ग्रहजं फलं आश्रयेत् । अनिष्ट फलदः शशी अपि (शुभ-ग्रह युते दृष्टे सति, प्रशस्त फलदः भवेत् । यदा लग्नेशः सौम्यर्क्षगः अधिमित्रेण गुरुणा वा विलोकितः पंचेष्ट शुद्धः शुद्धि सहिते निधने च प्रतिष्ठा शुभं भवति ।

विमला—राशि अपने स्वाभाविक फल को त्याग कर ग्रहों के आश्रय से शुभाशुभ फल देती है। चन्द्रमा अनिष्टफलद होने पर भी शुभग्रहों के

शुभ योग दृष्टि वश शुभ फलदायक होता है। लग्न शुभग्रह की राशि हो, अपने अधिमित्र मित्र या गुरु से देखा जाता हो पंचेष्ट शुद्ध हो तथा अष्टम भाव शुद्ध हो तो प्रतिष्ठा में शुभ होता है ॥ ८-९ ॥

लग्नस्थाः सूर्यचन्द्रारराहुकेत्वर्कसूनवः ।
कर्त्तुर्मृत्यु प्रदाश्चान्ये धनधान्यसुखप्रदाः ॥ १० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—लग्न में स्थित सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, केतु और शनि कर्त्ता की मृत्यु करने वाले तथा अन्य ग्रह धन धान्यादि सुख प्रद होते हैं ॥ १० ॥

द्वितीये नेष्टदाः पापाः शुभाश्चन्द्रश्च वित्तदाः ।
तृतीये निखिलाः खेटाः पुत्रपौत्रसुखप्रदाः ॥ ११ ॥

अन्वयः—द्वितीये पापाः नेष्टदाः । शुभग्रहाः चन्द्रश्च वित्तदाः । तृतीये दिखिलाः खेटाः पुत्रपौत्रसुखप्रदाः भवन्ति ।

विमला—द्वितीय स्थान में पाप ग्रह अशुभ फल दायक तथा शुभ ग्रह और चन्द्रमा धन प्रद होता है। तथा तृतीय स्थान में रहने पर सभी ग्रह पुत्र पौत्र सुखादि को देने वाले होते हैं ॥ ११ ॥

चतुर्थेसुखदाः सौम्याः क्रूराश्चन्द्रश्च दुःखदाः ।
हानिदाः पंचमे क्रूराः सौम्याः पुत्रसुखप्रदाः ॥ १२ ॥

अन्वयः—सौम्याः चतुर्थे स्थिताः सुखदाः किन्तु क्रूराः चन्द्रश्च दुःखदाः । पंचमे क्रूरा हानिदाः सौम्याः पुत्र सुख प्रदाः भवन्ति ।

विमला—चतुर्थ भाव में स्थित शुभ ग्रह शुभ फल दायक होते हैं। किन्तु क्रूर ग्रह और चन्द्रमा दुःख देता है। पंचम भाव में यदि क्रूर ग्रह हों तो हानि कारक किन्तु शुभ ग्रह पुत्र तथा सुख दायक होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्णः क्षीणः शशीतत्र पुत्रदः पुत्रनाशनः ।
षष्ठे शुभाः शत्रुदाः स्युः पापाः शत्रुक्षयप्रदाः ॥ १३ ॥

अन्वयः—तत्र पंचमे पूर्णः शशी पुत्रदः, क्षीणः शशी पुत्र नाशनः । षष्ठे शुभाः शत्रुदाः स्युः पापाः शत्रुक्षय प्रदाः स्युः ।

विमला—पंचम स्थान में गया हुआ पूर्ण चन्द्रमा पुत्र दायक और क्षीण चन्द्रमा पुत्र नाशक होता है। तथा षष्ठ स्थान में पाप ग्रह शत्रु नाशक एवं शुभ ग्रह शत्रु बढ़ाने वाले होते हैं॥ १३॥

पूर्णः क्षीणोऽपि वा चन्द्रः षष्ठेऽखिलरिपुक्षयम्।
करोति कर्त्तुरचिरादायुः पुत्रधनप्रदः॥ १४॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—पूर्ण अथवा क्षीण चन्द्रमा भी षष्ठस्थान में होने पर शत्रुओं को क्षय करने वाला होता है तथा प्रतिष्ठा करने वाले पुरुष को शीघ्र ही पुत्र, धन, यश, आयु आदि देता है॥ १४॥

व्याधिदाः सप्तमेपापाः सौम्या सौम्य फलप्रदाः।
अष्टयस्थानगाः सर्वे कर्त्तुर्मृत्युप्रदा ग्रहाः॥ १५॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—सप्तम स्थान में स्थित पाप ग्रह रोग देने वाले तथा शुभ ग्रह उत्तम फल दायक होते हैं। तथा अष्टम स्थान गत सभी ग्रह कर्त्ता की मृत्यु करने वाले होते हैं॥ १५॥

धर्मेपापा घ्नन्ति सौम्याः शुभदाः शुभदः शशी।
भङ्गदाः कर्मगाः पापाः सौम्याश्चन्द्रश्च कीर्तिदाः॥ १६॥

अन्वयः—धर्मे पापाः घ्नन्ति, सौम्याः (ग्रहाः) शुभदाः शशी च शुभदः। कर्मगाः पापाः भंगदाः। सौम्याः चन्द्रश्च कीर्तिदाः भवन्ति।

विमला—नवम भावगत पापग्रह मृत्यु दायक तथा शुभग्रह एवं शुभ चन्द्रमा शुभफल देने वाला होता है। कर्मभाव में बैठे हुए पापग्रह कार्य को नष्ट करने वाले तथा शुभग्रह और पूर्ण चन्द्रमा शुभ फल दायक होता है॥ १६॥

लाभस्थानगताः सर्वे भूरिलाभप्रदा ग्रहाः।
व्ययस्थानगताः शश्वद्बहुव्ययकराग्रहाः॥ १७॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—लाभ स्थान में स्थित सभी ग्रह लाभप्रद होते हैं। तथा व्यय स्थान में गये हुए ग्रह निरन्तर व्यय कराने वाले होते हैं॥ १७॥

गुणाधिकतरेलग्ने दोषाल्पत्वतरे यदि।
सुराणां स्थापनं तत्र कर्त्तुरिष्टार्थ सिद्धिदम् ॥ १८ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—अधिक गुणों से युक्त तथा अल्प दोष युक्त लग्न में देव प्रतिष्ठा यदि हो, तो कर्त्ता के इष्ट अर्थकी सिद्धि को देने वाला है॥ १८॥

हन्त्यर्थहीना कर्तारं मन्त्रहीना तुऋत्विजम्।
श्रियंलक्षणहीना तु न प्रतिष्ठासमो रिपुः ॥ १९ ॥

श्री नारदीय संहितायां सुर प्रतिष्ठाध्यायस्त्रिशत्तमः ॥ ३० ॥

अन्वयः—अर्थ हीना देव प्रतिष्ठा कर्तारं हन्ति। मन्त्र हीना तु ऋत्विजं हन्ति। लक्षण हीना तु श्रियं हन्ति। अतः प्रतिष्ठा समो रिपुः न।

विमला—द्रव्य से हीन अर्थात् कार्पण्य :युत प्रतिष्ठा यजमान को नष्ट करती है। मन्त्र हीन प्रतिष्ठा आचार्य को नष्ट करती है। तथा लक्षण से हीन प्रतिष्ठा लक्ष्मी को नष्ट करने वाली होती है। अतः विवेक रहित प्रतिष्ठा करने वाले व्यक्ति के लिए प्रतिष्ठा से बढ़कर कोई शत्रु नहीं हो सकता॥ १९॥

श्री नारद संहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में

सुरप्रतिष्ठाध्याय समाप्त।

वास्तुलक्षणाध्याय एकत्रिंशत्तमः

निर्माणे पत्तनग्राम गृहादीनां समासतः ।
क्षेत्रमादौ परीक्षेत गन्धवर्णरसप्लवैः ॥ १ ॥

अन्वयः—पत्तन, ग्राम गृहादीनां निर्माणे समासतः आदौ गंध वर्ण रस प्लवैः क्षेत्रम् परीक्षेत ।

विमला—शहर, ग्राम, तथा गृह के निर्माण काल में संक्षेपतः गंध-वर्ण-रस-और प्लव के द्वारा पहले भूमि की परीक्षा करनी चाहिए ॥ १ ॥

मधुपुष्पाम्लपिशितगन्धान् विप्रानुपूर्वकम् ।
सितरक्तेश हरित कृष्णवर्णं यथा क्रमात् ॥ २ ॥

अन्वयः—विप्रानुपूर्वकम् यथा क्रमात् मधु, पुष्प, अम्ल, पिशित गंधान् । सित, रक्त हरित कृष्ण वर्णम् क्षेत्रम् शुभं भवति ।

विमला—ब्राह्मण के लिए स्वेत वर्ण तथा शहद की भांति गंध वाली भूमि, क्षत्रिय के लिए रक्त वर्ण तथा पुष्प की तरह गंध वाली भूमि, वैश्य के लिए हरित वर्ण तथा अम्ल गंध युत भूमि तथा शूद्र के लिए कृष्ण वर्ण एवं मांस की भांति गंध वाली भूमि शुभद होती है ॥ २ ॥

मधुरं कटुकं तिक्तं कषायश्च रसाः क्रमात् ।
अत्यन्तं वृद्धिदं नृणामीशानप्रागुदक्प्लवम् ॥ ३ ॥
अन्य दिक्षुप्लवं तेषां शश्वदत्यन्त हानिदम् ।

अन्वयः—क्रमात् मधुरं कटुकं तिक्तं कषायश्च रसाः (रस संयुक्ता भूमि इत्यर्थः) ब्राह्मणादि क्रमेण शुभदा । ईशान-प्राक्-उदक् प्लवा भूमिः नृणां अत्यन्तं वृद्धिदं अन्य दिक्षु प्लवत्वं शश्वद् तेषां अत्यन्त हानिदम् भवति ।

विमला—ब्राह्मण के लिए मधुर स्वाद वाली, क्षत्रिय के लिए कटु स्वाद वाली, वैश्य के लिए तिक्तस्वाद वाली और शूद्र के लिए कषाय स्वाद युक्त भूमि शुभद होती है तथा ईशान पूर्व और उत्तर प्लवा भूमि सभी वर्णों के लिए उत्तम होती है और अन्य दिशाओं का प्लव हानि कारक होता है ॥ ३ ॥

तत्रकर्ता हस्तमात्रं खनित्वा तत्र पूरयेत् ॥ ४ ॥
अत्यन्त वृद्धिरधिके हीने हानिः समेसमम् ।
तथानिशादौ कृत्वा तु पानीयेन प्रपूरयेत् ॥ ५ ॥
प्रातर्दृष्टेजलेवृद्धिः समं पंके व्रणे क्षयः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—जिस भूमि में गृह निर्माण करना हो। कर्ता १ हाथ लम्बा चौड़ा और गहरा गढ़ा खोद कर पुनः उसे भरे यदि भूमि (मिट्टी) अधिक हो तो शुभ वृद्धिदायक। समान हो तो सम फलदायक तथा हीन (न्यून) होने पर हानि होती है। पुनः उस मिट्टी को निकाल कर सायं काल जल से भर देवे और प्रातः काल देखने पर जल शेष रहे तो भूमि उत्तम, कीचड़ शेष रहे तो भूमि मध्यम तथा दरार पड़ जाय तो भूमि वास योग्य नहीं होती है ॥ ४-५ ॥

एवं लक्षणसंयुक्ते क्षेत्रे सम्यक् समीकृते ॥ ६ ॥
दिक् साधनाय तन्मध्ये समे मण्डलमालिखेत् ।
पूर्वोक्तलक्षणं[1]संयुक्ते तन्मध्ये स्थापयेत्ततः ॥ ७ ॥

अन्वयः—एवं पूर्वोक्त लक्षण संयुक्ते सम्यक् समी कृते क्षेत्रे, तन्मध्ये दिक् साधनाय समे मण्डल मालिखेत्। तत्र च पूर्वलक्षण संयुक्ते तन्मध्ये ततः शङ्कुं स्थापयेत् ।

विमला—पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त समतल भूमि में दिक् साधन के लिए एक मण्डल बनावे। तथा पूर्व कहे हुए लक्षणों से युक्त उत्तम शङ्कु की स्थापना करे ॥ ६-७ ॥

ततश्छायां स्पृशेद्यत्र वृत्ते पूर्वापराह्णयोः ।
तत्रकार्यावुभौविन्दू वृत्ते पूर्वापरा विधौ ॥ ८ ॥
रेखा या सोत्तरासाध्या तन्मध्येतिमिनास्फुटा ।
तन्मध्ये तिमिनारेखा कर्त्तव्या पूर्वपश्चिमा ॥ ९ ॥

अन्वयः—ततः शङ्कु स्थापनानन्तरं छायां पूर्वा पराह्णयो वृत्ते यत्र स्पृशेत्। तत्र उभौ विन्दू कार्यो पूर्वा परा विधौ या रेखा सोत्तरा साध्या तन्मध्ये स्फुटा तिमिना रेखा कर्त्तव्याः ।

---

१. 'पूर्व लक्षण संयुक्ते' इति साधुपाठः ।

विमला—पूर्ण परीक्षित शंकु को समतल भूमि पर स्थापित करे और उसकी प्रातःकालीन तथा सायंकालीन छाया वृत को जहाँ स्पर्श करे उसके द्वारा उत्तर दिशा का ज्ञान करके उस पर उत्तर दक्षिण को मत्स्याकृति रेखा करना चाहिए ॥ ८-९ ॥

तन्मध्यमत्स्यैर्विदितः साध्यासूचीमुखास्तदा ।
मध्याद्विनीर्गतैः सूत्रैश्चतुरस्रं लिखेद्वहिः ॥ १० ॥

अन्वयः—सूची मुखा तन्मध्या मत्स्या रेखा कर्तव्या । मध्यभागतो विनिर्गता रेखातो चतुरस्रं वहिः लिखेत् ।

विमला—फिर बीच में मत्स्याकार सूई के नोक की भाँति सूक्ष्म रेखा करे तथा उससे ही उत्तर दक्षिण की रेखा करे और पुनः तिमिना रेखा साधितकर दिशा का ज्ञान करना चाहिए ॥ १० ॥

चतुरस्त्री कृते क्षेत्रे षड्वर्गपरिशोधिते ।
रेखामार्गे च कर्त्तव्यं प्राकारं सुमनोहरम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—षड्वर्ग परिशोधिते चतुरस्त्री कृते क्षेत्रे रेखामार्गे सुमनोहरं प्राकारं (वृत्तं) च कर्त्तव्यम् ।

विमला—षड्वर्ग रीति से भूमिशोधन के बाद चौकोर की हुई भूमि में रेखामार्ग अर्थात् रेखाचित्र से (ड्राफ्ट करके) सुमनोहर प्राकार[1] (गृह) बनाना चाहिए ॥ ११ ॥

आयामेषु चतुर्दिक्षु प्रागादिषु च सत्स्वपि ।
अष्टाष्टौ च प्रतिदिशं द्वाराणि स्युर्यथाक्रमात् ॥ १२ ॥

अन्वयः—आयामेषु चतुर्दिक्षु प्रागादिसु च सत्सु अपि । यथा क्रमात् प्रतिदिशं अष्टाष्टौ च द्वाराणि कुर्युः ।

विमला—उस बिस्तार में अर्थात् गृहपिण्ड में पूर्वादि चारों दिशाओं में विभाग करके पूर्वादि दिशाओं में आठ-आठ द्वार क्रमानुसार बनालेना चाहिए ॥ १२ ॥

---

१. 'इष्टिका' के द्वारा निर्मित आधुनिक साजसज्जा से युत गृह को ही प्राकार कहा जा सकता है । पहले राजाओं तथा धनिकों का गृह इस तरह का होता था और उसे प्राकार कहते थे ।

विशेषः—चारों दिशाओं में आठ-आठ द्वार बनाने का निर्देश आचार्य ने किया है। इस प्रकार चारों दिशाओं में द्वार निर्माण से कुल ३२ द्वार होंगे और पूरा घर द्वार ही द्वार हो जायेगा। किसी-किसी ज्योतिषी के द्वारा जो यह अर्थ किया गया है, भ्रामक और लोकज्ञान रहित है। अतः इसका उचित भाव यह है कि पूर्वादि दिशाओं को आठ भाग में विभक्त करके जिस फल की प्राप्ति की कामना हो उसी स्थान पर घर का द्वार बनाना चाहिए।

प्रदक्षिणक्रमात्तेषाममूनि च फलानि वै ॥
हानिर्निःस्वं धनप्राप्तिर्नृपपूजामहद्धनम् ॥ १३ ॥
अतिचौर्यमतिक्रोधो भीतिर्दिशि शचीपतेः ॥

अन्वयः—सुगमम्। (श्लो० १३ तः १७ पर्यन्तम्)

विमला—पूर्व दिशा मे प्रदक्षिणा क्रम से अर्थात् ईशानकोण से अग्निकोण पर्यन्त क्रमशः आठ भागों में ये फल हैं। १-हानि, २-दरिद्रता, ३-धनलाभ, ४-राज्य से लाभ, ५-भारी धन प्राप्ति, ६-बड़ी चोरी, ७- अत्यन्त क्रोध, और ८-भय ॥ १३ ॥

निधनं बन्धनं भीतिरर्थाप्तिर्धनवर्द्धनम् ॥ १४ ॥
अनातङ्कं व्याधिभयं निःसत्वं दक्षिणादिशि ॥

विमला—दक्षिण दिशा में अग्निकोण से नैऋत्य पर्यन्त आठ भागों में गृहद्वार बनाने से क्रमशः १-प्रथमभाग में निधन, २-बन्धन, ३-भय, ४-द्रव्य प्राप्ति, ५-धनवृद्धि, ६-आरोग्य, ७-व्याधिभय और ८-दरिद्रता यह फल होता है ॥ १४ ॥

पुत्रहानिः शत्रुवृद्धिर्लक्ष्मीप्राप्तिर्धनागमः ॥ १५ ॥
सौभाग्यमतिदौर्भाग्यं दुःखं शोकश्च पश्चिमे ॥

विमला—पश्चिम दिशा मे नैऋत्य से वायव्य कोण पर्यन्त के आठ भागों में द्वार बनाने से क्रमशः १-पुत्रहानि, २-शत्रुवृद्धि, ३-लक्ष्मीप्राप्ति, ४-धनागम, ६-सौभाग्य, ६-अति दौर्भाग्य, ७-दुःख और ८-शोक यह फल होता है ॥ १५ ॥

कलत्रहानिनिःसत्वं हानिर्धान्यं धनागमः ॥ १६ ॥

संपद्वृद्धिर्महाभीतिरामयो दिशि शीतगोः ॥

एवं गृहादिषु द्वारं विस्ताराद्विगुणोच्छ्रितम् ॥ १७ ॥

विमला—उत्तर दिशा में वायव्यकोण से ईशान कोण पर्यन्त आठ भागों में घर का द्वार बनाने से क्रमशः १–कलत्रहानि, २–दरिद्रता, ३– हानिः, ४–धान्यलाभ, ५–धनागम, ६–सम्पत्ति की वृद्धि, ७–महाभय और ८–रोग ये फल होते हैं। इस प्रकार गृह द्वार निर्माण में चौड़ाई से द्विगुणित ऊँचाई रखना चाहिए ॥ १६–१७ ॥

इति प्रदक्षिणं द्वारं फलमीशानकोणतः ॥

मूलद्वारस्य चोक्तानि तान्यत्रैवं[1] वियोजयेत् ॥ १८ ॥

अन्वयः—ईशानकोणतः प्रदक्षिणं इति द्वारफलं मूल द्वारस्य च उक्तानि। तानि अत्र एवं वियोजयेत्।

विमला—ईशान कोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त प्रदक्षिणा क्रम से मुख्यद्वार का फल कहा है। इन फलों को इस प्रकार मुख्यद्वार के लिए समझना चाहिए ॥ १८ ॥

पश्चिमे दक्षिणे वापि कपाटं स्थापयेद् गृहे ॥

प्राकारतः[2] क्षितिं कुर्यादेकाशितिपदं यथा ॥ १९ ॥

अन्वयः—गृहे दक्षिणे पश्चिमे वा अपि कपाटं स्थापयेत्। प्राकारतः प्राकारानुसारेण क्षितिं उच्छ्रितिं कुर्यात्। एकाशीति पदं यथा तथा तस्य फलं अग्रेद्रष्टव्यमिति शेषः।

विमला—गृह में पश्चिम तथा दक्षिण में भी किवाड़ (फाटक) लगाना चाहिए। गृह के अनुसार ऊँचाई करना चाहिए। वास्तु में ८१ पद स्थान होते हैं उनका फलादि आगे कहा गया है ॥ १९ ॥

मध्ये नवपदं ब्रह्मस्थानं तदतिनिंदितम्।

द्वात्रिंशदंशाः प्राकाराः समीपांशाः समंततः ॥ २० ॥

पिशाचांशा गृहारम्भे दुःखशोकभयप्रदाः।

शेषास्युर्गृहनिर्माणे पुत्रपौत्रधनप्रदाः ॥ २१ ॥

---

१. 'नान्यत्रैवम्' इति पाठान्तरम्।

२. 'प्राकारतां' इति पाठान्तरम्।

अन्वयः—मध्ये एकाशीतिपदे मध्ये नव पदं ब्रह्मस्थानं कथितम्। तत् अति निंदितम् द्वात्रिंशदंशाः समन्ततः प्राकाराः। तत्समीपांशाः गृहारम्भे पिशाचांशाः ज्ञेयाः तच्च दुःख शोक भयप्रदाः भवन्ति। गृह-निर्माणे शेषाः पुत्रपौत्र धन प्रदास्युः॥

विमला—वास्तुचक्र बनाने के लिए यदि १० रेखायें पूर्व पश्चिम तथा उसी पर १० रेखायें लम्बवत उत्तर दक्षिण की ओर खीचें तो ८१ कोष्ठक का वास्तुचक्र बन जाता है। इसमें मध्य का ९ कोष्ठक ब्रह्म-स्थान होने से त्याज्य है। वास्तुचक्र के चतुर्दिक ३२ कोष्ठकों को छोड़कर समीप के २४ कोष्ठक पिशाचांश कहा गया है। इसमें यदि गृहारम्भ (शिलान्यास) किया जाय तो दुःख शोक तथा भयप्रद होता है। इससे अतिरिक्त स्थानों में शिलान्यास करने से पुत्रपौत्र, धनादि की प्राप्ति होती है॥ २०–२१॥

शिरस्यर्वाक्तना रेखा दिग्विदिङ्मध्यसंभवः।
ब्रह्मभागपिशाचांशाः शिशूनां यत्र संहतिः॥ २२॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—मध्यभाग से चारों कोणों में जाने वाली तिरछी रेखाओं से जहाँ ब्रह्मभाग और पिशाचांश का योग होता है वहाँ ब्रह्मभाग और पिशाचांश के शिशुओं के समूह की स्थिति है।

तत्रतत्रविजानीयाद्वसतो मर्मसंधयः।
मर्माणि सन्धयो नेष्टास्तेष्वेव विनिवेशने॥ २३॥

अन्वयः—तत्र तत्र वसतः मर्म संधयः विजानीयात्। तेषु एव विनि-वेशने मर्माणि सन्धयः इष्टा न।

विमला—वास्तु में रहते हुए वास्तु के मर्मस्थान और उनकी सन्धियों का ज्ञान भी रखना चाहिए। उनपर प्रथम वास करने से वे मर्मस्थल और सन्धियाँ शुभ नहीं होती हैं॥ २३॥

सौम्यफाल्गुनवैशाखमाघश्रावणकार्तिकाः।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः॥ २४॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—मार्गशीर्ष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण और कार्तिक मास में गृहारम्भ करना पुत्र आरोग्य तथा धनप्रद होता है॥ २४॥

अकारादिषु वर्गेषु दिक्षु प्रागादिषु क्रमात् ।
खगेशौतु हरिश्वाख्य सर्पाखुगजमूषकाः[१] ॥ २५ ॥
वर्गेशाः क्रमशो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पञ्चमोरिपुः ।
स्ववर्गे परमा प्रीतिः कथ्यते गणकोत्तमैः ॥ २६ ॥[२]

अन्वयः—अकारादिषु वर्गेषु प्रागादिषु अष्टसु दिक्षु क्रमात् । खगेशः ओतु (विडालः) हरिः, श्वा, सर्पः, आखु, गज, मूषकाः (सूकराः वा) क्रमशः वर्गेशाः ज्ञेयाः । स्ववर्गात्पंचमो रिपुः स्ववर्गे परमा प्रीतिः गणकोत्तमैः कथ्यते ॥

विमला—अकारादि (अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, शवर्ग,) वर्णों में पूर्वादि आठों दिशाओं के (क्रमशः गरुड, मार्जार, सिंह, श्वान, सर्प, मूषक, गज या मृग मूषक (सूकर या मेष) स्वामी होते हैं। अपने वर्ग से पंचम शत्रु होता है और अपने वर्ग में परम प्रीति होती हैं। ऐसा उत्तम गणितज्ञों ने कहा है ॥ २५–२६ ॥

विभजेदष्टभिः शेषं साधकस्य धनं भवेत् ।
व्यत्यये नाशकं तस्य ऋणमल्पं धनाच्छुभम् ॥ २७ ॥
(स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥२७॥[३])

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—आठ से भाग देने पर शेष साधक का धन होता है। अल्प ऋण तथा अधिक धन का होना शुभ होता है। विपरीत होने पर अशुभ हैं। दूसरे श्लोक में जो किन्हीं प्रतियों में मिलता है। अर्थ स्पष्ट होता है। अपने नाम वर्गाङ्क को द्विगुणितकर उसमें दूसरे का नाम वर्गाङ्क जोड़े और आठ का भाग देने पर जिसका वर्ग अधिक हो वह ऋणी होता है ॥ २७ ॥

---

१. 'गजसूकराः' इति पाठान्तरं साधुपाठः । 'मृगमेषकाः' इति ग्रन्थान्तरे ।

२. 'दिग्गावर्णानि पुंयोनिः स्ववर्गात्पञ्चमोरिपुः । साध्यवर्गंपुनः स्थाप्य पृष्ठतः साधकं न्यसेत् ॥ २ ॥ इति मूलपाठः ।

३. किसी किसी प्रति में यह श्लोक मिलता है। सर्वत्र नहीं मिलता ।

आरभ्य साधकं धिष्ण्यं साध्यं यावच्चतुर्गुणम् ।
विभजेत्सप्तभिः शेषे साधकस्य धनं तदा ॥ २८ ॥[1]

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—साधक के नक्षत्र से साध्य नक्षत्र संख्या को चार से गुणाकर सात का भाग देने पर साधक का धन ज्ञात होता है ॥ २८ ॥

विस्तार-आयाम गुणो गृहस्य पदमुच्यते ।
तस्माद्धनधनायर्क्षवारांशाः संख्यया क्रमात् ॥ २९ ॥[2]

अन्वयः—विस्तार आयाम गुणः गृहस्य पदम् उच्यते । तस्मात् (पिण्डात्) धन-आय-ऋक्ष-वार-अंशादिकाः क्रमात् संख्यया ज्ञातुं शक्यते ॥

विमला—लम्बाई और चौड़ाई का घात क्षेत्रफल या पिण्ड-कहलाता है। इसी के द्वारा आयादि का ज्ञान होता है ॥ २९ ॥

धनाधिक्यं गृहं वृध्यै ऋणाधिक्यमशोभनम् ।
विषमायं शुभायैव समायं निधनाय च ॥ ३० ॥[3]

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अधिक धनयुत गृह वृद्धिकारक और अधिक ऋणवाला घर अशुभ होता है। विषम आय शुभ होती है तथा सम आय में निधन होता है ॥ ३० ॥

धनक्षयंतृतीयर्क्षे पञ्चर्क्षे च यशः क्षयम् ।
आत्मक्षयं सप्तमर्क्षे भवत्येवं हि भर्तृभात् ॥ ३१ ॥[4]

---

१. "विस्तारगुणितं दैर्ध्यं गृहक्षेत्रफलं भवेत् । तत्पृथक् वसुभिर्भक्तं शेषमायो ध्वजादिकः" इति अन्यासु प्रतिषु लभ्यते ॥

२. "ध्वजोधूम्रोऽथ सिंहः श्वा सौरभेयः खरोगजः । ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतदाया ष्टकमुदीरितम्" इति पाठान्तरम् ।

३. "ब्राह्मणस्यध्वजो ज्ञेयः सिंहो वै क्षत्रियस्य च ॥ वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः" इति पाठान्तरम् ॥

४. "कीर्तिः शोकोजयोवैरं धनं निर्धनता सुखम् । रोगश्चैते गृहारम्भे ध्वजादीनां फलं क्रमात्" इति पाठभेदः ।

नोट—'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीमप्रेस से प्रकाशित प्रति में श्लोक संख्या २६ से

अन्वयः—भर्तृभात् तृतीयर्क्षे धनक्षयं, पञ्चमर्क्षे च यशः क्षयम्। सप्तमर्क्षे हि आत्मक्षयं भवति।

विमला—स्वामी के नक्षत्र से यदि गृह का नक्षत्र तीसरा हो तो धन का नाश होता है। पञ्चम हो तो यश क्षीण हो तथा सातवाँ नक्षत्र होने से निश्चय मृत्यु होती है॥ ३१॥

द्विर्द्वादशं निर्धनाय त्रिकोणमच्युताय[1] च।
षडाष्टकं मृत्यवे स्यात् शुभदा राशयः परे॥ ३२॥

अन्वयः—द्विर्द्वादशं निर्धनाय' त्रिकोणम् अच्युताय च। षडाष्टकं मृत्यवे, परे राशयः शुभदा स्यात।

विमला—गृह और गृहेश की राशि परस्पर द्विर्द्वादश, नवम, पञ्चम और षष्ठ, अष्टम् हो तो क्रमशः निर्धन, कलह और मृत्युकारक होता है। शेष राशियाँ शुभद होती हैं॥ ३२॥

सूर्याङ्गारकवारांशा[2] वैश्वानरभयप्रदाः।
इतरग्रहवारांशाः सर्वकामार्थसिद्धये॥ ३३॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—सूर्य और मंगल के वार तथा नवांशक में गृह निर्माण करना अग्निभय कारक होता है। तथा अन्यग्रहों के वार तथा नवांश में सभी काम पूर्ण होते हैं तथा धन लाभ होता है॥ ३३॥

नभस्यादिषु मासेषु त्रिषु त्रिषु यथा क्रमात्।
यद्दिङ्मुखो वास्तुपुमान् कुर्यात्तद्दिङ्मुखं गृहम्॥ ३४॥

अन्वयः—नभसि आदिषु मासेषु यथा क्रमात् त्रिषु त्रिषु राशिषु (क्रमेण) वास्तु पुमान् यद्दिङ्मुखो तद्दिङ्मुखं गृहं कुर्यात।

विमला—भाद्रपद से आरम्भ कर तीन-तीन महीने तक पूर्वादि दिशाओं में वास्तु पुरुष का मुख होता है अतः जिस दिशा में वास्तु

---

३१ तक के सभी ६ श्लोक 'विद्याविलास' प्रेस से प्रकाशित मूलप्रति सन् १९०५ की प्रति से एकदम भिन्न हैं। किन्तु दोनों को यहाँ पर यथा स्थान दे दिया है।

१. 'त्रिकोणं कलहाय च' इति पाठान्तरम्।

२. 'वारीशा' इति पाठ भेदः।

पुरुष का मुख हो उसी दिशा में घर का द्वार बनाना शुभफलदायक होता है ॥ ३४ ॥

प्रतिकूलमुखं गेहं रोगशोकभयप्रदम् ।
सर्वतोमुखगेहानामेष दोषो न विद्यते ॥ ३५ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—वास्तु पुरुष के मुख की दिशा से अतिरिक्त दिशा में गृह द्वार बनाने से रोग-शोक और भय होता है किन्तु यह फल चारों दिशाओं में द्वार के रहने पर नहीं होता ॥ ३५ ॥

मृत्पेटिकाः स्वर्णरत्नधान्यशैवालसंयुताः ।
गृहमध्ये हस्तमात्रे गर्ते न्यासाय विन्यसेत् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—स्वर्ण, रत्न, धान्य, शैवाल संयुताः मृत्पेटिकाः गृहमध्ये हस्तमात्रे गर्तेन्यासाय विन्यसेत् ।

विमला—गृहारम्भ में शिलान्यास के समय मिट्टी के बक्से में सोना, रत्न, धान्य और शैवाल (सेवार) रखकर उसे १ हाथ नीचे रख देना शुभफल दायक होता है ॥ ३६ ॥

वास्त्वायामदलं नाभिस्तस्मादध्यङ्गुलत्रयम् ।
कुक्षिस्तस्मिन्यसेच्छङ्कुं पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—वास्तु आयामदले नाभिः अस्ति । तस्यानाभेः अध्यि अङ्गुलं त्रयम् कुक्षिः । तस्मिन् स्थाने पुत्र पौत्र प्रवर्द्धनम् शङ्कुं स्थापयेत् ।

विमला—वास्तु के विस्तार के अर्धभाग में नाभि है । नाभि से ७ अङ्गुल तक कुक्षि है । कुक्षि भाग में शङ्कु रोपण में पुत्र, पौत्र, धनादि की प्राप्ति होती है ॥ ३७ ॥

चतुर्विंशत्रयोविंशत्षोडशद्वादशाङ्गुलैः ।
विप्रादीनां शङ्कुमानं स्वर्णवस्त्राद्यलङ्कृतम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—विप्रादीनां शङ्कुमानं क्रमेण चतुर्विंशत् , त्रयोविंशत् , षोडश्, द्वादश, अंगुलैः भवति । तत् स्वर्ण वस्त्रादिकेनालङ्कृतम् कुर्यात् ।

विमला—ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लिए क्रमशः शङ्कु २४ अंगुल, २३ अंगुल, १६ अंगुल का होता है । इस शङ्कु को सोना वस्त्र आदि से सजाकर रक्खे ॥ ३८ ॥

खदिरार्जुनशालोत्थं पूगपत्रतरूद्भवम् ।
रक्तचन्दनपालाश रक्तशालविशालजम् ॥ ३९ ॥
नीपकादम्बकुटजं वैणवं विल्ववृक्षजम् ।
शङ्कुं[1] त्रिधा विभज्याथ चतुरस्रं ततः परम् ॥ ४० ॥
अष्टांशं च तृतीयांशं अनस्रमृजुमव्रणं ।
एवंलक्षणसंयुक्तं परिकल्प्य शुभेदिने ॥ ४१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—खैर, अर्जुनवृक्ष, शाल, सुपारीवृक्ष, तेजपत्रवृक्ष, लालचन्दन, पलाश, रक्तशाल, (जोप के पेड़ अर्थात् पुराने पेड़ का हो) कुटज, कदम्ब, वांस और विल्व वृक्ष का शङ्कु बनाना चाहिए । शङ्कु को तीन भागकर प्रथम (उर्ध्व) भाग चतुष्कोण, द्वितीय (मध्य) भाग अष्टकोण और तृतीय भाग को छिद्र रहित सुन्दर गोलाकार बनाना चाहिए । उपर्युक्त लक्षण से युक्त शुभ दिन में शङ्कु का निर्माण करे ॥ ३९-४१ ॥

व्यर्कारवारलग्नेषु चापे चाष्टमवर्जिते ।
नैधने शुद्धिसंयुक्ते शुभलग्ने शुभांशके ॥ ४२ ॥
शुभेक्षितेऽथवा युक्ते लग्ने शङ्कुं विनिःक्षिपेत् ।
पुण्याहवाचैर्वादित्रैः पुण्यैः पुण्यांगनादिभिः ॥ ४३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—सूर्य और मङ्गलवार से रहित, अष्टम भाव में धनुराशि रहित, तथा अष्टम में कोई ग्रह न रहे तो शुभ लग्न तथा शुभ ग्रह के नवांश में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्टलग्न में पुण्याह्वाचन, वाजा, गीत, एवं सौभाग्यवती स्त्रियों के मङ्गलगीत से युक्त हो शङ्कु स्थापन करे ॥ ४२-४३ ॥

स्वकेन्द्रस्थैस्त्रिकोणस्थैः शुभैस्त्र्यायारिगैः परैः ।
लग्नात्षष्ठायचन्द्रेण दैवज्ञार्चनपूर्वकम् ॥ ४४ ॥

---

१. शङ्कु निर्माण की जो विधि इन श्लोकों में कही गई है वह शिलान्यास में डालने के लिए ही कहा है किन्तु कुछ विद्वानों ने इष्ट साधन के लिए अर्थ समझा है जो इसी ग्रन्थ के पूर्वा पर प्रसङ्ग से असङ्गत है ।

अन्वयः—शुभैः स्वकेन्द्रस्थैः त्रिकोणस्थैः परैः (पापैः) त्र्यायारिगैः लग्नात् षष्ठ, आय चन्द्रेण, दैवज्ञार्चनं पूर्वकम् गृहारम्भं कुर्यात् ।

विमला—शुभग्रह स्वराशि के होकर केन्द्र (१, ४, ७, १०) में या त्रिकोण (५, ९) में बैठे हों। पापग्रह त्रिषडाय (३, ६, ११) में बैठे हों और चन्द्रमा लग्न से छठें या एगारहवें घर मे बैठा हो तो ज्योतिषी का पूजन कर शिलान्यास करे ॥ ४४ ॥

एकद्वित्रिचतुःशाला सप्तशालाह्वयाः स्मृताः ।
ताः पुनः षड्विधाः शालाः प्रत्येकं दशषड्विधाः ॥ ४५ ॥

विमला—एक, दो, तीन, चार और सात घर का मकान (पिण्ड) बनता है। इनके भी ६, ६ भेद हैं। १६ प्रकार के घर होते हैं ॥ ४५ ॥

ध्रुवं धान्यं जयं नन्दं खरं कान्तं मनोरमम् ।
सुमुखं दुर्मुखं क्रूरं शत्रुस्वर्णप्रदं क्षयम् ॥ ४६ ॥
आक्रन्दं विपुलाख्यं च विजयं षोडशं गृहम् ।
गृहाणि षण्णवत्येव तेषां प्रस्तार भेदतः ॥ ४७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—१ ध्रुव, २ धान्य, ३ जय, ४ नंद, ५ खर, ६ कान्त, ७ मनोरम, ८ सुमुख, ९ दुर्मुख, १० क्रूर, ११ शत्रु, १२ स्वर्णप्रद, १३ क्षय, १४ आक्रन्द, १५ विपुल, और १६ विजय ये १६ प्रकार के घर होते हैं। प्रस्तार भेद से इनका ९६ प्रकार होता है ॥ ४६–४७ ॥

गुरोरधो लघुः स्थाप्यः पुरस्तादूर्ध्ववन्न्यसेत् ।
गुरुभिः पूजयेत्पश्चात्सर्वलब्धविधिर्विधिः ॥ ४८ ॥[1]

---

१. 'इस श्लोक के द्वारा मात्र ध्रुव धान्यादि गृहों के १६ × ६ = ९६ भेदों को बतलाना कृतिकार का लक्ष्य है। इसका स्पष्टीकरण लीलावती श्रेढी व्यवहार के श्लोक ११ (एकाद्येकोत्तरा अङ्काव्यस्ता भाज्याः क्रमस्थितैः। परः पूर्वेण सङ्गुण्यस्तत्परस्तेन तेन च ॥ ११ ॥ एक द्वित्र्यादि भेदाः स्युरिदं साधारणं स्मृतम् । छन्दश्चित्युत्तरे छन्दस्युपयोगोऽस्य तद्विदाम् ॥ १२ ॥" उदाहरण—'प्रस्तारे मित्र-गायत्र्याः स्युः पादे व्यक्तयः कति। एकादिगुरवश्चाशु कतिकत्युच्यतां पृथक् ॥" इसके अनुसार गायत्री छन्द के चरण मे ६ अक्षर होने से उत्क्रम न्यासकर क्रम न्यास से भाग देने पर $\frac{6}{1}$ $\frac{5}{2}$ $\frac{4}{3}$ $\frac{3}{4}$ $\frac{2}{5}$ $\frac{1}{6}$ प्रथम १ गुरु का व्यक्त रूप ६ हुआ।

अन्वयः—गुरो अधः लघुः स्थाप्यः पुरस्तात् उर्ध्ववत् न्यसेत्। पश्चात् गुरुभिः पूजयेत् एवम् (विधिः) सर्वलब्ध विधिः भवति।

विमल—गुरु स्थान के नीचे लघु स्थापित कर इसी क्रम से ऊपर नीचे भाज्य भाजक या अंश हर के रूप मे रक्खे तथा परस्पर अग्रिम लब्धि से घात करने पर सर्व लब्धि प्राप्त होती है॥ ४८॥

कुर्याल्लघुपदेलिन्दं गृहद्वारात्प्रदक्षिणम्।
पूर्वादिगेस्वलिन्देषु गृहभेदास्तु षोडश॥ ४९॥[1]

अन्वयः—गृहद्वारात् प्रदक्षिणम् लघुपदे अलिन्दं कुर्यात्। पूर्वादिगेषु अलिन्देषु षोडश गृह भेदाः भविष्यन्ति।

विमला—गृहद्वार से प्रदक्षिणा क्रमानुसार लघुपद में अलिन्द करे। पूर्वादि दिशाओं के अलिन्दों के क्रमानुसार भी गृह का १६ भेद होता है॥ ४६॥

स्नानागारं[2] दिशि प्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम्।
याम्यायां शयनागारं नैऋत्यां शस्त्रमन्दिरम्॥ ५०॥

तथा २ गुरु का $\frac{३}{२}$ × ६ = १५ हुआ इसी प्रकार के भेदों को समझा कर आचार्य ने 'एक द्वित्रिचतुः शाला आदि श्लो. ४५ में गृह के ६ भेदों को बतलाकर गृह के १६ नाम 'ध्रुवं धान्यं जयं नन्दं आदि ४६ श्लोक के आधार पर १६ × ६ = ९६ भेद बतलाया है।

१. "दिक्षुपूर्वादितःशालाध्रुवा भूद्वौंकृतागजाः॥ शालाध्रुवांक संयोगः सैकोवेश्म ध्रुवादिकम्॥ ४९॥ यह श्लोक सभी प्रतियों में उपलब्ध नहीं है। इसके द्वारा षोडश गृहों के ज्ञान का उपाय कहा गया है। जैसे पूर्वद्वार वाले मकान का ध्रुवांक १ है और दक्षिणद्वार का २, पश्चिमद्वार का ४, उत्तर का ८ है। इसमे १ मिलाकर जितनी संख्या हो वह ध्रुवधान्यादि संज्ञावाला गृह कहा जायेगा। जैसे पूर्व और दक्षिण दो द्वार के गृह का नाम १ + २ = ३ + १ अर्थात् ४ चौथा नाम नन्द' गृह का नाम पड़ा।

२. उक्तञ्च वृहद्वास्तुमालायाम्ः—पूर्वस्यां श्रीगृहं प्रोक्तमाग्नेय्यां स्यान्महानसम्॥ १॥

शयनं दक्षिणस्यां च नैऋत्यामायुधाश्रयम्।
भोजनं पश्चिमायां च वायव्यां धनसञ्चयम्॥ २॥
उत्तरे द्रव्यसंस्थानमैशान्यां देवतागृहम्।
इन्द्राग्न्योर्मथनं मध्ये यमाग्न्योर्घृतमन्दिरम्॥ ३॥

एवंकुर्यादिदंस्थानं[1] क्षीरपानाज्यशालिकाः ।
शय्यामूत्रास्त्रतद्विद्याभोजनामंगलाश्रयाः ॥ ५१ ॥
धान्यस्त्रीभोगवित्तं च शृङ्गारायतनानि च ।
ईशान्यादिक्रमस्तेषां गृहनिर्माणकं शुभम् ॥ ५२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पूर्वदिशा में स्नानागार, अग्निकोण में भोजनालय, दक्षिण में शयनागार, नैऋत्यकोण में शस्त्रागार, ईशानकोण में दूध, जलपान, घृत, अग्निकोण में शय्या, मूत्र, शस्त्र तथा भोजन, नैऋत्यकोण में धान्य, स्त्रीभोग, धन तथा वायव्यकोण में शृङ्गारादि प्रसाधन का स्थान बनावे ॥ ५०-५२ ॥

एतेस्वस्थानशस्तानि स्वस्वाय स्वस्वदिश्यपि ।
प्लक्षोदुंवरचूताख्या निंवस्नुहीविभीतकाः ॥ ५३ ॥
येकण्टका दग्धवृक्षा वटाश्वत्थकपित्थकाः ।
अगस्त्यशिग्रुतालाख्य तिंतिणीकाश्च निंदिताः ॥ ५४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—उपरोक्त गृह में वस्तुओं के रहने का स्थान अपनी-अपनी दिशा में अपने-अपने आय के अनुसार शुभ समझना चाहिए। गृह के सामने प्लक्ष (पाकड़), गुल्लर, आम, नींव, स्नुही (थूहर) वहेड़ा, काटेदार वृक्ष, जला हुआ वृक्ष, वरगद, पीपल, कपित्थ (कैंत) अगस्त, सहिजन ताड़ तथा ईमली का वृक्ष लगाना या रखना निंदित है। इससे कष्ट होता है ॥ ५३-५४ ॥

यमराक्षसयोर्मध्ये पुरीषत्यागमन्दिरम् ।
राक्षसजलयोर्मध्ये विद्याभ्यासस्य मन्दिरम् ॥ ४ ॥
तोयेशानिलयोर्मध्ये रोदनस्य च मन्दिरम् ।
कामोपभोगशमनं वायव्योत्तरयोर्गृहम् ॥ ५ ॥
कौवेरेशानयोर्मध्ये चिकित्सा मन्दिरं सदा ।
पुरंदरेशयोर्मध्ये सर्ववस्तुषु संग्रहम् ॥ ६ ॥
सदनं कारयेदेवं क्रमादुक्तानि षोडश ।

1. "एवं कुर्यादिमं" इति पाठान्तरम् ॥

पितृवत्स्वाग्रजं गेहं पश्चिमे दक्षिणेऽपिवा ।
गृहपादा गृहस्तम्भाः समाः शस्ताश्च नाऽसमाः ॥ ५५ ॥

अन्वयः—दक्षिणे पश्चिमे अपिवा स्वपितृवत् अग्रजं गेहं कार्यम् । गृहस्तंभाः गृहपादा समा शस्ता असमा शस्ता न ।

विमला—पिता की तरह भाई का घर भी अपने से दक्षिण या पश्चिम में बनाना चाहिए । घर का स्तम्भ घर का पाद (दैर्घ्यचतुर्थांश) समान रहना चाहिए । असमान स्तम्भ शुभ नहीं होता है ॥ ५५ ॥

नात्युच्छ्रितं नातिनीचं कुड्योत्सेधं यथारुचिः ।
गृहोपरि गृहादीनामेवं सर्वत्र चिन्तयेत् ॥ ५६ ॥

अन्वयः—कुड्योत्सेधं अति उच्छ्रितं, अतिनीचं न अपितु यथारुचिः कुर्यात । एवम् गृहोपरि गृहादीनामपि उच्छ्रयः कार्यः ।

विमला—गृह के भित्तियों की ऊँचाई न तो अत्यधिक होना चाहिए, न तो अतिन्यून । बल्कि सामान्य रखना चाहिए । इसी प्रकार गृह के ऊपरी गृह के निर्माण में भी विचार करना चाहिए ॥ ५६ ॥

गृहादीनां गृहे श्राव्यं क्रमशो विविधं स्मृतम् ।
पञ्चालमानं, वैदेहं, कौरवं, चैव कन्यकाम् ॥ ५७ ॥
मागधं भूरसेनं च वङ्गमेवं क्रमः स्मृतः ।
तं चतुर्भागविस्तारं संशोधय तदुच्यते ॥ ५८ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

गृह से जल बाहर निकलने का मार्ग (श्राव्य या पनाला या पतनाल) अनेक प्रकार का होता है । पञ्चाल (पञ्जाब); विदेह, कुरु, कन्नौज, मगध, शूरसेन, वंग आदि के अनुसार विविध प्रकार का होता है । इनसे चौगुना मान, माध्यममान या मध्यदेश के लिए मान कहा है ॥ ५७–५८ ॥

पञ्चालमानमतुलमुत्तरोत्तर-वृद्धितः ।
वैदेहादीनि शेषाणि मानानिस्युर्यथा क्रमात् ॥ ५९ ॥
पञ्चालमानं सर्वेषां साधारणमतः परम् ।
अवन्तिमानं विप्राणां गान्धारं क्षत्रियस्य च ॥ ६० ॥

कौजन्यमानं वैश्यानां विप्रादीनां यथोत्तरम् ।
यथोदितजलस्राव्यं द्वित्रिभूमिकवेश्मनः ॥ ६१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पंजाब का मान अन्य देशों की अपेक्षा बढ़ कर है। पंजाब का मान सर्वत्रमान्य है। उज्जैन का मान ब्राह्मण को, गांधार का मान क्षत्रिय को, कन्नौज का मान वैश्यों को मानना चाहिए। अथवा ब्राह्मणादिकों को यथोत्तर वृद्धिमान से परिमाण ग्रहण करना चाहिए। जिस मकान में दो-तीन भूमिक (मंजिल या तल्ला या स्टोरी या फ्लोर) हो उसके जल का वहाव अपनी सुविधा के अनुसार कही गई विधियों में से किसी के अनुसार बनाया जा सकता है ॥ ५९–६१ ॥

उष्ट्रकुंजरशालानां ध्वजायोऽप्यथवा गजे ।
पशुशालाश्वशालानां ध्वजायोऽप्यथवावृषे ॥
द्वारे शय्याशना मंत्रेध्वजसिंहेवृषाः शुभाः ॥ ६२ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां [1]वास्तुलक्षणनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—ऊँट तथा हाथी के गृह निर्माण में ध्वज या गज आय, गाय आदि पशुओं के तथा घोड़ों के गृह निर्माण मे ध्वज अथवा वृष आय देना चाहिए और शय्या, आसन, मन्त्रादिकों में ध्वज, सिंह और वृष आय शुभ फलदायक होता है ॥ ६२ ॥

इति श्रीनारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
वास्तुलक्षणाध्याय समाप्त ।

---

१. 'वास्तुविधानाध्याय' इति पाठान्तरम् ।

अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः

वास्तुपूजामहंवक्ष्ये नववेश्म प्रवेशने ।
हस्तमात्रा लिखेद्रेखा दशपूर्वा दशोत्तराः ॥ १ ॥

अन्वयः—नववेश्म प्रवेशने वास्तु पूजाम् अहम् वक्ष्ये, दशपूर्वा दशोत्तरा हस्तमात्रारेखालिखेत ।

विमला—नये गृह के प्रवेश में वास्तु की पूजा विधि कह रहा हूँ। वास्तुचक्र बनाने के लिए एक हाथ परिमाण की दश रेखा पूर्व से पश्चिम की ओर तथा दश रेखा उत्तर से दक्षिण की ओर खींचने से ८१ कोष्टक का वास्तुचक्र बनकर तैय्यार हो जायेगा ॥ १ ॥

गृहमध्येतण्डुलोपर्य्येकाशीतिपदं भवेत् ।
पञ्चोत्तरान्वक्ष्यमाणांश्चत्वारिंशत्सु वा न्यसेत् ॥ २ ॥

अन्वयः—गृहमध्ये तण्डुलोपरि पूर्वविधिना एकाशीति पदं (कोष्टकं) भवेत् । पञ्चोत्तरान् वक्ष्यमाणान् चत्वारिंशत्सु वा न्यसेत् ॥

विमला—पूर्वोक्त विधि से चावल पर कुंकुम से रेखा द्वारा अथवा चतुष्कोण चौकी पर सफेद वस्त्र विछा कर उस पर गीले कुंकुम और कलावे के योग से दश दश रेखायें पूर्वापर तथा उत्तर दक्षिण को खींचकर ८१ कोष्टक का चक्र रङ्गीन चावलों से भर कर तैयार करना चाहिए। अथवा कहे गये मात्र ४५ कोष्टकों में ही न्यास करे ॥ २ ॥

द्वात्रिंशद्वाह्यतः पूज्यास्तत्रांतःस्था स्त्रयोदश ।
तेषांस्थानानिनामानि वक्ष्यामि क्रमशोऽधुना ॥ ३ ॥

अन्वयः—वाह्यतः द्वात्रिंशत् पूज्याः तत्रान्तःस्थाः त्रयोदश, तेषां स्थानानि, नामानि च अधुना क्रमशः वक्ष्यामि ।

विमला—बाहर से ३२ कोष्टकों की पूजा ३२ देवताओं का स्थान स्वरूप तथा मध्य के १३ देवता की पृथक् नाम से पूजा करनी चाहिए उनके स्थानानुसार नाम कह रहे हैं ॥ ३ ॥

ईशानकोणतोवाह्या द्वात्रिंशत्रिदशा अमी ।
कृपीटयोनिः पर्जन्यो जयंतः पाकशासनः ॥ ४ ॥

सूर्यसत्यो भृशाकाशौ वायुः पूषा च नैऋतः ।
गृहर्क्षतो दण्डधरो गान्धर्वो मृगराजकः ॥ ५ ॥
मृगः पितृगणाधीशस्ततो दौवारिकाह्वयः ।
सुग्रीवः पुष्पदन्तश्च जलाधीशस्तथासुरः ॥ ६ ॥
शेषश्च पापो रोगश्च भोगी मुख्यो निशाकरः ।
सोमः सूर्योऽदितिर्दिती द्वात्रिंशद्त्रिदशा अमी ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—ईशानकोण से क्रमशः १. अग्नि, २. पर्जन्य, ३. जयंत, ४. पाकशासन, ५. सूर्य, ६. सत्य, ७. भृश, ८. आकाश, ९. वायु, १०. पूजा, ११. नैऋत, १२. दण्डधर, १३. गान्धर्व, १४. मृगराजक, १५. मृग, १६. पितर, १७. गणाधीश, १८. दौवारिक, १९. सुग्रीव, २०. पुष्पदन्तक, २१. जलाधीश, २२. असुर, २३. शेष, २४. पाप, २५. रोग, २६. भोगी, २७. मुख्य, २८. निशाकर, २९. सोम, ३०. सूर्य, ३१. अदिति और ३२. दिति ये ३२ देवता पूज्य हैं। वास्तु चक्र मे ८१ कोष्ठकों में पूर्वादि दिशाओं के सभी कोष्ठकों की ३२ संख्या इन्हीं देवताओं के स्थान के रूप में पूज्य है ॥ ४-७ ॥

अथेश्यान्यादि कोणस्थाश्चत्वारस्तत्समीपगाः ।
आपः सवितृसंज्ञश्च जयोरुद्रः क्रमादमी ॥ ८ ॥
मध्ये नवपदो ब्रह्मा तस्याष्टौ च समीपगाः ।
एकान्तराः स्युः प्रागाद्याः परितो ब्रह्मणः स्मृतः ॥ ९ ॥
अर्यमा सविता चैव विवस्वान्विबुधाधिपः ।
मित्रोऽथ राजयक्ष्मा च तथा पृथ्वीधराह्वयः ॥ १०

अन्वयः—अथ ईशान्यादि चत्वारः कोणस्था तत्समीपगाः आपः, सवितृसंज्ञः, जयः रुद्रः च अमी क्रमात् । मध्ये नव पदः ब्रह्मा च तस्य समीपगाः ब्रह्मणः परितः प्रागाद्याः एकान्तराः अर्यमा, सविता, विवस्वान्, विबुधाधिपः च अथ एव मित्रः राजयक्ष्मा तथा पृथ्वीधराह्वयः (अष्टमः आपवत्सः अमी पञ्च चत्वारिंशत् सुराः वर्तन्ते इति अग्रिमश्लोकसम्बन्धः) ।

विमला—ईशान आदि क्रम से चारो कोणों के समीप में आप, सविता, जय और रुद्रदेव की स्थापना कर पूजन करे। मध्य के ९

कोष्ठक ब्रह्मा के हैं और ब्रह्म पद के चारोतरफ पूर्वादि क्रम से एकान्तर स्थान क्रम से अर्यमा, सविता, विवस्वान्, विबुधाधिप, मित्र, राजयक्ष्मा, पृथ्वीधर और आपवत्स इन आठ देवताओं का स्थान है। ये कुल ४५ देवस्थान पूज्य हुए ॥ ८–१० ॥

आपवत्सोष्टमः पञ्चचत्वारिंशत्सुरा अमी।
आपश्चैवापवत्सश्च पर्जन्योऽग्निर्दितिः क्रमात् ॥ ११ ॥
पदिकानां च वर्गोऽयमेवं कोणेष्वशेषतः।
तन्मध्ये विंशतिर्बाह्या द्विपदास्तेषु सर्वदा ॥ १२ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—आपवत्सादि प्रथम पद का सम्बन्ध पूर्व श्लोक से हो चुका है। आप, आपवत्स, पर्जन्य अग्नि और दिति ये क्रमशः चारो कोणों मे रहते हैं ये पदिकों मे आते हैं और एक पदीय हैं। बाद में एक-पदीयों के अतिरिक्त शेष बीस कोष्ठकों में द्विपद हैं ॥ ११–१२॥

अर्यमा च विवस्वांश्च मित्रः पृथ्वीधराह्वयः।
ब्रह्मणः परितो दिक्षुचत्वारस्त्रिपदाः[1] स्मृताः ॥ १३ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—अर्यमा, विवस्वान्, मित्र और पृथ्वीधर ब्रह्मा के चारोतरफ चार देवता त्रिपद हैं ॥ १३ ॥

ब्रह्माणं च तथैकद्वित्रिपदानर्चयेत्सुरान्।
वास्तुमन्त्रेण वास्तुज्ञो दूर्वादध्यक्षतादिभिः ॥ १४ ॥

अन्वयः—ब्रह्माणं तथा च एक-द्वि-त्रिपदान् सुरान्। वास्तुज्ञः वास्तु मन्त्रेण दूर्वा दधि अक्षतादिभिः अर्चयेत्।

विमला—ब्रह्मा ९ पद में, एक पद वाले २०, द्विपद वाले ४०, तथा त्रिपदवाले १२ अर्थात् कुल ९ + २० + ४० + १२ = ८१ पद के सुरों को वास्तु मन्त्र के द्वारा वास्तुशास्त्र का जानने वाला दही और अक्षत के द्वारा पूजन करे ॥ १४ ॥

---

1. 'त्रिदशाः स्मृताः' इति पाठान्तरम्।

ब्रह्ममन्त्रेण वा श्वेतवस्त्रयुग्मं प्रदापयेत्।
ताम्बूलं च ततो दत्वा प्रार्थयेद्वास्तुपूरुषम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—वा ब्रह्ममन्त्रेण युग्मं श्वेतवस्त्रं प्रदापयेत् ततो ताम्बूलं च दत्वा वास्तु पुरुषं प्रार्थयेत्।

विमला—अथवा (पूर्वं सम्बन्धः) ब्रह्मा के मन्त्र से दो सफेद कपड़ा चढ़ावे इसके अनन्तर पान देकर वास्तु पुरुष की प्रार्थना विनम्रता पूर्वक करे ॥ १५ ॥

आवाहनादि सर्वोपचारांश्च क्रमशस्तथा।
नैवेद्यं विविधान्नेन वाद्याद्यैश्च समर्पयेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—तथा आवाहनादि सर्वोपचारान् च क्रमशः कृत्वा विविधान्नेन नैवेद्यं वाद्याद्यैः च समर्पयेत्।

विमला—आवाहनादि सर्वोपचार पूजन क्रमशः करके विविध प्रकार के अन्नों से निर्मित नैवेद्य मङ्गलवाद्य पूर्वक समर्पण करे ॥ १६ ॥

वास्तुपुरुषनमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरतः प्रभो।
मद्गृहं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा ॥ १७ ॥

अन्वयः—भूशय्याभिरतः वास्तुपुरुष प्रभो ते नमः अस्तु। प्रभो ! सर्वदा धनधान्यादि समृद्धं मद् गृहं कुरु।

विमला—भूमिशयन से आनन्दित होने वाले हे वास्तुपुरुष आपको प्रणाम है। हे प्रभो ! धनधान्यादि की समृद्धि निरन्तर मेरे घर में करो ॥ १७ ॥

इति प्रार्थ्य यथाशक्तिः दक्षिणामर्चकाय च।
दद्यात्तदग्रे विप्रेभ्यो भोजनं च स्वशक्तितः ॥ १८ ॥

अन्वयः—सुगमम्

विमला—उपरोक्त विधि से प्रार्थना कर पूजा करने वाले ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देवे और उसी समय अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण भोजन भी करावे ॥ १८ ॥

अनेन विधिना सम्यग्वास्तुपूजां करोति यः।
आरोग्यं पुत्रलाभं च धनं धान्यं लभेन्नरः[1] ॥ १९ ॥

---

१. 'लभेत सः' इति पाठान्तरम्।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—इस विधि से सम्यक् प्रकार जो वास्तु की पूजा करता है वह मनुष्य आरोग्य, पुत्र, धन, धान्यादि का लाभ करता है ॥ १९ ॥

अकपाटमनाच्छन्नमदत्तबलिभोजनम् ।
गृहं न प्रविशेदेव विपदामाकरं हि तत् ॥ २० ॥

इति श्री नारदीय संहितायां द्वात्रिंशत्तमः वास्तुलक्षणाध्यायः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमलाः—विना फाटक का विना छाया किए तथा क्षेत्रपालबलि तथा ब्राह्मण भोजन कराये विना गृह में प्रवेश नहीं करना चाहिए। क्योंकि यह आपत्ति का घर होता है ॥ २० ॥

श्रीनारदसंहिता को 'विमला' हिन्दी टीका में बत्तीसवाँ
वास्तु लक्षणाध्याय समाप्त ।

अथ त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः

अथ यात्राप्रकरणम्

अथ यात्रा यथा नृणामभीष्टफलसिद्धये ।
स्यात्तथा तां प्रवक्ष्यामि सम्यग्विज्ञातजन्मनाम् ॥ १ ॥

अन्वयः—अथ विज्ञातजन्मनां नृणां, अभीष्टफलसिद्धये यथा यात्रा स्यात् तथा तां प्रवक्ष्यामि ।

विमला—अब जिस प्रकार की यात्रा द्विजाति मात्र के लिए अभीष्ट फलदायिनी होती है उसे अच्छी तरह विचार कर कह रहा हूँ ॥ १ ॥

अज्ञातजन्मनां नृणां फलाप्तिर्घुणवर्णवत् ।
प्रश्नोदयनिमित्ताद्यैस्तेषामपि फलोदयः ॥ २ ॥

अन्वयः—अज्ञातजन्मनां नृणां फलाप्तिः घुणवर्णवत् भवेत् । तेषामपि फलोदयः प्रश्नोदयनिमित्ताद्यैः भवेत् ।

विमला—जन्मसमय का जन्मचक्र न होने पर भी घुणाक्षरन्याय से फल मिल जाता है । किन्तु ऐसा सर्वदा नहीं होता । इसीलिए प्रश्न लग्न के द्वारा उन्हें भी फल की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

षष्ठ्यष्टमीद्वादशी च रिक्तामापूर्णिमासु च ।
यात्रा शुक्लप्रतिपदि निधनायाधनाय च ॥ ३ ॥

अन्वयः—षष्टी, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता, अमा, पूर्णिमासु च शुक्ल प्रतिपदि च यात्रा निधनाय अधनाय च भवति ।

विमला—षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता (४, ९, १४) अमावस, पूर्णिमा और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा की यात्रा से निधन हो या धन की हानि होवे ॥ ३ ॥

पौष्णेर्केन्द्वश्विमित्राग्निहरितिष्यवसूडुषु[1] ।
नवसप्तपञ्चमायेषु[2] यात्राभीष्टफलप्रदा ॥ ४ ॥

---

१. 'पौष्णेर्केन्द्वति' इति मूलपाठः ।

२. 'नव सप्त पञ्चायेषु' इति मूल पाठः । 'विपञ्चसप्तत्र्यायेषु' इति पाठान्तरम् पीयूषधारायाम् ॥

अन्वयः—पौष्ण, अर्क, इन्दु, अश्वि, मित्र, अग्नि, हरि, तिष्य, वसु उडुषु तथा नव सप्त पञ्चम आयेषु चन्द्रे सति यात्रा अभीष्टफलप्रदा भवति।

विमला—रेवती, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, कृतिका, श्रवण, पुष्य, धनिष्ठा, इन नक्षत्रों में तथा जन्म राशि से नवम सप्तम पञ्चम या एकादश चन्द्रमा के होने पर यात्रा शुभद एवं अभीष्ट फल को देने वाली होती है॥ ४॥

न मन्देन्दुदिने प्राचीं न व्रजेदक्षिणां गुरौ।
सितार्कयोर्न प्रतीचीं नोदीचीं ज्ञारयोर्दिने॥ ५॥

अन्वयः—मन्द इन्दु दिने प्राचीं न गच्छेत्। गुरौ दक्षिणां दिशि न व्रजे, सितार्कयोः प्रतीचीं न तथा ज्ञ आरयोः दिने उदीचीं च न गच्छेत्।

विमला—शनिवार, चन्द्रवार को पूरब, गुरुवार को दक्षिण, शुक्रवार, रविवार को पश्चिम और मंगलवार को तथा बुधवार को उत्तर दिशा का दिक्शूल होने के कारण इन दिशाओं में यात्रा करने से कष्ट और हानि होती है॥ ५॥

इन्द्रोजपादचतुरास्यार्यमर्क्षाणि पूर्वतः।
शूलानि सर्वद्वाराणि मैत्रार्केज्याश्विभानि च॥ ६॥

अन्वयः—इन्द्रः, अजपाद, चतुरास्यः, अर्यमा एते ऋक्षाणि पूर्वतः क्रमेण शूलानि तथा च मैत्र, अर्क, इज्य, अश्वि भानि च सर्वद्वाराणि अस्ति।

विमला—१. ज्येष्ठा, २. पूर्वाभाद्रपदा, ३. रोहिणी, ४. उत्तराफाल्गुनी ये नक्षत्र क्रमशः पूर्वादिक दिशाओं के शूल नक्षत्र हैं। तथा अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी क्रमशः पूर्वादि दिशाओं के लिए सिद्ध नक्षत्र हैं। इनमें यात्रा सर्वदा शुभद होती है॥ ६॥

क्रमादिग्द्वारभानि स्युः सप्तसप्ताग्निधिष्ण्यतः।
वाय्वग्निदिग्गतं दण्डं परिघं तु न लङ्घयेत्॥ ७॥[1]

---

१. "क्रमाद्दिग्वारभानि स्युः सप्तसप्ताग्निऋक्षतः।
परिघं लङ्घयेदण्डं नाग्निश्वसनदिग्गतम्।।"

इति च पाठान्तरं पीयूषधाराटीकायाम्।

अन्वयः—अग्निधिष्ण्यतः सप्त सप्त क्रमात् दिग्द्वारभानि स्युः। वायु अग्नि दिग्गतं परिघदण्डं तु न लङ्घयेत्।

विमला—कृत्तिका नक्षत्र से सात सात नक्षत्र पूर्वादि दिशाओं के दिग्द्वार नक्षत्र हैं। यथा कृत्तिका से अश्लेषा तक पूर्वदिशा, मघा से विशाखा तक दक्षिण दिशा, अनुराधा से श्रवण तक पश्चिम दिशा और धनिष्ठा से भरणी तक उत्तर दिशा का दिग्द्वार है। वायु और अग्निकोण में दण्डवत परिघदण्ड होता है। उसका उल्लंघन नहीं होना चाहिए ॥ ७ ॥

आग्नेय्यां पूर्वदिग्धिष्ण्यैर्विदिशश्चैवमेव हि।
दिग्राशयस्तु[1] क्रमशो मेषाद्याश्च पुनः पुनः ॥ ८ ॥

अन्वयः—पूर्व दिग्धिष्ण्यैः आग्नेय्यां एवमेव हि विदिशश्च। मेषाद्याश्च (राशयः) पुनः पुनः क्रमशः दिग् राशयः स्युः।

विमला—पूर्वदिग्द्वार नक्षत्रों में अग्निकोण की यात्रा। दक्षिण दिग्द्वार नक्षत्रों में नैऋत्यकोण की यात्रा। पश्चिम दिग्द्वार नक्षत्रों में वायव्यकोण की यात्रा और उत्तर दिग्द्वार नक्षत्रों में ईशानकोण की यात्रा करनी चाहिए। मेषादि राशियाँ पूर्वादि दिशाओं में क्रमशः शुभद हैं इनमें चन्द्रमा का वास कहा गया है। यथा—'मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे, इत्यादि के अनुसार १,५,९ पूर्व में। २,६,१० में दक्षिण। ३,७,११ में पश्चिम और ४,८,१२ में उत्तर दिशा में चन्द्रमा की स्थिति रहती है। अतः सम्मुख, दक्षिण स्थिति में यात्रा करना उत्तम है ॥ ८ ॥

दिगीशाः[2] सूर्यशुक्रारराह्वार्कीन्दुज्ञसूरयः।
दिशीश्वरे ललाटस्थे यातुर्न पुनरागमः ॥ ९ ॥

अन्वयः—सूर्यः, शुक्रः, आरः, राहुः, अर्की, इन्दुः, ज्ञः, सूरयः एते क्रमशः पूर्वादिदिक्षु दिगीशाः। दिगीश्वरे ललाटस्थे यातुः पुनरागमः न।

विमला—पूर्वदिशा के सूर्य, अग्निकोण के शुक्र, दक्षिण के मंगल, नैऋत्य के राहु, पश्चिम के शनि वायव्य के चन्द्रमा, उत्तर के बुध और ईशान कोण के अधिपति बृहस्पति हैं। इनके ललाट पर होने से यात्रा करने वाले यात्री का लौटना नहीं होता है ॥ ९ ॥

---

१. 'दिग्राशयस्युः' इति पाठान्तरम्।
२. "दिशीशाः शुक्रसूर्याद्या राह्वर्केन्दुजसूरयः।" इति पाठान्तरम्।

लग्नस्थो भास्करः प्राच्यां दिशि यातुर्ललाटगः ।
द्वादशैकादशः शुक्रः आग्नेय्यां तु ललाटगः ॥ १० ॥
दशमस्थो कुजो लग्नाद्याम्यायां तु ललाटगः ।
नवमोऽष्टमगो राहुर्नैऋत्यां तु ललाटगः ॥ ११ ॥
लग्नात्सप्तमगः सौरिः प्रतीच्यां तु ललाटगः ।
षष्ठपञ्चमगश्चन्द्रो वायव्यां तु ललाटगः ॥ १२ ॥
चतुर्थस्थानगः सौम्य उत्तरस्यां ललाटगः ।
द्वित्रिस्थानगतो जीव ईशान्यां तु ललाटगः ॥ १३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—यदि यात्रा काल के लग्न में सूर्य हो तो पूरब दिशा में जाने वाले को ललाट योग होगा अतः इसमें यात्रा न करे। इसी प्रकार ११, १२ शुक्र हो तो अग्निकोण वाले के लिए। १० में मंगल दक्षिण के लिए, ८, ९ राहु नैऋत्य के लिए, ७ में शनि पश्चिम के लिए। ५, ६ चन्द्रमा वायव्य के लिए। ४ में बुध उत्तर दिशा के लिए और २, ३ में गुरु बैठा हो तो ईशान कोण के लिए यात्रा करने वालों के लिए ललाट योग होगा ॥ १०-१३ ॥

ललाटगं तु सन्त्यज्य जीवितेच्छुर्व्रजेन्नरः ।
विलोमगो ग्रहो यस्य यात्रालग्नोपगो यदि ॥ १४ ॥
तस्य भङ्गप्रदो राज्ञस्तद्वर्गोऽपि विलग्नगः ।
रवीन्द्वयनयोर्यानमनुकूलं शुभप्रदम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—जीवितेच्छुः नरः तु ललाटगं सन्त्यज्य व्रजेत्। यदि यात्रालग्नोपगः ग्रहः यस्य विलोमगः तस्य राज्ञः भङ्गप्रदः, विलग्नगः तद्वर्गोऽपि भङ्गप्रदः रवीन्दुः अनुकूलं अयनयोः यानं (गमनं) शुभप्रदं भवति ।

विमला—दीर्घजीवन की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति को उक्त ललाट योग में यात्रा नहीं करनी चाहिए। राजा के लिए जो ग्रह जन्म लग्न में अशुभ फलद हो वह यदि यात्रा समय लग्न में हो तो उस लग्न में यात्रा करने से यात्रा निःस्फल होती हैं। साथ ही उस राशि का

नवमांश भी अशुभ होता है। सूर्य और चन्द्रमा के अनुकूल अयन में यात्रा करना शुभ फलदायक होता है ॥ १४-१५ ॥

तदभावे दिवारात्रौ यात्रा यातुर्वधोऽन्यथा।
मूढ़े शुक्रे कार्यहानिः प्रतिशुक्रे पराजयः ॥ १६ ॥

अन्वयः—तदभावे (सूर्यचन्द्रस्य च विपरीत अयनकाले अर्थात् सूर्यस्य दक्षिणायने चन्द्रस्य च उत्तरायणे सति) दिवारात्रौ यात्रा शुभाः अन्यथा यातुः वधो भवेत्। मूढ़े शुक्रे हानिः प्रतिशुक्रे च गमने सति पराजयः भवतिं ॥

विमला—यदि सूर्य चन्द्रमा भिन्न-भिन्न अयन में हों तो सूर्य के अयन में दिन की यात्रा और चन्द्रमा के अयन में रात्रि की यात्रा शुभ होती है। शुक्रास्त में यात्रा करने से कार्य की हानि और सम्मुख शुक्र काल की यात्रा में पराजय होता है ॥ १६ ॥

प्रतिशुक्रकृतं दोषं हन्ति शुक्रो ग्रहा नहि।
वशिष्ठः काश्यपेयोऽत्रिर्भरद्वाजः सगौतमः ॥ १७ ॥
एतेषां पञ्चगोत्राणां प्रतिशुक्रो न विद्यते।

अन्वयः—प्रति शुक्रकृतं दोषं शुक्रः हन्ति अन्यग्रहा नहि। वशिष्ठः, काश्यपेयः, अत्रिः, भरद्वाजः, गौतम एतेषां पञ्चगोत्राणां प्रतिशुक्रः (प्रतिशुक्रजन्यदोषः) न विद्यते ॥

विमला—सम्मुख शुक्र का दोषोपशमन शुक्र ही करता है। अन्य ग्रहों से दोष दूर नहीं होता है। वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, भारद्वाज और गौतम इन ५ गोत्र वालों को शुक्र के सन्मुख और वाम दक्षिणादि का दोष नहीं लगता ॥ १७ ॥

एकग्रामे विवाहे च दुर्भिक्षे राजविप्लवे ॥ १८ ॥
द्विजक्षोभे नृपक्षोभे प्रतिशुक्रो न विद्यते।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—एकग्राम, विवाह, दुर्भिक्ष, राज्यविप्लव, ब्राह्मण का शाप, राजा का क्रोध इनसे सम्बन्धित यात्रा में शुक्र का दोष नहीं होता है ॥ १८ ॥

नीचगोऽरिगृहस्थो वा वक्रगो वा पराजितः ॥ १९ ॥
यातुर्भङ्गप्रदः शुक्रः स्वांशस्थे[1] च जयप्रदः ।

अन्वयः—नीचगः अरिगृहस्थः वा वक्रगः वा पराजितः शुक्रः यातुः भङ्गप्रदः भवति । स्वांशस्थे च शुक्रः जयप्रदः भवति ।

विमला—नीचराशि (६) में, शत्रुगृह में, वक्रकाल में तथा पराजित अवस्था में शुक्र यात्रा करने वाले के कार्य का नाश करता है। किन्तु यदि शुक्र अपने नवांश का हो तो जयप्रद होता है ॥ १९ ॥

स्वेष्टलग्नेष्टराशौ वा शत्रुभात्षष्ठगोपि वा ॥ २० ॥
तेषामीशस्य राशौ वा यातुर्मृत्युर्न संशयः ।

अन्वयः—स्वेष्टलग्नेष्टराशौ, शत्रुभात्षष्ठगो अपि वा तेषां ईशस्य राशौ वा यातुः मृत्युः न संशयः ।

विमला—अपने इष्टलग्न से अष्टमराशि अथवा षष्ठभाव से षष्ठराशि पर या षष्ठेश और अष्टमेश की राशि पर स्थित शुक्र यात्रा करने वाले की मृत्यु का निश्चय ही कारण बनता है ॥ २० ॥

जन्मेशाष्टमलग्नेशौ मिथो मित्रव्यवस्थितौ ॥ २१ ॥
जन्मराश्यष्टमर्क्षेषु दोषा नश्यन्ति भावतः ।
क्रूरग्रहेक्षितो युक्तो द्विस्वभावोऽपि भङ्गदः ॥ २२ ॥

अन्वयः—मिथो मित्रव्यवस्थितौ जन्मेशाष्टमलग्नेशौ जन्मराशि अष्टमर्क्षेषु स्थितेषु भावतः सर्वे दोषाः नश्यन्ति क्रूरग्रह इक्षितः युक्तः द्विस्वभावः अपि भङ्गदः ।

विमला—परस्पर मित्र स्थान में स्थित जन्मलग्नेश तथा जन्म लग्न से अष्टम स्थान का अधिपति जन्मराशि से अष्टम होने पर भी सभी दोषों को नष्ट करता है। क्रूरग्रह से युक्त, दृष्ट तथा द्विस्वभाव राशि का लग्न कार्य को नष्ट करने वाला होता है ॥ २१–२२ ॥

याने शुभैरदृष्टश्च[2] शुभयुक्तेक्षितः शुभः ।
वस्वंत्याद्र्रादिपञ्चर्क्षे संग्रहे तृणकाष्ठयोः ॥

---

१. 'स्वोच्चस्थश्चेद्धनप्रदः' इति पाठान्तरम् ।

२. 'याने शिरोप्यदृष्टश्च' इति पाठान्तरम् ।

याम्यदिग्गमनं[1] शय्यांकुर्यान्नोगृहगोपनम्[2] ॥ २३ ॥

अन्वयः—याने शुभैः अदृष्टश्च (न शुभः) शुभयुक्तेक्षितः शुभः। वस्वन्त्यार्द्धादि पञ्चर्क्षे तृणकाष्ठयोः संग्रहे, याम्यदिग्गमनं शय्यां गृहगोपनं च न कुर्य्यात्।

विमला—यात्रालग्न पर यदि शुभग्रह की दृष्टि न हो तो अशुभ तथा शुभ ग्रह की दृष्टि या योग शुभ होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के आधे भाग से लेकर रेवती के अन्त तक पञ्चक (पचखा) है। इसमें दक्षिण:दिशा की यात्रा, शय्या निर्माण या गृह की छज्जा करना, तृण काष्ठादिका संग्रह करना अच्छा नहीं होता है ॥ २३ ॥

जन्मोदये लग्नगते दिग्लग्ने लग्नगोऽपि वा।
ताभ्यां[3] चत्वारि केन्द्रेषु याते शत्रुक्षयो भवेत् ॥ २४ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—जन्मलग्न में, दिग्लग्न में तथा तात्कालिक लग्न एवं चारो केन्द्रों में शुभग्रहों का योग होने पर यात्रा करना विशेष लाभ दायक होता है ॥ २४ ॥

शीर्षोदये लग्नगते दिग्लग्ने लग्नतोऽपि वा।
शुभवर्गेऽत्र वा लग्ने यातुः शत्रुक्षयो भवेत् ॥ २५ ॥

विमला—शीर्षोदय लग्न हो (५, ६, ७, ८, ११) अथवा दिग्द्वार लग्न हो अथवा शुभग्रह की राशि लग्न हो तो यात्रा करने वाले के शत्रु का नाश होता है।

शीर्षोदये जन्मराशे राशेर्वा निधनोदये[4]।
तयोराशिस्थिते राशौ यातुः शत्रुक्षयो भवेत् ॥ २६ ॥

अन्वयः—जन्मराशे शीर्षोदये वा निधनोदये राशेः। तयो राशिस्थिते राशौ यातुः शत्रुक्षयो भवेत्।

---

१. 'यानं द्विर्गमन' इति पाठभेदः।
२. 'शय्यां न कुर्याद् गृहगोपनम्' इति पाठान्तरम्।
३. 'शुभे चतुर्षु केन्द्रेषु' इति पाठभेदः।
४. 'शीर्षोदये जन्मराशौ लग्नं शुभयुतं तथा ॥' इति पाठभेदः।

विमला—शीर्षोदय राशि का जन्म हो तो उस राशि में अथवा शुभ ग्रहों के योग लग्न में यदि यात्रा करने वाला व्यक्ति यात्रा करे तो उसके शत्रुओं का नाश होता है ॥ २६ ॥

शत्रुजन्मोदये जन्म राशिश्च निधनं तयोः ।
यो राशिस्तत्र वै राशौ यातुः शत्रुक्षयो भवेत् ॥ २७ ॥

अन्वयः—शत्रुजन्मोदये, जन्मराशौ च तयोः निधनं यो राशिः तत्र वै राशौ यातुः शत्रुक्षयो भवेत् ।

विमला—शत्रु की जन्मराशि (लग्न) तथा जन्म लग्न से अष्टम राशि यदि यात्रा काल में हो तो शत्रु का क्षय होता है ॥ २७ ॥

वक्रे[1] तथा मीनलग्ने यातुर्मीनांशकेपि वा ।
निंद्यं निखिलयात्रासु घटलग्नं घटांशकम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—वक्रे तथा मीनलग्ने यातुः मीनांशकेपि वा तथा घटलग्नं घटनवांशकं च यात्रासु निन्द्यम् ।

विमला—घट और घट लग्न का नवमांश, मीन लग्न तथा मीन का नवांश एवं वक्री ग्रह की राशि लग्न में यात्रा सर्वथा त्याज्य है ॥ २८ ॥

जलोदये जलांशे वा जलजातैः शुभावहाः ।
मूर्तिः कोशोऽथ धानुष्कं[2] वाहनं मन्त्रसंज्ञकम् ॥ २९ ॥
शत्रुर्मार्गस्तथायुश्च भाग्यं[3] व्यापारसंज्ञितः ।
प्राप्तिरप्राप्ति रुदयाद्भावाः स्युर्द्वादशैव तु ॥ ३० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—जलचर राशि के लग्न या नवमांश में जल से सम्बन्धित कार्य करना लाभ दायक होता है। मूर्ति, कोष, धानुष्क (धनी) वाहन, मन्त्र, शत्रु, मार्ग, आयु, भाग्य, व्यापार प्राप्ति और व्यय ये लग्नादि द्वादश भावों के नाम हैं ॥ ३० ॥

हन्ति पापस्त्वायवर्जं भावात्सूर्यमहीसुतौ ।
न निहन्तारिगेहं च सौम्याः पुष्यंत्यरिं विना ॥ ३१ ॥[4]

---

१. 'वक्रेन्यथा मीनलग्ने' इति पाठभेदः । 'वक्रः पन्था मीनलग्ने वा' ॥
२. 'धनिनश्च' इति पाठान्तरम् । ३. 'आयनो' इति पाठभेदः ।
४. 'हन्ति आयस्त्वायवर्जं भावान्सूर्यमहीसुतौ ।
न निहन्तो सपारं च सौम्याः पुष्णन्त्यरिं विना ॥' इति मूलपाठः ।

अन्वयः—आयवर्जं पापः हन्ति, सूर्यमहीसुतौ अरिगेहे सति निहन्ता न, सौम्याः अरिं विना च न पुष्यन्ति ।

विमला—पापग्रह एकादश भाव से अतिरिक्त भावों में अशुभ फलद तथा सूर्य, मङ्गल शत्रु भाव में शुभद होते हैं। शुभ ग्रह षष्ठ के अतिरिक्त स्थानों में शुभद कहे गए हैं ।। ३१ ।।

शुक्रोऽस्तं चापि पुष्टोऽपि मूर्तिर्मृत्युश्च चन्द्रमाः ।
याम्यदिग्गमनं रिक्ता सर्वकाष्ठासु यायिनाम् ।। ३२ ।।

अन्वयः—शुक्रः अस्तं, चन्द्रमा पुष्टो अपि मूर्तिः, मृत्युश्च (न शुभः)। विशेषेण याम्यदिग्गमनं न शुभः रिक्ता सर्वकाष्ठासु यायिनाम् अशुभः ।

विमला—यात्रा काल मे सप्तम शुक्र, लग्न और अष्टमस्थ चन्द्रमा चाहे पूर्ण बली ही क्यों न हो अशुभ हैं। विशेष कर दक्षिण दिशा की यात्रा कष्टप्रद होती है। रिक्ता में यात्रा करने वाला चाहे जिस दिशा में जाना चाहे सर्वथा निन्दित है।

अभिजित्क्षणयोगोऽयमभीष्टफलसिद्धिदः ।
पञ्चाङ्गशुद्धिरहिते दिवसेऽपि फलप्रदः ।। ३३ ।।

अन्वयः—अयम् अभिजित्क्षणयोगः अभीष्टफलसिद्धिदः। पञ्चाङ्गशुद्धिरहिते दिवसे अपि फलप्रदः भवति ।।

विमला—यात्रा मुहूर्त मे अभिजित् का क्षण योग होने की स्थिति में यात्रा करना शुभद होता है। पञ्चाङ्ग शुद्धि से रहित दिनों मे भी अभिजित् क्षण का योग शुभदायक होता है ।। ३३ ।।

यात्रायोगे विचित्रास्तान्येन वक्ष्ये इतस्ततः ।
फलसिद्धिर्योगलग्नांद्राज्ञो विप्रस्य धिष्ण्यतः ।। ३४ ।।

अन्वयः—येन योगे यात्रा विचित्राः तान् इतस्ततः वक्ष्ये ! राज्ञः फलसिद्धिः योगलग्नात । विप्रस्य च धिष्ण्यतः ।

विमला—जिस योग में यात्रा विविध फल दायिनी होती है उसे कह रहे हैं। योग लग्न के द्वारा राजा को और नक्षत्र के द्वारा ब्राह्मणों को सिद्धि प्राप्त होती है ।। ३४ ।।

---

१. 'बलात्' इति साधुपाठः ।

मूर्तितः[1] शक्तितोन्येषां शकुनैस्तस्करस्य च ।
केन्द्रत्रिकोणेष्वेकेन योगः शुक्रेण सूरिणा ॥ ३५ ॥
अतियोगो भवेद्द्वाभ्यां त्रिभिर्योगोऽधियोगकः ।
योगे यियासतां क्षेममतियोगे जयो भवेत् ॥ ३६ ॥
योगातियोगे क्षेमं च विजयाय विभूतयः ।

अन्वयः—अन्येषां मूर्तितः शक्तितः । तस्करस्य च शकुनैः । केन्द्रत्रिकोणेषु एकेन शुक्रेण, गुरुणा वा योगः । द्वाभ्यां (योगे) अतियोगः भवेत् । त्रिभिः योगः अधियोग संज्ञकः । तत्र योगे यियासतां क्षेमम् । अतियोगे जयः योगातियोगे क्षेमं विजयाय विभूतयः च भवेत् ।

विमला—अन्य वैश्यों एवं शूद्रों की लग्न एवं उसके बलाबल के आधार पर । चोरों की शुभ शकुनों के द्वारा सिद्धि होती है । केन्द्र और त्रिकोण में यदि गुरु या शुक्र का उत्तम योग हो तो उसे योग कहते हैं । दोनों का योग हो तो उसे अतियोग कहते हैं और तीन शुभ ग्रहों का (शुक्र, गुरु और बुध या पूर्ण चन्द्रमा का) योग हो तो अधियोग या योगातियोग कहते हैं । योग में यात्रा करने से कल्याण । अतियोग मे यात्रा से विजय तथा योगातियोग या अधियोग में यात्रा करने से कल्याण हो, विजय हो तथा ऐश्वर्य लाभ होता है ।

व्यापारशत्रुमूर्तिस्थैश्चन्द्रमन्ददिवाकरैः ॥ ३७ ॥
रणे गतस्य भूपस्य जयलक्ष्मी प्रमाणता ।

अन्वयः—क्रमेण व्यापारशत्रुमूर्तिस्थैः चन्द्रमन्ददिवाकरैः, रणे गतस्य भूपस्य जयलक्ष्मी प्रमाणता ।

विमला—दशम, षष्ठ और लग्न में यदि क्रमशः चन्द्रमा, शनि और सूर्य हों तो युद्ध में गये हुए राजा को जयरूपी लक्ष्मी की प्राप्ति अवश्य होती है ॥ ३७ ॥

शुक्रयज्ञार्किभौमेषु लग्नं वास्तं त्रिशक्तिषु ॥ ३८ ॥[2]

---

१. 'मुहूर्त' इति पाठभेदः ।

२. श्लोक ३८ और ३९ नारदसंहिता की सभी प्रतियों में उपलब्ध नहीं होता ३९ वें श्लोक के स्थान पर श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस द्वारा प्रकाशित प्रति में :—'वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि वासर नाथः । लग्नगते भृगुपुत्रे स्युः शलभा इव सर्वे' यह श्लोक दिया गया है ।

यातस्याग्रे वैरिचमू बहुला क्षपयेद्यतः ।
लग्नस्थे त्रिदशाचार्ये धनायस्थे परेग्रहे ॥ ३९ ॥

अन्वयः—शुक्रयज्ञार्किभौमेषु लग्नं वा अस्तं त्रिशक्तिषु वा लग्नस्थे त्रिदशाचार्ये धने आयेस्थे परे ग्रहे यातस्य अग्रे बहुला वैरिचमूः यतः क्षपयेत् ।

विमला—शुक्र, बुध, शनि और मङ्गल के क्रमशः लग्न, सप्तम, तृतीय और दशम में होने पर अथवा लग्न में बृहस्पति एवं धन और लाभ स्थान में शेष ग्रहों के होने पर यात्रा करने वाले के सामने शत्रुओं की असंख्य सेना भी समाप्त हो जाती है ।

विशेष—शुक्रयज्ञार्कि इत्यादि में शुक्रयज्ञार्किभौमेषु यह पाठ होना चाहिए । तथा त्रिशुक्तिषु के स्थान पर त्रिशक्तिषु होना चाहिए ।

(लग्नस्थे[1] त्रिदशाचार्ये धनायस्थे परे ग्रहे)
गतस्य राज्ञोऽरिसेना प्रयाति[2] यममन्दिरम् ।
लग्नेशुक्रे रवौ लाभे चन्द्रे वन्धुस्थिते तदा ॥ ४० ॥

अन्वयः—यदा लग्ने शुक्रे, लाभे रवौ, वन्धुस्थिते चन्द्रे तदा यातस्य अरिसेना यममन्दिरं प्रयान्ति ॥

विमला—लग्न में शुक्र, एकादश रवि और तृतीय स्थान में चन्द्रमा के रहने पर गमन करने वाले अर्थात् चढ़ाई करने वाले राजा की सेना शत्रुसेना को यममन्दिर (यमपुरी) भेजती है ॥ ४० ॥

निहन्ति यातुः पृतनां केशवः पूतनामिव ।
त्रिकोणकेन्द्रगाः सौम्याः क्रूरास्त्र्यायगता यदि ॥ ४१ ॥

अन्वयः—त्रिकोणकेन्द्रगाः सौम्याः, क्रूराः त्री आयगताः यदि तदा यातुः केशवः पूतनामिव पृतनां निहन्ति ।

विमला—सौम्य ग्रह त्रिकोण (५, ९) तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में हो और क्रूरग्रह तृतीय और एकादश भाव में बैठा हो तो जिस

---

१. श्लोक ४० का पूर्वपद किसी किसी प्रति में दो बार है और किसी किसी में नहीं दिया गया है ।

२. 'नीयते' इति पाठ भेदः ।

प्रकार भगवान केशव ने पूतना का वध किया था उसी तरह यात्रा करने वाला शत्रु का संहार करता है ॥ ४१ ॥

[1]यस्य यात्रारिलक्ष्मीस्तमुपैति चाभिसारिका ।
जीवार्कचन्द्राः[2] लग्नारिरंध्रगाः यदिगच्छतः ॥ ४२ ॥

अन्वयः—यस्य गच्छतः जीव, अर्क, चन्द्राः, क्रमशः लग्न अरि रन्ध्रगाः सन्ति तस्य अरिलक्ष्मी अभिसारिका इव तमुपैति ।

विमला—जिस राजा के यात्रा के समय गुरु, सूर्य और चन्द्रमा क्रमशः लग्न, शत्रु और अष्टम स्थान में बैठे हों उसके शत्रु की लक्ष्मी अभिसारिका[3] नायिका की तरह उसे स्वयं प्राप्त होती है ॥ ४२ ॥

तस्याग्रे स्वल्पमैत्रीव न स्थिरा रिपुवाहिनी ।
स्वोच्चस्थे लग्नगे जीवे चन्द्रे लाभगते यदि ॥ ४३ ॥

अन्वयः—यदि यात्रा स्वोच्चस्थे लग्नगते जीवे, लाभगते चन्द्रे, तस्याग्रे स्वल्पमैत्री इव रिपुवाहिनी स्थिरा न भवति ।

विमला—यदि यात्रा समय में उच्चराशिका गुरु लग्न में बैठा हो और चन्द्रमा लाभ स्थान में बैठा हो तो उसके आगे अल्प मैत्री की तरह शत्रु की सेना टिक नहीं पाती है। अर्थात् शत्रु सेना उसकी सेना को देखकर भाग चलती है ॥ ४३ ॥

त्रिषडायेषु सौरारौ[4] बलवांश्च शुभो यदि ।
यात्रायां नृपतेस्तस्य हस्ते स्याच्छत्रुमेदिनी ॥ ४४ ॥

अन्वयः—त्रि, षट्, आयेषु सौरः आरश्च। यदि शुभग्रहः बलवान् स्यात् तर्हि यात्रायां तस्य नृपतेः हस्ते शत्रुमेदिनी स्यात् ॥

विमला—तृतीय, षष्ठ और एकादश में शनि और मंगल बैठे हों तथा शेष ग्रह बलवान होकर शुभ स्थान में हों तो यात्रा में शत्रु की भूमि (राज्य) प्राप्त होती है ॥ ४४ ॥

---

१. 'यस्य यातुश्च लक्ष्मीवैं तमुपैत्यभिसारिका' इति पाठान्तरम् ।

२. 'चन्द्र' इति पाठभेदः ।

३. अभिसारिका के दो भेद कहे गये हैं। कृष्णाभिसारिका तथा शुक्लाभिसारिका। जो अन्धेरी रात में परपुरुष गमन करे उसे कृष्णाभिसारिका और जो उजेलीरात में परपुरुष गमन करे उसे शुक्लाभिसारिका कहा गया है ।

४. "त्रिषडायेष्वसंसक्तैर्बलवन्तं शुभो यदि" । इति पाठान्तरम् ।

स्वोच्चस्थे लग्नगे जीवे चन्द्रे लाभगते यदि ।
गतोराजा रिपून्हन्ति पिनाकी त्रिपुरं यथा ॥ ४५ ॥

अन्वयः—जीवे स्वोच्चस्थे लग्नगे, लाभगते चन्द्रे यदि राजागतः तदा तथारिपून् हन्ति यथा पिनाकी त्रिपुरं हतः ।

विमला—बृहस्पति उच्चराशि (४) का होकर लग्न में बैठा हो तथा चन्द्रमा लाभ स्थान में बैठा हो तो इस प्रकार के लग्न में यात्रा करने वाला राजा उसी प्रकार शत्रुओं को मारडालता है जैसे भगवान शङ्कर ने त्रिपुरासुर को मारा था ॥ ४५ ॥

मस्तकोदयगे शुक्रे लग्नस्थे लाभगे गुरौ ।
गतोराजारिपून्हन्ति कुमारस्तारकं यथा ॥ ४६ ॥

अन्वयः—शुक्रे मस्तकोदयगे (उच्चस्थे) लग्नस्थे, गुरौ लाभगे सति गतः (चलितः) राजा तथा रिपून् हन्ति यथा कुमारः तारकम् ॥

विमला—शुक्र उच्चराशि का होकर लग्न में बैठा हो तथा लाभस्थान में गुरु बैठा हो तो यात्रा करने वाला राजा शत्रु को उसी प्रकार नष्टकर देता है जैसे कार्तिकेय ने तारकासुर को नष्ट किया था ॥ ४६ ॥

जीवे लग्नगते शुक्रे केन्द्रे वापि त्रिकोणगे ।
गतोजयत्यरीन् राजाकृष्णवत्यां यथा व्रणम् ॥ ४७ ॥

अन्वयः—जीवे लग्नगते, केन्द्रे शुक्रे, त्रिकोणगे वापि गतः राजा तथा अरीन् जयति यथा कृष्णवत्यां व्रणं नश्यति ।

विमला—गुरुलग्न में हो और शुक्र केन्द्र में अथवा त्रिकोण (९, ५) में हो तब गमन करने वाला शत्रु को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे कृष्णवती (एक जड़ी है) व्रण को नष्टकर देती है ॥ ४७ ॥

लग्नगे ज्ञे शुभे केन्द्रे धिष्णे चोपकुले गते ।
नृपाम्नुष्णन्त्यरीन्ग्रीष्मे ह्रदानीवार्करश्मयः[1] ॥ ४८ ॥

अन्वयः—लग्नगे ज्ञे अन्ये शुभग्रहाः केन्द्रे, धिष्णे च उपकुले गते गताः नृपाः तथा अरीन् घ्नन्ति यथा अर्करश्मयः ह्रदानि घ्नन्ति ॥

---

1. "ह्रदानीवार्करक्षयं" इति पाठान्तरम् ।

विमला—बुध लग्न में हो तथा अन्य शुभग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) में हों तथा गुरु चतुर्थ में हो तो यात्रा करने वाला राजा शत्रु को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे सूर्य की किरणें ग्रीष्मकाल में तालाबों का जल नष्ट कर देती हैं ॥ ४८ ॥

शुभे त्रिकोणकेन्द्रस्थे लाभे चन्द्रेऽथवा रवौ ।
शत्रून्हन्ति गतो राजात्वंधकारं यथा रविः ॥ ४९ ॥

अन्वयः—त्रिकोणकेन्द्रस्थे शुभे, चन्द्रे अथ वा रवौ लाभे सति गतः राजा तथा शत्रून् हन्ति यथा रवि अन्धकारं हन्ति ।

विमला—त्रिकोण में (९, ५) या केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह बैठे हों। लाभ स्थान में चन्द्रमा या सूर्य हो तो इस स्थिति में गमन करने वाला राजा शत्रुसेना को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे अन्धकार को सूर्य भगवान नष्ट कर देते हैं ॥ ४९ ॥

स्वक्षेत्रगे शुभे चन्द्रे त्रिकोणायगते गते ।
विनाशयत्यरीन् राजा तूलराशिमिवानलः ॥ ५० ॥

अन्वयः—स्वक्षेत्रगे शुभे, त्रिकोण-आयगते चन्द्रे गतः राजा अरीन् तथा विनाशयति यथा अनलः तूलराशिं विनाशयति ।

विमलाः—शुभग्रह अपनी राशि में हों चन्द्रमा त्रिकोण (९, ५) या लाभ स्थान में हो। ऐसी लग्न स्थिति में गमन करने वाला राजा शत्रु का उसी प्रकार विनाश करता है जिस प्रकार रुई की ढेर को अनल (अग्नि) नष्ट कर देता है ॥ ५० ॥

इन्दौ खेस्थे[1] गुरौ केन्द्रे मन्त्रीसप्तमगे गतः ।
नृपो हन्ति रिपून् सर्वान् पापं पञ्चाक्षरी यथा ॥ ५१ ॥

अन्वयः—इन्दौ खेस्थे, गुरौ केन्द्रे, सप्तमगे मन्त्री (शुक्रः) सति गतः नृपः सर्वान् रिपून् तथा हन्ति यथा पंचाक्षरी पापं हन्ति ।

विमलाः—चन्द्रमा दशमस्थान में, गुरु केन्द्र (१, ४, ७, १०) में, शुक्र सप्तमभाव में स्थित हो तो इस लग्न में यात्रा करने वाला राजा उसी प्रकार शत्रु को नष्ट करता है जिस प्रकार पञ्चाक्षरी मन्त्र (नमः शिवाय) पापों को नष्ट कर देता है ॥ ५१ ॥

---

१. स्वस्थे' इति पाठान्तरम् ।

वर्गोत्तमगते शुक्रेऽप्येकस्मिन्नेव लग्नगे ।
हरिस्मृतिर्यथा पापान्हन्ति शत्रून् गतो नृपः ॥ ५२ ॥

अन्वयः—वर्गोत्तमगते शुक्रे एकस्मिन्नेव लग्नगे गतः नृपः तथा शत्रून् हन्ति यथा हरिस्मृतिः पापान् हन्ति ।

विमलाः—अपने वर्गोत्तम नवांश का होकर लग्न में अकेला भी शुक्र यदि हो तो ऐसे लग्न में यात्रा करने वाला राजा उसी प्रकार शत्रु को नष्ट कर देता है जैसे हरि की स्मृति पापों को नष्ट करती है ॥ ५२ ॥

शुभे केन्द्रत्रिकोणस्थे चन्द्रे वर्गोत्तमे गते ।
सगोत्रान्हि रिपून् हन्ति यथा गोत्रांश्च गोत्रभित् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—केन्द्रत्रिकोणस्थे शुभे, वर्गोत्तमे चन्द्रे गते सति राजा सगोत्रान् रिपून् हि हन्ति यथा गोत्रभिद् गोत्रान् हन्ति ।

विमला—शुभग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) त्रिकोण (९, ५) में हों तथा चन्द्रमा अपने वर्गोत्तम नवांश में हो तो ऐसे लग्न में यात्रा करने वाला राजा शत्रुपरिवार को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे इन्द्र ने पर्वतों को नष्ट किया था ॥ ५३ ॥

मित्रभस्थे गुरौ केन्द्रे त्रिकोणस्थेऽथवा सिते ।
शत्रून् हन्ति गतो राजा भुजङ्गं गरुडो यथा ॥ ५४ ॥

अन्वयः—गुरौ मित्रभस्थे, केन्द्र, अथवा त्रिकोणस्थे सिते गते गतः राजा तथा शत्रून् हन्ति यथा गरुडः भुजङ्गं हन्ति ।

विमला—मित्रगृही होकर गुरु केन्द्र में अथवा शुक्र त्रिकोण में हो तो ऐसी स्थिति में यात्रा करने वाला राजा उसी प्रकार शत्रू को नष्ट करता है जैसे गरुड़ सर्पों को नष्ट करता है ॥ ५४ ॥

शुभे केन्द्रे त्रिकोणस्थे वर्गोतमगते गतः ।
विनाशयत्यरीन्राजा पापान् भागीरथी यथा ॥ ५५ ॥

अन्वयः—शुभे केन्द्रे, त्रिकोणस्थे वर्गोत्तमगते वा गतः राजा अरीन् तथा विनाशयति यथा पापान् भागीरथी विनाशयति ।

विमला—शुभग्रह केन्द्र में त्रिकोण में या अपने वर्गोत्तम राशि के हों तो प्रस्थान करने वाला राजा अपने शत्रुओं को उसी प्रकार नष्ट करता है जैसे गङ्गा जी पापों को नष्ट करती हैं ॥ ५५ ॥

ये नृपायान्त्यरीञ्जेतुं तत्र योगौ नृपाह्वयौ।
उपैतिशान्ति कोपाग्निः शत्रुयोषाश्रुविन्दुभिः॥ ५६॥

अन्वयः—नृपाह्वयौ योगौ द्वौस्तः तत्र ये नृपा, अरीन् जेतुं यान्ति तेषां नृपाणाम् कोपाग्निः शत्रुयोषाश्रुविन्दुभिः शान्ति उपैति।

विमला—उपरोक्त दो योग नृप नामक हैं। इनमें जो राजा शत्रु विजयार्थ गमन करता है। उसकी क्रोधाग्नि शत्रुओं की स्त्रियों के अश्रुविन्दुओं से शान्त होती है॥ ५६॥

वलक्षयप्रदश्चन्द्रः पूर्णः क्षीणः स्वभावतः[1]।
विजयस्तत्र यातॄणां संधिः सर्वान् पराक्रमः॥ ५७॥

अन्वयः—स्वभावतः पूर्णः चन्द्रः वलप्रदः, क्षीणः चन्द्रः क्षयप्रदः। तत्र पूर्णचन्द्रे सति यातॄणां सन्धिः विजयः पराक्रमः भवति।

विमला—स्वभावतः पूर्णचन्द्रमा बलप्रद और क्षीणचन्द्रमा क्षय प्रद होता है। पूर्णचन्द्रमा होने पर गमन करने वाले राजा की विजय, सन्धि तथा पराक्रम वृद्धि होती है॥ ५७॥

निमित्तशकुनादिभ्यः प्रधानेनोदयः[2] स्मृतः।
तस्मात्प्रसवनायुः स्यात्फलहेतुर्मनोदयः॥ ५८॥

अन्वयः—निमित्त शकुनादिभ्यः, उदयः (भाग्योदयः) प्रधानः न स्मृतः, तस्मात् प्रसवनायुः मनोदयः फलहेतुर्भवति।

विमला—मुहूर्त और शकुनादिक भाग्योदय में प्रधान नहीं समझना चाहिए। अतः अभ्युदय के लिए अन्तःकरण की शुद्धि मन की प्रसन्नता प्रमुख फल का कारण होता है॥ ५८॥

उत्सवोपनयोद्वाहे श्रुतिसौसूतकेषु च।
ग्रहणे च न कुर्वीत यात्रां मर्त्यः सदा वधः॥ ५९॥[3]

अन्वयः—उत्सवे, उपनयने, उद्वाहे, श्रुतिसूतकेषु ग्रहणे च सदा बुधः मर्त्यः यात्रां न कुर्वीत।

---

१. "मीमाशीवे विचाभिधा" इति मूल पाठः। २. 'प्रधानं नोदयः' इति मूल पाठः। ३. 'उत्सवोपनयोद्वाह श्रुति सौसूतकेषु च (शवस्यसूतकेषु च)। अशनाकेन कुर्वीत यात्रा मर्त्यान्नजी बुधः' इति मूलपाठः।

विमला—उत्सव, उपनयन, विवाह, वेदारम्भ सूतक तथा ग्रहण में बुद्धिमान जन यात्रा न करें ॥ ५९ ॥

महिषी-मेषयोर्युद्धे कलत्रकलहान्तरे ।
वस्त्रादेस्खलिते क्रोधे दुरुक्ते न व्रजेत्क्षुतौ ॥ ६० ॥

अन्वयः—महिषीमेषयोर्युद्धे, कलत्रकलहान्तरे, वस्त्रादेः स्खलिते, क्रोधे, दुरुक्ते क्षुतौ च न व्रजेत् ।

विमला—भैसों तथा बकरों के युद्ध होने, स्त्रियों का झगड़ा होने, वस्त्रादि के गिरने, क्रोध में, कटु वचन कहने और भूखे रहने पर यात्रा करना उत्तम नहीं होता है ॥ ६० ॥

विशेषः—किसी-किसी टीकाकार ने क्षुतौ का अर्थ छींकना किया है ।

घृतान्नं तिलपिष्टान्नं मत्स्यान्नं घृतपायसम् ।
प्राणादिक्रमशो भुक्त्वा याति राजा जयत्यरीन् ॥ ६१ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पूर्वादि दिशाओं में क्रमशः घृतान्न, तिल पिष्टान्न, मत्स्यान्न, और घृत पायस खाकर यात्रा करने वाला राजा शत्रु पर विजय प्राप्त करता है ॥ ६१ ॥

[2]मार्जितापरमान्नं च कांजिकं च पयो दधि ।
क्षीरं तिलोदनं भुक्त्वा भानुवारादिषुक्रमात् ॥ ६२ ॥

अन्वयः—भानुवारादिषु क्रमात् मार्जिता, परमान्नं, च कांजिकं च पयः, दधि, क्षीरं, तिलोदनं भुक्त्वा गच्छेत् ।

विमला—रविवार को श्रीखण्ड, सोमवार को खीर, मंगलवार को मट्ठा, बुधवार को दूध, गुरुवार को दही, शुक्रवार को क्षीर (कच्चा दूध) और शनिवार को तिल और भात खाकर यात्रा करना शुभ फलदायक होता है ॥ ६२ ॥

कुल्माषांश्च तिलान्नं च दधिक्षौद्रं घृतं पयः ।
मृगमांसं च तत्सारं पायसं चाषकं मृगम् ॥ ६३ ॥

---

१. 'यातो' इति मूल पाठः ।

२. 'मर्जिकां' इति मूल पाठः ।

शशमांसं च षाष्टिक्यं प्रियङ्गुकमपूपकम् ।
चित्राण्डजं फलं कूर्मं सारीं गोधां च शल्लकम् ॥ ६४ ॥
हविष्यं कृसरान्नं च मुद्गान्नं यवपिष्टकम् ।
मत्स्यान्नं चित्रितान्नं च दध्यन्नं दस्रभात्क्रमात् ॥ ६५ ॥
भुक्त्वा यायाञ्जयेच्छुर्यो भूमिनाथोजयत्यरीन् ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—कुल्माष १-(बिना टूड वाला जौ, वाकली), २-तिलान्न, ३-दही, ४-शहद, ५-घी, ६-दूध, ७-मृगमांस, ८-मृगरक्त, ९-खीर, १०-चाषक (चटक गौरैया पपैया या वटेर), ११-मृग, १२-शश, (चौगड़ा या खरगोश) मांस, १३-साठी का चावल, १४-कागुनी (टांगुन), १५-मालपूआ, १६-मयूर का अण्डा, १७-फल, १८-कछुए का मांस, १९-सारस का मांस, २०-गोधा (गोह) का मांस, २१-साही का मांस, २२-खीर, २३-खिचड़ी, २४-मूंग, २५-जव की पीष्टी, २६-मछली, २७-चित्रान्न, २८-दही भात इन पदार्थों को क्रमशः अश्विन्यादि नक्षत्रों में खाकर राजा युद्ध के लिए यात्रा करे तो शत्रु पर विजय प्राप्त करता है ॥ ६३-६५ ॥

हुताशनं तिलैर्हुत्वा पूजयेत्तु दिगीश्वरम् ॥ ६६ ॥
प्रणम्य देवभूदेवानाशीर्वादं नृपो लभेत्[1] ।
कृत्वा होमं दारुणं च तन्मंत्रेण कृतं व्रजेत् ॥ ६७ ॥

अन्वयः—दिगीश्वरम्, तु (आदौ) पूजयेत् । तन्मन्त्रेण तिलैः हुताशनं हुत्वा, देवभूदेवान्प्रणम्य नृपः आशीर्वादं लभेत् । दिगीशानां दारुणं होमं कृत्वा व्रजेत् ।

विमला—यात्रा काल में दिशापति का पूजन करे और उन्हीं के मन्त्रों से तिलों का अग्नि में हवन कर देवता तथा ब्राह्मणों को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करे एवं दिशापति के मन्त्र से पुनः हवन कर यात्रा करना शुभद होता है ॥ ६६-६७ ॥

वस्त्रं तद्वर्णगंधाद्यैरेवं भक्त्या दिगीश्वरम् ।
इन्द्रमैरावतारूढं शच्या सह विराजितम् ॥ ६८ ॥

---

१. 'वदेत्' इति मूलपाठः ।

वज्रपाणिं स्वर्णवर्णं दिव्याभरणभूषितम् ।
सप्तहस्तं सप्तजिह्वं षडक्षं मेषवाहनम् ॥ ६९ ॥
स्वाहा प्रियं रक्तवर्णं स्रक् श्रुवायुधधारिणम् ।

अन्वयः—एवं वस्त्र तद्वर्णगन्धाद्यैः दिगीश्वरं भक्त्या परिपूज्य, शच्या सह ऐरावतारुढम् इन्द्रं प्रपूजयेत् । वज्रपाणिं स्वर्णवर्णं दिव्याभरण भूषितम् , इन्द्रं ध्यात्वा, सप्तहस्तं सप्तजिह्वं षडक्षं मेषवाहनम् स्वाहाप्रियं रक्तवर्णं स्रक् श्रुवायुधधारिणम् अग्निं पूजयेत् ।

विमला—इस प्रकार पूर्वोक्तरीत्या दिशापति का जो वर्ण है तदनुकूल वस्त्र एवं गन्धादि द्रव्यों से भक्तिपूर्वक पूजा करे तदनन्तर शची (इन्द्राणी) के साथ ऐरावतहाथी पर बैठे हुए इन्द्र का पूजन करे। इसके बाद हाथ में वज्र धारण करने वाले स्वर्णवर्ण के दिव्यवस्त्र एवं आभूषणों से युक्त इन्द्र का ध्यान कर सात हाथ एवं जीभ वाले ६ आंख वाले मेष पर सवार स्वाहा शब्द से प्रसन्न रहने वाले स्रक् और श्रुवा रूप आयुध को धारण करने वाले रक्तवर्ण के अग्निदेव का पूजन करे ॥ ६८–६९ ॥

दण्डायुधं लोहिताक्षं यमं महिषवाहनम् ॥ ७० ॥
श्यामलासहितं रक्तवर्णमूर्ध्वमुखं शुभम् ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—दंड आयुध वाले लाल नेत्र वाले भैंसे पर सवार श्यामला दूत के सहित उर्ध्वमुख वाले रक्तवर्ण के शुभ यमराज का दक्षिण दिशा में ध्यान करें ॥ ७० ॥

खड्गचर्मधरं नीलं निर्ऋतिं नरवाहनम् ॥ ७१ ॥
उर्ध्वकेशं विरूपाक्षं दीर्घग्रीवायुतं विभुम् ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—खड्ग और ढाल को धारण किए हुए नीलवर्ण के उर्ध्वकेशी, विकट नेत्रों वाले नरवाहन से युक्त सर्व सामर्थ्यवान निर्ऋति (राक्षस) का पूजन करें ॥ ७१ ॥

नागपाशधरं पीतवर्णं मकरवाहनम् ॥ ७२ ॥
वरुणं कालिनाथं च रत्नाभरणभूषितम् ।

अन्वयः—नागपाशधरं, पीतवर्णं, मकरवाहनं, कालिनाथं, रत्नाभरण-भूषितं वरुणं च ध्यात्वा।

विमला—नागपाश धारण करने वाले, पीतवर्ण वाले मकर पर सवार कालिनाथ रत्नाभरण से विभूषित वरुण देव का ध्यान करें॥ ७२॥

प्राणिनां प्राणरूपं च द्विबाहुं दण्डपाणिनम्॥ ७३॥
वायुं कृष्णमृगासीनं पूजयेदंजना पतिम्।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—प्राणिमात्र के प्राणस्वरूप दो भुजा वाले दण्ड धारण किए हुए, कृष्ण मृग (कस्तूरी मृग) पर बैठे हुए अञ्जना के पतिदेव वायु का ध्यान करे॥ ७३॥

अश्वासीनं कुन्तपाणिं द्विबाहुं स्वर्णसन्निभम्॥ ७४॥
कुवेरं चित्रलेखेशं यक्षगन्धर्वनायकम्।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—घोड़े पर सवार, हाथ में भाला धारण किए हुए। दो भुजा वाले स्वर्णवर्ण यक्ष एवं गन्धर्वों के राजा चित्रलेखा के स्वामी कुवेर का ध्यान करे॥ ७४॥

पिनाकिनं वृषारूढं गौरीपतिमनुत्तमम्॥ ७५॥
श्वेतवर्णं चन्द्रमौलिं नागयज्ञोपवीतिनम्।
अप्रयाणे स्वयं कार्योऽपेक्षया पूजनं तथा॥ ७६॥

अन्वयः—पिनाकिनं, वृषारुढं, अनुत्तमं श्वेतवर्णं नागयज्ञोपवीतिनम् गौरीपतिं, चन्द्रमौलिं ध्यायेत्। प्रयाणसमये तु पूजनं उचितमेव, अप्रयाणेऽपि कार्योऽपेक्षया दिक्पालान् पूजयेत्।

विमला—पिनाकधारी, वृषभारूढ़ अनुत्तम श्वेतवर्ण वाले, नाग रूप यज्ञोपवीत धारण करने वाले श्री गौरीजी के पति भगवान चन्द्रमौलि का ध्यान करे। यात्रा समय में इन दिक्पालों का पूजन तो उचित है ही, बिना यात्रा के भी कार्यसिद्धि के लिए दिक्पालों का पूजन करना चाहिए॥ ७५–७६॥

कार्यं निर्गमनं छत्रध्वजाश्वाक्षतवाहनैः।
स्वस्थानान्निर्गमस्थानं धनुषां च शतद्वयम्॥ ७७॥

अन्वयः—छत्र, ध्वजा, अश्व, अक्षतवाहनैः युक्तः शतद्वयम् च धनुषां प्रमाणान्तरम्। स्वस्थानात् निर्गमनं कार्यम्।

विमला—ध्वजा, छत्र, अश्व तथा दोषरहित वाहनों से युक्त होकर प्रस्थान करना चाहिए। अपने स्थान से प्रस्थान रखने वाला स्थान २०० धनुष प्रमाण होना उत्तम होता है॥ ७७॥

चत्वारिंशद्द्वादशैव प्रस्थितो हि स्वगेहतः।
दिनान्येकत्र न वसेत्सप्त भूपः परोजनः॥ ७८॥
पञ्चरात्रं च परतः पुनर्लग्नान्तरं व्रजेत्।

अन्वयः—स्वगेहतः चत्वारिंशत् (धनुषां प्रमाणं) द्वादश (धनुषां प्रमाणं) वा प्रस्थानं कुर्यात् एव हि प्रस्थितः एकत्र सप्तदिनादि भूपः परोजनः पञ्चरात्रं च निवसेत् (अतः परं) परतः पुनः लग्नान्तरं व्रजेत्।

विमला—अथवा अपने घर से ४० धनुष प्रमाण या १२ धनुष प्रमाण दूरी पर प्रस्थान करे। प्रस्थान के बाद राजा एक स्थान पर अधिकतम ७ दिन तथा अन्य व्यक्ति ५ दिन तक रहे। इससे अधिक रहना पड़े तो पुनः लग्नान्तर में उत्तम लग्न का विचार कर यात्रा करे॥ ७८॥

अकालजेषु नृपतिर्विद्युद्गर्जितवृष्टिषु॥ ७९॥
उत्पातेषु त्रिविधेषु सप्तरात्रं तु न व्रजेत्।
गमने तु शिवाकाककपोतानां गिरः शुभाः॥ ८०॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—असमय में बिजली का कड़कना तथा वर्षा का होना। तथा:भूकम्प आदि उत्पात होने पर राजा सात दिन तक यात्रा न करे। गमन काल में गीदड़ी, काग, और कपोती की वाणी शुभद होती है॥ ७९–८०॥

वामाङ्गे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला।
वानरः काक ऋक्षःश्वा भासः स्युर्दक्षिणाः शुभाः॥ ८१॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—कोकिला, पल्ली, पोतकी, सूकरी और खंजरीट (रला) इनका वाम भाग में होना शुभ है, तथा वानर, काग, ऋक्ष, कुत्ता और भास पक्षी का दक्षिण होना शुभद होता है॥ ८१॥

चाषं त्यक्त्वा चतुष्पात्तु शुभदो वामतोगमः ।
कृष्णं त्यक्त्वा प्रयाते तु कृकलासो न वीक्षितः ॥ ८२ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गौरैया को छोड़कर चतुष्पादपक्षी का वाम गमन शुभ होता है। तथा काले को छोड़कर अन्य वर्ण का गिरगिट देखना शुभ नहीं होता है ॥ ८२ ॥

वराहशशगोधानां सर्पाणां कीर्तनं शुभम् ।
दृष्टमात्रेण यात्रायां व्यस्तं सर्वं प्रवेशने ॥ ८३ ॥

अन्वयः—वराह, शश, गोधानां, सर्पाणां च कीर्तनं यात्रायां शुभम् । प्रवेशने सर्वं व्यस्तं दृष्ट मात्रेण शुभम् कीर्तनं च अशुभम् ।

विमला—वराह, खरगोश, गोह और सर्प का बोलना यात्रा में शुभद है, और प्रवेश में इनका दर्शन शुभ है कीर्तन से विपरीत फल होता है। अर्थात प्रवेश काल में इनका बोलना अशुभ सूचक होता है ॥८३॥

यात्रासिद्धिर्भवेद्दृष्टे शवे रोदनवर्जिते ।
प्रवेशो रोदनयुते शवे स्याच्च शुभप्रदः ॥ ८४ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—रोदन से वर्जित शव यात्रा काल में कार्यसिद्धि सूचक होता है। तथा प्रवेशकाल में रोदन से युक्त शव का दर्शन शुभ फलदायक होता है ॥ ८४ ॥

पतितक्लीवजटिलोन्मत्तवांतौषधादिभिः ।
अभ्यक्तकाष्ठान्यस्थीनि चर्मांगारतुषाग्निभिः ॥ ८५ ॥
गुडकार्पासलवणवसातैलतृणोरगैः ।
वंध्याव्यथितकाणौ च मुक्तकेशो बुभुक्षितः ॥ ८६ ॥
प्रयाण समये लग्ने दृष्टे सिद्धिर्न जायते ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पतित (परित्यक्त) नपुंसक, जटाधारी, औषधि सेवन से उन्मत्त या शराबी, तेल लगाया हुआ, काष्ठ, हड्डी, चमड़ा, अंगारा, भूषा, धूमाग्नि, गुड़, कपास, नमक, चरबी, तेल, घास, सर्प, वन्ध्यास्त्री, रोगी,

काना (एकाक्ष) भूखा, खुले केश वाला, ये सब यदि यात्रा काल में दिखलाई दें तो यात्रा जन्य कार्य की सिद्धि नहीं होती है ॥ ८५-८६ ॥

प्रज्वलाग्निः शुभंवाक्यं कुसुमेक्षुसुरागणाः ॥ ८७ ॥
गंधपुष्पाक्षतच्छत्रचामरांदोलका नृपाः ।
भक्ष्यं शुभफलं चैवेभोऽश्वाजौ दक्षिणे वृषः ॥ ८८ ॥
मत्स्यं मांसं सुधौतं च वस्त्रं श्वेतवृषध्वजः ।
पुण्यस्त्री पूर्णकलशरत्नभृङ्गारगोद्विजाः ॥ ८९ ॥
भेरीमृदङ्गपटहशंखरागादिनिस्वनाः ।
वेदमङ्गलघोषः स्युर्यायिनां कार्यसिद्धिदाः ॥ ९० ॥

अन्वयः--सुगमम् ।

विमला—प्रज्वलिताग्नि, शुभदायक वचन, पुष्प-ईख, मदिरा, गन्ध, फूल, अक्षत, क्षत्र, चामर, पालकी (डोली), राजा, भोजन सामग्री, शुभ फल, हाथी, घोड़ा, दक्षिण दिशा का बैल, मछली, मांस, धुलावस्त्र, सफेद बैल, ध्वजा, सुहागिन स्त्री, जल पूर्ण कलश, रत्न, श्रृंगार, गाय, ब्राह्मण, भेरी, मृदङ्ग, ढोल, शंख, राग, गीत, गाना, वेद की मङ्गलध्वनि, ये सब शकुन गमन करने वाले के लिए सिद्धिदायक होते हैं ॥८७-९०॥

आदौ विरुद्धंशकुनं दृष्ट्वा यायीष्टदेवताम् ।
स्मृत्वा द्वितीये विप्राणां कृत्वा पूजां निवर्तयेत् ॥ ९१ ॥

अन्वयः—आदौ विरुद्धशकुनं दृष्ट्वा यायी (यात्री) इष्ट देवतां स्मृत्वा, द्वितीये अपशकुने दृष्टे विप्राणां पूजां कृत्वा निवर्तयेत् ।

विमला--गमनकाल में प्रथम अपशकुन होने पर इष्टदेव का स्मरण कर यात्रा करे। यदि पुनः द्वितीय अपशकुन उपस्थित हो जाय तो ब्राह्मण की पूजा कर यात्रा स्थगित कर दे ॥ ९१ ॥

सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं निधनप्रदम् ।
अफलं यद्बालवृद्धरोगीपीनसवत्क्षुतम् ॥ ९२ ॥

अन्वयः—सर्वदिक्षु क्षुतं न इष्टम् । गोक्षुतं निधनप्रदम् । यत् बाल वृद्ध रोगी पीनसवत् क्षुतम् अफलं भवेत् ।

---

१. 'रोगी पिनाशकैः कृतं' इति मूलपाठः ।

विमला—सभी दिशाओं में छींक होना अशुभ है। गाय का छींकना मृत्युकारक होता है। बालक, वृद्ध, रोगी एवं नासिका रोग (पीनस) वाले तथा कपटी जनों की छींक निष्फल होती है॥ ६२॥

परस्त्री द्विजदेवाश्च नश्यन्ते द्विगजाश्वकान्।
हननात्परमाप्नोत्यनार्तान्नित्यनिरायुधान्॥ ९३॥

इति श्रीनारदीयसंहितायां यात्राध्यायस्त्रयस्त्रिंशत्तमः॥ ३३॥

अन्वयः—परस्त्री द्विजदेवाश्च द्विगजाश्वकाननश्यन्ते। अनार्तान्न नित्य निरायुधान् हननात् परं आप्नोत्ति।

विमला—परस्त्री और द्विजदेवता ये अनार्त और नित्यनिरायुध होते हैं इनका बध करना अकल्याणकारी होता है। इनके हनन से राजा के हाथी और घोड़े (ऐश्वर्यशक्ति) का नाश होता है॥ ६३॥

इति श्रीनारदीय संहिता की विमला हिन्दी टीका में
यात्राध्याय समाप्त।

अथ चतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः

आदौ सौम्यायने कार्यं नववास्तुप्रवेशनम् ।
राज्ञा यात्रानिवृत्तौ च यद्वा द्वन्द्वप्रवेशनम् ॥ १ ॥

अन्वयः—सौम्यायने आदौ नववास्तु (वेश्म) प्रवेशनं कार्यम्, यात्रा निवृत्तौ च राज्ञा यद्वा द्वन्द्वप्रवेशन (मपि सौम्यायने कार्यम्) ।

विमला—उत्तरायण सूर्य के होने पर नवीन गृह में प्रवेश करना चाहिए। राजा यात्रा से निवृत होकर गृह में प्रवेश करता हो अथवा वरवधू का प्रवेश हो तो सौम्यायन सूर्य में ही करना चाहिए ॥ १ ॥

विधाय पूर्वदिवसे वास्तुपूजां बलिक्रियाम् ।
वेदमङ्गलनिर्घोषैः कार्यं वेश्मप्रवेशनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—पूर्वदिवसे वास्तुपूजां बलिक्रियाम् च विधाय, वेदमङ्गल-निर्घोषैः वेश्मप्रवेशनम् कार्यम् ।

विमला—पहले दिन वास्तु पूजा बलिदानादि क्रिया सम्पन्न करके वैदिक मङ्गल ध्वनि के साथ गृह में प्रवेश करना चाहिए ॥ २ ॥

माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासेषु शोभनः ।
प्रवेशो मध्यमोज्ञेयः सौम्यकार्तिकमासयोः ॥ ३ ॥

अन्वयः—माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासेषु प्रवेशनं शोभनः । सौम्य-कार्तिकमासयोः प्रवेशो मध्यमोज्ञेयः ।

विमला—माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ के महीनों में ही गृहप्रवेश करना शुभ फलदायक होता है । सौम्य (मार्गशीर्ष), कार्तिक महीनों में प्रवेश मध्यम (सामान्य) कहा गया हैं ॥ ३ ॥

वस्वीज्यांत्येन्दुवरुणत्वाष्ट्रमित्रस्थिरोडुषु ।
शुभः प्रवेशो देवेज्यशुक्रयोर्दृश्यमानयोः ।
व्यर्कारवारतिथिषु रिक्तामावर्जितेषु च ॥ ४ ॥

अन्वयः—वसु इज्य अन्त्य इन्दु वरुणत्वाष्ट्रमित्रस्थिरउडुषु देवेज्य-शुक्रयोः दृश्यमानयोः व्यर्कारवार, रिक्तामावर्जितेषु तिथिषु च प्रवेशो शुभः ।

विमला—धनिष्ठा, पुष्य, रेवती, मृगशिरा, शतभिषा, चित्रा, अनु-राधा इन नक्षत्रों में तथा स्थिरसंज्ञक (तीनों उत्तरा और रोहिणी) नक्षत्रों में, बृहस्पति और शुक्र के उदयकाल में रवि और मंगल के अतिरिक्त दिनों में तथा च रिक्ता और अमावास्या से रहित तिथियों में प्रवेश करना शुभ फलदायक होता है ॥ ४ ॥

---

१. सौम्यफाल्गुनवैशाखमाघश्रावणकार्तिकाः ।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥ इति पीयूषधारायाम् ।

दिवा वा यदि वा रात्रौ प्रवेशो मङ्गलप्रदः ।
चन्द्रतारावलोपेते पूर्वोक्तवर्जितेषु च ॥ ५ ॥

अन्वयः—पूर्वोक्तवर्जितेषु चन्द्रतारावलोपेते सति दिवा वा यदि वा रात्रौ प्रवेशो मङ्गलप्रदः भवति ।

विमला—पहले कहे निषिद्ध तिथि मास नक्षत्रों से रहित होने पर चन्द्र तारा बल से युक्त दिन हो या रात्रि हो सर्वदा प्रवेश करना मङ्गल कारक होता है ॥ ५ ॥

स्थिरलग्ने स्थिरांशे[1] च नैधने शुद्धिसंयुते ।
त्रिकोणे केन्द्रगत्र्याये[2] सौम्यैस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्थिरलग्ने स्थिरांशे शुद्धिसंयुते नैधने च, त्रिकोणे केन्द्र ख त्रि आये सौम्यैः त्र्यायारिगैः खलैः प्रवेशः शुभः ।

विमला—स्थिर लग्न (२, ५, ८, ११) स्थिर राशि का नवांश, अष्टम शुद्ध हो, केन्द्र (१,४,७,१०) त्रिकोण (९,५) तृतीय तथा आय में शुभग्रह हों और ३,६,११ में पापग्रह हों तो प्रवेश शुभ होता है ॥ ६ ॥

लग्नात्षष्ठाष्टमस्थेन वर्जितेन हिमांशुना ।
[3]कर्त्तुर्वा जन्मभे लग्ने ताभ्यामुपचयेऽपि वा ॥ ७ ॥

अन्वयः—लग्नात् षष्ठाष्टमस्थेन हिमांशुना वर्जितेन कर्त्तुः जन्मभे लग्ने वा ताभ्यां उपचये वा प्रवेशः कर्त्तव्यः ।

विमला—लग्न से ६, ८, स्थान में चन्द्रमा न बैठा हो और कर्त्ता का जन्म लग्न हो या जन्म लग्न से उपचय राशि ३, ४, १०, ११ राशि लग्न हो तो गृहप्रवेश शुभ होता है ॥ ७ ॥

कृत्वार्कं वामतो विद्वान् भृङ्गारं चाग्रतो विशेत् ।

इति श्रीनारदीय संहितायां प्रवेशाध्यायश्चतुस्त्रिंशत्तमः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—अर्कं वामतः कृत्वा शृङ्गारं च कृत्वा अग्रतः विशेत् ।

विमला—वामार्क का विचार कर शृङ्गार मङ्गलादिकों से युक्त हो घर में प्रवेश करना चाहिए ॥ ७ ॥

इति श्रीनारदीय संहिता की विमला हिन्दी टीका में प्रवेशाध्याय समाप्त ।

---

१. 'स्थिरराशौ' इति पाठान्तरम् । २. 'केन्द्रखत्र्याये' इति पाठान्तरम् ।
३. "कर्त्तुर्जन्मभलग्ने वा ताभ्यामुपचयेऽपि वा ।
प्रवेशलग्नेस्याद्वृद्धिरन्यभे शोकनिःस्वनः ॥" पीयूषधारायाम् ।

अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः

वर्षा प्रश्ने वारिभेऽब्जे पूर्णे वै लग्नगेपि वा।
केन्द्रगे वा शुक्लपक्षे चातिवृष्टिः शुभेक्षिते ॥ १ ॥

अन्वयः—वारिभे अब्जे, लग्नगे पूर्णे चन्द्रे शुक्ल पक्षे केन्द्रगेऽपिवा चन्द्रे शुभेक्षिते सति वर्षा प्रश्ने अतिवृष्टिः भवेत्।

विमला—वर्षा सम्बन्धि प्रश्न में यदि चन्द्रमा जलचर राशि का होकर लग्न में या केन्द्र में बैठा हो, शुक्ल पक्ष हो और चन्द्रमा या प्रश्न लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उत्तम वृष्टि हो ॥ १ ॥

अल्पवृष्टिः पापदृष्टे प्रावृट्काले चिराद्भवेत्।
चन्द्रवद्भार्गवे सर्वमेवंविधगुणान्विते ॥ २ ॥

अन्वयः—प्रावृट् काले पापदृष्टे चन्द्रे चिराद् अल्पवृष्टिः भवेत्। सर्वमेवंविधगुणान्विते भार्गवे (अपि) चन्द्रवत् फलं भवति।

विमला—वर्षाकाल में पापदृष्ट चन्द्रमा के होने पर देर से अल्पवृष्टि होती है। इस प्रकार चन्द्र की तरह शुक्र के होने पर भी वर्षा का विचार करना चाहिए ॥ २ ॥

प्रावृषीन्दुः सितात्सप्तराशिगः शुभवीक्षितः।
मन्दात्त्रिकोणसप्तस्थो यदि वा वृष्टिकृद् भवेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—प्रावृषि (वर्षाऋतौ) सितात् सप्तमराशिगः शुभवीक्षितः इन्दुः यदि वा मन्दात् त्रिकोण सप्तस्थः चन्द्रस्तदा वृष्टिकृद् भवेत्।

विमला—वर्षाकाल में शुक्र से सप्तम राशि पर शुभग्रह से दृष्ट चन्द्रमा हो। अथवा शनि से सप्तम् और त्रिकोण (९ वें ५ वें) में चन्द्रमा हो तो वर्षा होती है ॥ ३ ॥

सद्योवृष्टिकरः शुक्रो यदा बुधसमीपगः।
तयोर्मध्यगते भानौ तदा वृष्टिविनाशनम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

---

१. 'वर्षा प्रश्ने यशस्वी निचाप्युभे लग्नगेपिवा' इति मूलपाठः।

विमला—प्रश्न काल में यदि शुक्र बुध के समीप हो या योग करता हो तो सद्यः वृष्टि होती है। और यदि शुक्रबुध के मध्य सूर्य की स्थिति हो तो वृष्टि का नाश होता है ॥ ४ ॥

मघादि पञ्चधिष्ण्यस्थः पूर्वास्वातीत्रये परे।
प्रवर्षणं भृगुः कुर्याद्विपरीते न वर्षति ॥ ५ ॥

अन्वयः—मघादि पंचधिष्णस्थः, पूर्वा स्वातीत्रये परे भृगुः प्रवर्षणं कुर्यात्। विपरीतं न वर्षति।

विमला—मधा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, पूर्वाषाढा, पूर्वाभादपदा, स्वाती, विशारवा और अनुराधा इन नक्षत्रों पर शुक्रवर्षा कारक होता है। इससे विपरीत वर्षा नहीं होती है ॥ ५ ॥

पुरतः पृष्ठतो भानोर्ग्रहा यदि समीपगाः।
तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चैते प्रतिलोमगाः ॥ ६ ॥
सौम्यमार्गगतः शुक्रो वृष्टिकृन्नतु याम्यगः।
उदयास्तेषु वृष्टिःस्याद्भानोरार्द्राप्रवेशने ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—सूर्यस्थ राशि से पूर्वापर राशियों पर समीप में यदि चन्द्रमा आदि ग्रह रहें तो वर्षा होती है और वक्री होकर दूरस्थ राशि का होने पर वर्षा नहीं होती। शुक्र अगर मार्गी हो तो वर्षा होती है और वक्री होने पर वर्षा नहीं होती। शुक्र के उदय और अस्त काल में वर्षा होती है, तथा सूर्य के आर्द्रा नक्षत्रपर आने पर भी वृष्टि होती है ॥ ६–७ ॥

विपत्तिः सस्यहानिः स्यादह्न्यार्द्राप्रवेशने।
सन्ध्ययोः सस्यवृद्धिः स्यात्सर्वसंपन्नृणां निशि ॥ ८ ॥

अन्वयः—आर्द्रा प्रवेशने प्रजासु विपत्तिः सस्य हानिश्चस्यात सन्ध्ययोः सस्यवृद्धिः निशि आर्द्रा प्रवेशने नृणां सर्व सम्पत् स्यात्।

विमल—दिन में आर्द्रा का प्रवेश हो तो प्रजावर्ग विपत्ति में पड़े और धान्य की हानि हो। सन्ध्या काल में आर्द्रा प्रवेश हो तो धान्य की वृद्धि और रात्रि में आर्द्रा का प्रवेश हो तो राजा की सम्पत्ति बढ़े और प्रजावर्ग सुखी रहे ॥ ८ ॥

स्तोकवृष्टिरनर्घः स्यादवृष्टिः सस्यसंपदः ।
आर्द्रोदये प्रभिन्ने चेद्भवेदीतिर्न संशयः ॥ ९ ॥

अन्वयः—आर्द्रोदये स्तोक वृष्टिः अनर्घः स्यात् यदि अवृष्टिः तदा सस्यसंपदः स्यात् । प्रभिन्ने चेत् ईति भयः भवति संशयः न ।

विमला—आर्द्रा नक्षत्र के प्रवेशकाल में यदि थोड़ी वर्षा हो तो मंहगी होती है । वर्षा नहीं हो तो फसल की उत्तम उपज होती है और यदि आर्द्रा प्रवेश के दिन वायु का प्राबल्य होवे तो ईतिभय (टिड्डी आदि कीड़ों से फसल की क्षति) होवे ॥ ९ ॥

चन्द्रेज्येज्ञेऽथवा शुक्रे केन्द्रे त्वीतिर्विनश्यति ।
पूर्वाषाढ़ागतो भानुर्जीमूतैः परिवेष्टितः ॥ १० ॥

अन्वयः—आर्द्रोदये केन्द्रे चन्द्रे इज्ये ज्ञे अथवा शुक्रे तु इतिः विनश्यति पूर्वाषाढ़ागतः भानुः जीमूतैः परिवेष्टितो भवेत् ।

विमला—आर्द्राप्रवेश कालिक लग्न के समय यदि केन्द्र में चन्द्रमा, गुरु, बुध या शुक्र होवे तो ईतिभय नहीं होती है । पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पर सूर्य आवे और सूर्य वादलों से घिरा रहे तो ।

वर्षत्यार्द्रादिमूलान्तं प्रत्यक्षं प्रत्यहं तथा ।
वृष्टिश्च पौष्णभे तस्माद्दशर्क्षेषु न वर्षति ॥ ११ ॥

अन्वयः—(तदा) आर्द्रादि मूलान्तं प्रत्यहं प्रत्यक्षं वर्षति । तथा पौष्णभे वृष्टिश्च तस्मात् दशर्क्षेषु न वर्षति ।

विमला—आर्द्रा से मूल नक्षत्र पर्यन्त समय समय पर कृषि के अनुकूल उत्तम वर्षा होती है और रेवती नक्षत्र पर सूर्य के आरम्भ में यदि वृष्टि होवे तो लगातार रेवती आदि दश नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती है ॥ ११ ॥

सिंहे भिन्ने कुतो वृष्टिरभिन्ने कर्कटे कुतः ।
कन्योदये प्रभिन्ने चेत्सर्वथा वृष्टिरुत्तमा ॥ १२ ॥

अन्वयः—सिंहे भिन्ने, कर्कटे अभिन्ने वा वृष्टिः कुतः । कन्योदये प्रभिन्ने चेत् उत्तमा वृष्टिः ।

---

१. 'प्रभिन्ने प्रभंजने' इति साधुपाठः ।

विमला—सिंह की संक्रान्ति के दिन वर्षा वादल हो तथा कर्क संक्रान्ति के दिन वर्षा वादल नहीं हो तो उस वर्ष वृष्टि का प्रायः अभाव रहता है। और कन्या के उदय काल में वायुवेग रहे तो वृष्टि उत्तम होती है ॥ १२ ॥

अहिर्बुध्न्यं पूर्वसस्यं परसस्यं च रेवती।
भरणीसर्वसस्यं च सर्वनाशाय चाश्विनी ॥ १३ ॥

अन्वयः—अहिर्बुध्न्ये (उत्तराभाद्रपदे) सूर्ये (वर्षति सति) पूर्व सस्यं, रेवत्यां गर्भे सति परसस्यं, भरणी भे अश्विनी भे च सर्वसस्यं सर्वनाशाय च भवति।

विमला—उत्तराभाद्रपद पर सूर्य के जाने के दिन यदि वृष्टि हो तो पूर्वधान्य (खरीफ) की हानि। रेवती पर परसस्य (रब्बी) की हानि तथा भरणी अश्विनी पर सभी धान्यों की हानि होवे ॥ १३ ॥

गुरोः सप्तमराशिस्थः प्रत्यग्रो भृगुजो यदा।
तदातिवर्षणं भूरि प्रावृट्काले बलोज्झिते ॥ १४ ॥

अन्वयः—गुरोः प्रत्यग्रः सप्तमराशिस्थः भृगुजः यदा तदा प्रावृट्काले बलोज्झिते भूरि अतिवर्षणं भवति।

विमला—वृहस्पति से आगे सातवीं राशि पर यदि शुक्र हो तो वर्षाकाल में उत्तम वृष्टि होती है। तथा फसल उत्तम होती है ॥ १४ ॥

आसन्नमर्कशशिनोः परिवेषगतोत्तरा।
विद्युत्प्रपूर्णं मंडूकास्त्वनावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ १५ ॥

अन्वयः—अर्क शशिनः आसन्नम् परिवेषगतोत्तरा विद्युत प्रपूर्णं मंडूकास्तु अनावृष्टिः भवेत्।

विमला—सूर्य और चन्द्रमा के आसन्न उत्तर दिशा में परिवेष (•मण्डल) हो अथवा बिजली चमके और मेढक बोले तो वर्षा की हानि होती है ॥ १५ ॥

यदा प्रत्यंगता भेका[1] स्वसद्मोपरि संस्थिताः।
पतन्ति दक्षिणस्था वा भवेद्वृष्टिस्तदाचिरात् ॥ १६ ॥

अन्वयः—स्वसद्मोपरि संस्थिताः भेकाः यदा प्रत्यंगता, दक्षिणस्थाः वा पतन्ति तदा अचिरेण वृष्टिः भवेत्।

---

१. 'भेघाः' इति मूलपाठः।

विमला—अपने स्थान पर बैठे बैठे मेढक जब पश्चिम या दक्षिण दिशा में उछलने लगे तो शीघ्र ही वर्षा होगी ऐसा कहना चाहिए ॥१६॥

नखैर्लिखन्तो मार्जाराश्चैवं निर्लोभसंस्थिताः ।
सेतुबंधपरा वालाः सद्यो वै वृष्टि हेतवः ॥ १७ ॥

अन्वयः—नखैः लिखन्तः मार्जाराः निर्लोभ संस्थिताः एवं च वालाः सेतुबंधपरा तदा वै सद्यः वृष्टि हेतवः ।

विमला—बिल्ली अपने पंजों से भूमि खोदे और लोभ रहित स्थित हो तथा बालक क्रीड़ा करते हुए सेतु का निर्माण करें तो शीघ्र ही वर्षा होगी, यह समझना चाहिए ॥ १७ ॥

पिपीलिका शिरश्छन्ना व्यवायः सर्पयोस्तथा ।
द्रुमाधिरोहः सर्पाणां प्रतीन्दुर्वृष्टिसूचकाः ॥ १८ ॥

अन्वयः—सिरश्छन्नापिपीलिका तथा सर्पयोः व्यवायः सर्पाणां द्रुमाधिरोहः प्रतीन्दुः (एते) वृष्टिसूचकाः भवन्ति ।

विमला—चींटी पर चींटी चढ़े और चींटी अपने अंडों को लेकर चले या सर्प सर्पिणी प्रसंग करें या सर्प वृक्ष पर चढ़ते देखा जाय तथा चन्द्रमा का द्वितीय बिम्ब दिखाई दे तो यह वृष्टि कारक शुभ लक्षण है ॥ १८ ॥

उदयास्तमये काले विवर्णोर्कोऽथवा शशी ।
मधुवर्णोऽतिवायुश्चेदतिवृष्टिर्भवेत्तदा ॥ १९ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां पञ्चत्रिंशत्तमः सद्योवृष्टिलक्षणाध्यायः ।

अन्वयः—अर्कः अथ वा शशी उदयास्तमयेकाले विवर्णः, मधुवर्णः, अति वायुश्च तदा अति वृष्टिः भवेत् ।

विमला—सूर्य अथवा चन्द्रमा उदय अस्त काल में विकृतवर्ण का दिखाई दे तथा शहद के वर्ण सा दृष्टिगोचर हो या वायु का वेग अधिक होवे तो अतिवृष्टि होती है ॥ १६ ॥

श्रीनारदसंहिता 'विमला' हिन्दी टीका में पैंतीसवाँ
सद्योवृष्टि लक्षणाध्याय समाप्त ।

षट्त्रिंशत्तमोध्यायः

प्राङ्मुखस्य तु कूर्मस्य नवांगेषु धरामिमाम् ।
विभज्य नवधा खण्डमण्डलानि प्रदक्षिणम् ।
अन्तर्वेदी च पाञ्चालं तस्येदं नाभिमंडलम् ॥ १ ॥

अन्वयः—इमाम् धराम् प्राङ्मुखस्य कूर्मस्य तु नवांगेषु विभज्य, नवधा खण्डमण्डलानि प्रदक्षिणं कार्याणि । पाञ्चालं च अन्तर्वेदी, तस्य इदं नाभिमण्डलं ज्ञेयम् ।.

विमला—इस पृथ्वी को पूर्वाभिमुख बैठा हुआ कूर्म कल्पना कर उसे ९ भागों में विभक्त कर दे और प्रदक्षिणा क्रम से नवमण्डल बना ले । १-इस कूर्म का नाभिमण्डल अन्तर्वेदी अर्थात् गंगा यमुना का मध्य भाग पाञ्चाल देश है जो कूर्मचक्र का नाभिमण्डल है ॥ १ ॥

प्राच्यां[1] मागधलाटादि देशास्तन्मुखमण्डलम् ।
स्त्रीकलेयकिराताख्या देशास्तद्बाहुमण्डलम् ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

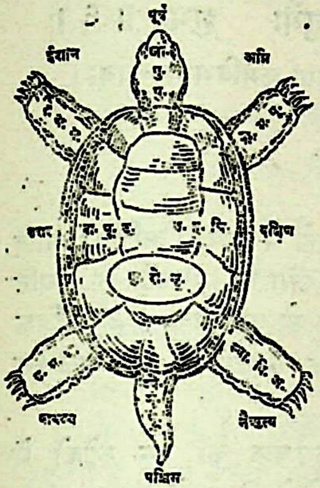
विमला—२-पूर्व में मगध, लाट आदि देश कूर्म का मुखमण्डल है । ३-स्त्रीक, लेय, किरातदेश कूर्म का दक्षिण बाहुमण्डल है ॥ २ ॥

अवन्तिद्राविणा भिल्लदेशास्तत्पार्श्वमण्डलम् ।
गौडकौंकण शाल्वेष्ट पुण्ड्रास्तत्पार्श्वमण्डलम् ॥ ३ ॥
सिन्धुकाशीमहाराष्ट्रसौराष्ट्राः पुच्छमण्डलम् ।
पुलिन्दभीष्मयवनगुर्जराः पादमण्डलम् ॥ ४ ॥

---

१. 'प्राचां' इति मूल पाठः ।

कूर्मचक्रम्



कृ. रो. मृ. १–नाभिमण्डल—गंगा यमुना का मध्यभाग पाञ्चालदेश।

आ. पुन. पुष्य २–मुखमण्डल—मगध तथा लाट देश।

श्ले. म. पू.फा. ३–दक्षिण बाहुमण्डल—स्त्रीक, लेय, किरातदेश।

उ.फा. ह. चित्रा ४–दक्षिणपार्श्व (कुक्षि) मण्डल—अवन्ति (उज्जैन प्रान्त) द्राविण, भिल्लदेश।

स्वा. वि. अनु. ५–दक्षिणपादमण्डल—गौड़, कोंकण, शाल्वदेश, और पुण्ड्रदेश।

ज्ये. मू. पू.षा. ६–पुच्छमण्डल—सिन्धुदेश, काशी, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र।

उ.षा. श्र. धनि. ७–वामपादमण्डल—पुलिन्द, भीष्म, यवन, गुर्जरदेश।

श. पू.भा. उ.भा.प. ८–वामपार्श्व (कुक्षि) मण्डल—कुरुदेश, काश्मीर, माद्रेय और मत्स्यदेश।

रे. अश्वि. भर. ९–वामपादमण्डल—खश, अंग, वंग, वाह्लीक कम्बोज।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—४-अवन्ति (उज्जैनप्रान्त) द्राविण, भिल्लदेश कूर्म के दक्षिण पार्श्वमण्डल हैं। ५–गौड़, कोंकण शाल्वदेश, और पुण्ड्रदेश कूर्म के दक्षिणपादमण्डल हैं। ६–सिन्धुदेश काशी, महाराष्ट्र और सौराष्ट्र कूर्म के पुच्छमण्डल हैं। ७–पुलिन्द, भीष्म, यवन, और गुर्जर ये देश कूर्म के वामपादमण्डल हैं॥ ३–४॥

कुरुकाश्मीरमाद्रेय मत्स्यास्तत्पार्श्वमण्डलम्।
खशा[1]ङ्ग वङ्ग वाह्लीककांबोजाः पाणिमण्डलम्॥ ५॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—८-कुरुदेश, काश्मीर, माद्रेय, मत्स्य ये कूर्म के वामपार्श्व (कुक्षि) मण्डल हैं। और ९–खश अंग, वङ्ग, वाह्लीक और कम्बोज ये कूर्म के वामपाणि मण्डलीय देश हैं॥ ५॥

---

१. 'खं स्वांग' इति मूलपाठः।

कृत्तिकादीनि धिष्ण्यानित्रीणित्रीणि क्रमान्न्यसेत् ।
नाभेर्दिक्षु नवाङ्गेषु पापैर्दुष्टं शुभैः शुभम् ॥ ६ ॥

इति श्री नारदीय संहितायां षट्त्रिंशत्तमः कूर्मविभागाध्यायः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—कूर्मचक्र के विभक्त नव मण्डलों में क्रमशः कृत्तिका आदि तीन-तीन नक्षत्रों को स्थापित करे। जिस अंग पर पापग्रहों की स्थिति हो उस अंग के मण्डल में आने वाले देशों को कष्ट होता है और जिस अङ्ग पर शुभग्रहों की स्थिति हो उस अङ्ग के मण्डल में आने वाले देश सुखी होते हैं ॥ ६ ॥

विशेष—नरपतिजयचर्या में इस कूर्मचक्र का ४८ श्लोकों में विस्तृत विवरण देखने को मिलता है। दोनों ही ग्रन्थों में नव भाग तथा कृत्तिकादि तीन-तीन नक्षत्रों की स्थापना के आधार पर फल कहा गया है। नारद संहिता में अति संक्षिप्त रूप में कहा गया है तथा नव मण्डलों का नाम भी सुस्पष्ट नहीं किया गया है। जैसे पार्श्वमण्डल का ३ बार प्रयोग भ्रामक है। चक्र देखकर स्पष्ट समझ में आयेगा और इसका विस्तृत विवरण नरपति जयचर्या से प्राप्त करना चाहिए।

श्री नारदसंहिता 'विमला' हिन्दी टीका में छत्तीसवाँ
कूर्म विभागाध्याय समाप्त।

अथ सप्तत्रिंशत्तमोऽध्यायः

उत्पाताध्यायः

देवता यत्र नृत्यंति पतंति प्रज्वलन्ति च ।
मुहू रुदन्ति गायन्ति प्रस्विद्यन्ति हसन्ति च ॥ १ ॥
वमन्त्यग्निं तथा धूमं स्नेहं रक्तं पयोजलम् ।
अधोमुखाश्च तिष्ठन्ति स्थानात्स्थानं व्रजन्ति च ॥ २ ॥
एवमाद्या हि दृश्यन्ते विकाराः प्रतिमासु च ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—कुछ आश्चर्य पूर्ण उत्पातों का वर्णन करते हुए उनका फल कहते हैं । इस अध्याय में मुख्य रूप से उत्पात और उसका फल तथा शान्ति बतलाया गया है ॥ १-२ ॥

जहाँ पर देवता (मूर्तियाँ) नाचते हैं । गिरते हैं और जलते हुए दृष्टिगोचर होते हैं । वार-वार रोते हैं । गाते हैं तथा उनसे स्वेदविन्दु (पसीना) निकलता है और हंसते हैं । तथा उनके मुख से अग्नि, धूआँ, तेल, रुधिर, दूध या जल गिरता है । वे अधोमुख दृष्टिगोचर होते हैं तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं । इत्यादिक विकार जब स्थापित मूर्तियों में दृष्टिगोचर हो तो यह आपत्ति सूचक होता है अतः इसकी शान्ति करें ।

गन्धर्वनगरं चैव दिवा नक्षत्रदर्शनम् ॥ ३ ॥
महोल्कापतनं काष्ठतृणरक्तप्रवर्षणम् ।
गन्धर्वगेहे दिग्धूमं भूमिकम्पं दिवानिशि ॥ ४ ॥

विमला—आकाश में (गन्धर्व नगर) सुन्दर सुन्दर नगरों का दिखलाई पड़ना, दिन में तारों का दिखाई देना, उल्कापात (तारे टूटना) लकड़ी, तृण तथा खून की वृष्टि होना । आकाश में तथा दिशाओं में अकारण धूम दिखाई पड़ना । भूकम्प होना ये अशुभ सूचक हैं ॥ ४ ॥

अनग्नौ च स्फुलिङ्गाश्च ज्वलनं च विनेन्धनम् ।
निशीन्द्रचापमण्डूकशिखरं श्वेतवायसः ॥ ५ ॥

विमला—विना अग्नि के स्फुलिङ्ग (चिनगारी), विना ईन्धन की ज्वाला, रात्रि में इन्द्रधनुष, मेढक की चोटी, और सफेद काग का दिखाई पड़ना अमंगल सूचक होता है ॥ ५ ॥

दृश्यन्ते विस्फुलिङ्गाश्च गोगजाश्वोष्ट्रगात्रतः ।
जंतवो द्वित्रिशिरसो जायन्ते वा वियोनिषु ॥ ६ ॥

अन्वयः—गो, गज, अश्व, उष्ट्र, गात्रतः विस्फुलिङ्गाश्च दृश्यन्ते । द्वित्रि शिरसः जंतवः दृश्यन्ते वा वियोनिषु जायन्ते ।

विमला—गाय, हाथी, घोड़े और ऊँट आदि जानवरों के शरीर से चिनगारी निकलते देखा जाय या दो तीन शिर वाले पशु दिखाई दें अथवा दूसरी योनि से दूसरा जीव (गाय से घोड़े आदि) उत्पन्न हों तो यह अमङ्गल सूचक होता है ॥ ६ ॥

प्रतिसूर्याश्चतसृषुस्युर्दिक्षु युगपद्रवेः ।
जम्बूकग्रामसंवासः केतूनां च प्रदर्शनं ॥ ७ ॥

अन्वयः—प्रतिसूर्याः, चतसृषु दिक्षु युगपदेव रवेः दर्शनम् । जंबूक ग्रामसंवासः, केतूनां प्रदर्शनम् च (अमङ्गलम्) ।

विमला—दो सूर्य का दिखाई देना या एक साथ चारों दिशाओं में सूर्य का दर्शन होना । गाँव के अन्दर शृगाल का छिपना तथा पुच्छल तारों का दिखाई देना अमंगल सूचक है ॥ ७ ॥

काकानामाकुलं रात्रौ कपोतानां दिवा यदि ।
अकाले पुष्पिता, वृक्षा दृश्यन्ते फलिता यदि ॥ ८ ॥
कार्यं तच्छेदनं तत्र ततः शान्तिर्मनीषिभिः ।
एवमाद्या महोत्पाता बहवः स्थाननाशदाः ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदि रात्रौ काकानां, दिवा कपोतानां च आकुलं । वृक्षा अकाले पुष्पिता वा यदि फलिता दृश्यन्ते । तदा तत्र तच्छेदनं कार्यम् ततः मनीषिभिः शान्तिः कर्त्तव्याः । एवम् आद्या बहवः महोत्पाता स्थान नाशदाः दृश्यन्ते ।

विमला—दिन में कबूतरों का और रात्रि में कौओं का व्याकुल होना भी अशुभ सूचक होता है । यदि असमय में विना ऋतु के वृक्ष फूले या फले तो बुद्धिमान को चाहिए कि तुरन्त उसे काट कर उपद्रव

की शान्ति करावे। इस प्रकार पूर्व कहे गये बहुत से महान उत्पात हैं जो स्थान को नष्ट करते हैं ॥ ९ ॥

केचिन्मृत्युप्रदाः केचिच्छत्रुभ्यश्च भयप्रदाः।
मध्याद्भयं पशोर्मृत्युः क्षयोऽकीर्तिः सुखासुखम् ॥ १० ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—पूर्वोक्त कहे गये उपद्रवो में कुछ मृत्यु कारक हैं। कुछ शत्रुभय कारक हैं। कुछ अन्य प्रकार के भयकारक, कुछ पशुमृत्यु कारक, क्षय कारक तथा कीर्तिनाशक एवं दुःख देने वाले होते हैं ॥१०॥

अनैश्वर्यं चान्नहानिरुत्पातभयमादिशेत्।
देवालये स्वगेहे वा ईशान्यां पूर्वतोऽपि वा ॥ ११ ॥
कुण्डं लक्षणसंयुक्तं कल्पयेन्मेखलायुतम्।
गृह्योक्तविधिना तत्र स्थापयित्वा हुताशनम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—अनैश्वर्य (ऐश्वर्यनाश) अन्नहानि, उत्पात तथा भय आदि अमंगलों की निवृत्ति के लिए, किसी देवालय में या अपने घर में ईशानकोण या पूर्व दिशा में लक्षण संयुक्त मेखला के साथ कुण्ड की स्थापना (निर्माण) करे और शास्त्रविधि से अग्नि की स्थापना करे ॥ ११-१२ ॥

जुहुयादाज्यभागान्तं पृथगष्टोत्तरं शतम्।
यत् इन्द्रभयामहे स्वस्तिदाघोरमंत्रकैः ॥ १३ ॥
समिदाज्यं चरुर्व्रिहितिलैर्व्याहृतिभिस्तथा।
कोटिहोमं तदर्धं च लक्षहोममथाऽपि वा ॥ १४ ॥

अन्वयः—आज्यभागान्तं अस्टत्तरं शतम् पृथक् जुहुयात्। तथा 'यत् इन्द्र भयामहे' 'स्वस्तिदा' अघोर मन्त्रकैः समिध आज्यं चरु व्रीहि तिलैः व्याहृतिभिः जुहुयात्। एवं कोटि होमं तदर्थं अथवा लक्षहोमं वा जुहुयात्।

विमला—घी के द्वारा पहले आज्यभाग संज्ञक मन्त्रों से १०८ आहुति देना चाहिए। बाद में 'यत इन्द्र भयामहे स्वस्तिदा, और अघोर इन मन्त्रों से समिधा, घी, चरु, चावल, तिल आदि से युक्त हवनीय

पदार्थों का हवन यथासाध्य करोड़ आधा करोड़ या एक लाख करना चाहिए ॥ १३-१४ ॥

यथा वित्तानुसारेण तन्न्यूनाधिककल्पना ।
एकविंशतिरात्रं वा पक्षं पक्षार्द्धमेव वा ॥ १५ ॥

अन्वयः—तत् यथा वित्तानुसारेण न्यूनायिक कल्पना । एवं एकविंशति रात्रं, पक्षं पक्षार्द्ध वा जुहुयात् ।

विमला—पूर्व कहे गये हवन विधि में अपनी शक्ति के अनुसार श्रद्धा पूर्वक अधिक कम हवन सामग्री करके २१ दिन, १५ दिन या ७ दिन तक शान्ति के निमित्त हवन करना चाहिए ॥ १५ ॥

पञ्चरात्रं त्रिरात्रं वा होमकर्म समाचरेत् ।
दक्षिणां च ततो दद्यादाचार्याय कुटुम्बिने ॥ १६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—यदि २१ दिन १५ दिन या ७ दिन भी सम्भव न हो तो ५ दिन या ३ दिन भी हवन करना चाहिए तथा हवन के अनन्तर आचार्य को उचित दक्षिणा दान देना चाहिए । आचार्य का परिवार (कुटुम्ब) होना आवश्यक है ॥ १६ ॥

गणेशक्षेत्रपालार्कदुर्गाक्षोण्यंगदेवताः ।
तासां प्रीत्यै जपः कार्यः शेषं पूर्ववदाचरेत् ।
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यात्षोडशभ्यः स्वशक्तितः ॥ १७ ॥

इति श्रीनारदीयसंहितायां सप्तत्रिंशत्तमोत्पाताध्यायः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गणेश, क्षेत्रपाल, सूर्य, दुर्गा, भूमि तथा भूमि के अङ्ग देवताओं की प्रसन्नता के लिए जप करे तथा इनके मन्त्रों से पूर्ववत हवन करे तदनन्तर कार्यफल की पूर्ण प्राप्ति के लिए सोलह ऋत्विजों (ब्राह्मणों) के लिए यथा शक्ति दक्षिणा देना चाहिए ॥ १७ ॥

इति श्रीनारद संहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
सैंतीसवां उत्पाताध्याय समाप्त ।

अथाष्टत्रिंशोध्याय:

उत्पातास्त्रिविधा लोके दिवि भौमान्तरिक्षजाः ।
तेषां नामानि शान्ति च सम्यक्‌वक्ष्ये पृथक्पृथक् ॥ १ ॥

अन्वयः—लोके दिवि, भौम, अन्तरिक्षजाः त्रिविधा उत्पाताः वर्तन्ते तेषां नामानि शान्ति च सम्यक् पृथक्-पृथक् वक्ष्ये ।

विमला—संसार में स्वर्ग भूमि तथा अन्तरिक्ष जन्य तीन प्रकार के उत्पात हैं । उनका नाम और अलग-अलग उनकी शान्ति कहते हैं ॥१॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ यः पश्येत्काकमैथुनम् ।
स नरो मृत्युमाप्नोति यदि वा स्थाननाशनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि दिवा वा रात्रौ वा यः काकमैथुनम् पश्येत् स नरः मृत्युमाप्नोति यदि वा स्थाननाशनं भवति ।

विमला—दिन में अथवा रात्रि में यदि कोई आदमी काकमैथुन देखे तो देखने वाले की मृत्यु होती है अथवा वह व्यक्ति स्थानच्युत होता है ॥ २ ॥

काकघातव्रतं चैव विदधीताथवत्सरम् ।
पितृदेवद्विजान्भक्त्या प्रत्यहं चाभिवादनम् ॥ ३ ॥
जितेन्द्रियः शुद्धमनाः सत्यधर्मपरायणः ।
तद्दोषशमनायेत्थं शान्तिकर्म समाचरेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः—अथ वत्सरम् (यावत्) काकघातव्रतं विदधीत् च । एव भक्त्या पितृ, देव, द्विजान् प्रत्यहं अभिवादनं च कुर्यात् । सत्यधर्म परायणः शुद्धमनाः जितेन्द्रियः सन् तद्दोष शमनार्थाय इत्थं शान्तिकर्म समाचरेत् ।

विमला—एकवर्ष तक बराबर पितृकर्म करते हुए, देवता एवं ब्राह्मणों को प्रमाण कर काकघातव्रत करना चाहिए और सत्य धर्म परायण हो शुद्धमन से ब्रह्मचर्य पूर्वक काकमैथुन दर्शनजन्य दोष की शान्ति के लिए शान्तिकर्म करना चाहिए ॥ ३-४ ॥

गृहस्येशानकोणेतु होमस्थानं प्रकल्पयेत् ।
स्वगृह्योक्तविधानेन तत्र स्थाप्यं हुताशनम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—गृहस्य ईशानकोणे तु होमस्थानं प्रकल्पयेत्। स्वगृह्योक्त विधानेन हुताशनं तत्र स्थाप्यम्।

विमला—घर के ईशान कोण (पूर्व उत्तर का कोण) में कुण्ड बना कर उसमें अपने कुलाचार के अनुसार अग्नि की स्थापना करे ॥ ५ ॥

मुखान्ते समिदाज्यान्नैर्होमश्चाऽष्टोत्तरं शतम्।
प्रतिमन्त्रं त्र्यंबकेन चाथ मृत्युंजयेन वा ॥ ६ ॥
व्याहृतिभिर्व्रीहितिलैर्जपाद्यन्तं प्रकल्पयेत्।
पूर्णाहुतिं च जुहुयात्कर्ता शुचिरलंकृतः ॥ ७ ॥

अन्वयः—मुखान्ते समिध, आज्यं अन्नैः अष्टोत्तरं शतम् 'त्र्यम्बकं यजामहे' इति मन्त्रेण महामृत्युञ्जय मन्त्रेण वा, व्याहृतिभिः व्रीहिं तिलैः जपसंख्यानुसारेण जुहुयात् तथा शुचिः अलंकृतः कर्त्ता होमान्ते पूर्णाहुतिं जुहुयात्।

विमला—समिधा, घी तथा अन्नादि से १०८ आहुति देना चाहिए। 'त्र्यम्बकं यजामहे' इस मन्त्र से या महामृत्युञ्जय मन्त्र से व्याहृतियों सहित चावल तिलादि हवनीय पदार्थों से जप के अन्त में जप की संख्या के अनुसार हवन करे और पवित्रतापूर्वक अलंकृत होकर यजमान पूर्णाहुति करे ॥ ६-७ ॥

स्वर्णशृंगीं रौप्यखुरीं कृष्णां धेनुं पयस्विनीम्।
वस्त्रालंकारसहितां निष्कद्वादश संयुताम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरीं पयस्विनीं कृष्णां धेनुं, वस्त्रालंकार सहिताम् द्वादशनिष्क (स्वर्ण मुद्राम्) संयुताम्।

विमला—सोने की सींघ (शृङ्ग) तथा चाँदी के खुरों से युक्त दूध देने वाली काली गाय को वस्त्रालंकार से शुशोभित कर १२ सोने के सिक्के के साथ दान करे ॥ ८ ॥

तदर्द्धेन तदर्द्धेन तदर्द्धेनाथवा पुनः।
यथा वित्तानुसारेण तन्न्यूनाधिककल्पना ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदि पूर्वं कथनानुसारतः दाने अशक्तः तदा तस्य अर्द्धेन पुनः तदर्द्धेन पुनः तदर्द्धेन वा यथा शक्ति वित्तानुसारेण तत् न्यूनाधिक कल्पनानुसारेण वा दानं देयम्।

विमला—पूर्वश्लोक के अनुसार १२ निष्क (स्वर्ण मुद्रा) देने में असमर्थ होने पर अपने वित्त (शक्ति) के अनुसार श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए ॥ ९ ॥

आचार्याय श्रोत्रियाय गां च दद्यात्कुटुम्बिने ।
ब्राह्मणेभ्यो विशिष्टेभ्यो यथाशक्ति च दक्षिणाम् ॥ १० ॥

अन्वयः—श्रोत्रियाय, कुटुम्बिने आचार्याय च गां दद्यात् । विशिष्टेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो च यथा शक्तिः दक्षिणाम् च दद्यात् ।

विमला—वेदाध्यायी कुटुम्बी आचार्य के लिए गोदान तथा शेष विशिष्ट ब्राह्मणों के लिए यथा शक्ति दक्षिणा देना चाहिए ॥ १० ॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात् स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।
एवं यः कुरुते सम्यक् स तद्दोषात्प्रमुच्यते ॥ ११ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां अष्टत्रिंशत्तमः वायसमैथुनलक्षणाध्यायः ।

अन्वयः—पश्चात् स्वस्तिवाचन पूर्वकम् ब्राह्मणान् भोजयेत् । एवं यः सम्यक् कुरुते स तत् दोषात् प्रमुच्यते ।

विमला—बाद में स्वस्तिवाचन पूर्वक ब्राह्मणों को भोजन करावे । इस प्रकार जो सविधि शान्ति उपचार करता है वह काकमैथुन दर्शन-जन्य दोष से मुक्त हो जाता है ॥ ११ ॥

इति श्री नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
काकमैथुन लक्षणाध्याय समाप्त ।

---

१. 'तां च' इति मूलपाठः ।
२. 'विशेषेभ्यो' इति मूलपाठः ।

अथैकोनचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः

पल्ल्याः प्रपतने [1]पूर्वं फलमुक्तं शुभाशुभम् ।
शीर्षे राज्यश्रियोऽवाप्तिर्मौलौत्वैश्वर्यवर्धनम् ॥ १ ॥

अन्वयः—पूर्वं पल्याः प्रपतने शुभाशुभम् फलम् उक्तम् । शीर्षे राज्यश्रियः अवाप्तिः, मौलौतु ऐश्वर्यवर्धनम् भवति ।

विमला—छिपकली यदि शरीर पर गिरे तो अङ्ग विशेष पर गिरने से उसका अलग अलग शुभ अशुभ फल पूर्वाचार्यो ने कहा है । सिर पर गिरे तो राज्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति हो । मस्तक (ललाट) पर गिरे तो ऐश्वर्य की वृद्धि हो ॥ १ ॥

पल्ल्याः प्रपतने चैव सरटस्य प्ररोहणे ।
शुभाशुभं विजानीयात्तत्तत्स्थाने विशेषतः ॥ २ ॥

अन्वयः—पल्ल्याः प्रपतने, सरटस्य प्ररोहणे चैव तत् तत् स्थाने विशेषतः शुभाशुभं (फलं) विजानीयात् ।

विमला—शरीर पर पल्ली (छिपकली) के गिरने और गिरगिट के चढ़ने का फल अङ्गविशेष के आधार पर जानना चाहिए ॥ २ ॥

सव्ये भुजे जयः प्रोक्तो ह्यपसव्ये महद्भयम् ।
कुक्षौ दक्षिणभागस्य धनलाभस्तथैव च ॥ ३ ॥

अन्वयः—सव्येभुजे जयः, अपसव्ये हि महद्भयम्, दक्षिणभागस्य कुक्षौ तथैव धनलाभः प्रोक्तः ।

विमला—वायीं भुजा पर गिरे तो जय प्राप्ति, दाहिनी पर महान भय, और दक्षिण कुक्षि (कोख) पर पल्ली पतन से धन का लाभ होता है ॥ ३ ॥

वामकुक्षौ तु निधनं गदितं पूर्वसूरिभिः ।
सव्यहस्ते मित्रलाभोवाम(दक्ष)हस्ते तु निःस्वता ॥ ४ ॥

अन्वयः—पूर्व सूरिभिः वामकुक्षौ तु निधनं, सव्यहस्ते मित्रलाभः ; वाम (दक्ष) हस्ते तु निःस्वता गदितम् ।

विमला—पूर्वाचार्यों ने वायीं कोख (कुक्षि) पर मृत्यु, वायें हाथ पर मित्रलाभ और दाहिने हाथ पर दरिद्रता कहा है ॥ ४ ॥

---

१. 'पूर्वे' इति पाठान्तरम् । तच्च पूर्वाचार्या आहुरिति भावः ।

उदरे सव्यभागे तु सुपुत्रावाप्ति रुच्यते।
वामभागे महारोगः कट्यां सव्ये महद्यशः ॥ ५ ॥

अन्वयः—सव्यभागे उदरे तु सुपुत्रावाप्तिः उच्यते। वामभागे महारोगः सव्ये कट्यां महद्‌यशः उच्यते।

विमला—उदर के वायें भाग पर सुन्दर पुत्र की प्राप्ति। वामभाग में महारोग तथा वायें भाग के कमर पर महान् यश कहा गया है ॥ ५ ॥

वामकट्यां तु निधनं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।
जान्वोरेवं विजानीयात्सव्यपादे शुभावहम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—वामकट्यां तु निधनं तत्त्वदर्शिभिः मुनिभिः कथितम्। जान्वोः (वामदक्षयोः) एवमेव विजानीयात्। सव्यपादे शुभावहम् ज्ञेयम्।

विमला—तत्त्वदर्शी मुनियों ने वाम कटि भाग पर पल्लीपतन से मृत्यु कहा है। तथा दोनों जानुओं पर (घुटनों पर) भी मृत्यु कहा है। वाम पैर पर शुभ कहा है ॥ ६ ॥

वामपादे तु गमनमिति प्राहुर्महर्षयः।
स्त्रीणां तु सरटश्चैव व्यस्तमेतत्फलं वदेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—वामपादे तु गमनं इति महर्षयः प्राहुः सरटस्याधिरोहणेऽपि फलमेतत्। स्त्रीणां तु व्यस्तं वदेत्।

विमला—वायें पैर पर पल्लीपतन हो तो गमन होता है। ऐसा महर्षियों ने कहा है। गिरगिट के चढ़ने का फल भी इसी प्रकार समझना चाहिए तथा स्त्रियों का फल विपरीत समझना चाहिए ॥ ७ ॥

फल प्ररोहणे चैव सरटस्य प्रचारतः।
सर्वाङ्गेषु शुभम् विद्याच्छान्ति कुर्यात्स्वशक्तितः ॥ ८ ॥

अन्वयः—सरटस्य प्ररोहणे प्रचारतः फलं विचारयेत्, सर्वाङ्गेषु अशुभ फलम्। (निवारणाय) स्वशक्तितः शान्ति कुर्यात्।

विमलाः—गिरगिट (सरट) के चढ़ने पर जिस स्थान तक वह चढ़े अन्तिम स्थान का ही शुभाशुभ फल विचार करना चाहिए। अशुभ फल निवारण के लिए यथाशक्ति शान्ति कराना चाहिए ॥ ८ ॥

शुभस्थाने शुभावाप्तिरशुभे दोषशान्तये।
तत्स्वरूपं सुवर्णेन रुद्ररूपं तथैव च ॥ ९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—शुभ स्थान तक गमन होने से अर्थात् चढ़ने से शुभ फल प्राप्त होता है । अशुभ दोष की शान्ति के लिए सोने का गिरगिट बना कर उसे रुद्ररूप से पूजन करे ॥ ६ ॥

मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण वस्त्रादिभिरथार्चयेत् ।
अग्निं तत्र प्रतिष्ठाप्य जुहुयात्तिलपायसैः ॥ १० ॥

अन्वयः—अथ वस्त्रादिभिः (अलंकृत्य) मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण अर्चयेत् । तत्र अग्निं प्रतिष्ठाप्य तिलपायसैः जुहुयात् ।

विमला—मृत्युञ्जय मन्त्र से वस्त्रादि चढ़ाकर मूर्ति की पूजा करे और अग्नि की स्थापना कर तिल और खीर से हवन करे ॥ १० ॥

आचार्यो वारुणैः सूक्तैः कुर्यात्तत्राभिषेचनम् ।
आज्यावलोकनं कृत्वा शक्त्या ब्राह्मणभोजनम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—तत्र आचार्यः वारुणैः सूक्तैः अभिषेचनं कुर्यात्, यजमानः आज्ये मुखम् अवलोक्य शक्त्या ब्राह्मणभोजनं कारयेत् ।

विमला—यहाँ पर आचार्य वरुणसूक्त से अभिषेक करे और यजमान घी में अपनामुख देखकर यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन करावे ॥ ११ ॥

गणेशक्षेत्रपालार्कदुर्गाक्षोण्यंगदेवताः ।
तासां प्रीत्यै जपः कार्यः शेषं पूर्ववदाचरेत् ॥ १२ ॥
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यात्षोडशभ्यः स्वशक्तितः ।

इति श्रीनारदीय संहितायामेकोनचत्वारिंशत्तमः पल्लीसरटाशुभ स्थानशान्तिप्रकरणाध्यायः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—गणेश, क्षेत्रपाल, सूर्य, दुर्गा, भूमि, अङ्गदेवता की प्रीति के लिए उनका मन्त्र जप करे और पूर्ववत हवनादिकार्य सम्पन्न कर अपनी शक्ति के अनुसार १६ ब्राह्मणों को दक्षिणा दे ॥ १२ ॥

इति श्री नारदसंहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में पल्लीसरटा-शुभस्थान शान्ति प्रकरणाध्याय समाप्त ।

अथ चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः

आरोहेत गृहं यस्य कपोतो[1] वा प्रवेशयेत्[2]।
स्थानहानिर्भवेतस्य यद्वानर्थपरम्परा ॥ १ ॥

अन्वयः—यस्य गृहं कपोतः आरोहेत्, वा प्रवेशयेत् (प्रविशेत्) तस्य हानिः भवेत् यद्वा अनर्थ परस्परा भवति।

विमला—जिसके घर पर कपोत बैठे या घर में प्रवेश करे उसकी हानि होती है और कष्ट होता है॥ १ ॥

दोपाय धनिनां गेहे दरिद्राणां शिवाय च।
तच्छान्तिस्तु प्रकर्त्तव्या जपहोमविधानतः ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—कपोत का प्रवेश तथा बैठना धनियों के लिए दोषकारक तथा गरीबों के लिए कल्याणकारी होता। अतः धनिकों को विधिपूर्वक जप हवनादि द्वारा शान्ति कराना चाहिए॥ २ ॥

ब्राह्मणान्वरयेत्तत्र स्वस्तिवाचनपूर्वकम्।
पोडशद्वादशाष्टौ वा श्रौतस्मार्तक्रियापरान् ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्वस्तिवाचनपूर्वकम् श्रौतस्मार्तक्रियापरान् षोडश, द्वादश, अष्टौ वा ब्राह्मणान् वरयेत्।

विमला—शान्ति के निमित्त स्वस्तिवाचन पूर्वक श्रौतस्मार्त क्रिया निष्ट १६, १२, या ८, ब्राह्मणों का वरण करे॥ ३ ॥

'देवाः कपोत' इत्यादि ऋग्भिः स्यात्पंचभिर्जपः।
कुण्डं कृत्वा प्रयत्नेन स्वगृह्योक्त विधानतः ॥ ४ ॥

अन्वयः—'देवाः कपोत' इत्यादि पंचभिः ऋग्भिः जपः स्यात्। प्रयत्नेन स्वगृह्योक्त विधानतः कुण्डं कृत्वा (ईशान्यां अग्निं स्थापये दिति अग्रिम श्लोकेन सम्बन्धः)।

---

१. 'कपोतः' श्येन स्थाने व्यवहृतः टीकाकारेण तन्नवरम्।

२. प्रविशेत्' इति साधुपाठः।

विमला—'देवाः कपोत' इत्यादि वैदिक ५ मन्त्रों का जप करावे तथा अपने कुलाचारानुसार प्रयत्न पूर्वक कुण्ड का निर्माण कराकर अग्निस्थापन करे ॥ ४ ॥

ईशान्यां स्थापयेद्वह्निं मुखान्तेऽष्टोत्तरं शतम् ।
प्रत्येकं समिदाज्यान्नैः प्रतिप्रणवपूर्वकम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—ईशान्यां वह्निं स्थापयेत्, मुखान्ते प्रतिप्रणवपूर्वकम् समिदाज्यान्नैः प्रत्येकं अष्टोत्तरं शतम् जुहुयात् ।

विमला—ईशान कोण में अग्नि की स्थापना करके ओंकार पूर्वक समिधा, घृत एवं अन्न से प्रत्येक देवता के लिए १०८ आहुति देवे ॥ ५ ॥

यत इन्द्रभयामहे स्वस्तीत्येतेन त्र्यम्बकैः ।
त्रिभिर्मन्त्रैश्च जुहुयात्तिलान्व्याहृतिभिः सह ॥ ६ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—'यत इन्द्रभयामहे' 'स्वस्तिनः इन्द्रो' और 'त्र्यम्बकं' इन तीन मन्त्रों से व्याहृति पूर्वक तिलों से हवन करे ॥ ६ ॥

कुर्यादेव ततो भक्त्या कर्त्ता पूर्णाहुतिं स्वयम् ।
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्याद्दोषशान्तिं ततो जयेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—ततोकर्त्ता भक्त्या स्वयम् पूर्णाहुतिं कुर्यात् एव विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यात् ततः दोषशान्तिं जयेत्

विमला—इसके अनन्तर यजमान स्वयं भक्तिपूर्वक पूर्णाहुति करे तथा ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे। ऐसा करने से उपरोक्त दोष की शान्ति होती है ॥ ७ ॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वयं भुञ्जीत बन्धुभिः ।
एवं यः कुरुते भक्त्या तस्माद्दोषात्प्रमुच्यते ॥ ८ ॥

अन्वयः—ब्राह्मणान्भोजयेत् पश्चात् बन्धुभिः (साकं) स्वयं भुञ्जीत । एवं यः भक्त्या कुरुते सः तस्मात् दोषात् प्रमुच्यते ।

विमला—ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद अपने बन्धु बान्धवों के साथ स्वयं भोजन करे। इस प्रकार भक्ति पूर्वक जो करता है, वह उस दोष से निवृत्त हो जाता है ॥ ८ ॥

---

१. 'पुर्णाहुतिः' इति मूलपाठः ।

पिंगलायाः[1] स्वरेऽप्येवं मधुवाल्मीकयोरपि ।
संपूर्णमङ्गले हानिः शून्यं सद्मनि मङ्गलम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—पिंगलायाः स्वरे मधु वाल्मीकयोरपि एवं सम्पूर्ण मङ्गले हानिः भवति शून्य सद्मनि च मङ्गलम् भवति ।

विमला—पिंगला पक्षी, मधु, वाल्मीक इन पक्षियों का स्वर सम्पूर्ण मङ्गलों की हानि करने वाला तथा शून्य गृह में यदि इनका स्वर हो तो मङ्गल कारक होता है ॥ ९ ॥

प्राकारेषु पुरद्वारे प्रासादाद्येषु वीथिषु ।
तत्फलं ग्रामपस्यैव सीमा सीमाधिपस्य च ॥ १० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—किला, महल, ग्रामद्वार, राजभवन या मार्ग का अपशकुन-स्वर ग्रामाधिपति के लिए तथा सीमा का अशुभ स्वर सीमाधिपति के लिए अशुभ सूचक होता है ॥ १० ॥

शान्तिकर्माखिलं कार्यं पूर्वोक्तेन क्रमेण तु ॥ ११ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां चत्वारिंशत्तमो कपोत
पिङ्गलादिशान्तिरध्यायः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—इन पिङ्गलादिकों के बोलने में शान्तिकर्म पूर्व कहे विधि से कराना चाहिए ।

श्री नारद संहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में कपोत
पिंगलादि शान्ति अध्याय समाप्त ।

---

१. 'पिंगलस्य' इति मूलपाठः ।

अथ एकचत्वारिंशत्तमोऽध्याय

उत्पाता [1]ह्यखिला नृणामगम्याः शुभसूचकाः ।
तथापि सद्यः फलदं शिथिलीजननं महत् ॥ १ ॥

अन्वयः—शुभसूचकाः अखिलाः उत्पाताः नृणां अगम्याः सन्ति। तथापि शिथिलीजननं सद्यः महाफलदं भवति ।

विमला—शुभसूचक सम्पूर्ण उत्पात (लक्षण जो आकस्मिक दुर्घटनाओं के सूचक होते हैं) मनुष्य जीवन में प्राप्त होना दुर्लभ है। फिर भी शिथिलीजनन (स्थानच्युति या परिभ्रंश) या किसी भी वस्तु का अचानक गिरना या उसमें कम्पनादि गति का होना यह शद्यः फलदायक होता है ॥ १ ॥

शिथिलीजननं ग्रामे सेतौ वा देवतालये ।
तत्फलं ग्रामपस्यैव सीम्नि सीमाधिपस्य च ॥ २ ॥

अन्वयः—ग्रामे सेतौ वा देवतालये शिथिलीजननं ग्रामपस्य तत्फलम् सीम्नि शिथिलीजननं सीमाधिपस्य तत्फलं भवति ।

विमला—ग्राम में, पुलपर या देवमन्दिरों में शिथिलीजनन का फल ग्रामपति को तथा सीमा पर शिथिलीजनन का फल सीमाधिपति को उसका शुभाशुभ फल प्राप्त होता है ॥ २ ॥

शिथिलीजनने हानिः सर्वस्थानेषु दिक्षु च ।
तद्दोषशमनायैव शान्तिकर्म समाचरेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—सर्वस्थानेषु, दिक्षु च शिथिलीजनने हानिः स्यात्। तत दोष शमनाय एव शान्तिकर्म समाचरेत् ।

विमला—सभी स्थानों में तथा सभी दिशाओं में जहाँ शिथिलीजनन उत्पात होता है। वहाँ हानि होती है अतः उस दोष की शान्ती के लिए उपचार करना चाहिए ॥ ३ ॥

---

१. 'निखिला' इति मूलपाठः ।

स्वर्णेन मृत्युप्रतिमां कृत्वा वित्तानुसारतः ।
रक्तवर्णं चर्मदण्डधरं महिषवाहनम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—वित्तानुसारतः स्वर्णेन, रक्तवर्णं चर्मदण्डधरं महिषवाहनं युक्तं मृत्युप्रतिमां विधाय पूजयेत् ।

विमला—अपनी शक्ति के अनुसार सोने की यमराज की प्रतिमा बनाकर, जिसका चर्म और दण्ड लाल वर्ण का हो तथा वाहन भैंसा हो ऐसी प्रतिमा होनी चाहिए ॥ ४ ॥

नववस्त्रं च संवेष्ट्य तंडुलोपरि पूजयेत् ।
तल्लिङ्गेन च मन्त्रेण नैवेद्यं तु यथाविधि ॥ ५ ॥

अन्वयः—तंडुलोपरि (पूर्णपात्रे संस्थाप्य) नववस्त्रं संवेष्ट्य तल्लिङ्गेन (तज्जन्य मन्त्रेण) मन्त्रेण च यथाविधिः नैवेद्यं तु निवेद्य पूजयेत् ।

विमला—किसी पात्र में (थाली इत्यादि में) चावल भरकर नये वस्त्र से यम प्रतिमा को लपेट कर स्थापित करे और यमराज के मन्त्रों से ही पञ्चोपचार या षोडशोपचार नैवेद्यादि से पूजन करे ॥ ५ ॥

पूर्णकुम्भं तदीशान्यां रक्तवस्त्रेण वेष्टितम् ।
पंचत्वक्पल्लवैर्युक्तं जलं मन्त्रैः समर्पयेत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—तत् ईशान्यां रक्तवस्त्रेणवेष्टितं पूर्णकुम्भं पञ्चत्वक् पञ्च-पल्लवैः युक्तं, मन्त्रैः जलं समर्पयेत् ।

विमला—यममूर्ति से ईशानकोण में रक्तवस्त्र से वेष्टित पूर्णकलश पञ्चत्वक् पञ्चपल्लव से उक्त करके मन्त्र द्वारा उस कलश में जल भरे ॥ ६ ॥

अग्निसंस्थापनं प्राच्यां स्वगृह्योक्तविधानतः ।
प्रत्येकमष्टोत्तरशतमघोरेणैव होमयेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्वगृह्योक्त विधानतः प्राच्यां दिशि अग्निसंस्थापनं कुर्यात् । ततः अघोरेण मन्त्रेण एव प्रत्येकं अष्टोत्तरशतम् होमयेत् ।

विमला—अपने कुलाचार के अनुसार पूर्वदिशा में अग्नि की स्थापना करके अघोर मन्त्र से प्रति मन्त्र १०८ आहुति देना चाहिए ॥ ७ ॥

मन्त्रेण समिदाज्यान्नैः शेषं पूर्ववदाचरेत् ।
द्विजाय प्रतिमां दद्यात्सर्वदोषोपनुत्तये ॥ ८ ॥

अन्वयः—समिद, आज्य, अन्नैः मन्त्रेण जुहुयात् शेषं पूर्ववत् आचरेत् । सर्वदोषोपनुत्तये द्विजाय प्रतिमां च विसर्जनान्ते दद्यात् ।

विमला—अघोर मन्त्र से समिधा घी और तिलान्नों का हवन करे तथा तर्पण मार्जन दानादि क्रिया पूर्व कथनानुसार करे । इस प्रकार पूजनादि सम्पन्न कर विसर्जन के बाद सभी दोषों की शान्ति के लिए प्रतिमा ब्राह्मण को दान देवे ॥ ८ ॥

जलमन्त्रेण संप्रोक्ष्य तत्स्थानं तीर्थवारिभिः ।
एवं यः कुरुते सम्यक्सतु दोषात्प्रमुच्यते ॥ ९ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायामेकचत्वारशित्तमः
शिथिलीजननशान्तिरध्यायः ।

अन्वयः—जल मन्त्रेण (वरुण मन्त्रेण) तत्स्थानं संप्रोद्य तीर्थं वारिभिः तत्स्थानं सम्प्रोक्षयेत् एवं यः कुरुते सः दोषात् सम्यक् प्रमुच्यते ।

विमला—वरुण के मन्त्र से उस पूजनस्थान का तथा शिथिलीजनन स्थान का तीर्थोदक द्वारा या कलशस्थित गंगाजल द्वारा प्रोक्षण विधि से पवित्र करे । इस प्रकार जो शान्तिकर्म करता है, वह सभी दोषों से मुक्त हो जाता है ॥ ९ ॥

श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
शिथिलीजननशान्त्याध्याय समाप्त ।

1. 'कुम्भवारिभिः' इति मूलपाठः ।

अथ द्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः

श्रीरग्निबन्धुनाशश्च वित्तहानिर्महद्यशः ।
बन्धुलाभः पुत्रहानिः स्त्रीचिन्तामहतोगदः ॥ १ ॥
पूर्वादीनि फलान्येषामिन्द्रलुप्तं च मस्तके ।
पञ्चत्वक्पल्लवैश्चैव पञ्चामृतफलोदकैः ॥ २ ॥
अभ्यङ्गं मन्त्रितैर्मन्त्रैः स्नानदोषं विमुञ्चति ।
एवमेवाग्निदाहेऽपि मस्तके मध्यदूषिते ॥ ३ ॥
दन्तच्छेदे काकहते सरटापत्तनेऽपि च ।
आशिषो वाचनं कृत्वा ब्राह्मणान्भोजयेच्छुचिः ॥ ४ ॥

अन्वयः—मस्तके इन्द्र लुप्तं च तदा श्री, अग्नि, बन्धुनाशश्च, वित्त-हानिः, महत्यशः, बन्धुलाभः पुत्रहानिः, स्त्रीचिन्ता, मध्ये महतोगदः इति फलानि पूर्वादीनी । एषां शान्त्यर्थं पञ्चत्वक् पञ्चपल्लवैः पञ्चामृत फलोदकैः स्नानं कुर्यात् । तथा मन्त्रैः अभिमन्त्रितं अभ्यङ्गं कुर्यात् । अनेन प्रकारेण दोषं विमुञ्चति । एवम् एव अग्निदाहे मस्तकेमध्यदूषिते, दन्तच्छेदे, काकहते सरटारोहणे पल्याः प्रपतने अपि च आशिषः वाचनं कृत्वा शुचिः ब्राह्मणान्भोजयेत् ।

विमला—यदि शिर का बाल अचानक किसी स्थान विशेष से गिर जाय या क्षतिग्रस्त हो जाय तो शिर का पूर्वादि दिशा क्रम से तथा मध्य भाग से क्रमशः १-पूर्व से लक्ष्मी प्राप्ति, २-अग्निकोण से अग्निभय, ३-दक्षिण से बन्धुनाश, ४-नैऋत्य कोण से धन की हानि, ५-पश्चिम से महान यश, ६-वायव्य कोण से बन्धु लाभ, ७-उत्तर से पुत्र हानि, ८-ईशान कोण से स्त्री चिन्ता और मध्य भाग से बड़ा रोग यह फल जानना चाहिए । अशुभ फलों की शान्ति के लिए पञ्चत्वक्, पञ्चपल्लव, पञ्चामृत तथा फलोदक आदि से मन्त्र द्वारा स्नान तथा उवटन आदि लगाना चाहिए इससे दोष कटता है । यह उपचार अग्निदाह, दन्तच्छेद, काक द्वारा आघात, सरट (गिरगिट) का चढ़ना तथा छिपकली के गिरने पर भी करना चाहिए । तथा स्वस्तिवाचन पूर्वक ब्राह्मणों का आशिर्वाद प्राप्त कर उन्हें भोजन कराना चाहिए ॥ १-४ ॥

लाभदः स्त्रीजनानां त्वशुभदो व्यत्ययो व्ययः।
दक्षिणे स्फुरणं लाभं वामे स्फुरणमन्यथा ॥ ५ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां निमित्तशान्तिरध्यायः द्विचत्वारिंशत्तमः।

अन्वयः—स्त्रीजनानां तु अशुभदः लाभदः इति व्यत्ययेन फलं वाच्यम्। पुरुषाणां दक्षिणे स्फुरणं लाभं वामे स्फुरणम् अन्यथा (अशुभमिति) बोध्यम्।

विमला—जो शकुन या अङ्गस्फुरणादि पुरुषों के लिए शुभदायक है, वह स्त्रियों के लिए विपरीत अर्थात् अशुभ फलदायक समझना चाहिए। पुरुषों का दक्षिण अङ्ग शुभ तथा स्त्रियों का वाम अङ्ग शुभ फलदायक होता है ॥ ५ ॥

श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
निमित्त शान्त्याध्याय समाप्त।

---

१. "लाभदः कुडयगोधात्र शुभदो व्यत्यये व्ययः" इति मूलपाठः ॥

अथ त्रिचत्वारिंशदध्यायः

स्वर्गाच्च्युतानां रूपाणि यान्युल्कास्तानि वै भुवि ।
धिष्ण्योल्काविद्युदशनितारा: पञ्चविधा:स्मृता: ॥ १ ॥

अन्वयः—स्वर्गात् च्युतानां उल्कानां भुवि यानि रूपाणि वै तानि धिष्ण्या, उल्का, विद्युत, अशनि, तारा: पञ्चविधा: स्मृता: ॥

विमला—स्वर्ग से गिरने वाले उल्काओं का इस भूमि पर धिष्ण्या, उल्का, विद्युत, अशनि और तारा ये पांच नाम प्रसिद्ध हैं ॥ १ ॥

सम्यक्पञ्चविधानां च वक्ष्यते लक्षणं फलम् ।
याच[1]यन्ति त्रिभि: पक्षैर्धिष्ण्योल्काशनिसंज्ञिता: ॥ २ ॥

अन्वयः—पञ्चविधानां लक्षणं फलं च सम्यक् वक्ष्यते । एते धिष्ण्या, उल्का, अशनि आदि संज्ञिता: (पञ्च) त्रिभि: पक्षै: फलं याचयन्ति: (ददाति) ।

विमला—पांच प्रकार का फल और उनका लक्षण कहते हैं । ये धिष्ण्या, उल्का, विद्युत, अशनि आदि ४५ दिन में अपना शुभाशुभ फल देते हैं ॥ २ ॥

विद्युत्षड्भिरहोभिश्च तारास्तद्वत्फलप्रदा: ।
फलपाककरी तारा धिष्णाख्यार्द्धफलप्रदा ॥ ३ ॥

अन्वयः—षड्भि: अहोभि: विद्युत् , तद्वत् तारा पातोऽपि फलप्रदा: भवन्ति । तारा पूर्ण फलपाक करी धिष्ण्या च अर्द्ध फलप्रदा भवति ।

विमला—विद्युत (बिजली) ६ दिन में, तथा तारापात भी अपना फल ६ दिन में देता है । तारा पात पूरा फल देता है तथा धिष्ण्या आधा फल करती है ॥ ३ ॥

उल्का[2]विद्युदशन्याख्या: संपूर्णफलदा नृणाम् ।
अश्वेभोष्ट्रपशुनृषु वृक्षक्षोणीषु च क्रमात् ॥ ४ ॥
विदारयन्ति पतितं स्वनेन महताऽशनि: ।
जनय[3]न्ती च संत्रासं विद्युत्व्योम्निरिवैं[4]स्फुटम् ॥ ५ ॥

---

१. 'पाचयन्ति' इति पाठान्तरम् । २. 'प्रोक्ता' इति मूल पाठ: । ३. 'जनयित्री' इति पाठभेद: । ४. 'त्विव' इति पाठान्तरम् ।

अन्वयः—उल्का, विद्युत्, अशनि आख्याः नृणाम् सम्पूर्ण फलदा भवन्ति। अश्व, इभ, उष्ट्र, पशु, नृषु, वृक्ष क्षोणीषु च क्रमात् विदारयन्ति। अशनिः महता स्वनेन, विद्युतव्योम्निस्फुटयति संत्रासं जनयित्री भवति।

विमला—उल्का, विद्युत और अशनि मनुष्य को पूर्ण फल देते हैं। हाथी, घोड़े, ऊंट, पशु, मनुष्य वृक्षों की पङ्क्ति इन सबों पर यथाक्रम से पड़कर विदीर्ण करती है, तथा तेज कड़कड़ाहट होती है यह अशनि का लक्षण है और बिजली आकाश में बहुत चमकती है, तथा भयकारी होती है।

वक्रा¹विशालज्वलिता पतन्ती वनराजिषु।
धिष्ण्यान्त्यपुच्छा पतति ज्वलिताङ्गारसन्निभा ॥ ६ ॥

अन्वयः—वनराजिषु वक्रा (वक्राकारा) विशालज्वलिता पतन्ती अन्त्यपुच्छा ज्वलिताङ्गारसन्निभा धिष्ण्या नाम उल्का पतति।

विमला—वक्राकार बहुत बड़ी एवं जलती हुई वन में गिरती हुई जले हुए अङ्गारे के सदृश अन्त में पूछ दृष्टि गोचर होने वाली यह धिष्ण्या होती है ॥ ६ ॥

हस्तद्वयप्रमाणा सा दृश्यते च समीपतः।
ताराब्जतनुवच्छुक्ला हस्तदीर्घाम्बुजारुणा ॥ ७ ॥

अन्वयः—या हस्तद्वय प्रमाणा समीपतः अब्जतनुवत दृश्यते सा तारा। हस्त दीर्घा अम्बुजारुणा इत्यग्रिम श्लोक सम्बन्धः।

विमला—जो दो हाथ प्रमाण की है और समीप से चन्द्रमा की तरह स्वेत वर्ण की होती है उसका नाम तारा है। और १ हाथ लम्बी रक्तकमल के वर्ण की तरह (अगले श्लोक से सम्बन्ध है) ॥ ७ ॥

उर्ध्वं वाप्यथवा तिर्यगधो वा गगनान्तरे।
उल्काशिरो विशाला तु पतन्ती वर्द्धते तनुम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—गगनान्तरे उर्ध्वं वाप्यथवा तिर्यग् वा अधः शिरः विशाला तु उल्का पतंती सति तस्य तनुम् वर्धते।

विमला—आकाश में ऊपर या नीचे को तिरछी विशाल शिरवाली तथा गिरते हुए बढ़ती हुई दृष्टि गोचर होने वाली उल्का होती है ॥८॥

---

१. 'चक्रा' इति पाठान्तरम्।

दीर्घपुच्छा भवेत्तस्याः भेदाः स्युर्बहवस्तथा ।
पीडाश्चोष्ट्राहिगोमायुखरगोगजदंष्ट्रिकाः ॥ ९ ॥

अन्वयः—सा उल्का दीर्घपुच्छा भवेत् तथा तस्याः बहवः भेदाः स्युः । उष्ट्र, अहि, गोमायु, खर, गो, गज दंष्ट्रिका आकार वन्त्यः उल्काः सर्वान् पीडयन्ति ।

विमला—वह उल्का लम्बी पूंछवाली होती है तथा उसके अनेक भेद होते हैं । जब उल्का ऊंट, सर्प, गीदड़, गधा, गाय, हाथी या विकराल दांतों वाला दिखाई दे तो जनवर्ग पीड़ित होता है ॥ ९ ॥

कपिगोधाधूमनिभा विविधा पापदा नृणाम् ।
अश्वेभचन्द्ररजतवृषहंसध्वजोपमाः ॥ १० ॥

अन्वयः—कपि, गोधा, धूमनिभा नृणाम् विविधा पापदा । अश्व, इभ, चन्द्र, रजत, वृष, हंस ध्वजोपमा शुभदा इत्यग्रिमेन सम्बन्धः ।

विमला—बन्दर, गृहगोधा (गोह) तथा धूम की तरह दृष्टिगोचर होने वाली उल्का मनुष्य के लिए विविध पाप फलदायक होती है और घोड़े, हाथी, चन्द्रमा, चांदी, बैल, हंस, ध्वजा इनके समान तथा ॥१०॥

वज्रशंखशुक्तिकाब्जरूपाः शिवसुखप्रदाः ।
पतन्तीह [1]स्वरा वह्नौ राजराष्ट्रक्षयाय च ॥ ११ ॥

अन्वयः—वज्र, शंख, शुक्तिका, अब्जरूपाः यदि उल्का पतन्ति तदा शिव सुखप्रदाः भवन्ति । किन्तु यदि खरः वह्नौ पतन्ति तदा राजराष्ट्र क्षयाय च भवति ।

विमला—अथवा, हीरा, शंख, सीप और कमल के स्वरूप वाली उल्का पड़े तो मङ्गल कारक तथा सुखदायक होती है । यदि अग्नि में उल्कापात हो तो राजा का तथा राष्ट्र का नाश होता है ॥ ११ ॥

यद्यम्बरे निपतति लोकस्याप्यति विभ्रमः ।
यद्यर्केन्दू संस्पृशति तत्र भूपप्रकम्पनम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—यदि अम्बरे उल्का तिष्ठेत् तर्हिलोकस्यापि अति विभ्रमः उत्पादयति । यदि अर्केन्दू संस्पृशति तदा तत्र भूप प्रकम्पनं भवति ।

---

१. 'खरा' इति मूलपाठः ।

विमला—यदि आकाश में ही रहे तो लोक में अत्यन्त भ्रम होता है। यदि सूर्य और चन्द्रमा का स्पर्श करे तो राजाओं को भयभीत कर देता है ॥ १२ ॥

परचक्रागमभयं जनानां क्षुज्जलाद्भयम् ।
अर्केन्द्वोरपसव्योल्का पौरेतरविनाशदा ॥ १३ ॥

अन्वयः—परचक्रागमभयं भवति। जनानां क्षुद् जलाद् भयम् भवति अर्केन्द्वोः अपसव्ये उल्का पतेत यदि तर्हि पौरेसर विनाशदा भवति। नगरात् बहिर्वासिनाम् ग्राम्य जनानां विनाशदा भवति।

विमला—दूसरे राजाके आने का भय हो, दुर्भिक्ष और भूख से जनवर्ग त्रस्त हो। तथा सूर्यचन्द्र के वामभाग से होकर जाय तो शहर से बाहर वालों को कष्ट होता है ॥ १३ ॥

उदयास्तमयेऽर्केन्द्वोः परतोल्का शुभप्रदा ।
सितरक्ता पीतसिता सोल्का नेष्टा[1] द्विजातिभिः ॥ १४ ॥
सितोदितोभये पार्श्वे पुच्छे दिक्षु विदिक्षु च ।
[2]पतितोल्कादिऋक्षाणि विप्रादीनामनिष्टदा ॥ १५ ॥

अन्वयः—अर्केन्द्वोः, उदये अस्तमये परतः शुभप्रदा। सितरक्ता, पीतसिता, उल्का द्विजातिभिः नेष्टा भवति। सितोदितोभये पार्श्वे पुच्छे दिक्षु विदिक्षु च पतित उल्कादिभानि अपि विप्रादीनां अनिष्टदानि भवन्ति।

विमला—सूर्य अथवा चन्द्रमा के उदय होने के बाद सन्धि में पड़े तो शुभदायक जानना और सफेद, लाल तथा पीला सफेद उल्का पड़े तो द्विजाति वर्ग (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के लिए अच्छी नहीं होती है। सितउल्का के उभय भाग में पुच्छ के होने पर दिशा या विदिशा (कोणदिशा) में उल्का गिरे तो वह नक्षत्र भी ब्राह्मणादिवर्णों के लिए कष्टदायक होता है ॥ १४–१५ ॥

तारा कुन्दनिभा स्निग्धा भूभुजां तु शुभप्रदा ।
नीला श्यामारुणा चाग्निवर्णोल्का सा शुभप्रदा ॥ १६ ॥

---

१. 'हन्ति' इति मूल पाठः। २. 'विप्रादीनामनिष्ठानि पतितोल्कादिभान्यपि' न्तरम्।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—कुन्द पुष्प के समान स्वेत वर्ण की चिकनी तारा राजाओं के लिए शुभ फलदायक होती है और नील, श्याम, अरुण तथा अग्नि वर्ण की तारा अशुभ फलदायक होती है ॥ १६ ॥

सन्ध्यायां वह्नि पीडा च दलिता राजनाशिनी ।
नक्षत्रग्रहणे देवस्तद्वर्णानामनिष्टदा ॥ १७ ॥

अन्वयः—सन्ध्यायां पतिता तारा वह्नि पीडा करा दलिता (खण्डिता) राजनाशिनी भवति । नक्षत्र ग्रहणे देव तद्‌वर्णानां अनिष्टदा भवति ।

विमला—सन्ध्या समय में गिरने या टूटने वाली तारा अग्निभय देनेवाली होती है । यदि वह खण्डित हो तो राज को नष्ट करने वाली तथा जिस नक्षत्र पर हो उसके अधिपति देवता या देवगण मनुष्य के लिए कष्टदायक होती है ॥ १७ ॥

स्थिरधिष्ण्येषु पतिता स्त्रीणां चोक्ता भयप्रदा ।
क्षिप्रभेषु विशां पीडा भूपतीनां चरेषु च ॥ १८ ॥

अन्वयः—स्थिर धिष्ण्येषु पतिता तारा स्त्रीणां भयप्रदा च उक्ता । क्षिप्र भेषु च विशां पीडा चरेषु च भूपतीनां पीडा भवति ।

विमला—यदि तारा स्थिर नक्षत्रों (तीनों उत्तरा, रोहिणी) में गिरे तो स्त्रियों को कष्टप्रद होती है । क्षिप्र नक्षत्रों में (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) वैश्यवर्ग पीड़ा प्राप्त करता है तथा चर नक्षत्रों (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) में राजाओं को पीड़ा होती है ॥१८॥

मृदुभेषु द्विजातीनां दारुणं दारुणेषु च ।
उग्रभेषु च शूद्राणां परेषां मिश्रभेषु च ॥ १९ ॥

अन्वयः—मृदुभेषु द्विजातीनां, दारुणेषु च दारुणं (दुष्ट पुरुषाणां) उग्रभेषु शूद्राणां, मिश्रभेषु च परेषां (अन्त्यजानां) पीडा भवति ।

विमला—मृदुसंज्ञक नक्षत्रों (मृगशीर्ष, रेवती, चित्रा, अनुराधा) में ब्राह्मणों को, दारुणसंज्ञक नक्षत्रों (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा) में दुष्टजनों को, उग्रसंज्ञक नक्षत्रों (तीनों पूर्वा, भरणी, मघा) में शूद्रों को और मिश्रसंज्ञक नक्षत्रों (विशाखा, कृतिका) में तारा टूटे तो अन्त्यजों को पीड़ा होती है ॥ १९ ॥

राजराष्ट्रस्वनाशाय प्रासादप्रतिमासु च।
गृहेषु स्वामिनां पीडा नृपाणां पर्वतेषु च ॥ २० ॥

अन्वयः—प्रासाद प्रतिमासु च पतिता तारा राजराष्ट्रस्वनाशाय भवेत्। गृहेषु स्वामिनां, पर्वतेषु च नृपाणां पीडा भवति।

विमला—राजमहल तथा देव मन्दिर में गिरी हुई तारा राष्ट्र को नष्ट करनेवाली, गृह पर की गिरी तारा गृहस्वामी तथा पर्वतों पर गिरी हुई तारा राजाओं को पीड़ा कारक होती है ॥ २० ॥

दीक्षितानां दिगीशानां कर्षकाणां स्थलेषु च।
प्राकारे [1]परिखायां वा द्वारि तत्पौरमध्यमे ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्थलेषु (पतिता तारा) दीक्षितानां, दिगीशानां, कर्णकाणां च पीड़ा करा। प्राकारे परिखे वापि, द्वारि तत्पौरिमध्यमे पतिता तारा पौरजनानां कृते कष्टकारकाः।

विमला—भूमि पर गिरी हुई तारा दीक्षितों (गुरुमन्त्र लेने वाले ब्रह्मचारी आदि) दिग्गजों और कृषकों को पीड़ा कारक होती है। किला, कोट, खाई, शहर का मुख्यद्वार या शहर के मध्यभाग में गिरी हुई तारा भी कष्टप्रद है ॥ २१ ॥

परचक्रागमभयं राज्यं पौरजनक्षयः।
गोष्ठे गोस्वामिनां पीडा शिल्पिकानां जलेषु च ॥ २२ ॥

अन्वयः—राज्यं पर चक्रागम भयं, पौर जनक्षयः। गोष्ठे स्वामिनां, जलेषु च शिल्पिकानां (पीडा भवति)।

विमला—(पूर्व श्लोकोक्त क़िला, कोट, खाई शहर का मध्य या मुख्य मार्ग) इनपर यदि तारा गिरे तो राज्य में दूसरे राजा का आगमन और नगरवासी जनों का नाश होता है। गोशाला में गिरे तो उसके स्वामी को और जल में गिरे तो शिल्पविद्या से जीने वालों को कष्ट होता है ॥ २२ ॥

राजहन्त्री तन्तुनिभा [2]इन्द्रध्वजसमाऽथवा।
प्रतीपगा राजपत्नीं तिर्यग्गा[3] च चमूपतिम् ॥ २३ ॥

---

१. 'परिघेवापि' इति मूलपाठः। २. 'चेन्द्रध्वजसमाथवा' इति पाठान्तरम्।
३. 'तिर्यगा' इति पाठभेदः।

अन्वयः—तन्तुनिभा अथवा इन्द्रध्वजसमा राजहन्त्री, प्रतीपगा राजपत्नीं, तिर्यगा पतति चेत् चमूपतिम् प्रणश्यति।

विमला—तन्तु के समान आकार वाली अथवा इन्द्रधनुष के आकार वाली तारा गिरे तो राजा को नष्ट करती है। उल्टी गिरे तो राजपत्नी और तिरछी गिरे तो सेनापति को नष्ट करती है॥ २३॥

अधोमुखी नृपंहन्ति [1]ब्राह्मणानूर्ध्वगा तथा।
वृक्षोपमा पुच्छनिभा जनसंक्षोभकारिणी॥ २४॥

अन्वयः—अधोमुखी (पतिता तारा) नृपं तथा उर्ध्वगा ब्राह्मणान् हन्ति, वृक्षोपमा, पुच्छनिभा च तारा जनसंक्षोभ कारिणी भवति।

विमला—अधोमुखी तारा राजा को तथा उर्ध्वगामीतारा ब्राह्मणों को नष्ट करती है। वृक्ष के समान तथा पूंछ की तरह आकृति वाली तारा जनवर्ग को (क्षुभित) त्रास युत करनेवाली होती है॥ २४॥

प्रसर्पिणी या सर्प्पवत्सा गणानांस्यादनिष्टदा[2]।
वर्तुलोल्का पुरं हन्ति छत्राकारा पुरोहितम्॥ २५॥

अन्वयः—या प्रसर्पिणी सर्पवत्सा, गणानां अनिष्टदा, वर्तुला उल्का पुरं, छत्राकारा च पुरोहितम् हन्ति।

विमला—सर्प को तरह गतिवाली उल्का गिरे तो अपने आश्रित जनों को (नौकरों को) कष्टदा, गोलाकार होने पर नगर को तथा छाते के आकार का होने पर पौरोहित्य कर्म करनेवालों को मारती है॥२५॥

वंशगुल्मलताकारा राष्ट्रविद्राविणी तथा।
सूकरव्यालसदृशा खण्डाकारा च पापदा॥ २६॥
इन्द्रचापनिभाराज्यं मूर्छिता हन्ति तोयदम्॥

इति श्री नारदीय संहितायां उल्का लक्षणाध्यायः त्रिचत्वारिंशत्तमः।

अन्वयः—वंश, गुल्म, लताकारा (तारा) राष्ट्र विद्राविणी तथा सूकर, व्याल सदृशा खण्डाकारा च पापदा भवति। इन्द्रचापनिभा राज्यं, मूर्छिता (कान्ति विहीना) तोयदम् हन्ति।

---

१. 'ब्राह्मणानूर्ध्वगा' इति मूलपाठः। २. 'गणानामनिष्टदा' इति मूलपाठः।

विमला—बांस, गुल्म (झाड़ी) या लता के आकार की तारा राष्ट्र को विनष्ट करने वाली । सूकर तथा सर्प के आकार वाली तथा खण्डित पापाचार बढ़ाने वाली होती है। इन्द्र धनुष के समान राज्य को नष्ट करने वाली तथा कान्ति हीन तारा (उल्का) मेघ को या जलजीवियों को नष्ट करने वाली होती है ॥ २६ ॥

श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
उल्का लक्षणाध्याय समाप्त ।

अथ परिवेशलक्षणाध्यायः

किरणा वायुनिहता उच्छ्रिता मण्डलीकृताः ।
नानावर्णाकृतयस्ते परिवेषाः शशीनयोः ॥ १ ॥

अन्वयः—वायुनिहताः शशीनयोः किरणा उच्छ्रिता मण्डलीकृताः ते नानावर्णाकृतयः भवन्ति ते (शशीनयोः) परिवेषाः कथ्यन्ते ।

विमला—वायु के द्वारा प्रताड़ित चन्द्रमा और सूर्य की किरणें ऊपर उठकर मन्डलाकार होती हैं। इनके अनेक वर्ण और आकृतियाँ हैं तथा इन्हें चन्द्रमा और सूर्य का परिवेष (मण्डल) कहते हैं ॥ १ ॥

ते रक्तनीलपांडुरकपोताभ्राश्च[2] कापिलाः ।
सपीतशुक्रवर्णाश्च प्रागादिदिक्षु वृष्टिदाः ॥ २ ॥
मुहुर्मुहुः प्रलीयन्ते न सम्पूर्णफलप्रदाः ।
शुभास्तु कपिलाः स्निग्धाः क्षीरतैलाम्बुसन्निभाः ॥ ३ ॥

अन्वयः—ते (परिवेषाः) रक्त, नील, पाण्डुर, कपोत, अभ्र, कापिलाः, सपीत शुकवर्णाश्च क्रमेण प्रागादिदिक्षु वृष्टिदा भवन्ति। यदि (ते) मुहुः मुहुः प्रलीयन्ते (तदा) सम्पूर्ण फलप्रदाः न भवन्ति। कपिलाः, स्निग्धाः, क्षीर, तैल, अम्बु सन्निभाः शुभाः ।

विमला—वे मन्डल (परिवेष) लाल, नीला, गुलावी (पाण्डुर) कपोत तथा बादल सदृश वर्ण के कपिल, पीले तथा हरे वर्ण के क्रमशः पूर्वादि आठों दिशाओं में वर्षा कराने वाले होते हैं। यदि इनका बनना और बिगड़ना बार-बार हो तो इनका पूरा फल नहीं होता है। कपिल वर्ण वाले, चिकने तथा दूध, तेल, जल के सदृश दृष्टिगोचर होने वाले (अग्रिम सम्बन्ध) शुभ होते हैं ॥ २–३॥

चापश्रृंगाटकरथक्षतजाभारुणाः शुभाः ।
अनेकवृक्षवर्णाश्च परिवेषा नृपान्तकृत् ॥ ४ ॥

---

१. इसे लोक में चन्द्रमा और सूर्य की अध्यक्षता में देवताओं की सभा हो रही है तथा इसे देखना बुरा है ऐसा कहते हैं।

२. 'कपोताभ्रापि कापिलाः' इति मूलपाठः।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—धनुष, चौखट (चौपट) रथ तथा रक्तवर्ण के परिवेष शुभदायक होते हैं। अनेक वृक्ष समूह जैसा दृष्टिगोचर होने वाले परिवेष राजाओं को नष्ट करने वाले होते हैं ॥ ४ ॥

अहर्निशं प्रतिदिनं चन्द्रार्कावरुणो यदा ।
परिविष्टो नृपवधं कुरुतो लोहितौ यदा ॥ ५ ॥

अन्वयः—प्रतिदिनं अहर्निशं चन्द्राकौं यदा अरुणः परिविष्टः तदा नृपवधं लोहितौ च कुरुतः ।

विमला—प्रतिदिन दिनरात क्रमशः सूर्य और चन्द्रमा (अर्थात् दिन में सूर्य और रात्रि में चन्द्रमा) रक्त वर्ण के होकर परिविष्ट हों अर्थात् मण्डल में रहें तो राजा का वध तथा भूमि रक्त रञ्जित होती है ॥ ५ ॥

द्विमण्डलश्चमूनाथं नृपघ्नोऽथत्रिमण्डलम् ।
परिवेषगतः सौरिः क्षुद्रधान्य विनाशकृत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—द्विमण्डलः चमूनाथं अथ त्रिमण्डलम् नृपघ्नः । परिवेशगतः सौरिः क्षुद्रधान्य विनाशकृत् भवति ।

विमला—दो मन्डल (परिवेष) हो तो सेनापति को और तीन मन्डल हो तो राजा को नष्ट करता है। मण्डल के अन्तर्गत यदि शनि का समावेश हो तो उस वर्ष मोटे अन्नों का विनाश होता है ॥ ६ ॥

रणकृद् भूमिजो जीवः सर्वेषामभयप्रदः ।
ज्ञः सस्यहानिदः शुक्रो दुर्भिक्षकलहप्रदः ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—मङ्गल मण्डल में आ जाय तो युद्ध होवे, गुरु हो तो सबको अभय करे, बुध हो तो कृषी नष्ट होवे, और शुक्र हो तो दुर्भिक्ष पड़े और पारस्परिक कलह होवे ॥ ७ ॥

परिवेषगतः केतुर्दुर्भिक्षकलहप्रदः ।
पीडा नृपवधं राहुर्गर्भच्छेदं करोति च ॥ ८ ॥

अन्वयः—परिवेषगतः केतुः दुर्भिक्ष कलह प्रदः । राहुः पीडा नृपवधं गर्भच्छेदं च करोति ।

विमला—केतु, सूर्य या चन्द्रमा के परिवेश में आ जाय तो दुर्भिक्ष तथा कलह कराने वाला, और राहु आ जाय तो पीड़ा, राजा का वध और गर्भपात अत्यधिक कराने वाला होता है ॥ ८ ॥

द्वौ ग्रहौ परिवेषस्थौ क्षितीशकलहप्रदौ ।

कुर्वन्ति कलहानर्घं परिवेषगतास्त्रयः ॥ ९ ॥

अन्वयः—परिवेषस्थौ द्वौ ग्रहौ क्षितीश कलह प्रदौ, त्रयः परिवेष गताः कलहं अनर्घं च कुर्वन्ति ।

विमला—दो ग्रह परिवेषान्तर्गत हों तो राजाओं में युद्ध हो। तीन ग्रह परिवेष में हों तो जन कलह हो तथा अन्न का भाव महँगा होवे ॥९॥

चत्वारः परिवेषस्था नृपस्य मरणप्रदाः ।

परिवेषगताः पञ्च बलप्रबलदा ग्रहाः ॥ १० ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चारग्रह परिवेष में हों तो राजा की मृत्यु होती है और यदि पांचग्रह परिवेष में होवें तो बलदायक और शुभ फलदायक होते हैं ॥१०॥

एवं वक्रग्रहास्तेषामेवं फलनिरूपणम् ।

नृपहानिः कुजादीनां परिवेषे पृथक् पृथक् ॥ ११ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—इसी प्रकार जो वक्री ग्रह हैं उनका फल भी समझना चाहिए। पृथक्-पृथक् मङ्गल आदि ग्रहों के परिवेष में जाने से राजा की हानि होती है। अर्थात् पहले जो फल कहा गया है वही फल समझना चाहिए। ग्रह चाहे वक्री हो या मार्गी हो ॥ ११ ॥

परिवेषोऽपि धिष्ण्यानां फलमेवं द्वयोस्त्रिषु ।

परिवेषो द्विजातीनां नेष्टः प्रतिपदादिषु ॥ १२ ॥

अन्वयः—एवं धिष्ण्यानां द्वयोः त्रिषु फलम्। प्रतिपदादिषु तिथिषु परिवेषः द्विजातीनां नेष्टः ।

विमला—इसी प्रकार परिवेष में दो या तीन नक्षत्रों के होने पर भी फल समझना चाहिए। प्रतिपद आदि तिथियों में परिवेष होने पर क्रमशः ब्राह्मणादि वर्णों को कष्ट कारक होता है ॥ १२ ॥

पञ्चम्यादिषु तिसृषु ह्यशुभो नृपतेस्तथा ।

अष्टम्यां युवराजस्य परिवेषोऽप्यभीष्टदः ॥ १३ ॥

अन्वयः—पञ्चमी आदिषु तिसृषु नृपतेः अशुभः। अष्टम्यां परिवेषः युवराजस्य अभीष्टदः भवति।

विमला—प्रतिपद से चतुर्थी तक का परिवेष ब्राह्मणों के लिए अशुभ होता है। (पूर्व श्लोक से प्राप्त) पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी का परिवेष राजा तथा क्षत्रियों के लिए अशुभ होता है। अष्टमी का परिवेष युवराज के लिए शुभ तथा अन्य के लिए अशुभ होता है ॥ १३ ॥

ततस्तिसृषु तिथिषु नृपाणामशुभप्रदाः।
पुरोहितस्य द्वादश्यां विनाशाय भवेदसौ ॥ १४ ॥
सैन्यक्षोभस्त्रयोदश्यां नृपरोधमथापि वा।
राजपत्न्यश्चतुर्दश्यां परिवेषो गदप्रदः ॥ १५ ॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—नवमी, दशमी और एकादशी को परिवेष हो तो राजा के लिए अशुभ, द्वादशी के दिन हो तो राजा के पुरोहित का नाश, त्रयोदशी के दिन होने पर सेना को कष्ट तथा राज्यावरोध हो चतुर्दशी में रानी को कष्ट तथा रोग होता है ॥ १४–१५ ॥

परिवेषः पञ्चदश्यां क्षितीशानामनिष्टदः।
परिवेषस्यमध्ये वा बाह्ये रेखा भवेद्यदि ॥ १६ ॥
स्थायिनां मध्यमानेष्टा यायिनां पार्श्वसंस्थिता।
प्रावृड्ऋतौ च शरदि परिवेषो जलप्रदः ॥ १७ ॥
प्रायेणान्येषु ऋतुषु तदुक्त फलदायिनः ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां परिवेषलक्षणाध्यायः चतुश्चत्वारिंशत्तमः।

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—पूर्णिमा तिथि का परिवेष राजाओं के लिए अनिष्ट कारक होता है। परिवेष के मध्य में रेखा हो तो स्थायी राजा के लिए सामान्य फलद और बाहर रेखा हो तो यायी राजा (आक्रामक राजा) के लिए अशुभ होता है। वर्षा और शरद ऋतु का परिवेष जलप्रद और अन्य ऋतुओं में सामान्य फलदायक होता है ॥ १६–१७ ॥

इति श्री नारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
परिवेषलक्षणाध्याय समाप्त।

अथ इन्द्रचापलक्षणाध्यायः

नानावर्णांशवो भानोः साभ्रवायुविघट्टिताः ।
यद्व्योम्नि चापसंस्थानमिन्द्रचापं प्रदृश्यते ॥ १ ॥

अन्वयः—भानोः साभ्रवायुविघट्टिताः नानावर्णांशवः व्योम्नि चाप संस्थानं (भवन्ति) तत् इन्द्र चापं प्रदृश्यते ।

विमला—सूर्य की अनेकवर्णवाली किरणें वायु और बादल के योग से अनेक प्रकार के रङ्गों से रञ्जित होकर आकाश में धनुष के आकार में दिखाई देती हैं जिन्हें इन्द्रधनुष कहा जाता है ॥ १ ॥

अथवा शेषनागेन्द्र दीर्घनिश्वाससम्भवम् ।
विदिक्षुजं दिक्षुजं च तादिङ्नृपविनाशनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अथवा शेषनाग के उच्च श्वास लेने से उनके विष के प्रभाव से इन्द्रधनुष बन जाता है । वह जिस दिशा में अथवा कोण में दृष्टिगोचर होता है उस देश के राजा का विनाश करता है ॥ २ ॥

पीतपाटलनीलैश्च वह्नि शस्त्रास्त्रभीतिदम् ।
वृक्षजं व्याधिदं चापं भूमिजं[1]सस्यनाशनम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—पीत, पाटल, नीलैश्च इन्द्रचापं वह्नि शस्त्रास्त्र भीतिदम् भवति । वृक्षजं चापं व्याधिदम् भूमिजं चापं सस्यनाशनम् करोति ।

विमला—पीला, पाण्डुवर्ण तथा नील वर्ण का इन्द्रचाप अग्निभय तथा युद्धभय कारक होता है । जो वृक्ष के ऊपर सूर्य की किरणों के पड़ने से वृक्ष शिखरों पर दीख पड़े तो जनवर्ग रोगव्याधि से कष्ट में रहे तथा भूमि पर दिखाई पड़ने से धान्य की हानि होती है ॥ ३ ॥

अवृष्टिदं जलोद्भूतं वाल्मीके युद्धभीतिदम् ।
अवृष्टौ वृष्टिदं चैन्द्र्यांदिशि वृष्टचामवृष्टिदम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—जलोद्भूतं अवृष्टिदम्, वल्मीके युद्ध भीतिदम्, ऐन्द्र्यां दिशि अवृष्टौ वृष्टिदम्, वृष्ट्यामवृष्टिदम् भवति ।

---

१. 'भूमिदं' इति मूलपाठः ।

विमला—जल में दृष्टि गोचर हो तो अवर्षण सूचक, वाल्मीक से उत्पन्न युद्ध भयकारक, तथा पूर्व दिशा में दृष्टि गोचर होने पर बिना वर्षा की वर्षा तथा वर्षाकाल में अवर्षणजन्य अकाल पड़ता है ॥ ४ ॥

सदैववृष्टिदं पश्चाद्दिशोरितरयोस्तथा ।
रात्र्यामिन्द्रधनुः प्राच्यां नृपहानिर्भवेद्यदि ॥ ५ ॥

अन्वयः—पश्चात् (दिशि दर्शने) सदैव वृष्टिदम् तथा इतरयोः दिशोः अपि वृष्टिदम् । राञ्यां प्राच्यां इन्द्रधनुः दर्शने नृपहानिः भवेत् ।

विमला—पश्चिम दिशा में या अन्य दिशा में (पूर्वेतर) सदैव वृष्टि होती है । रात्रि में यदि पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो राजा का नाश होता है ॥ ५ ॥

याम्यां सेनापतिं हन्ति पश्चिमे नायकोत्तमम् ।
मन्त्रिणं सौम्यदिग्भागे सचिवं कोणसम्भवम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—याम्यां (इन्द्र धनुष दर्शनेन) सेनापतिं हन्ति, पश्चिमे नायकोत्तमम्, सौम्यदिग्भागे सति मन्त्रिणं, कोण सम्भवम् सचिवं हन्ति ।

विमला—दक्षिण दिशा में सेनापति को कष्ट, पश्चिम में सरदार (श्रेष्ठ) को कष्ट, उत्तर में मन्त्री और कोणों में दृष्टिगोचर होने पर भी मन्त्री को कष्टदायक होता है ॥ ६ ॥

रात्र्यामिन्द्रधनुः [1]शुक्लवर्णाढ्यं विप्रपूर्वकम् ।
हन्ति यद्दिग्भवं स्पष्टं तद्दिगीशनृपोत्तमम् ॥ ७[2] ॥

अन्वयः—रात्र्यां शुक्ल वर्णाढ्यं इन्द्रधनुः विप्र पूर्वकं हन्ति । यद्दिग्भवं चापं स्पष्टं तद्दिगीश नृपोत्तमं हन्ति ।

विमला—रात्रि में पूर्व दिशा में शुक्ल वर्ण आदि का इन्द्रधनुष दृष्टिगोचर हो तो ब्राह्मणादिक को नष्ट करे । अर्थात् श्वेतवर्ण का ब्राह्मणों को, रक्तवर्ण का क्षत्रियों को, पीतवर्ण का वैश्यों को और कृष्ण

---

१. 'शुक्लवर्णाद्यं' इति साधुपाठः ।

२. उक्तञ्च बृहत्संहितायाम् आचार्य वराहमिहिरेणः—"निशि सुरचापं सितवर्णाद्यं जनयति पीडां द्विजपूर्वाणाम् । भवति च यस्यां दिशि तद्देश्यं नरपतिमुख्यं नचिराद्धन्यात् ।

वर्ण का शूद्रों को कष्टकारक होता है। जिस दिशा में स्पष्ट इन्द्रधनुष दृष्टिगोचर हो उस दिशा के राजा को नष्ट करता है॥ ७॥

अवनीगाढ़मच्छिन्नं प्रतिकूलधनुद्वयम्।
नृपांतकृद्यदि भवेदानुकूल्यं न तच्छुभम्॥ ८॥

इति श्रीनारदीय संहितायां इन्द्रचाप लक्षणाध्यायः
पञ्चचत्वारिंशत्तमः।

अन्वयः—अछिन्नं अवनीगाढं (अनुकूल फलं शुभफलमित्यर्थः) यदि धनुद्वयम् प्रतिकूलं (अशुभफलं) नृपान्तकृत् भवेद् तच्छुभम् आनुकूल्यं न भवेत्।

विमला—सुन्दर पूर्ण इन्द्रधनुष भूमिपर शुभ फलदायक होता है। यदि दो धनुष दिखाई दे तो अशुभ फलदायक होता है। राजाओं का नाश होता है और फल अनुकूल नहीं होता है॥ ८॥

इति श्री नारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
इन्द्रचापलक्षणाध्याय समाप्त।

अथ गन्धर्वनगर दर्शनाध्यायः

गन्धर्वनगरं दिक्षु दृश्यतेऽनिष्टदं क्रमात् ।
भूभुजां वा चमूनाथसेनापतिपुरोधसाम् ॥ १ ॥

अन्वयः—दिक्षु गन्धर्व नगरं यदा दृश्यते तदा भूभुजां, चमूनाथ, सेनापति वा पुरोधसां क्रमात् अनिष्टदं भवति ।

विमला—पूर्वादि दिशाओं में यदि गन्धर्वनगर दृष्टिगोचर हो तो राजा, सेनापति, मन्त्री और राज पुरोहित का क्रमशः अनिष्ट होता है ॥ १ ॥

सित, रक्त, पीत कृष्णं विप्रादीनामनिष्टदम् ।
रात्रौ गन्धर्वनगरं धराधीशविनाशनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—सित, रक्त, पीत, कृष्ण (क्रमात्) विप्रादीनां (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्राणां) अनिष्टदम् रात्रौ (यदा) गन्धर्वनगरं (दृश्यते) तदा धराधीश विनाशनं भवति ।

विमला—सफेद, लाल, पीला और काले वर्णवाला गन्धर्वनगर क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रवर्ण के लिए अनिष्ट सूचक होता है । यदि गन्धर्वनगर रात्रि में देखा जाय तब राजा का विनाश होता है ।

इन्द्रचापाग्निधूमाभं सर्वेषामशुभप्रदम् ।
चित्रवर्णं चित्ररूपं प्राकारध्वजतोरणम् ॥ ३ ॥
दृश्यते चेन्महायुद्धमन्योन्यं धरणीभुजाम् ॥ ४ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां गन्धर्वनगर दर्शनाध्यायः
षट्चत्वारिंशत्तमः ।

अन्वयः—इन्द्रचाप, अग्नि, धूमाभं सर्वेषां अशुभप्रदम् भवति । चित्रवर्णं चित्ररूपं प्राकारध्वजतोरणम् चेत् दृश्यते तदा धरणीभुजाम् अन्योन्यं युद्धं भवेत् ।

विमला—इन्द्रचाप, अग्नि अथवा धूम की तरह यदि गन्धर्वनगर दिखाई दे तो सभी के लिए अनिष्ट सूचक होता है । चित्रवर्ण, चित्ररूप, किला, ध्वज या तोरण के आकार में दिखाई देने पर राजाओं में परस्पर युद्ध होता है ॥ ३-४ ॥

इति श्री नारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
गन्धर्वनगर दर्शनाध्याय समाप्त ।

अथ प्रतिसूर्यलक्षणाध्यायः

[1]प्रतिसूर्यनिभः स्निग्धः सूर्यः पार्श्वे शुभप्रदः ।
वैडूर्यसदृशस्वच्छः शुक्लोवाऽपि सुभिक्षकृत् ॥ १ ॥

अन्वयः—प्रतिसूर्यनिभः स्निग्धः सूर्यः पार्श्वे शुभप्रदः भवति । वैडूर्यसदृशः स्वच्छः अपि च, शुक्लो वा तदा सुभिक्षकृत् भवति ।

विमला—कभी-कभी बादलों और सूर्यकिरणों के सांघातिक योग से सूर्य का दूसरा बिम्ब भी दृष्टिगोचर हो जाता है उसका दर्शन अनिष्ट सूचक होता है । उसका फल बतलाते हुए भगवान नारद जी कहते हैं कि यदि स्निग्ध वर्ण का विकार रहित प्रतिसूर्य आगे-पीछे (पार्श्व में) दिखलाई पड़े तो शुभ होता है ॥ १ ॥

पीताभो व्याधिदः कृष्णो मृत्युदो युद्धदारुणः ।
माला चेत्प्रतिसूर्याणां शश्वत् चौर भयप्रदा ॥ २[2] ॥

अन्वयः—पीताभः व्याधिदः, कृष्णः मृत्युदः युद्धदारुणः, प्रतिसूर्याणां माला (दृश्यते) चेत् तर्हि शश्वत् चौर भयप्रदा भवति ।

विमला—पीला प्रतिसूर्य रोग देने वाला तथा काले वर्ण का प्रति सूर्य मृत्युकारक एवं दारुण युद्धकारक होता है । यदि प्रतिसूर्यों की माला दृष्टिगोचर हो तो निरन्तर चोरों का भय होता है ॥ २ ॥

---

१. प्रति सूर्यः द्वितीय सूर्यः (कभी-कभी ऐसी स्थिति आती है कि दो सूर्य दृष्टिगोचर होता है । इसे भ्रम कहा जाय या अन्य जो भी नामकरण किया जाय पर ऐसी स्थिति आती अवश्य है । इसे समझने के लिए अपनी एक आँख बन्द करके दूसरी आँख के ऊपर या नीचे के पलकों को थोड़ा हल्का दबाने से स्पष्ट ही ग्रह दो दिखाई पड़ने लगता है इसतरह बादलों और सूर्य रश्मियों के पारस्परिक संघात से भी स्थिति पैदा होती है और सूर्य का दो विम्ब परस्पर दृष्टिगोचर होने लगता है ।

२. उक्तञ्च वराहमिहिरेण :—

पीतो व्याधिं जनयत्य शोकरूपश्च शस्त्रकोपाय ।
प्रतिसूर्याणां माला दस्युभयातङ्कनृपहन्त्री ॥

जलदोदक् प्रतिसूर्यो भानोर्याम्येनिलप्रदः ।
उभयस्थोम्बुभयदो नृपहोपर्यधो नृहा ॥ ३ ॥

अन्वयः—उदक् (उदीच्यां दिशि) प्रतिसूर्यः जलदः, याम्ये भानो अनिलप्रदः, उभयस्थः अम्बुभयदः, उपरि (सूर्यस्य उपरि) दृष्टः सूर्यः नृपहा, अधः दृष्टः प्रतिसूर्यः नृहा (प्रजाहरः) ।

विमला—सूर्य से उत्तर दिशा में प्रतिसूर्य दृष्टिगोचर हो तो वृष्टि होती है और दक्षिण दिशा में दृष्टिगोचर हो तो वायु का वेग रहता है। दोनों तरफ होने से जल भय होता है। यदि सूर्य के ऊपर ही प्रति सूर्य हो तो राजा का नाश हो और नीचे दृष्टिगोचर होने पर जन वर्ग का नाश होता है ॥ ३ ॥

[1]पराभवन्ति तीक्ष्णांशोः प्रतिसूर्याः समन्ततः ।
जगद्विनाशमाप्नोति तथा शीतद्युतेरपि ॥ ४ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां प्रतिसूर्यलक्षणाध्यायः सप्तचत्वारिंशत्तमः ।

अन्वयः—समन्ततः (चतुर्षुदिक्षु) प्रतिसूर्याः तीक्ष्णांशो पराभवन्ति (तदा) जगत् विनाशं आप्नोति । तथा शीतद्युतेरपि एवं फलं बोध्यम् ।

विमला—सूर्य बिम्ब के चतुर्दिक यदि प्रतिसूर्य होकर सूर्य को पराभूत (कान्तिहीन) कर दें तो संसार का विनाश होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा का फल भी समझना चाहिए ॥ ४ ॥

इति श्री नारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
प्रतिसूर्यलक्षणाध्याय समाप्त ।

---

१. 'पराभवति' इति मूल पाठः ।

अथ निर्घातलक्षणाध्यायः

[1]वायुनाभिहतो वायुर्गगनात्पतितः क्षितौ ।
तदादीप्तः खग्रसतः स निर्घातोति दोषकृत् ॥ १ ॥

अन्वयः—वायुना अभिहतः वायुः गगतात् क्षितौ पतति स्वगुरुतः यदादीप्तः स निर्घातः अतिदोषकृत् भवति ।

विमला—वायु के द्वारा परस्पर प्रताड़ित वायु आकाश से भूमि पर जब गिरता है तो अपने गुरुवेग के कारण प्रज्वलित हो जाता है उसे निर्घात कहते हैं और यह अत्यन्त दोष कारक होता है ॥ १ ॥

निर्घातोऽर्कोदये नेष्टः क्षितीशानां विनाशदः ।
आयामात्प्राक्पौरजनशूद्राणां चैव हानिदः ॥ २ ॥

अन्वयः—अर्कोदये निर्घातः नेष्टः क्षितीशानां विनाशः भवति । आयामात् (यामदिनपर्यन्तं) प्राक् पौरजन शूद्राणां च हानिदः भवति ।

विमला—सूर्योदय काल का निर्घात अशुभ सूचक होता है, इसमें राजाओं का नाश होता है। यदि एक प्रहर (सूर्योदय से ३ घंटे) के अन्दर हो तो नागरिक शूद्रों को कष्ट होता है ॥ २ ॥

आमध्याह्ने तु विप्राणां नेष्टो राजोपजीविनाम् ।
तृतीययामे वैश्यानां जलजानामनिष्टदः ॥ ३ ॥

अन्वयः—आमध्याह्ने तु विप्राणां राजोपजीविनां जनानां च नेष्टः । तृतीययामे वैश्यानाम् जलजानां च अनिष्टदः भवति ।

विमला—दो प्रहर तक यदि दिखाई दे तो ब्राह्मणों को तथा राज कर्मचारियों को कष्ट होता है। तीसरे प्रहर में निर्घात होने से व्यापारियों को तथा जलचर जीवों को कष्ट होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे चार्थनाशाय सन्ध्यायां हन्तिसङ्करान् ।
आद्ये यामे सस्यहानिः द्वितीये तु पिशाचकान् ॥ ४ ॥

---

1. उक्तञ्चाचार्य गर्गेण :—
यदान्तरिक्षे बलवान् मारुतो मारुताहतः ।
पतत्यधः स निर्घातो भवेदनिलसम्भवः ॥

अन्वयः—चतुर्थे च अर्थनाशाय, सन्ध्यायां सङ्करान् हन्ति, (रात्रौ) आद्ये यामे सस्यहानिः, द्वितीये तु पिशाचकान् ।

विमला—चौथे प्रहर में निर्घात से धन का नाश, सन्ध्या में वर्णसङ्करों की हानि, रात्रि के प्रथम प्रहर में धान्य हानि और दूसरे प्रहर में पिशाचों का नाश होता है ॥ ४ ॥

हन्त्यर्द्धरात्रे तुरगांस्तृतीये शिल्पिलेखकान् ।
चतुर्थयामे निर्घातः पतन् हन्ति तदाजनान् ॥ ५ ॥
भीमजर्जरशब्दः स तत्र तत्र दिगीश्वरम् ॥ ६ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां निर्घातलक्षणाध्यायोऽष्टचत्वारिंशत्तमः ।

अन्वयः—अर्द्धरात्रे तुरगान् हन्ति, तृतीये शिल्पिलेखकान्, चतुर्थयामे पतन् निर्घातः जनान् हन्ति भीमजर्जरशब्दः (यत्र यत्र) तत्र तत्र दिगीश्वरम् हन्ति ।

विमला—आधी रात में निर्घात हो तो घोड़ों को नष्ट करे । तीसरे प्रहर में निर्घात होने से लेखकों और शिल्प कर्म करने वालों का नाश होता है । चौथे प्रहर में निर्घात गिर कर जनवर्ग को मारता है । यह निर्घात जहाँ जहाँ भयङ्कर तथा जर्जर शब्द करे उस दिशा के राजा को कष्टदायक होता है ॥ ५–६ ॥

इति श्री नारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
निर्घातलक्षणाध्याय समाप्त ।

अथ दिग्दाहलक्षणाध्यायः

[1]दिग्दाहः पीतवर्णश्चेत्क्षितीशानां भयप्रदः ।
देशनाशायाग्निवर्णोऽरुणवर्णोऽनिल प्रदः ॥ १ ॥

अन्वयः—पीतवर्णः दिग्दाहः चेत् क्षितीशानां भयप्रदः, अग्निवर्णः देशनाशाय, अरुणवर्णः अनिलप्रदः भवति ।

विमला—पीतवर्ण का दिग्दाह हो तो राजाओं को भय देने वाला, अग्निवर्ण हो तो देश नाशक तथा लाल वर्ण का हो तो प्रबल वायु चलने से कष्ट होता है ॥ १ ॥

विशेष—यह दिग्दाह प्रायः सूर्यास्तकाल में तथा कभी-कभी सूर्योदय काल में दिखाई देता है । एक विशेष प्रकार की ज्वाला लपटों के साथ दिखाई पड़ती है उसे आचार्यों ने दिग्दाह की संज्ञा दी है ।

धूम्रः सस्य विनाशाय कृष्णः शस्त्रभयप्रदः ।
प्राग्दाहः क्षत्रियाणां च नरेशानामनिष्टदः ॥ २ ॥

अन्वयः—धूम्रः (धूम्रवर्णः) सस्य विनाशाय, कृष्णः शस्त्रभयप्रदः, प्राग्दाहः क्षत्रियाणां नरेशानां च अनिष्टदः भवति ।

विमला—धूम्रवर्ण का दिग्दाह खेती को नष्ट करता है, तथा काले वर्ण का दिग्दाह शस्त्र-भय करता है। पूर्व दिशा में होने वाला दिग्दाह क्षत्रियों तथा राजाओं को अशुभ फलद होता है ॥ २ ॥

आग्नेय्यां युवराजस्य शिल्पिनामशुभप्रदः ।
पीडां व्रजन्ति याम्यायां मूकवैश्यनराधमाः ॥ ३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—अग्निकोण में युवराज तथा शिल्पियों के लिए अशुभ सूचक होता है । दक्षिण दिशा में दिग्दाह हो तो गूँगे, व्यापारी तथा नीच कर्म करने वालों को पीड़ा होती है ॥ ३ ॥

---

१. उक्तञ्च वराहमिहिरेण :—

दाहो दिशां राजभयाय पीतो देशस्य नाशाय हुताशवर्णः ।
यश्चारुणः स्यादपसव्यवायुः सस्यस्य नाशं स करोति दृष्टः ॥

नैर्ऋत्यां दिशिचौराश्च [1]पुनर्भूप्रमदां नृणाम् ।
प्रतीच्यां कृषिकर्तारो वायव्यां पशुजातयः ॥ ४ ॥
[2]सौम्ये विप्रादि चैशान्यां वैश्यानां खण्डिनोऽखिलाः ।
दिग्दाहः स्वर्णवर्णाभो लोकानां मङ्गलप्रदः ॥५॥

इति श्रीनारदीय संहितायां दिग्दाहलक्षणाध्यायः
एकोनपञ्चाशत्तमः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—नैऋत्यकोण में चोरों तथा दो विवाह वालों को, पश्चिम में कृषकों को, वायव्य में पशुओं को, उत्तर में ब्राह्मण को तथा ईशानकोण में वैश्यादि सभी जीवों को कष्ट होता है। यदि दिग्दाह स्वर्ण-वर्ण का हो तो संसार के लिए मङ्गलकारक होता है ॥ ४–५ ॥

इति श्री नारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
दिग्दाहलक्षणाध्याय समाप्त ।

---

१. पूनर्भूप्रमदां पूनर्भूस्त्रियः । अक्षतयोनित्वाद्यापुनरुह्यते सा भूनर्भूः ॥
तथा च—

पुनर्भूः सोह्यते भूयो याऽक्षतत्वाद्यथाविधि; ॥

२. सौम्ये विप्रादिगीशानां वैश्यानां खण्डितोऽखिलाः । निर्मलं स्वऋक्षगणं प्रदक्षिणगतोनिलः' इति पाठभेदः ।

अथ रजोलक्षणाध्यायः

सितेन रजसाछन्नादिग्ग्रामवनपर्वताः ।
यथा तथा भवन्त्येते निधनं यान्ति भूमिपाः ॥ १ ॥

अन्वयः—सितेन रजसा-आछन्ना दिग् ग्राम वन पर्वताः यथा तथा एते भूमिपाः निधनं भवन्ति ।

विमला—दिशा, ग्राम, वन और पर्वत यदि सफेद धूलि से आच्छादित हो जायँ तो राजाओं की मृत्यु होती है ॥ १ ॥

रजः समुद्भवो यस्यां दिशि तस्यां विनाशनम् ।
तत्र तत्रापि जन्तूनां हानिदः शस्त्रकोपतः ॥ २ ॥

अन्वयः—यस्यां दिशि रजः समुद्भवः तस्यां विनाशनम् । तत्र तत्रापि जन्तूनां शस्त्रकोपतः हानिदः भवति ।

विमला—जिस दिशा से रज (आँधी) उठता है उस दिशा में रहने वाले प्राणियों के लिए शस्त्र भय कारक होता है ॥ २ ॥

मन्त्रिजनपदानां च व्याधिदं चासितं रजः ।
अर्कोदये विजृम्भन्ति गगनं स्थगयन्ति च ॥ ३ ॥
दिनद्वयं च त्रिदिनमत्युग्रभयदं रजः ।
रजो भवेदेकरात्रं नृपं हन्ति निरन्तरम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—असितं च रजः मन्त्री, जनपदानां च व्याधिदम् , यदा अर्कोदये विजृम्भन्ति गगनं च स्थगयन्ति तदा द्विनद्वयं त्रिदिनम् वा अत्युग्रभयदम् । यदा रजः एकरात्रं निरन्तरम् भवेत् तदा नृपं हन्ति ।

विमला—काले वर्ण का रज (धूल) मन्त्री तथा जनपद के लिए व्याधि कारक होता है । सूर्योदय काल में रज उठकर यदि आकाश में फैल जाय तो दो या तीन दिन तक भयानक वायु का प्रकोप रहता है । और यदि एक रात्रि तक आकाश में धूल चढ़ी रहे तो राजा का विनाश होता है ॥ ३-४ ॥

परचक्रागमं न स्याद्द्विरात्रं सततं यदि ।
क्षामडामरमातंकस्त्रिरात्रं सततं यदि ॥ ५ ॥

विमला—द्विरात्रं यदि सततं रजः तदा परचक्रागमं न स्यात्। त्रिरात्रं सततं यदि रजो भवेत् तदा क्षामडामरम् आतङ्को भवेत्।

अन्वयः—यदि दो रात्रि तक आकाश में बराबर धूल चढ़ी रहे तो परचक्रागम (अन्य राजा का आगमन) नहीं होता है। और तीन रात्रि तक धूल रहे तो दुष्टों का लुटेरों का भय प्रजा में व्याप्त रहे तथा जनवर्ग रोग से कष्ट में रहें॥ ५॥

ईतिदुर्भिक्षमतुलं यदि रात्रचतुष्टयम्।
निरन्तरं पञ्चरात्रं महाराजविनाशम्॥ ६॥
ऋतावन्यत्र शिशिरात्सम्पूर्ण फलदं रजः॥

इति श्रीनारदीय संहितायां रजोलक्षणाध्यायः पञ्चाशत्तमः।

अन्वयः—यदि रात्र चतुष्टयम् रजः स्यात् तदा अतुलं ईति दुर्भिक्षं स्यात्। निरन्तरम् पञ्चरात्रम् रजः स्यात् महाराज विनाशनम् भवति। शिशिरात् अन्यत्र ऋतौ रजः सम्पूर्ण फलदः भवति।

विमला—चार रात्रि तक रहे तो ईति भय हो तथा दुर्भिक्ष पड़े; पाँच रात्रि तक निरन्तर रहे तो महाराज का विनाश हो। शिशिर ऋतु के अतिरिक्त समय की आँधी फलदायक है अर्थात् शिशिर ऋतु में आँधी चलने का कोई फल नहीं होता॥ ६॥

इति श्री नारदसंहिता की विमला हिन्दी टीका में
रजोलक्षणाध्याय समाप्त।

अथ भूकम्पलक्षणाध्यायः

भूभारखिन्ननागेन्द्रदीर्घनिःश्वाससम्भवः ।
भूकम्पः सोऽपि जगतामशुभाय भवेत्तदा[1] ॥ १ ॥

अन्वयः—भूभारखिन्ननागेन्द्र दीर्घनिःश्वाससम्भवः भूकम्पः सोऽपि तदा जगताम् अशुभाय भवेत्। (जगताम् भूकम्पः अशुभं भवति) इति।

विमला—भूमि के भार से थक कर जब भगवान शेषनाग निःश्वास करते हैं तो भूकम्प होता है ॥ १ ॥

नोट—उक्त धारणा पुराणों के कथानकों से बनती है। किन्तु यह सर्वविदित है कि रासायनिक विविध प्रतिक्रियायें भूमिगर्भ में होती रहती हैं जिनके परिणाम स्वरूप विविध खनिज पदार्थ हमें उपलब्ध होते हैं। और जब कभी रासायनिक प्रतिक्रियाओं में विकृति आती है तो भूमि की उष्मा भूमि के परतों को तोड़ कर बाहर निकलकी है और उसे हम ज्वालामुखी के नाम से पुकारते हैं जिसके कारण भूकम्प होता है।

यामक्रमेण भूकम्पो द्विजातीनामनिष्टदः ।
अनिष्टदो क्षितीशानां सन्ध्ययोरुभयोरपि ॥ २ ॥

अन्वयः—द्विजातीनां यामक्रमेण भूकम्पः इष्टदो भवति, उभयोऽपि संध्ययोः क्षितीशानाम् अनिष्टदो भवति।

विमला—याम क्रम से ब्राह्मणादि वर्णों के लिए भूकम्प अशुभ फलदायक होता है। जैसे-प्रथम प्रहर में ब्राह्मणों को, द्वितीय में क्षत्रियों को, तृतीय में वैश्यों को और चौथे प्रहर में शूद्रों को अशुभ फलदायक भूकम्प होता है। यदि दोनों सन्धियों में भूकम्प हो तो राजाओं को कष्ट होता है ॥ २ ॥

अर्यमाद्यानिचत्वारि दस्रेन्द्वदिति भानि च ।
वायव्यमण्डलं त्वेतदस्मिन्कम्पो भवेद्यदि ॥ ३ ॥
नृपसस्य-वणिग्वेश्याशिल्पवृष्टिविनाशदः ।

---

1. 'भवेत्सदा' इति पाठान्तरम्।

अन्वयः—अर्यमा आद्यानि चत्वारि दस्र, इन्दु, अदिति भानि च वायव्यमण्डलं भवति एतस्मिन्भूकम्पौ यदिभवेत् तदा नृप-सस्य-वणिक्-वेश्या, शिल्प, वृष्टि विनाशदो भवति।

विमला—उत्तराफाल्गुनी से चार नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती) अश्विनी, मृगशिर्ष और पुनर्वसु इन नक्षत्रों को 'वायव्य-मण्डल' कहते हैं। वायव्यमण्डल में भूकम्प होने से, राजा, धान्य, व्यापारी, वेश्या, शिल्पज्ञ और वर्षा का विनाश होता है ॥ ३ ॥

पुष्यद्विदैवभरणी पितृभाग्यानलाऽजपात्[1] ॥ ४ ॥
आग्नेयमण्डलं त्वेतदस्मिन्कम्पोभवेद्यदि ।
नृपवृष्टयर्घनाशाय हन्ति शाम्बरटङ्कणान् ॥ ५ ॥

अन्वयः—पुष्य, द्विदैव, भरणी, पितृ, भाग्य, अनल, अजपात् आग्नेयमण्डलं एतस्मिन्यदि कम्पो भवेत् तदा नृप, वृष्टि, अर्घनाशाय भवति तथा शांवर (शाम्भर) टङ्कणान् अपि हन्ति।

विमला—पुष्य, विशाखा, भरणी, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, कृत्तिका, पूर्वाभाद्रपदा ये नक्षत्र 'अग्निमंडल' में आते हैं। इनमें भूकंप होने से राजा का विनाश, अवर्षण, महँगाई रहे तथा शांभर नमक और सुहागा इत्यादि वस्तु महँगा रहे ॥ ४–५ ॥

अभिजिद्धातृ-वैश्वेन्द्रवसुवैष्णवमैत्रभम् ।
वासवं मण्डलं त्वेतदस्मिन् कम्पो भवेद्यदि ॥ ६ ॥
राजनाशाय कोपाय हन्ति [2]माहेयदर्दुरान् ।

अन्वयः—अभिजित्, धातृ, वैश्व, इन्द्र, वसु, वैष्णव, मैत्रभम् एते वासवमंडलसंज्ञकः एतस्मिन् यदि कंपो भवेत् तदा राजनाशाय, कोपाय च भवति, माहेय दर्दुरान् च हन्ति।

विमला—अभिजित्, रोहिणी, उत्तराषाढ़, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, श्रवण, और अनुराधा ये नक्षत्र 'वासवमंडल' के हैं। इनमें भूमिकंप होने से

---

१. 'पितृभाग्याजपानि च' इति मूलपाठः।

२. माहेयः–जनपदविशेषः यथा–"कुट्टा परान्ता माहेयाः कक्षाः सामुद्र निष्कुटाः" अथवा माहेयः मङ्गलग्रहः (समयामृते)।

दर्दुरः–देशविशेषः शैलविशेषो वा यथा–"स निर्विश्य यथाकामं तटेष्वालीन-चन्दनौ। स्तनाविवदिशस्तस्याः शैलौमलयदर्दुरौ ॥" अथवा अभ्रकधातु विशेषः।

राजा का नाश हो तथा राजाओं में परस्पर वैर बढ़े, माहेय तथा दर्दुर देश का नाश होता है ॥ ६ ॥

मूलाहिर्बुध्न्यवरुणाः पौष्णमार्द्राहिभानि च ॥ ७ ॥
वारुणं मण्डलं त्वेतदस्मिन् कम्पो भवेद्यदि ।
राजनाशकरोहन्ति पौण्ड्रचीनपुलिन्दकान् ॥ ८ ॥

अन्वयः—मूल, अहिर्बुध्न्य, वरुण, पौष्णभ, आर्द्रा, अहिभानि च एते वारुणमण्डलं, एतस्मिन् यदि कम्पो भवेत् तदा राजनाशकरः पौण्ड्र, चीन पुलिन्दकान् च हन्ति ।

विमला—मूल, उत्तराभाद्रपद, शतभिषा, रेवती, आर्द्रा और आश्लेषा ये नक्षत्र 'वरुणमण्डल' के हैं। इनमें भूकंप होने से राजा का नाश होता है तथा पौण्ड्र, चीन और पुलिन्द देशों का नाश होता है ॥ ८॥

प्रायेण निखिलोत्पाताः क्षितीशानामनिष्टदाः ।
षड्भिर्मासैश्च भूकंपो द्वाभ्यां दाहफलप्रदः ॥ ९ ॥
अनुक्तः पंचभिर्मासैस्तदानीं फलदं रजः ॥ १० ॥

इति श्रीनारदीयसंहिता भाषाटीकायां भूकम्पलक्षणाध्यायः एकपंचाशतम् ।

अन्वयः—प्रायेण निखिलोत्पाताः क्षितीशानाम् अनिष्टदा भवन्ति । षड्भिः मासैश्च भूकम्पः फलं भवति द्वाभ्यां मासाभ्यां दाह फलप्रदो भवति ॥ पंचभिः मासैः अनुक्तं रजः उत्पातानां च फलं भवति ।

विमला—प्रायः सभी उत्पात विशेषकर राजाओं को अशुभ कहा गया है। भूकंप का फल ६ महीने में होता है और दो महीने में दिग्दाह का फल होता है। रज तथा अन्य उत्पात का फल पाँच महीने में प्राप्त होता है ॥ ९–१० ॥

श्री नारद संहिता की 'विमला' हिन्दी टीका में
भूकम्पलक्षणाध्याय समाप्त ।

अथ नक्षत्रगुणाध्यायः

सुरूपः सुभगो रूक्षो मतिमान्भूषणप्रियः ।
अङ्गनावल्लभः शूरो यो जातश्चाश्विभेनरः ॥ १ ॥

अन्वयः—अश्विभे जातः नरः सुरूपः, सुभगः, रूक्षः, मतिमान्, भूषणप्रियः, अङ्गनावल्लभः, शूरो वा भवेत् ।

विमला—अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेनेवाले व्यक्ति, सुन्दर, ऐश्वर्य-वान्, रूक्षवर्ण, बुद्धिमान, आभूषण प्रिय, स्त्रियों का प्रिय तथा बहादुर होता है ॥ १ ॥

कामोपचारकुशलः सत्यवादी दृढव्रतः ।
अरोगः सुभगो जातो भरण्यां लघुभुक्सुखी ॥ २ ॥

अन्वयः—भरण्यां जातो नरः कामोपचारकुशलः, सत्यवादी, दृढ-व्रतः, अरोगः, सुभगो, लघुभुक् एवं सुखी च भवति ।

विमला—भरणी नक्षत्रोत्पन्न कामशास्त्र में निपुण, सत्यवादी, दृढ-व्रती, निरोग, सुन्दर, ऐश्वर्य युत अल्पाहारी ओर सुखी होता है ॥ २ ॥

तेजस्वी मतिमान्दाता बहुभुक्प्रमदाप्रियः ।
गंभीरः कुशलो मानी वह्निनक्षत्रजः शुचिः ॥ ३ ॥

अन्वयः—वह्निनक्षत्रजातः नरः तेजस्वी, मतिमान्, दाता, बहु-भुक्, प्रमदाप्रियः, गंभीरः, कुशलः मानी एवं शुचिः भवति ।

विमला—कृत्तिका नक्षत्रोत्पन्न तेजस्वी, बुद्धिमान्, दाता, दीर्घ-भोजी, स्त्रियों से अधिक प्रेम करने वाला, गंभीर, चतुर तथा मानी होता है ॥ ३ ॥

सुरूपः स्थिरधीर्मानी भोगवान्सुरतप्रियः ।
प्रियवाक्चतुरो दक्षस्तेजस्वी ब्रह्मधिष्ण्यजः ॥ ४ ॥

अन्वयः—ब्रह्मधिष्ण्यजः नरः सुरूपः स्थिरधीः, मानी, भोगवान्, सुरतप्रियः, प्रियवाक् चतुरः, दक्षः तेजस्वी च भवति ।

विमला—रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले सुन्दर, स्थिर बुद्धिवाले, मानी, भोगी, कामी, प्रिय बोलने वाले, चतुर, दक्ष और तेजस्वी होते हैं ॥ ४ ॥

उत्साही चपलो भीरुर्धनी सामप्रियः शुचिः ।
आगमज्ञः प्रभुर्विद्वानिन्दुनक्षत्रजः सदा ॥ ५ ॥

अन्वयः—इन्दुनक्षत्रजः, सदाऽत्साही, चपलः, भीरुः, धनी, सामप्रियः, शुचिः, आगमज्ञः, प्रभुः, विद्वान् च भवति ।

विमला—मृगशीर्ष नक्षत्र में जन्म लेने वाले, चपल, उत्साही, डरपोक, धनी, सामप्रिय, पवित्र, शास्त्रज्ञ, प्रभु और विद्वान् होते हैं ॥ ५ ॥

अविचारपरः क्रूरः क्रयविक्रयनैपुणः ।
गर्विहिंस्रश्चण्डकोपी कृतघ्नः शिवधिष्ण्यजः ॥ ६ ॥

अन्वयः—शिवधिष्ण्यजः, अविचारपरः, क्रूरः, क्रयविक्रयनैपुणः, गर्वि, हिंस्रः, चण्डकोपी एवं कृतघ्नः च भवेत् ।

विमला—आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले व्यक्ति, अविचारी, क्रूर, व्यापार में पटु, व्यवहार में निपुण, हिंसा करने वाले, क्रोधी और कृतघ्न होते हैं ॥ ६ ॥

दुर्मेधा वा दर्शनीयः परस्त्रीकार्यनैपुणः ।
सहिष्णुरत्यसन्तुष्टः शीघ्रगोऽदितिधिष्ण्यजः ॥ ७ ॥

अन्वयः—अदिति धिष्ण्यजः, दुर्मेधा, दर्शनीयः, परस्त्रीकार्यनैपुणः, सहिष्णुः, अत्यसंतुष्टः, शीघ्रगः च भवति ।

विमला—पुनर्वसु नक्षत्रोत्पन्न दुष्ट बुद्धिवाले, दर्शनीय, पर स्त्री कार्य में दक्ष, सहनशील, असन्तोषी, और जल्दी-जल्दी चलने वाला होता है ॥ ७ ॥

पण्डितः [1]सुमनः शूरः कृपालुर्धार्मिकोधनी ।
कलाभिज्ञः सत्यवादीकामीपुष्यर्क्षजो लघुः ॥ ८ ॥

अन्वयः—पुष्यर्क्षजः, पण्डितः, सुमनः, शूरः, कृपालुः, धार्मिकः, धनी, कलाभिज्ञः, सत्यवादी कामी च भवति ।

---

१. 'सुगमः' इति पाठ भेदः ।

विमला—पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति, पंडित, ऐश्वर्यवान्, पराक्रमी दयालु, धार्मिक, धनी, कलाकार, सत्यवादी और सरल स्वभाव का होता है ॥ ८ ॥

श्रेष्ठो धूर्तः क्रूरशूरौ परदाररतः शठः ।
अवक्रो व्यसनी, दांतः सार्पनक्षत्रजो नरः ॥ ९ ॥

अन्वयः—सार्पनक्षत्रजः नरः श्रेष्ठो, धूर्तः, क्रूरः, शूरः, परदाररतः, शठः अवक्रो, व्यसनी एवम् च दान्तः भवति ।

विमला—आश्लेषा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति श्रेष्ठ, धूर्त्त, क्रूर, शूरवीर, परस्त्रीगामी, मूर्ख, सीधा, व्यसनी अथवा जितेन्द्रिय होता है ॥ ९ ॥

शूरः स्थूलहनुः कुक्षो कोपवक्तासहः [1]प्रभुः ।
गुरुदेवार्चने सक्तस्तेजस्वी पितृधिष्ण्यजः ॥ १० ॥

अन्वयः—पितृ धिष्ण्यजः शूरः स्थूलतनुः कुक्षः, कोपवक्ता, असहः, प्रभुः, गुरुदेवार्चने सक्तः, एवं तेजस्वी च भवति ।

विमला—मघा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले, शूरवीर, मोटे हनुवाले, स्थूल पेटवाले, क्रोधपूर्ण वचन बोलने वाले, असहिष्णु, समर्थ, तेजस्वी तथा देव एवं गुरु की आराधना में आसक्त होते हैं ॥ १० ॥

द्युतिमानटनो दाता नृपशास्त्रविशारदः ।
कार्याकार्यविचारज्ञो भाग्यनक्षत्रजः पटुः ॥ ११ ॥

अन्वयः—भाग्यनक्षत्रजः द्युतिमान्, अटनः, दाता, नृपशास्त्रविशारदः, कार्याकार्यविचारज्ञः, एवम् पटुः च भवति ।

विमला—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले सुन्दर, विचरण करनेवाले, दाता, राजनीतिज्ञ, कार्याकार्य विचार में समर्थ और बड़े चतुर होते हैं ॥ ११ ॥

जितशत्रुः सुखी भोगी प्रमदामर्दने कविः ।
कलाभिज्ञः सत्यरतः शुचिः स्यादर्यमर्क्षजः ॥ १२ ॥

अन्वयः—अर्यमर्क्षजः नरः जितशत्रुः, सुखी, भोगी, प्रमदामर्दने कविः, कलाभिज्ञः, सत्यरतः, शुचिः स्यात् ।

---

१. 'शुभुः' इति मूलपाठः ।

विमला—उत्तराफाल्गुनी में जन्म लेने वाले, शत्रुओं पर विजय पाने वाले, सुखी, भोगी, स्त्री भोग में निपुण, कलाकार, सत्यवादी और पवित्र हृदय के होते हैं ॥ १२ ॥

मेधावीतस्करोत्साही परकार्यरतो भटः ।
परदेशस्थितः शूरः स्त्रीलाभः सूर्यधिष्ण्यजः ॥ १३ ॥

अन्वयः—सूर्यधिष्ण्यजः नरः, मेधावी, तस्करः, उत्साही, परकार्यरतः, भटः, परदेशस्थितः, शूरः एवं स्त्रीलाभः भवति ।

विमला—हस्तनक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति बुद्धिमान, चोर, उत्साही, परकार्य में रत, परदेश में रहने वाला, पराक्रमी, स्त्री से लाभान्वित होने वाले होते हैं ॥ १३ ॥

चित्रमाल्याम्बरधरः कामशास्त्रविशारदः ।
द्युतिमान्धनवान्भोगी पण्डितस्त्वाष्ट्रधिष्ण्यजः ॥ १४ ॥

अन्वयः—त्वाष्ट्रधिष्ण्यजः, चित्रमाल्याम्बरधरः, कामशास्त्र विशारदः, द्युतिमान, धनवान्, भोगी, पण्डितः भवति ।

विमला—चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले सुन्दर वस्त्र तथा माला धारण करने वाले, कामशास्त्र में पटु, शोभा युक्त तेजस्वी, धनी, भोगी और पण्डित होते हैं ॥ १४ ॥

धार्मिकः प्रियवाक् शूरः क्रयविक्रयनैपुणः ।
कामी बहुसुतो दांतो विद्यावान्मारुतर्क्षजः ॥ १५ ॥

अन्वयः—मारुतर्क्षजः नरः, धार्मिकः, प्रियवाक्, शूरः, क्रयविक्रयनैपुणः, कामी, बहुसुतः, दांतः, विद्यावान्, भवति ।

विमला—स्वाती नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति धार्मिक, प्रिय बोलने वाले, पराक्रमी, क्रयविक्रय में निपुण, कामी, अधिक सन्तान वाले जितेन्द्रिय और विद्वान् होते हैं ॥ १५ ॥

अन्यायोपरतः श्लक्ष्णो मायापटुरनुद्यमः ।
जितेन्द्रियोऽर्थवाँल्लुब्धो विशाखर्क्षसमुद्भवः ॥ १६ ॥

अन्वयः—विशाखर्क्ष समुद्भवः; अन्यायोपरतः, श्लक्ष्णो, मायापटुः, अनुद्यमः, जितेन्द्रियः, अर्थवान्, लुब्धः भवति ।

विमला—विशाखा नक्षत्रोत्पन्न, अन्यायी, चतुर, मायावी, उद्यमहीन, जितेन्द्रिय, धनी और लोभी होते हैं ॥ १६ ॥

नृपकार्यरतः शूरो विदेशस्थाङ्गनापतिः ।
सुरूपश्छन्नपापश्च पिङ्गलो मैत्रधिष्ण्यजः ॥ १७ ॥

अन्वयः—मैत्रधिष्ण्यजः, नृपकार्यरतः, शूरः, विदेशस्थः, अङ्गनापतिः, सुरूपः, पिङ्गलो छन्नपापश्च, भवति ।

विमला—अनुराधा नक्षत्रोत्पन्न, राजकार्य में निपुण, पराक्रमी, परदेशवासी, स्त्रियों का प्रेमी, सुन्दर, छिपकर पाप करने वाला तथा पिङ्गल वर्ण का होता है ॥ १७ ॥

बहुव्ययपरः क्लेशसहः कामी दुरासदः ।
क्रूरचेष्टो मृषाभाषी धनवानिन्द्रधिष्ण्यजः ॥ १८ ॥

अन्वयः—इन्द्रधिष्ण्यजः, बहुव्ययपरः, क्लेशसहः, कामी, दुरासदः, क्रूरचेष्टः, मृषाभाषी धनवान् भवति ।

विमला—ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले, अपव्ययी (खर्चीले), कष्ट सहने वाले, कामी, समय पर न मिलने वाले, क्रूर कार्य में रत, झूठे और धनी होते हैं ॥ १८ ॥

हिंस्रोमानी च भोगी च परकार्यप्रकाशकः ।
मिथ्योपचारस्त्रीलोलः श्लक्ष्णो नैऋतधिष्ण्यजः ॥ १९ ॥

अन्वयः—नैऋतधिष्ण्यजः, हिंस्रः, मानी च, भोगी च, परकार्यप्रकाशकः, मिथ्योपचारः, स्त्रीलोलः श्लक्ष्णः भवति ।

विमला—मूल नक्षत्रोत्पन्न हिंसक, अभिमानी, भोगी, परनिन्दक, झूठा बोलने वाला, स्त्रीचपल और चतुर होता है ॥ १९ ॥

सुकलत्रः कामचारः कुशलो दृढसौहृदः ।
क्लेशभाग्वीर्यवान्मानी जलनक्षत्रसंभवः ॥ २० ॥

अन्वयः—जलनक्षत्रसंभवः, सुकलत्रः, कामचारः, कुशलः, दृढसौहृदः, क्लेशभाग्, वीर्यवान्, मानी च भवति ।

विमला—पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति, सुन्दर स्त्रीवाले, कामी, चतुर, श्रेष्ठ मित्रता करने वाले, दुःखी (दुःख सहने वाले), बलिष्ठ तथा अभिमानी होते हैं ॥ २० ॥

नीतिज्ञो धार्मिकः शूरो बहुमित्रो विनीतवान्।
सुकलत्रः सुपुत्राढ्यश्चोत्तराषाढसम्भवः ॥ २१ ॥

अन्वयः—उत्तराषाढ़संभवः, नीतिज्ञः, धार्मिकः शूरः, बहुमित्रः, विनीतवान्, सुकलत्रः सुपुत्राढ्यश्च भवति।

विमला—उत्तराषाढ़ा में उत्पन्न व्यक्ति नीतिज्ञ, धार्मिक, शूर, विनीत, मित्रवाले, सुन्दर स्त्रीवाले, सुन्दर अनुकूल पुत्रवाले होते हैं ॥ २१ ॥

उदरे च दृढः श्रीमान्बहुवक्ता धनान्वितः।
काव्योक्त सुरताभिज्ञो धार्मिकः श्रवणर्क्षजः ॥ २२ ॥

अन्वयः—श्रवणर्क्षजः उदरेदृढ़ः, श्रीमान्, बहुवक्ता, धनान्वितः, काव्योक्त सुरताभिज्ञः, धार्मिकः भवति।

विमला—श्रवण नक्षत्रोत्पन्न, लम्बोदर, श्रीमान्, वक्ता, धनी, शास्त्र-सम्मतरतिक्रियावान् और धार्मिक होता है ॥ २२ ॥

धार्मिको व्यसनीलुब्धो नृत्यगीताङ्गनाप्रियः।
सामैकसाध्यस्तेजस्वी वीर्यवान्वसुधिष्ण्यजः ॥ २३ ॥

अन्वयः—वसुधिष्ण्यजः, धार्मिकः, व्यसनी लुब्धः, नृत्यगीताङ्गना-प्रियः, सामैकसाध्यः, तेजस्वी, वीर्यवान् च भवति।

विमलाः—धनिष्ठोत्पन्न व्यक्ति, धार्मिक, व्यसनी, लोभी, नृत्य-गीत एवं अङ्गना प्रिय, साम द्वारा कार्य करने वाला, तेजस्वी तथा बलवान होते हैं ॥ २३ ॥

दुर्गन्धो व्यसनीक्रूरो क्षयवृद्धियुतः शठः।
परदाररतः शूरः शततारर्क्षसम्भवः ॥ २४ ॥

अन्वयः—शततारर्क्षसंभवः, दुर्गन्धः, व्यसनी, क्रूरः, क्षयवृद्धियुतः, शठः, परदाररतः, शूरः च भवति।

विमला—शतभिषोत्पन्न व्यक्ति, दुर्गन्धयुक्त, व्यसनी, क्रूर, क्षय-वृद्धिरोगग्रस्त, शठ, परस्त्रीगामी और पराक्रमी होते हैं ॥ २४ ॥

उद्विग्नः स्त्रीजितः सौम्यः परनिन्दापरायणः।
दाम्भिको दुःसहः शूरश्चाजपादूधिष्ण्यसम्भवः ॥ २५ ॥

अन्वयः—अजपादूधिष्ण्यसंभवः, उद्विग्नः, स्त्रीजितः, सौम्यः, पर-निन्दापरायणः, दांभिकः, दुःसहः, शूरः भवति।

विमला—पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले, उद्विग्नमना, स्त्रीजित, सौम्य, परनिन्दा में रत, पाखण्डी, दुःसाहसी और शूर होते हैं ॥ २५ ॥

प्रजावान्धार्मिकोवक्ता जितशत्रुः सुखी विभुः ।
दृढव्रतः सदाकामी अहिर्बुध्न्यर्क्षसम्भवः ॥ २६ ॥

अन्वयः—अहिर्बुध्न्यर्क्षसंभवः, प्रजावान्, धार्मिकः, वक्ता, जितशत्रुः, सुखी, विभुः, दृढव्रतः, सदाकामी च भवति ।

विमला—उत्तराभाद्रपदा में उत्पन्न, सन्तानवाले, धार्मिक, वक्ता, शत्रुहन्ता, सुखी, समर्थ और दृढ व्रती तथा कामी होते हैं ॥ २६ ॥

रूपवान्धनवान्भोगी पण्डितश्च जलार्थभुक् ।
कामी च दुर्वृतः शूरः पौष्णजः परदेशगः ॥ २७ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां नक्षत्रगुणाध्यायो द्विपञ्चाशत्तमः ।

अन्वयः—पौष्णजः, परदेशगः, रूपवान्, धनवान्, भोगी, पण्डितश्च, जलार्थभुक्, कामी, शूरः, दुर्वृतः भवतिः ।

विमला—रेवती नक्षत्रोत्पन्न रूपवान्, धनी, भोगी, पंडित, जल से प्राप्त धन का भोगी, कामी, शूर, परदेशी तथा दुष्ट आचरण वाले होते हैं ॥ २७ ॥

श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
नक्षत्र गुणाध्याय समाप्त ।

अथ मिश्रप्रकरणम्

असंक्रान्तिर्द्विसंक्रान्तिः संसर्पाहस्पती समौ ।
मासौ तु वहथश्चान्द्रास्त्वधिमासः परः [1]क्षयः ॥ १ ॥

अन्वयः—असंक्रान्तिः संसर्पः द्विसंक्रान्तिः अहस्पतिः परः क्षयः अधिमासः कथ्येते, इमे भेदाः चान्द्राः ज्ञायन्ते ।

विमला—विना संक्रान्ति वाला तथा दो संक्रान्ति वाला ये क्रमशः 'संसर्प' और 'अहस्पति' कहे गये हैं ये चान्द्रमास के भेद हैं जिन्हें अधिमास और क्षयमास भी कहते हैं ॥ १ ॥

हिमाद्रिगङ्गयोर्मध्ये सुरार्चितवसुन्धरा ।
गोदावरीकृष्णवेण्योर्मध्ये काव्यवसुन्धरा ॥ २ ॥

अन्वयः—हिमाद्रिगङ्गयोः मध्ये, सुरार्चित वसुन्धरा, गोदावरीकृष्ण-वेण्योर्मध्ये काव्यवसुन्धरा कथ्यते ।

विमला—हिमालय और गङ्गाजी के मध्यभूमिभाग को बृहस्पति की भूमि और गोदावरी तथा कृष्णवेणी के मध्य की भूमि शुक्र की भूमि कही गई है ॥ २ ॥

विन्ध्यगोदावरीमध्ये भूमिः सूर्यसुतस्य च ।
विन्ध्याद्रिगङ्गयोर्मध्ये या भूमिः सा बुधस्य च ॥ ३ ॥

अन्वयः—विन्ध्य गोदावरीमध्ये भूमिः सूर्यसुतस्य च, विन्ध्याद्रि-गङ्गयोः मध्ये या भूमिः सा च बुधस्य भूमिः ।

विमला—विन्ध्याचल और गोदावरी के मध्य में शनि की भूमि तथा विन्ध्य पर्वत एवं गंगा जी के मध्य की भूमि बुध की भूमि कही गई है ॥ ३ ॥

या वेणीलङ्कयोर्मध्ये धरात्मजवसुन्धरा ।
समुद्रयन्त्रितक्षोणीनाथौ सूर्यहिमद्युती ॥ ४ ॥

---

१. 'स्मृतः' इति मूलपाठः ।

अन्वयः—वेणीलङ्कयोर्मध्ये या वसुन्धरा सा धरात्मजः, समुद्र यन्त्रित क्षोणीनाथौ सूर्यहिमद्युती।

विमला—वेणी नदी और लंका के मध्य मंगल की भूमि तथा समुद्र से यन्त्रित भूमि के अधिपति सूर्य और चन्द्रमा कहे गये हैं ॥४॥

इषमासि चतुर्दश्यामिन्दुक्षयतिथावपि ।
ऊर्जादौ स्वातिसंयुक्ते तदादीपावली भवेत् ॥ ५ ॥

अन्वयः—इषमासि चतुर्दश्यां इन्दुक्षयतिथौ अपि, ऊर्जादौ स्वातिसंयुक्ते तदा च दीपावली भवेत्।

विमला—आश्विन कृष्ण (वदी) चतुर्दशी को या अमावस्या को तथा कार्तिक के आदि (कृष्ण पक्ष) में स्वाति से युत जब दीपावली होती है (अग्रिम श्लोक से सम्बन्ध है) ॥ ५ ॥

तैले लक्ष्मीर्जले गङ्गा दीपावल्यां तिथौ भवेत् ।
अलक्ष्मी परिहारार्थमभ्यङ्गस्नानमाचरेत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—तैले लक्ष्मीः, जलेगङ्गा, दीपावल्यां तिथौ भवेत्। अलक्ष्मी परिहारार्थं अभ्यङ्गस्नानं आचरेत्।

विमला—दीपावली के दिन जल में गङ्गाजी का तथा तेल में लक्ष्मी का वास रहता है। अतः दारिद्र्य तथा दुःख नाश के लिए तेल शरीर में लगाकर स्नान करना चाहिए ॥ ६ ॥

नोट—नारद संहिता के अनुसार जैसे कार्तिक कृष्ण दीपावली को तैलाभ्यङ्ग पूर्वक गङ्गा स्नान करने से दरिद्रता दूर होती है। उसी प्रकार आश्विन (कार) कृष्ण चतुर्दशी और अमावास्या को भी तेल लगाकर गङ्गा स्नान करने से दरिद्रता दूर होती है।

इन्दुक्षये च संक्रान्तौ वारे पाते दिनक्षये ।
तत्राभ्यङ्गे ह्यदोषाय [1]प्रातः पापानुपत्तये ॥ ७ ॥

अन्वयः—इन्दुक्षये, संक्रातौ, पाते वारे दिनक्षये च तत्र प्रातः अभ्यङ्गे हि अदोषाय पापानुपत्तये च भवति।

विमला—अमावस्या तथा संक्रान्ति के दिन, व्यतिपात के दिन, तिथिक्षय के दिन प्रातः काल यदि तेल लगाकर स्नान करे तो सभी पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ ७ ॥

---

१. 'यतः' इति मूलपाठः।

मासिभाद्रपदे कृष्णे रोहिणीसहिताष्टमी ।
जयन्तीनाम सा तत्र रात्रौ जातो जनार्दनः ॥ ८ ॥

अन्वयः—भाद्रपदे मासि कृष्णे रोहिणी सहिता अष्टमी, सा जयन्ती नाम तत्र रात्रौ जनार्दनः जातः ।

विमला—भाद्रपद कृष्णाष्टमी यदि रोहिणी से युत हो तो उसे 'जयन्ती' नाम की अष्टमी कहते हैं। इसमें भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का जन्म (आविर्भाव) हुआ था ॥ ८ ॥

उपोष्य जन्मचिह्नानि कुर्याजागरणं च यः ।
अर्द्धरात्रयुताष्टम्यां सोश्वमेधफलं लभेत् ॥ ९ ॥

अन्वयः—उपोष्य जन्मचिह्नानि यः अर्द्धरात्रयुताष्टम्यां जागरणं च कुर्यात् सः अश्वमेध (यज्ञ) फलं च लभेत्। भाद्रपदे अष्टम्यां इति शेषः ।

विमला—भगवान् के जन्म-तिथि को व्रत रखकर यथा शक्ति जागरण करना चाहिए। जो लोग अर्धरात्रि कालिक अष्टमी का व्रत करते हैं उन्हें अश्वमेध यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

रोहिणी सहिताष्टम्यां श्रावणे मासि वा तयोः ।
श्रावणे मासि वा कुर्यात् रोहिणी सहितातयोः ॥ १० ॥

अन्वयः—श्रावणे मासि वा रोहिणी सहिता अष्टमी यदि लभते सापिजयन्ती अष्टमी ज्ञातव्या तयोः रोहिणी सहिता कुर्यात् ।

विमला—रोहिणीयुत अष्टमी होने से श्रावण में भी जयन्ती नाम से कही गयी है अतएव अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी में यदि रोहिणी का योग मिल जाय तो श्रावण में भी व्रत करना चाहिए ॥ १० ॥

मासि भाद्रपदे शुक्ले पक्षे ज्येष्ठर्क्षसंयुते ।
रात्रौ तस्मिन्दिने कुर्याज्ज्येष्ठायाः परिपूजनम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—भाद्रपदे मासि शुक्ले पक्षे (अष्टम्यां) ज्येष्ठर्क्ष संयुते, तस्मिन्दिने रात्रौ वा ज्येष्ठायाः परिपूजनम् कुर्यात् ।

विमला—भाद्रपद शुक्लपक्ष अष्टमी को यदि ज्येष्ठा नक्षत्र का योग होवे तो रात्रि में पड़ने से रात्रि और दिन में पड़ने से दिन में ज्येष्ठा नक्षत्र का पूजन करना चाहिए ॥ ११ ॥

अर्द्धरात्रयुता यत्र [1]माघकृष्णचतुर्दशी ।
शिवरात्रिव्रतं तत्र सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥ १२ ॥

अन्वयः—माघकृष्णचतुर्दशी यत्र अर्धरात्रयुता तत्र शिवरात्रि व्रतं सः अश्वमेध फलं च लभेत् ।

विमला—माघकृष्णपक्ष की चतुर्दशी अर्द्धरात्रि व्यापिनी हो तो उस दिन शिवरात्रि व्रत करने से अश्वमेध यज्ञ करने का फल होता है ॥ १२ ॥

नक्तव्रतेषु सा ग्राह्या प्रदोषव्यापिनी तिथिः ।
पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनीस्मृता ॥ १३ ॥

अन्वयः—नक्तव्रतेषु या तिथिः प्रदोषव्यापिनी सा ग्राह्या । सर्वेषु पूजाव्रतेषु च मध्याह्न व्यापिनी स्मृता ।

विमला—रात्रि में किये जाने वाले व्रतों में प्रदोष व्यापिनी तथा अन्यत्र मध्याह्न व्यापिनी तिथि को ग्रहण करना चाहिए ॥ १३ ॥

एक भुक्तोपवासेषु या विंशघटिकात्मिका ।
पिष्टान्नप्राशनेष्वेव लवणाम्लविवर्जिता ॥ १४ ॥

अन्वयः—या विंशघटिकात्मिका सा एक भुक्तोपवासेषु गृहीता, लवणाम्ल विवर्जिता पिष्टान्न प्राशनेषु एवम् ।

विमला—जिन व्रतों में एक समय भोजन का विधान है वह २० घड़ी तक होनी चाहिए। पिठ्ठी तथा नमक खटाई आदि खानेवाले व्रतों में भी तिथि का मान २० घड़ी गृहीत है ॥ १४ ॥

आषाढ सितपञ्चम्यामसम्प्राश्य उपोषितः ।
अर्चयेत्षड्मुखं देवमृणरोगविमुक्तये ॥ १५ ॥

अन्वयः—आषाढ सितपञ्चम्यां असंप्राश्य उपोषितः ऋणरोग-विमुक्तये च षड्मुखं देवम्, अर्चयेत् ।

विमला—आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी को भोजन किए विना व्रत रख कर ऋण तथा समस्त रोगों के विनाश होने के लिए षडानन देवता की अर्चना करे ॥ १५ ॥

---

१. चान्द्रमास के अनुसार लिखा है । सौरमास के अनुसार फाल्गुन कृष्ण १४ को महाशिवरात्रि व्रत होता है ।

तथैव श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां नागपूजनम् ।
पयः प्रदानं सर्पेभ्यो भयरोगविमुक्तये ॥ १६ ॥

अन्वयः—तथैव श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां नाग पूजनम् कार्यम् । भयरोगविमुक्तये च सर्पेभ्यो पयः प्रदानं कार्यम् ।

विमला—पूर्ववत् श्रावण शुक्ल पञ्चमी को नाग देवता का पूजन करे। भय तथा रोग से मुक्त होने के लिए सर्पों को दूध पिलावे ॥ १६ ॥

मासिभाद्रपदे शुक्लचतुर्थ्यां गणनायकम् ।
पूजयेन्मोदकाहारैः सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १७ ॥

अन्वयः—भाद्रपदे मासे शुक्लचतुर्थ्यां सर्वविघ्नोपशान्तये मोदकाहारैः । गणनायकम् पूजयेत् ।

विमला—भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को सभी प्रकार के विघ्नों की शान्ति के लिए मोदकादि नैवेद्यों को समर्पित कर गणनायक का पूजन करना चाहिए ॥ १७ ॥

माघशुक्ले च सप्तम्यां योऽर्चयेद्भास्करं नरः ।
आरोग्यं श्रियमाप्नोति घृतपायसभक्षणैः ॥ १८ ॥

अन्वयः—माघशुक्ले सप्तम्यां यः नरः भास्करं अर्चयेत् घृतपायसभक्षणैः आरोग्यं श्रियम् आप्नोति ।

विमला—माघ शुक्ल सप्तमी को जो मनुष्य भगवान् सूर्य की पूजाकर घी तथा खीर चढ़ाकर भोजन करता है वह आरोग्य तथा लक्ष्मी की प्राप्ति करता है ॥ १८ ॥

व्यजनोपानहौ छत्रं दधिचान्नकपात्रिकाम् ।
वैशाखे विप्रमुख्येभ्यो धर्मप्रीत्यै प्रयच्छति ॥ १९ ॥
कनकान्दोलिका छत्रचामरैःस्वर्णभूषितैः ।
सह[1] दिव्यान्नपानाभ्यां दत्वा स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ २० ॥

अन्वयः—वैशाखे व्यजन, उपानहौ छत्रं, दधि अन्नक-पात्रिकाम्, धर्म प्रीत्यै, विप्रमुखयेभ्यो प्रयच्छति । स्वर्णभूषितै, कनकान्दोलिका, छत्रचामरैः दिव्यान्नपानाभ्यां सहदत्वा नरः स्वर्गं आप्नुयात् ।

---

१. 'दिव्यान्नपानसम्पूर्णः स नरः स्वर्गमाप्नुयात' इति मूलपाठः ।

विमला—जो मनुष्य वैशाख महीने में व्यजन (पंखा), उपानह (जूते), छात्रा, दही, अन्न, पात्र (थाली वगैरह) आदि धार्मिक दृष्टि कोण से दान मुख्य ब्राह्मणों को देता है, तथा स्वर्ण, पालकी, छत्र, चामर, सुवर्ण के आभूषण तथा उत्तम अन्न दान करता है वह स्वर्ग लोक का सुख प्राप्त करता है ॥ १६-२० ॥

[1]अश्वयुङ्मासि शुक्लायां नवम्यां भक्तितोऽर्चयेत् ।
लक्ष्मीं सरस्वतीं शस्त्रान्विजयी धनवान्भवेत् ॥ २१ ॥

अन्वयः—यः आश्वयुङ्मासि शुक्लायां नवम्यां भक्तितः लक्ष्मीं सरस्वतीं शस्त्रान् च अर्चयेत् सः विजयी धनवान् च भवेत् ।

विमला—आश्विन शुक्ल नवमी को भक्तिपूर्वक जो लक्ष्मी और सरस्वती तथा शस्त्र की अर्चना करते हैं वे पुरुष विजयी तथा धनवान होते हैं ॥ २१ ॥

कार्तिक्यामथ वैशाख्यामुपोष्य वृषमुत्सृजेत् ।
शिवप्रीत्यै भक्तियुतः स नरः स्वर्गभाग्भवेत् ॥ २२ ॥

अन्वयः—अथ कार्तिक्यां वैशाख्यां च उपोष्य शिवप्रीत्यै भक्तियुतः यः वृषम् (वृषभमित्यर्थः) उत्सृजेत् स नरः स्वर्ग भाग्भवेत् ।

विमला—कार्तिकी पूर्णिमा अथवा वैशाखी पूर्णिमा को सविधि व्रत रखकर जो मनुष्य शिवजी की प्रसन्नता के लिए भक्तिपूर्वक वृषोत्सर्ग करता है वह स्वर्ग का भागी होता है ॥ २२ ॥

[2]घटान्त्योक्षनृयुग्मेष कन्याकीटतुलाधनुः ।
कुलीरमृगसिंहाश्च चैत्राद्याः शून्यराशयः ॥ २३ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चैत्रादि महीनों में क्रमशः कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन मेष, कन्या, वृश्चिक, तुला, धनु, कर्क, मकर, सिंह ये शून्य राशियाँ हैं । इनमें कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ॥ २३ ॥

---

१. 'अश्वयुङ्मासि' इति मूलपाठः ।

२. 'घटान्त्यान्नृयुग्माश्व' इति पाठान्तरम् ।

"घटो झषोगौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिनः ।
धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः ॥" इति मुहूर्तचिन्तामणौ ।

तुलामृगौ प्रतिपदि तृतीयायां [1]मृगार्कजौ ।
पञ्चम्यां बुध (मृग) राशीद्वौ सप्तम्यां चापचन्द्रभे ॥ २४ ॥

अन्वयः—प्रतिपदि तुलामृगौ, तृतीयायां मृग अर्कजः (सिंहः) पञ्चम्यां बुध राशिद्वौ सप्तम्यां चाप चन्द्रभे तिथि शून्य लग्नानि सन्ति ।

विमला—प्रतिपदा को तुला और मकर, तृतीया को सिंह और मकर, पञ्चमी को मिथुन और कन्या तथा सप्तमी को धनु और कर्क ये शून्य लग्न हैं । इनमें शुभ कार्य करना वर्जित है ॥ २४ ॥

नवम्यां हरिकीटौ द्वावेकादश्यां गुरोर्गृहे ।
त्रयोदश्यामथ(झष)वृषौ[2] दिनदग्धाश्चराशयः ॥ २५ ॥

अन्वयः—नवम्यां हरिकीटौ, एकादश्यां द्वौ गुरोः गृहे, त्रयोदश्यां झषवृषौ, राशयः दिनदग्धाश्च भवन्ति ।

विमला—नवमी को सिंह और वृश्चिक, एकादशी को धनु और मीन, त्रयोदशी को मीन और वृष ये राशियाँ (लग्न) शून्य हैं । इनमें शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ॥ २५ ॥

मासदग्धाह्वयान् राशीन् दिनदग्धांश्चवर्जयेत् ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—उपरोक्त मासदग्ध और दिनदग्ध राशियों को शुभ कार्य में त्याग देना चाहिए ।

अष्टमीनवमीचैत्रे पक्षयोरुभयोरपि ॥ २६ ॥
एकादशीमासशून्यस्तिथयः पञ्चकीर्तिताः[3] ।
वैशाखे द्वादशी शून्यापक्षयोरुभयोरपि ॥ २७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—चैत्रमास में दोनों पक्षों की अष्टमी, नवमी, वैशाख मास के दोनों पक्षों में द्वादशी और एकादशी ये मास शून्य तिथियाँ कही गई हैं ॥ २६–२७ ॥

---

१. तृतीयायां हरिर्मृगः' इति पाठभेदः ।
२. 'त्रयोदश्यां झषवृषौ' इति पाठान्तरम् ।
३. यह सभी प्रतियों में नहीं मिलता ।

ज्येष्ठे त्रयोदशीशुक्ला, कृष्णपक्षे चतुर्दशी ।
आषाढे कृष्णपक्षेऽपि षष्ठी शुक्लेऽथ सप्तमी ॥ २८ ॥
श्रावणेऽपि द्वितीया च तृतीयापक्षयोर्द्वयोः ।
प्रौष्ठपदे सिते कृष्णे द्वितीया प्रथमा तथा ॥ २९ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठे शुक्ला त्रयोदशी, कृष्णपक्षे चतुर्दशी । आषाढे कृष्णपक्षे षष्ठी ;अथ शुक्ले सप्तमी । श्रावणे द्वितीया तृतीया अपि द्वयोः पक्षयोः । प्रौष्ठपदे क्रमेण सिते कृष्णे च द्वितीया तथा प्रथमा शून्यतिथयः भवन्ति ।

विमला—ज्येष्ठ शुक्ल १३, कृष्ण १४ । आषाढकृष्ण ६, शुक्ल ७ । श्रावण कृष्ण २, शुक्ल ३ । भाद्रपदशुक्ल २ तथा भाद्रपदकृष्ण की प्रतिपद तिथि ये शून्य तिथियाँ हैं ॥ २८-२९ ॥

सिते कृष्णेऽप्याश्वयुजि दशम्यैकादशी तथा (परे) ।
पक्षे चतुर्थी तिथयः पञ्चम्यासहितास्तथा ॥
कार्तिके च सिते पक्षे चतुर्दशी शराऽसिते[1] ॥ ३० ॥

अन्वयः—आश्वयुजि सिते कृष्णेऽपि दशमी, एकादशी तथा कार्तिके च सितेपक्षे चतुर्दशी (कृष्ण) असिते शरा (५) तिथिः शून्याः भवंति ॥

विमला—आश्विन शुक्ल दशमी तथा कृष्ण एकादशी और कार्तिक शुक्ल १४ तथा कृष्ण ५ शून्य तिथियाँ हैं ॥ ३० ॥

[2]मार्गेऽद्रिनाग संज्ञेऽपि पक्षयोरुभयोरपि ।
पौषे पक्षद्वये चैव चतुर्थी पञ्चमी तथा ॥ ३१ ॥(अ)

अन्वयः—मार्गे उभयोः पक्षयोः अद्रि, नाग संज्ञे अपि च पौषे पक्षद्वये च चतुर्थी तथा पञ्चमी मास शून्याः भवतः ।

---

१. "सिते कृष्णेप्याश्वयुजि दशम्येकादशी परे ।
पक्षे चतुर्थी तिथयः पञ्चम्यासहितास्तथा" ॥ ३० ॥ इति मूलपाठः ।
२. 'यह प्रथम पद्यांश मूल प्रति में नहीं है' ।
अ. संशोधित पाठः ।

विमला—मार्गशीर्ष के दोनों पक्षों में ७ और ८ तथा पौषमास के दोनों पक्षों में चतुर्थी और पञ्चमी शून्य तिथियाँ हैं ॥ ३१ ॥ (अ)

कार्तिकेमास्यमावास्यासिते पक्षे चतुर्दशी ।
पौषमासे पूर्णमासी अमावास्या तथैव च ॥ ३१ ॥ (ब)

विमला—कार्तिक कृष्ण अमावास्या तथा शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी और पौषमास की पूर्णिमा तथा अमावास्या ये शून्य तिथियाँ हैं ॥३१॥ (ब)

माघे तु पञ्चमी षष्ठी शुक्ले कृष्णे यथाक्रमम् ।
तृतीया च चतुर्थी च फाल्गुने सित कृष्णयोः ॥३२॥(अ)

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—माघ शुक्ल की पंचमी तथा माघकृष्ण षष्ठी । फाल्गुन शुक्ल तृतीया तथा फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी ये शून्य तिथियाँ हैं ॥ ३२ ॥ (अ)

उभयोः पक्षयोर्माघे   सप्तमीचाष्टमीसिते ।
नवमीद्वादशी चैव तिथयः षट् प्रकीर्तिताः ॥ ३२ ॥(ब)

विमला—माघ मास के दोनों पक्षों की सप्तमी तथा अष्टमी शुक्ल में तथा नवमी, द्वादशी कृष्ण पक्ष की शून्य तिथियाँ हैं ॥ ३२ ॥ (ब)

विशेष—इस मास शून्य तिथि प्रकरण में नारद संहिता की विभिन्न प्रतियों में विभिन्न मत दृष्टिगोचर होते हैं । यहाँ क्रमशः (अ) 'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम प्रेस, बम्बई, तथा (ब) विद्याविलास प्रेस, वाराणसी की प्रतियों से दिया गया है । (अ) संशोधित संस्करण ज्ञात होता है जब कि (ब) मूल प्रति का अंश ज्ञात होता है । विद्याविलास प्रेस की मूलप्रति में भी अशुद्धियों की भरमार है तथा एकाध हस्तलिखित प्रतियाँ देखने में आई हैं जो इन क्रमों का निवारण करने में अक्षम सिद्ध हुई हैं । (ब) के अन्दर अमावास्या तथा पूर्णिमा को भी शून्य तिथि के अन्दर लिया है यह विशेषोक्ति है । कुछ अंश अस्फुट है जिसको ठीक करने पर (अ) के आसन्न हो जायेगा । (ब) की विशेषोक्ति रामदैवज्ञ के मुहूर्त चिन्तामणि के अन्तर्गत दिए "भाद्रेचन्द्रदृशौ नभस्यनलनेत्रे माधवेद्वादशी" इत्यादि के अन्तर्गत भी नहीं प्राप्त होता है ।

ब. इति मूलपाठः ।

'अभुक्तमूलजं पुत्रं पुत्रीं वापि परित्यजेत् ।
अथवाष्टाब्दकं तातस्तन्मुखं नावलोकयेत् ॥ ३३ ॥

अन्वयः—अभुक्त मूलजं पुत्रं अपि वा पुत्रीं परित्यजेत् । अथवा तात अष्टाब्दकं (यावत्) तन्मुखं न अवलोकयेत् ।

विमला—अभुक्त मूल में उत्पन्न पुत्र या कन्या का परित्याग कर देना चाहिए अथवा पिता आठ वर्ष तक जातक का मुख न देखे ॥ ३३॥

मूलाद्यपादजोहन्ति पितरं तु द्वितीयजः ।
मातरं तु तृतीयोर्थं सर्वस्वं तु चतुर्थजः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—मूलाद्यपादजः पितरं हन्ति, द्वितीयजः मातरं, तृतीये अर्थं, चतुर्थजः तु सर्वस्वं हन्ति (नश्यति) ।

विमला—मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले बालक पिता को, द्वितीय चरण में माता को, तृतीय चरण में धन तथा चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले सर्वस्व विनाश करते हैं ॥ ३४ ॥

दिवाजातस्तुपितरं रात्रौ तु जननीं तथा ।
आत्मानं सन्ध्ययोर्हन्ति नास्तिगण्डोनिरामयः[2] ॥ ३५ ॥

अन्वयः—दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा सन्ध्ययोः आत्मानं हन्ति एतादृशिगण्डे जातः निरामयः नास्ति ॥

विमला—दिन में जन्म ले (अभुक्तमूल में) तो पिता को, रात्रि में जन्म ले तो माता को और दोनों प्रातः सायं की सन्धियों में जन्म ले

---

१. 'नारद' जी के मत से ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम ४ घटी (१ घं० ३६ मि०) और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की ४ घटी एवं दोनों पूर्वापर ज्येष्ठा मूल नक्षत्रों की अन्तिम और आदि की मिलाकर ८ घटिका (३ घं० १२ मि०) सदोष अर्थात् अभुक्त मूल संज्ञक है। अभुक्तमूल के लिए नारद जी का वचन ही विशेष प्रमाण माना गया है यह "एवमभुक्तमूलस्यानेकभेद सम्भवेकः साधीयान् पक्ष इति चेत् उच्यते नारदोक्तः पक्ष एव साधीयान् किमत्र प्रमाणमिति चेत् शृणु" इस मुहूर्त्तचिन्तामणि की पीयूषधारा में लिखित वाक्य से सिद्ध हो जाता है।

२. विद्याविलास प्रेस वाराणसी की प्रति में इसके स्थान पर 'शुभं स्यादश्व सर्वेषामात्मनश्वशुरस्य च । तथैवाभुक्त पितृभ्यः पार्श्वतः पादयोरपि ॥" दिया गया है जो दो श्लोकों का अलग-अलग खण्ड योग जान पड़ता है।

तो स्वयं अपने को विनष्ट करने वाला होता है। इस लिए यह गण्ड (अभुक्तमूल) दोष रहित नहीं होता है ॥ ३५ ॥

यो ज्येष्ठामूलयोरन्तरालं प्रहरजः शिशुः।
अभुक्तमूलजः सार्पमघानक्षत्रयोरपि ॥ ३६ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठामूलयोः अन्तराल प्रहरजः यः शिशुः, सार्पमघानक्षत्रयोरपि अभुक्तमूलजः एव।

विमला—ज्येष्ठा तथा मूल और आश्लेषा तथा मघा के मध्य का एक पहर भाग में जन्म लेने वाले बालक को अभुक्तमूलज कहते हैं ॥ ३६ ॥

विधेयं शान्तिकं तत्र गण्डे दोषापनुत्तये।
अरिष्टं शतशो याति सुकृते शान्तिकर्मणि ॥ ३७ ॥
तस्माच्छान्ति प्रकुर्वीत प्रयत्नाद्विधिपूर्वकम्।
वत्सरात्पितरं हन्ति मातरं तु त्रिवर्षतः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—तत्र गण्डदोषापनुत्तये शान्तिकं विधेयम्। सुकृते शान्तिकर्मणि अरिष्टं शतधा याति। तस्मात् प्रयत्नात् विधिपूर्वकं शान्ति प्रकुर्वीत्। अकृते सति वत्सरात् पितरं, त्रिवर्षतः तु मातरं हन्ति।

विमला—गण्डान्तदोष निवारण के लिए उसकी शान्ति करनी चाहिए। शान्ति कराने से अरिष्ट विनष्ट हो जाता है। अतएव प्रयत्न पूर्वक सविधि शान्ति करे। शान्ति नहीं होने से १ वर्ष में पिता तथा ३ वर्ष में माता की मृत्यु या मरणासन्न पीडा होती है ॥ ३७-३८ ॥

धनं वर्षद्वयेचैव श्वसुरं नववर्षके।
जातं बालं वत्सरेण वर्षैः पञ्चभिरग्रजम् ॥ ३९ ॥
श्यालकं चाष्टभिर्वर्षैरनुक्ताहन्ति सप्तभिः ॥ ४० ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां (मिश्रप्रकरणे) मलमासाद्यनेक-
लक्षणाध्यायस्त्रिपञ्चाशत्तमः।

अन्वयः—वर्षद्वये धनं, नववर्षकेश्वसुरं च हन्ति। वत्सरेण (स्वयं) जातं बालं, पञ्चभिः वर्षैः अग्रजं, अष्टभिः वर्षैः श्यालकं तथा सप्तभिः वर्षैः अनुक्तान् सर्वान् जनान् हन्ति ॥

विमला—२ वर्ष में धनको नष्ट करे, नववर्ष में श्वसुर को नष्टकरे, स्वयं १ वर्ष में नष्ट हो, पाँचवर्ष में बड़े भाई को नष्ट करे, आठ वर्ष में साले को तथा अन्य सम्बन्धीजनों को ७ वर्ष में पीड़ाकारक होता है ॥ ३९–४० ॥

श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में मिश्रप्रकरणान्तर्गत
मलमासाद्यनेकलक्षणाध्याय समाप्त।

अथाश्वशान्तिः

अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि तेषां दोषापनुत्तये ।
भानुवारे च संक्रान्तावयने विषुवद्वये ॥ १ ॥

अन्वयः—तेषां दोषापनुत्तये अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि । भानुवारे संक्रान्तौ अयने विषुवद्वये ।

विमला—अश्वों के दोष को दूर करने के लिए अश्वशान्ति विधि को कहते हैं । यह शान्ति रविवार, संक्रान्ति या जिस दिन दिन-रात्रि बराबर हो उस दिन करनी चाहिए ॥ १ ॥

दिनक्षये व्यतीपाते द्वादश्यामश्विभेऽपि वा ।
अथवा भास्करे स्वातीसंयुक्ते च विशेषतः ॥ २ ॥

अन्वयः—दिनक्षये, व्यतीपाते, द्वादश्यां, अश्विभे अपि वा, अथवा भास्करे स्वाति संयुक्ते च विशेषतः शान्तिं कुर्यात् ।

विमला—तिथिक्षय, व्यतीपातयोग, द्वादशीतिथि, अश्विनीनक्षत्र, अथवा विशेषकर रविवार के दिन स्वाती नक्षत्र आवे तो शान्ति करनी चाहिए ॥ २ ॥

ईशान्यां त्वष्टभिर्हस्तैश्चतुर्भिर्वाथ मण्डपम् ।
चतुर्द्वारवितानस्रक्तोरणाद्यैरलंकृतम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—अथ ईशान्यां तु अष्टभिर्हस्तैः चतुर्भिर्हस्तै वा चतुर्द्वारं वितान स्रक् तोरणाद्यैः अलंकृतम् मण्डपम् विधाय ।

विमला—इसके बाद तिथि आदि शुभमुहूर्त जानने के बाद ईशान-कोण में आठ हाथ या चार हाथ प्रमाण का चार द्वार वाला वितान (चाँदनी या सामियाना) माला, तोरणादि से अलंकृत मण्डप का निर्माण करना चाहिए ॥ ३ ॥

तन्मध्ये वेदिकातस्य पञ्चविंशांशमानतः ।
मण्डपस्य बहिःकुण्डं प्राच्यां हस्तप्रमाणतः ॥ ४ ॥

अन्वयः—तन्मध्ये तस्य पञ्चविंशांशमानतः वेदिका कुर्यात् । मण्डपस्यवहिः प्राच्यां हस्तप्रमाणतः कुण्डं च कार्यम् ।

विमला—उक्त मंडप के पच्चीशवें भाग के माप से मध्य में वेदी का निर्माण करे और मण्डप के बाहर पूरब की ओर एक हाथ प्रमाण का कुण्ड निर्माण करे ॥ ४ ॥

वरयेच्छ्रोत्रियान् विप्रान् स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।
सूर्यपुत्रं हयारूढं पञ्चवक्त्रं त्रियम्बकम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—स्वस्तिवाचनपूर्वकम् श्रोत्रियान् विप्रान् वरयेत्, हयारूढं, पञ्चवक्त्रं, त्र्यम्बकम् सूर्य पुत्रम् ।

विमला—स्वतिवाचन पूर्वक श्रोत्रिय (वैदिक) ब्राह्मणों का वरण करे । घोड़े पर सवार पंचवक्त्र तथा त्रिनेत्र वाले सूर्यपुत्र का स्मरण करे ॥ ५ ॥

शुक्लवर्णवसाखड्गं रैवन्तं द्विभुजं स्मरेत् ।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते पञ्चवक्त्रक ॥ ६ ॥
नमोगन्धर्वदेवाय रैवन्ताय नमोनमः ।
मन्त्रेणानेन रैवन्तं वस्त्रगन्धाक्षतादिभिः ॥ ७ ॥
विधिवद्वेदिकामध्ये तण्डुलोपरि पूजयेत् ॥

अन्वयः—शुक्लवर्ण, वसाखड्गं द्विभुजं रैवतं स्मरेत् । तन्मन्त्रः—"सूर्य पुत्रनमस्तेऽस्तुनमस्ते पञ्च वक्त्रक नमोगन्धर्वदेवाय रैवन्ताय नमोनमः" अनेन मन्त्रेण वस्त्रगन्धाक्षतादिभिः वेदिकामध्ये तण्डुलोपरि रैवन्तं विधिवत् पूजयेत् ।

विमला—शुक्ल वर्ण वाले ढाल तलवार धारण किए हुए, दो भुजाओं वाले रैवंत देव का स्मरण करे । मंत्रसूर्य पुत्र नमस्तेऽस्तु नमो ''नमः ॥ इस मन्त्र से वस्त्र गन्ध अक्षतादि से विधिवत् वेदी के मध्य में चावल के ऊपर स्थापित रैवंत देव का पूजन करना चाहिए ॥ ६–७ ॥

कार्यास्तत्रगणाः पञ्चरौद्रशाक्राश्च वैष्णवाः ॥ ८ ॥
सगाणपति सौराश्च रैवन्तस्य समन्ततः ।
ऋग्वेदादिचतुर्वेदान्यजेद्द्वारेषु पूर्वतः ॥ ९ ॥

अन्वयः—तत्र पञ्चगणाः रौद्र शाक्र वैष्णवाः स गणपति सौराश्च रैवन्तस्य समन्ततः कार्याः (स्थाप्या इत्यर्थः)। ऋग्वेदादिचतुर्वेदान् पूर्वत आरभ्य द्वारेषु यजेत्।

विमला—मण्डप में रैवन्त के चारो तरफ पांच गणों की स्थापना करे (जैसे रुद्रगण, इन्द्र के गण, विष्णु के गण, गणपति के गण और सूर्य के गण) और मण्डप के चारो द्वारों पर क्रमशः पूरब में ऋग्वेद, दक्षिण में ययुर्वेद, पश्चिम में सामवेद और उत्तर में अथर्ववेद का पूजन करे॥ ८-९॥

रक्तवर्णान्पूर्णकुम्भान्वस्त्रगन्धाद्यलंकृतान्।
पञ्चत्वक्पल्लवोपेतान्पञ्चामृत समन्वितान्॥ १०॥

अन्वयः—वस्त्रगन्धाद्यलंकृतान् रक्तवर्णान् पूर्णकुम्भान् पञ्चत्वक् पञ्चपल्लवोपेतान् पञ्चामृत समन्वितान् (स्थाप्या)।

विमला—लालवर्णवाले पूर्णकलशों को वस्त्रगन्ध आदि से विभूषित कर पञ्चपल्लव, पञ्चवल्कल, पञ्चामृत ये पूजन कर स्थापना करे॥ १०॥

द्वारेषु स्थाप्य तल्लिङ्गैर्मन्त्रैर्विप्रान् प्रपूजयेत्।
एवं तु पूजामाचार्यः कृत्वा गृह्यविधानतः॥ ११॥

अन्वयः—द्वारेषु (पूर्णकुम्भान्) स्थाप्य तल्लिङ्गैः मन्त्रैः विप्रान् प्रपूजयेत्। एवं तु गृह्यविधानतः आचार्यः पूजां कृत्वा (अग्रिम-सम्बन्धः)।

विमला—चारो द्वारों पर पूर्णकुम्भ स्थापित करने के बाद पूर्वादि-क्रम से स्थापित वेद मन्त्रों के द्वारा चार ब्राह्मणों का पूजन पृथक्-पृथक् करे। इस प्रकार कुल की मर्यादा के अनुसार आचार्य पूजन कराके (अग्रिम श्लोक से सम्बन्ध है)॥ ११॥

स्थापयेत्तु व्याहृतिभिस्तस्मिन्कुण्डे हुताशनम्।
ततस्तदाज्यभागान्ते मुख्याहुतिमतन्द्रितः॥ १२॥

अन्वयः—व्याहृतिभिः तस्मिन् कुण्डे हुताशनम् स्थापयेत्। ततः तदा अतन्द्रितः आज्यभागाहुतिं दत्वा मुख्याहुतिः दातव्या।

विमला—मण्डप के सभी देवताओं तथा ब्राह्मणों की सविधि पूजा करने के बाद व्याहृतियों से पूर्वोक्त कुण्ड में अग्निदेवता की स्थापना करे और सावधानी के साथ आज्य भाग आहुति करने के अनन्तर मुख्य आहुति देना चाहिए॥ १२॥

'अग्नयेस्वाहे'ति हुत्वा घृतेनादौ प्रयत्नतः ।
एवं तु पूजामन्त्रेण ह्याद्यं तु प्रणवेन च ॥ १३ ॥
पलाशसमिदाज्यान्नैः शतमष्टोत्तरं हुनेत् ।
प्रत्येकं जुहुयात्भक्त्या तिलान्व्याहृतिभिस्ततः ॥ १४ ॥

अन्वयः—प्रयत्नतः 'अग्नये स्वाहा' इति मन्त्रेण आदौघृतेन हुत्वा आद्यन्ते पलाससमिदाज्यान्नैः शतमष्टोत्तरं हुनेत्। प्रत्येकं व्याहृतिभिः तिलान् भक्त्या जुहुयात्।

विमला—यत्नपूर्वक 'अग्नये स्वाहा' इस मन्त्र से पहले घी की आहुति देवे। तदनन्तर पलास की समिधा, घी और अन्न से १०८ आहुति देना चाहिए। और प्रत्येक मन्त्र से व्याहृति के द्वारा तिल का हवन करे ॥ १३-१४ ॥

एकरात्रं त्रिरात्रं वा नवरात्रमथापि वा ।
अनेन विधिना कुर्याद्यथाशक्त्या जितेन्द्रियः ॥ १५ ॥

अन्वयः—अनेन विधिना जितेन्द्रियः सन् एकरात्रं, त्रिरात्रं वा नवरात्रं वा यथा हवनं कुर्यात्।

विमला—इस प्रकार ब्रह्मचर्य व्रतधारण पूर्वक एक दिन, तीन दिन या नव दिन तक यथाशक्ति हवन करना चाहिए ॥ १५ ॥

जपादि पूर्वकं सम्यक्कर्त्ता पूर्णाहुतिं हुनेत् ।
ततो मङ्गलघोषैश्च नैवेद्यं च समर्पयेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—कर्त्ता सम्यक् जपादि पूर्वकं पूर्णाहुतिं हुनेत्। ततः मंगलघोषैश्च नैवेद्यं समर्पयेत्।

विमला—कर्त्ता अच्छी तरह जपादि कार्य सम्पन्न कराने के बाद पुर्णाहुति करे और मंगल ध्वनि (भेरी शंख) के साथ नैवेद्य समर्पण करे ॥ १६ ॥

ततस्ते हुतशेषेण सम्यक्कुम्भोदकैर्द्विजाः ।
प्रादक्षिण्य व्रजन्तोऽश्वाञ्जयन्त वलिमुत्तमम् ॥ १७ ॥

अन्वयः—ततः ते द्विजाः कुम्भोदकैः प्रादक्षिण्य अश्वान् व्रजंतः हुतशेषेण उत्तमम् जयन्त वलिं दद्युः।

विमला—पुनः चारो द्वारों पर पूजित चार ब्राह्मण अपने-अपने कलशों को लेकर अश्वों के साथ प्रदक्षिणा क्रम से जल की धारा देते हुए वामन करें और उसी समय हवन से बची आहुति के द्वारा उत्तम जयन्त बलि देना चाहिए ॥ १७ ॥

जीमूतस्येत्यनूवाकाश्चतुर्दिक्षुविनिः क्षिपेत् ।
आचार्यायततो दद्याद्दक्षिणां [1]निष्कपञ्चकम् ॥ १८ ॥

अन्वयः—जीमूतस्यादि अनुवाक् मन्त्रान् पठित्वा चतुर्दिक्षु बलिम् विनिः क्षिपेत् । ततः निष्कपञ्चकम् आचार्याय दक्षिणां दद्यात् ।

विमला—'जीमूतस्य' इस प्रकार अनुवाक् मन्त्र पढ़ कर चारों दिशाओं में बलि छोड़ना चाहिए। तदनन्तर पाँच पल (२० तोले) सुवर्ण आचार्य को दक्षिणा में देना चाहिए ॥ १८ ॥

तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा यथाशक्त्यनुसारतः ।
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्याद्धेनुं वस्त्रं धनादिकम् ॥ १९ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—उपरोक्त पाँच निष्क या उसके आधे या आधे का भी आधा अथवा अपनी शक्ति के अनुसार अन्य ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिए । दक्षिणा में गाय, वस्त्र तथा धन आदि दान में देना चाहिए ॥ १९ ॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाच्छान्तिवाचनपूर्वकम् ।
एवं यः कुरुते सम्यगश्वशान्तिमनुत्तमाम् ॥ २० ॥

अन्वयः—पश्चात् शान्तिवाचनपूर्वकम् ब्राह्मणान् भोजयेत्, एवम् उत्तमम् अश्वशान्तिम् सम्यक् यः कुरुते (स वृद्धि लभते) ।

विमला—पश्चात् स्वस्तिवाचनपूर्वक ब्राह्मणों को भोजन करावे। इस प्रकार उत्तम अश्वशान्ति सविधि जो करता है (वह वृद्धि को प्राप्त करता है) ॥ २० ॥

---

१. 'निष्कपञ्चकम्' से २० तोला सोना होता है। यह बड़े राजाओं के लिए दान देना असम्भव नहीं है। फिर भी इसे ब्राह्मणों का लोभ नहीं समझना चाहिए। क्योंकि पहले यथा शक्ति दान करना, ऐसा कह चुके हैं।

सोऽश्वाभिवृद्धिं लभते वीरलक्ष्मीं न संशयः ।
यज्ञेनानेन सन्तुष्टाः धातृविष्णु महेश्वराः ॥ २१ ॥
आदित्याद्याग्रहाः सर्वे शीताः स्युः पितरोगणाः ।
लोकपालाश्च सन्तुष्टाः पिशाचाः डाकिनीगणाः ॥ २२ ॥
भूतप्रेताश्चगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ २३ ॥

इति श्रीनारदीय संहितायां मिश्रप्रकरणेचाश्वशान्त्याध्यायश्चतुःपञ्चाशत्तमः ।

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—वह व्यक्ति अश्वों से समृद्ध होता है तथा शूर वीरों की लक्ष्मी प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है। इस प्रकार सविधि किए गये यज्ञ से सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी प्रसन्न होते हैं। सूर्यादि नवग्रह, पितरगण, लोकपाल, पिशाच, डाकिनी भूत, प्रेत, गन्धर्वगण, यक्ष, राक्षस, पन्नग, ये सभी प्रसन्न हो जाते हैं ॥ २१–२३ ॥

श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
मिश्रप्रकरणान्तर्गताश्वशान्त्याध्याय समाप्त ।

अथ श्राद्धलक्षणाध्यायः

चतुर्दशी तिथिर्नन्दा भद्रा शुक्रारवासरौ ।
सितेज्ययोरस्तमयं द्व्यंघ्रिभं विषमांघ्रिभम् ॥ १ ॥

अन्वयः—चतुर्दशी, नन्दा, तथा च भद्रातिथिः शुक्र, आर वासरौ सितेज्ययोः अस्तमयम् द्व्यंघ्रिभम् , विषमांघ्रिभम् ।

विमला—चतुर्दशी, नन्दा (१, ६, ११) और भद्रा (२, ७, १२) तिथियाँ । शुक्रवार तथा मंगलवार, शुक्र और गुरु का अस्तकाल, द्विचरण नक्षत्र तथा विषम चरण नक्षत्र (जैसे कृत्तिका का १ चरण मेष में होने से कृत्तिका विषमांघ्रि नक्षत्र तथा मृगशिरा का २ चरण वृष में है अतएव मृगशिरा नक्षत्र द्व्यंघ्रि नक्षत्र के अन्तरगत आता है) ॥ १ ॥

शुक्लपक्षं च सन्त्यज्य पुनर्दहनमुत्तमम् ।
वसूत्तरार्द्धतः पञ्चनक्षत्रेषु त्रिजन्मसु ॥ २ ॥
पौष्णब्रह्मर्क्षयोः पौनर्दहनं कुलनाशनम् ।
दिनोत्तरार्द्धे तत्कर्तुश्चन्द्रतारावलान्विते ॥ ३ ॥

अन्वयः—शुक्लपक्षं परित्यज्य पुनर्दहनम् उत्तमम् । वसूत्तरार्द्धतः, पञ्च-नक्षत्रेषु, त्रिजन्मसु, पौष्णब्रह्मर्क्षयोः पौनर्दहनं कुलनाशनम् । किन्तु दिनोत्तरार्द्धे तत्कर्तुः चन्द्रतारावलान्विते च शुभम् ।

विमला—और शुक्ल पक्ष को छोड़कर पुत्तलदाह करना उत्तम कहा गया है । धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्द्ध से पाँच नक्षत्र (रेवती के अन्त तक) त्रिपुष्कर योग, रेवती और रोहिणी नक्षत्र में पुत्तल दाह करने से कुल का विनाश होता है । किन्तु मध्याह्नोत्तर काल में तथा कर्त्ता के चन्द्रवल, तारावल आदि ठीक रहने पर पुत्तल दाह करना उत्तम होता है ॥ २-३ ॥

पापग्रहे वलयुते शुक्रलग्नांश वर्जिते ।
तत्पुनर्दहनं चोक्तं श्राद्धकालमथोच्यते ॥ ४ ॥

अन्वयः—बलयुते पापग्रहे, शुक्रलग्नांश वर्जिते, पुनर्दहनं च उक्तम् । अथ श्राद्धकालम् उच्यते ।

विमला—पापग्रहों के बलवान होने पर लग्न में शुक्र के न रहने पर पुत्तल दाह करना कहा गया है । आगे श्राद्धकाल कह रहे हैं ॥ ४ ॥

सपिण्डीकरणं कार्यं वत्सरे वार्द्धवत्सरे ।
त्रिमासे वा त्रिपक्षे वा मासि वा द्वादशेऽह्नि वा ॥ ५ ॥

अन्वयः—वत्सरे, अर्द्धवत्सरे वा त्रिमासे वा त्रिपक्षे मासि वा, द्वादशेऽह्नि वा सपिण्डी करणम् शुभकरम् ।

विमला—एक वर्ष पर, छ माह में, तीन माह में, तीन पक्ष में, एक माह में अथवा १२ वें दिन सपिण्डी कार्य सम्पन्न करना हितकर होता है ॥ ५ ॥

एष्वेव कालेष्वेतानि ह्येकोद्दिष्टानि षोडश ।
कृत्तिकासु च नन्दायां भृगोर्वारे त्रिजन्मसु ॥ ६ ॥

अन्वयः—एषु एव कालेषु एतानि एकोद्दिष्टानि षोडश कर्माणि कर्त्तव्यानि । कृत्तिकासु, नन्दायां भृगोः वारे त्रिजन्मसु च (पिण्डदानं न कर्त्तव्यम्) ।

विमला—उपरोक्त काल में ही एकोद्दिष्ट षोडश श्राद्ध करना चाहिए। कृत्तिका नक्षत्र में नन्दा तिथि (१, ६, ११) में और शुक्रवार तथा त्रिपुष्कर योग में (पिण्डदान नहीं करे) ॥ ६ ॥

पिण्डदानं न कर्त्तव्यं कुलक्षयकरं यतः ।
त्रिजन्मसु त्रिपाद्भेषु नन्दायां भृगुवासरे ॥ ७ ॥

अन्वयः—सुगमम् ।

विमला—पिण्डदान उपरोक्त निषिद्ध काल में नहीं करना चाहिए क्योंकि कुलक्षय होता है। त्रिपुष्कर योग, त्रिपाद् नक्षत्र (पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा) और शुक्रवार ॥ ७ ॥

धातृपौष्णभयोः श्राद्धं न कर्त्तव्यं कुलक्षयात् ।
नन्दासु च भृगोर्वारे कृत्तिकायां त्रिजन्मसु[1] ॥ ८ ॥
रोहिण्यां च मघायां च कुर्यान्नापरपाक्षिकम् ।
सकृन्महालयेकाम्यं न्यूनश्राद्धेऽखिलेषु च ॥ ९ ॥

---

१. त्रिजन्मसु त्रिपुष्करयोगेषु यथा त्रिपुष्करः—'भद्रातिथी रविजभूतनयार्कवारे…(मु० चि० न० प्र० ४९)

अथवा—'अर्कार्किभौमवारे चेद्भद्रायां विषयांघ्रिभम् ।
त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणोयमलांघ्रिभे ॥'

अन्वयः—धातृपौष्णभयोः श्राद्धं कुलक्षयात् न कर्त्तव्यम्। नन्दासु भृगोर्वारे च कृत्तिकायां त्रिजन्मसु रोहिण्यां मघायां च अपरपाक्षिकम् न कुर्यात्। महालये काम्ये सकृत् अखिलेषु न्यूनश्राद्धेषु च।

विमला—रोहिणी और रेवती में श्राद्ध नहीं करना चाहिए क्योंकि कुलक्षय होता है। नन्दा तिथि (१, ६, ११) शुक्रवार, कृत्तिका नक्षत्र, त्रिपुष्कर योग, रोहिणी, तथा मघा में सपिण्डी आदि श्राद्ध नहीं करना चाहिए। परन्तु महालय श्राद्ध (पार्वण श्राद्ध) से अतिरिक्त॥ ८-९॥

अतीत विषये चैव ह्येतत्सर्वं विचिन्तयेत्।
नभस्यमासे सम्प्राप्ते कृष्णपक्षे समागते॥ १०॥

अन्वयः—अतीत विषये चैव एतत् सर्वं विचिन्तयेत्। नभस्य मासे सम्प्राप्ते कृष्णपक्षे समागते।

विमला—साधारण कामना वाले श्राद्धों में पूर्वोक्त विचार करना आवश्यक होता है। भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष के आने पर (अग्रिम सम्बन्ध है)॥ १०॥

तत्र श्राद्धं प्रकुर्वीत सकृद्वाचेदशक्तिमान्।
विशिष्टदिवसे कर्त्तुश्चन्द्रताराबलान्विते॥ ११॥

अन्वयः—असक्तिमान् चेत् तर्हि सकृद् श्राद्धं प्रकुर्वीत। चन्द्रताराबलान्विते विशिष्टदिवसे कर्त्तुः श्राद्धं कुर्वीत।

विमला—निर्धन होने पर भी मनुष्य को श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। श्राद्धकर्त्ता को चन्द्र ताराबल देख कर विशिष्ट समय में श्राद्ध करना चाहिए॥ ११॥

नन्दाश्च तिथयो निन्द्या भूतायां शस्त्रघातिनाम्।
द्वितीया मध्यमाज्ञेया तृतीया भरणीयुता॥ १२॥
पूज्या यदि चतुर्थी वा श्रीप्रदा पितृकर्मणि।
आनन्दयोगः पञ्चम्यां याम्यर्क्षस्थे निशाकरे॥ १३॥
भोजयेद्यः पितॄंस्तत्र पुत्रपौत्रधनं लभेत्।
यशस्करी सप्तमी स्यादष्टमी भोगदायिनी॥ १४॥

अन्वयः—नन्दाश्च तिथयः श्राद्धे निन्द्याः, शस्त्रघातिनाम् भूतायाम् (चतुर्दश्यां) तिथौ श्राद्धं कार्यम्, द्वितीया मध्यमाज्ञेया, भरणीयुता-

तृतीया यदि वा चतुर्थी पूज्या, याम्यर्क्षस्थे निशाकरे आनन्दयोगः तत्र यः पितृन् भोजयेत् सः पुत्रपौत्रधनं च लभेत्। श्राद्धे सप्तमी यशस्करी अष्टमी भोगदायिनी स्यात्।

विमला—नन्दा तिथियाँ (१, ६, ११) श्राद्ध में वर्जित हैं। शस्त्र-घात से मरने वालों का श्राद्ध चतुर्दशी को करना उत्तम होता है। द्वितीया मध्यम तथा भरणी युक्त तृतीया अथवा चतुर्थी पूज्या है तथा पितृ कर्म में लक्ष्मीप्रद है। पञ्चमी तिथि को चन्द्रमा यदि भरणी नक्षत्र का हो तो आनन्द योग होता है। इसमें जो लोग पितृश्राद्ध करते हैं वे पुत्र-पौत्र तथा धनधान्य की प्राप्ति करते हैं। श्राद्ध कर्म में सप्तमी यश देने वाली तथा अष्टमी तिथि भोग देने वाली है ॥ १२–१४ ॥

श्राद्धकर्तुश्च नवमी सर्वकामफलप्रदा।
सूर्ये कन्यागते चन्द्रे रौद्रनक्षत्रगे यदा ॥ १५ ॥
सप्तम्यां च तथाष्टम्यां नवम्यां च तिथौ [1]तथा।
योगोऽयं पितृकल्याणः पितॄन्यस्मिन्प्रपूजयेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—नवमी श्राद्धकर्तुः च सर्वकामफलप्रदा, कन्यागते सूर्ये रौद्रनक्षत्रगे यदा चन्द्रे सप्तम्यां, अष्टम्यां, नवम्यां च तिथौ अयं योगः पितृकल्याणः अस्मिन् पितृन् यथाशक्तिः प्रपूजयेत्।

विमला—नवमी तिथि श्राद्ध करने वाले के लिए सर्व सिद्धि देने वाली है। कन्या राशिगत सूर्य में यदि चन्द्रमा आर्द्रा नक्षत्र में आवे तथा उस दिन सप्तमी, अष्टमी या नवमी तिथि हो तो इसे 'पितृकल्याण' नामक योग कहा गया है। इसमें यथा शक्ति पितरों का पूजन श्राद्धादि कर्म के द्वारा करना चाहिए ॥ १५–१६ ॥

इह सम्पदमाप्नोति पश्चात्स्वर्गमवाप्यते।
दशम्यां पुष्यनक्षत्रे सुयोगोऽमृत संज्ञकः ॥ १७ ॥
अर्चयेद्यः पितॄंस्तत्र नित्यं तृप्तास्तु तस्य ते।
सर्व सम्पत्प्रदाः कर्तुर्द्वादशी तिथिरुत्तमा ॥ १८ ॥

अन्वयः—इह सम्पदम् आप्नोति पश्चात् स्वर्गम् अवाप्यते। दशम्यां पुष्यनक्षत्रे सति अमृतसंज्ञकः सुयोगः तत्र यः पितृन् अर्चयेत् तस्य

---

1. 'युते' इति मूलपाठः।

नित्यं तृप्तास्तु ते (पितरः) सर्व सम्पद् प्रदाः भविष्यन्ति। कर्तुः सर्व-सम्पत्प्रदाः द्वादशी तिथिः उत्तमा भवति।

विमला—पूर्वोक्त योग में पितरों का पूजन (श्राद्ध) करने वाला इस लोक में सम्पत्ति प्राप्त करता है और बाद में स्वर्ग प्राप्त करता है। दशमी तिथि को यदि पुष्य नक्षत्र का योग हो तो अमृत संज्ञक सुयोग होता है। इसमें अर्थात् अमृत योग में जो लोग पितरों की अर्चना करते हैं उनके पितर सर्वदा तृप्त रहते हैं। श्राद्ध कर्म करने वाले के लिए द्वादशी तिथि सर्वोत्तम सम्पत्ति दायिनी होती है॥ १७-१८॥

त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां हानिर्धनकलत्रयोः।
अनन्तपुण्यफलदा गजच्छाया[1] त्रयोदशी॥ १९॥

अन्वयः—सुगमम्।

विमला—त्रयोदशी और चतुर्दशी में श्राद्ध कर्म करने से धन तथा स्त्री की हानि होती है। किन्तु त्रयोदशी तिथि में यदि गजच्छाया योग पड़े तो अनन्त पुण्य फल दायिनी होती है॥ १९॥

श्राद्धकर्मण्यमावास्या पक्षश्राद्धफलप्रदा।
पौष्णद्वये च पुष्यचतुष्टये हस्तत्रये मैत्रचतुष्टये च॥
सौम्यद्वये च श्रवणत्रये च श्राद्धप्रदाता बहुपुत्रवान्स्यात्॥२०॥

इति श्रीनारदीय संहितायां श्राद्धलक्षणाध्यायः पञ्चपञ्चाशत्तमः।

---

१. गजच्छाया—"यदेन्दुः पितृदैवत्ये हंसश्चैवकरेस्थितः।
याम्या तिभिर्भवेत् सा हि गजच्छायाप्रकीर्तिता॥"
इति मिताक्षरा परिभाषा।

अपि च कृत्यचिन्तामणौ।
"कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां मघास्विन्दुः करे रविः।
यदा तदा गजच्छाया श्राद्धे पुण्यैरवाप्यते॥"

अन्यच्च।
"योगोयथात्रयोदश्यां कुञ्जरच्छाय संज्ञितः।
भवेन्मघायां संस्थे च शशिन्यर्के करेस्थिते॥"

यथाह वराहः।
"सैंहिकेयो यदा भानुं ग्रसते पूर्वसन्धिषु।
गजच्छाया तु सा प्रोक्ता तत्र श्राद्धं प्रकल्पयेत्॥"

ना० स० अध्याय ४ श्लोक सं० ३५ द्रष्टव्यः।

अन्वयः—श्राद्धकर्मणि अमावास्या पक्षश्राद्धफलप्रदा भवति। शेषं सुगमम्।

विमला—श्राद्ध कर्म में अमावास्या पक्ष श्राद्ध (१५ दिन तक पक्ष भर) का फल देने वाली है। रेवती, अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषाः इन नक्षत्रों में श्राद्ध करने वाला मनुष्य बहुत पुत्रों वाला होता है॥ २०॥

इति श्रीनारद संहिता की विमला हिन्दी टीका में
श्राद्धलक्षणाध्याय समाप्त।

श्लोकानुक्रमणिका

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१९	अतिन्द्रिय	अतीन्द्रियः
१०	१४	इन्द्रचापाद्ध	इन्द्रचापार्द्धं
११	२४	लोहितातुदया	लोहितावुदया
१२	५	सुभिशकृत्	सुभिक्षकृत्
१२	१५	नाशकृत	नाशकृत्
१२	२६	ऋणाणि	ऋक्षाणि
१२	२८	ऋणाणि	ऋक्षाणि
२१	६	अनिष्टयः	अनिष्टदः
२१	१४	दुभिक्ष	दुर्भिक्ष
२१	२६	ऐकादश	एकादश
२२	१०	क्वचिद्	क्वचित्
२४	८	सस्यं	सस्यं
२६	२१	ऋस्य	ऋक्ष
२७	२६	भवेयु	भवेयुः
३४	२५	प्रस्तोदय	ग्रस्तोदय
३५	२०	हैं	है
३९	२१	राहुचार	केतुचार
४६	१२	चेतमः	चेतसः
५१	२	बा	का
५२	२४	युक्तितः	मुक्तितः
६१	२८	द्वापरादिः	द्वापरादि
६५	१२	दिकरात्मजः	दिनकरात्मजः
६५	२८	अभ्याङ्ग	अभ्यङ्ग
६८	११	अश्विनाबि	अश्विन्यादि
७०	१७	सुगमन्	सुगमम्
७१	१	वस्त्राधिषेक	वस्त्राभिषेक

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७१	५	लौहकम	लौहकर्म
७३	१०	औषघ	औषध
७३	११	नक्षण	नक्षत्र
७६	५	वर्णं	कर्णं
७६	६	पुष्प	पुष्य
७६	९	विविष्णु	विविष्णु
७७	४	वै	वै
८१	३०	५७	५८
८२	३	सद्दक्षमं	सद्दशम्
८३	१८	फलाध्याय	नक्षत्रफलाध्याय
८८	६	त्वाष्ट्र	त्वाष्ट्र
८८	१३	दिवा	द्विवा
७८	२५	विधातृ	विधातृ
८८	२३	॥ ६ ॥	॥ ४ ॥
८९	८	न्यूनाघिक	न्यूनाधिक
८९	१४	अष्टयो	आष्टमो
९१	१९	नेव	नैव
९१	२४	मैवा	नैवा
९५	४	राविवार	रविवार
१०८	३६	लहसुनिथाँ	लहसुनियाँ
१२०	४	प्रतिप्रिया	पतिप्रिया
१२०	१८	मनिनी	कानिनी
१२०	२२	होता है	होती है
१२२	६	होती	होती है।
१३१	२२	नैघने	नैधने
१३५	१९	पठ्ठवंधन	पट्टबन्धन
१३६	७	ग्रह	ग्रह
१४५	१८	जीवाके	जीवार्कं
१४५	१९	सम्पूणै	सम्पूर्णै
१४७	२७	नोपनायने	चोपनायने

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४९	२	भासेपु	मासेषु
१५१	५	द्रुःख	दुःख
१५२	१३	त्रुक्र	शुक्र
१५४	६	योसायां	योषायां
१५४	१९	रूपाग्रतः	रुपाग्रतः
१५५	९	कृजः	कुजः
१५६	२	कान्या	कन्या
१५९	१४	देवि	देवि
१६०	३	व्यत्पये	व्यत्यये
१६२	१९	परिघार्घं	परिवाद्यधं
१६५	१९	करस्य	वरस्य
१७५	८	सवथा	सर्वथा
१७५	२२	रात्रिशुहूर्त्तः	रात्रिमुहूर्त्तः
१८७	२३	पत्यर्क	प्रत्यर्क
१८३	७	घाटका	घटिका
१८३	२१	यत्र	यन्त्र
१८५	३	कुभ	कुम्भ
१८५	७	स्वति	स्वस्ति
१९४	१०	द्विर्द्वांश	द्विर्द्वादश
१९५	१	श्रुक्र	शुक्र
१९६	१४	राथियाँ	राशियाँ
१९६	१५	राशिया	राशियाँ
१९७	१८	पाजापत्य	प्राजापत्य
१९७	२८	हरणत्	हरणात्
१९९	१	सप्तविंशोध्यायः	एकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः
१९९	१६	प्रत्युङ्गाहो	प्रत्युद्वाहो
२००	३	मूलकाः	मूलजाः
२००	७	भारता हैं।	मारता है
२०३	१	अथाष्टविंशोध्यायः	अथत्रिंशत्ततोऽध्योयः
२०५	१	अष्टाविंशोध्यायः	अथ त्रिंशत्तमोऽध्यायः

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०६	११	अष्टय	अष्टम
२०९	२७	उमौ	उभौ
२१०	२१	यया	यथा
२२२	१७	भूरसेनं	शूरसेनं
२२३	१३	शप्याशना	शय्याशना
२२५	१०	पूजा	पूषा
२४८	१२	नायक्रम	नायकम्
२६५	२३	अष्टत्तरं	अष्टोत्तरं
२६८	५	मुखान्ते	मखान्ते
२७१	२२	फल	फलं
२७३	५	परस्परा	परम्परा
२७४	१८	दत्रिणां	दत्तिणां
२७६	१०	शद्यः	सद्यः
२८५	२२	उम्र	उग्र
२८६	१०	कर्णकाणां	कर्षकाणां
२८९	१	परिवेश	परिवेष
२९०	१४	”	”
२९१	१	”	”
२९९	४	गगतात्	गगनात्
३०८	१४	ओर	और
३१५	७	अहस्पति	अंहस्पति
३२८	७	त्रियम्बकम्	त्र्यम्बकम्
३२८	११	पचपक्त	पंचवक्त्र

पुराणेषु ज्योतिषम्

प्रथमो भागः

नारदीय ज्योतिषम्

सम्पादकोऽनुवादकश्च

पं० रामजन्ममिश्रः

प्राध्यापकः

(का० हि० वि० वि)

१—प्रथमभागः—नारदीय ज्योतिषम् ।

२—द्वितीयभागः—गारुड ज्योतिषम् ।

३—तृतीयभागः—आग्नेय ज्योतिषम् ।

४—चतुर्थभागः—इतरपुराणेषु ज्योतिषम् ।

ज्योतिष की दृष्टि से पुराणों का अनुशीलन कुल उपरोक्त चार भागों में प्रकाशित होगा। इसके प्रथम भाग के रूप में नारदीय ज्योतिषम् (यन्त्रस्थ) शीघ्र विद्वज्जनों के समक्ष उपस्थित करने का प्रयास चल रहा है। यह प्रथम भाग आरहा है, इसमें लगभग १००० श्लोक अन्वय व्याख्या एवं भाषा के साथ रहेगा तथा अध्यायादि का वर्गीकरण सिद्धांत-संहिता और होरा के रूप में दिया गया है। आशा है इस प्रकाशन से ज्योतिष परिपूर्ण होगा। (यंत्रस्थ)

चौखम्भा संस्कृत संस्थान

CHAUKHAMBHA SANSKRIT SANSTHAN

पोस्ट बाक्स नं० १३९

के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेंन, वाराणसी-२२१००१